मोघिया कथाएँ

सामाजिक व्यवस्था में कथाओं की भूमिका

डॉ. परशुराम शुक्ल



मोघिया कथाएँ

सामाजिक व्यवस्था में कथाओं की भूमिका

डॉ. परशुराम शुक्ल

प्रधान सम्पादक
रेनू तिवारी

सम्पादक
अशोक मिश्र

आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
भोपाल का प्रकाशन

प्रकाशक – निदेशक
आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स
भोपाल–462002 फोन–0755–2661948, 2661640
E-mail : mplokkala@rediffmail.com,
mptribalmuseum@gmail.com
web. : www.mptribalmuseum.com

प्रकाशन – वर्ष 2014

मूल्य – रु. 50/– (रुपये पचास केवल)

शब्दांकन – आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

मुद्रण – शासकीय मुद्रणालय, भोपाल

ISBN - 978-93-83899-04-3

कथा जीवन और उसके अनुभव से आती है। सभी कथाएँ जीवन की कहानियाँ हैं। आशा–निराशा, विश्वास– संशय, पाप–पुण्य, धर्म–नियति, सुख–दु:ख, जन्म–मृत्यु, श्राप–वरदान, परिश्रम–परिणाम आदि जीवन अनुभव के बहुतेरे प्रश्न और उनके समाधान समेटे अलग–अलग बोली भाषा में कथाओं का विशाल संसार है।

लोक कथाओं के पात्र अनाम राजा–रानी, राजकुमार, साधु–संन्यासी, कंजूस–कपटी, धूर्त, चालक, सरल–सौम्य व्यक्ति आदि.. आदि कुछ भी हो सकते हैं। सच्चाई तो वास्तव में यह है कि इन कथाओं के बहाने 'सत्य की स्थापना एवं सदाचरण' हेतु प्रेरित किया गया है। काल कोई भी हो– मनुष्य का स्वभाव और उसके आचरण तथा परिणाम में कोई खास परिवर्तन नहीं होता है। इसलिए लोक कथाएँ प्रत्येक समय में हमारे लिए और हमारी पीढ़ियों को संस्कारित करने में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

अकादमी के अनुरोध पर श्री परशुराम शुक्ल ने मोघिया विमुक्त समुदाय की कथाओं का संग्रह और अनुवाद किया है। हम इनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। आशा है कि मौखिक साहित्य में उत्सुक पाठकों के लिए यह संग्रह उपयोगी होगा।

– सम्पादक



अनुक्रम

परिचय

भारत में सैंकड़ों की संख्या में नट, कंजर, कुचबंदिया, कलन्दर, हबूड़ा, सांसी, वाघरी, मीना, बदक, भान्तू, बावरिया, सनौरिया, बिजौरिया, भाट, बेड़िया, चपरमंता, लूंगी पठान, करवल, सिकलीगर आदि अनेक ऐसी जनजातियाँ पायी जाती हैं, जो बंजारों की तरह जीवन जीते हुए इधर-उधर भटकती रहती हैं। प्रत्येक जाति के अलग-अलग पेशे हैं। कुछ जातियों के लोग बन्दर या भालू का नाच दिखाते हैं, तो कुछ भेड़-बकरी, गाय आदि चराने का कार्य करते हैं। कुछ जड़ी-बूटियों का धन्धा करते हैं, तो कुछ गीत गाकर भिक्षाटन करते हैं। इनकी स्त्रियाँ अपने घरों में रस्सी, टोकरी, पंखा, चटाई आदि बनाने का कार्य करती हैं।

इन जनजातियों के सदस्य रेल्वे स्टेशन, बस स्टैण्ड या किसी बड़े मैदान के निकट, जहाँ पानी की सुविधा होती है, अपने डेरे लगा लेते हैं। कुछ समय तक वहाँ रुककर कार्य करते हैं और जैसे ही इनके कबीले के मुखिया का आदेश होता है, ये अपने डेरे बाँध, गधों पर सामान लादकर आगे बढ़ जाते हैं। इनका सम्पूर्ण जीवन एक स्थान से दूसरे, फिर तीसरे, इसी प्रकार भटकते हुए व्यतीत होता है। आजकल कुछ जनजातियों के लोग गधों के स्थान पर पैसेन्जर ट्रेनों व बसों का उपयोग करने लगे हैं। इनमें जन्म-मृत्यु और विवाह जैसे महत्त्वपूर्ण प्रसंग भी इसी यात्रा के मध्य घटित होते हैं।

ब्रिटिश सरकार ने इन घुमन्तू जनजातियों को खतरनाक समझा था कि उसने सन् 1871 में एक अधिनियम बनाकर अधिकांश घुमन्तू जातियों को अपराधी घोषित कर दिया। प्रकृति के इन लाड़ले पुत्रों पर अनेक प्रकार के प्रतिबन्ध लगा दिये गये तथा इनका सम्पूर्ण जीवन नारकीय बना दिया गया। भारत की स्वतंत्रता के बाद इस अधिनियम का समाप्त किया गया तथा इन्हें मुक्त कर दिया गया। तभी से ये जनजातियाँ विमुक्त जातियाँ कहलाने लगीं।

मोघिया भी एक घुमन्तू जनजाति है। इसे मूँग, मोगी, मोगिया आदि नामों से जाना जाता है। उत्तरप्रदेश में मोघियों को बहेलिया कहा जाता है। इनकी संवैधानिक स्थिति भी अलग-अलग प्रान्तों में अलग-अलग है। मध्यप्रदेश सरकार ने इन्हें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा विमुक्त जाति तीनों सूचियों में रखा है तथा विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत वह इनका विकास कर रही हैं। किन्तु उत्तरप्रदेश सरकार इन्हें अनुसूचित जाति मानती है। यद्यपि उसने इन्हें विमुक्त जाति की श्रेणी में शामिल किया है। मोघिया की उत्पत्ति सम्बन्धी एक कथा पायी जाती है, जो इस प्रकार है-

भगवान इन्द्र को हिरन का ताजा माँस बहुत पसन्द था। इसके लिए उन्होंने बहेलिये को स्वर्ग में बसा लिया था। बहेलिया प्रतिदिन एक हिरन का शिकार करता और इन्द्र की सेवा में प्रस्तुत कर देता। इन्द्र उससे बहुत प्रसन्न रहते थे। एक बार चैत्र की पूर्णिमा को बहेलिये ने एक हिरन का शिकार किया। हिरन बहुत सुन्दर तथा स्वस्थ था। बहेलिये के मन में पाप आ गया। वह हिरन को कन्धे पर लादकर इन्द्र के पास जाने की अपेक्षा सीधा अपने डेरे पर पहुँचा और उसने हिरन का कुछ माँस काटकर अलग निकाल लिया। बहेलिये ने हिरन को फिर कन्धे पर लादा और इन्द्र के भवन की ओर चल दिया। इन्द्र भगवान बहेलिये की ही प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्हें बहुत जोर से भूख लग रही थी। वे इधर-उधर देख रहे थे। तभी उन्हें दूर से बहेलिया आता दिखायी दिया। उसके कन्धे पर हिरन लदा हुआ था।

बहेलिये ने हिरन को लाकर भगवान इन्द्र के सामने रख दिया और सिर झुकाकर खड़ा हो गया। आज वह कुछ भयभीत लग रहा था और इन्द्र

से नजरें नहीं मिला पा रहा था। भगवान इन्द्र ने बहेलिये से इसका कारण पूछा। वह और अधिक भयभीत हो गया। घबराहट के कारण उसे कोई उत्तर नहीं सूझ रहा था। भगवान इन्द्र को शक हुआ। उन्होंने अपनी आँखें बन्द की और शक्ति के बल से सारी वास्तविकता मालूम कर ली। स्वर्ग में रहने वाला बहेलिया हिरन के थोड़े से माँस के लालच में पथभ्रष्ट हो जायेगा, इसकी उन्हें आशा न थी। भगवान इन्द्र को क्रोध आ गया। उन्होंने बहेलिये को श्राप दिया कि वह एक हिरन के माँस पर मोहित हो गया, इसलिए वर्ष में केवल एक हिरन का ही शिकार कर पायेगा। इन्द्र ने बहेलिये को श्राप देकर स्वर्ग से निकाल दिया।

बहेलिया पृथ्वी पर आ गया। वह हिरन के माँस पर मोहित हो गया था, अतः उसके वंशज मोघिया कहलाये।

मोघियों के डेरों की बनावट से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह वास्तव में एक घुमन्तू जनजाति है। मोघियों के डेरे बड़े साधारण होते हैं। सामान्यतया ये एक सीध में लगभग दो-दो फुट की दूरी पर लोहे या लकड़ी के चार खूँटे गाड़ते हैं। इन खूँटों के समानान्तर लगभग सात-आठ फुट की दूरी पर फिर चार खूँटे गाड़ते हैं। इन दोनों के बीच दो बाँस सीधे खड़े करके उन्हें दूसरे दो बाँसों से बाँध देते हैं और ऊपर वाले बाँस से होता हुआ एक त्रिपाल डाल देते हैं। (नीचे वाले बाँस का उपयोग कपड़े आदि टाँगने के लिए करते हैं) जिसके सिरे आठों खूँटों से कस कर बाँध दिये जाते हैं। हवा तथा ठण्डक से बचने के लिए आगे-पीछे कोई भी कपड़ा या ताड़ की चटाई का उपयोग करते हैं। इनके डेरों का स्वरूप इतना अस्थायी होता है कि आधे घण्टे से भी कम समय में इन्हें एक स्थान से खोल कर दूसरे स्थान पर लगाया जा सकता है। ये अपने डेरे के पास पत्थर तथा मिट्टी की सहायता से लगभग दो फुट लम्बा, तीन फुट चौड़ा तथा दो फुट ऊँचा एक घरौंदा सा बनाते हैं, जिसमें पीने के पानी का मटका रखा जाता है। कभी-कभी यह घरौंदा मुर्गे-मुर्गी बन्द करने के काम में आता है।

मोघिया पुरुष सामान्य कद व साँवले रंग के होते हैं। ये सामान्यतया कमीज-पैयजामा या धोती पहनते हैं और सिर पर साफा अवश्य बाँधते हैं। मोघिया स्त्रियाँ तीखे नाक-नक्श वाली सुन्दर एवं लुभावनी होती हैं। इनका रंग साँवला, कद पाँच फुट के लगभग होता है। अधिकांश मोघिया युवतियों व स्त्रियों को लाल, पीला रंग तथा इसी रंग की छींट के कपड़े बहुत पसन्द होते हैं। ये गड़िया लुहारों की तरह ऊँचा, घेरदार घाघरा व कुर्ती पहनती हैं और दुपट्टे का उपयोग इस प्रकार करती हैं कि वह गले से होता हुआ सिर व वक्ष दोनों को ढँक ले। इनमें गहनों का अधिक प्रचलन नहीं है। पुरुष कभी-कभी अँगूठी पहनते हैं। स्त्रियाँ माथे पर बिन्दी लगाती हैं, गले में काँच के मोतियों की या बाजार में मिलने वाली ऐसी ही अन्य मालाएँ पहनती हैं। विवाहित स्त्रियाँ अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार चाँदी या गिलट के जेवर पहनती हैं। ये नाक में फूल के आकार की चाँदी की लौंग तथा अपनी कुर्ती में चाँदी या गिलट की अनेक लड़ियों की झालर लगाती हैं।

मोघियों में एकाकी परिवार पाये जाते हैं। इनके एक डेरे में पति-पत्नी एवं उनके अविवाहित बच्चे ही रह सकते हैं। विवाह के तुरन्त बाद पति-पत्नी नया डेरा बना लेते हैं। इनमें विवाह के समय स्वयं का, मामा का और फूफा का गोत्र बचाकर विवाह किया जाता है। शेष विवाह संस्कार अन्य हिन्दू परिवारों के समान होते हैं। यदि लड़के के माता-पिता अत्यन्त वृद्ध या बेरोजगार हैं, अथवा उनका स्वर्गवास हो चुका है तथा छोटे-छोटे भाई-बहन हैं तो नवविवाहित दम्पत्ति पास ही एक नया डेरा बनाकर अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हैं।

मोघिया मुख्य रूप से देशी जड़ी-बूटियों का व्यवसाय करते हैं। इनमें पुरुष सदस्य कन्धे पर थैला लटकाये या बड़े-बड़े शहरों में सड़कों के किनारे दुकान लगाकर देशी जड़ी-बूटियाँ बेचते देखे जा सकते हैं। सामान्यतया ये शक्तिवर्धक दवाएँ बेचते हैं तथा अपने को 'शिलाजीत वाला' कहलाना पसन्द करते हैं। जंगलों में रहने के कारण इनका देशी जड़ी-बूटियों व उनसे बनने वाली दवाओं का धर्म तथा अनेक प्रकार की रूढ़ियों से सीधा सम्बन्ध

होने के कारण इनकी चिकित्सा पद्धति परम्परागत है। मैंने स्वयं अनेक मोघिया परिवारों में इनके बुजुर्गों के पासपोर्ट देखे। इससे यह प्रमाणित होता है कि इनके पूर्वज देशी जड़ी-बूटियों तथा दवाओं का व्यापार करने के लिए थाईलैण्ड, बैंकाक, श्रीलंका, पाकिस्तान, जावा, सुमात्रा आदि देशों को जाते रहते थे। थाईलैण्ड में अनेक मोघिया परिवार स्थायी रूप से बस गये हैं और अभी भी देशी जड़ी-बूटियों का व्यवसाय कर रहे हैं।

मोघिया बड़े कुशल शिकारी होते हैं। इनमें स्त्रियाँ भी शिकार पर जाती हैं। सामान्यता दो से पन्द्रह व्यक्ति तक शिकार के लिए निकलते हैं। जाल, पिंजड़ा, मरासी, खंदारू, कुड़क्का आदि के द्वारा साधारण चिड़िया से लेकर बड़े-बड़े जानवरों तक का शिकार कर लेते हैं। इनमें सिंह वाहिनी के उपासक शेर, चीता व तेन्दुआ का शिकार नहीं करते। ये कभी मचान बनाकर शिकार नहीं करते। मोघियों का सर्वाधिक प्रिय शिकार जंगली सुअर है, जिसका शिकार ये जमीन में गड्ढा बनाकर बन्दूक से या बारूद के गोले से करते हैं।

मोघिया समाज में ऐसी अनेक विलक्षण प्रथाएँ परम्पराएँ तथा रीति-रिवाज हैं, जिनसे सभ्य समाज आज तक अनभिज्ञ है। ऐसा ही एक विचित्र अंध विश्वास है उलाक। मोघियों में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति पुरुषों के समान है और अत्यन्त सम्मानजनक है। कन्या मूल्य का प्रचलन होने के कारण इनमें लड़की के जन्म को शुभ माना जाता है, किन्तु फिर भी मोघिया जाति में विवाहित स्त्रियों का अधोवस्त्र (लहंगा या घाघरा) सर्वाधिक अपवित्र समझा है। इनमें अविवाहित लड़कियों का लहंगा तो साधारण होता है, किन्तु विवाहित स्त्रियों का लहंगा बहुत खतरनाक समझा जाता है। इसके स्पर्श मात्र से वस्तुएँ अपवित्र (उलाक) हो जाती हैं। यह पन्द्रह हाथ लम्बे पतले सूती कपड़े का खूब घेरदार बनाया जाता है। लहंगा कभी सफेद कपड़े का नहीं बनाया जाता। मोघिया स्त्रियाँ गहरा पीला, काला, लाल या इसी तरह की छींट के कपड़े का लहंगा बनवाना पसन्द करती हैं। इसे बाजार के दर्जी किसी भी सिलाई मशीन पर आसानी से सिल सकते हैं, किन्तु मोघिया स्त्रियाँ इसे सुई धागे से सिलाती हैं। ये अपना लहंगा काँटेदार झाड़ियों अथवा पत्थर आदि पर सुखाती हैं। यदि एक विवाहित मोघिया स्त्री अपना नया या पुराना, गंदा या धुला कैसा भी लहंगा अपने डेरे, कच्चे अथवा पक्के मकान की दीवार पर डाल दे तो वह दीवार उलाक (अपवित्र) हो जायेगी और उसे तोड़ना पड़ेगा। इतना ही नहीं, उस घर की सभी वस्तुएँ (बन्दूक, रूपया-पैसा, कागज, सोना-चाँदी, देवी-देवताओं की मूर्तियों को छोड़कर) अपवित्र हो जायेंगी और उन्हें फेंकना पड़ेगा। उसी दिन पंचायत बैठायी जायेगी तथा परिवार के सभी सदस्यों को जाति से बहिष्कृत कर दिया जायेगा। जाति से बहिष्कृत मोघिया परिवार को पुनः जाति में सम्मिलित होने के लिए अपना मकान तोड़ना पड़ेगा। सपरिवार तीन स्थानों- हरिद्वार, इलाहाबाद तथा बनारस में गंगा-स्नान करना होगा तथा पूरी बिरादरी को भोजन कराना पड़ेगा। इसके बाद उस परिवार को बिरादरी में शामिल किया जा सकता है, किन्तु उसे हमेशा के लिए दागी परिवार कहा जायेगा। मोघियों में दागी परिवार के सदस्यों की स्थिति सामान्य से निम्न समझी जाती है। इसके पुरुष कभी पंच या मुखिया नहीं बन सकते।

मोघिया विवाहित स्त्री के लहंगे का स्पर्श होते ही पवित्र तथा सामान्य वस्तुएँ अपवित्र हो जाती हैं। इसलिए इनमें स्त्रियों को कुर्सी, स्टूल, चारपायी पर बैठना वर्जित होता है। उलाक के भय से ये अपने देवी-देवताओं की मूर्तियाँ तथा उनके शृँगार के समान नगर सेठों के पास रखते हैं। विशेष पूजा-पाठ या धार्मिक कर्मकाण्ड के अवसर पर ये शुद्ध होकर अपने देवी-देवताओं की मूर्तियाँ तथा पूजा का सामान डेरों पर लाते हैं और पूजा समाप्त होने के बाद वापस नगर सेठ के घर पहुँचा देते हैं।

उलाक होने के लिए लहंगे का स्पर्श होना ही आवश्यक नहीं है। यदि किसी गैर मोघिया जाति के व्यक्ति के घर, सरकारी कार्यालय के बहुमंजिले भवन में जहाँ स्त्रियाँ पहले से ऊपर की मंजिल पर मौजूद हों और बाद में पुरुष आयें तथा ऐसी स्थिति हो कि पुरुषों को निचली मंजिल में स्त्रियों के नीचे से गुजरना पड़े तो पुरुष उलाक हो जायेंगे। इसी प्रकार यदि

एक बहुमंजिले मकान के किसी एक कमरे में एक भी विवाहित मोघिया स्त्री हो तो ठीक उसके नीचे बने कमरे में प्रवेश करने वाले सभी मोघिया पुरुष उलाक हो जायेंगे और उनके सम्पूर्ण परिवार का शुद्धिकरण आवश्यक हो जायेगा। विगत तीन वर्षों में केवल ग्वालियर सम्भाग में तीन मकान उलाक हुए, जिनमें से किटौरा ग्राम के बुल्खां मोघिया का मकान पंचायत के फैसले के अनुसार तोड़ा जा चुका है।

मोघियों में स्त्रियों की चारित्रिक पवित्रता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इनमें विवाह पूर्व शारीरिक सम्बन्ध तो बहुत दूर की बात है, यदि कोई पुरुष किसी अविवाहित लड़की की कलाई पकड़ ले तो लड़की अपवित्र हो जाती है तथा तुरन्त जातीय पंचायत उसे सपरिवार जाति से बहिष्कृत कर देती है। इस प्रकार की लड़कियों का जीवनभर विवाह नहीं हो सकता तथा उन्हें 'धरैया' करके एक रखैल की तरह जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

मोघियों में चरित्रहीनता को हत्या से भी अधिक गम्भीर अपराध समझा जाता है। सामान्यतया चरित्रहीन व्यक्ति स्वयं ही अपना अपराध स्वीकार कर लेता है, किन्तु यदि वह झूठ बोलता है तो देवी-देवताओं की अनेक प्रकार की कसमें खानी पड़ती हैं। अंधविश्वासी और देवी प्रकोप से भय खाने वाले मोघिया कभी झूठी सौगन्ध नहीं खाते। सौगन्ध की स्थिति आते-आते सच्चाई स्पष्ट हो जाती है। फिर भी कभी-कभी कुछ लोग अपने अपराध को छिपाने के लिए अन्त तक झूठ बोलते हैं। इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न होने पर उन्हें अपने को निर्दोष साबित करने के लिए जल परीक्षा या अग्नि परीक्षा देनी पड़ती है। इनमें परीक्षा का आज भी प्रचलन है।

मोघियों का सर्वाधिक शक्तिशाली संगठन है- पंचायत। ये साधारण मारपीट से लेकर हत्या तक के विवादों का निपटारा अपनी जातीय पंचायत में ही कर लेते हैं। इनमें किसी भी मामले में पुलिस की सहायता लेना या करना गम्भीर अपराध माना जाता है। सामान्यतया किसी भी प्रकार का कोई विवाद उत्पन्न होने पर दोनों पक्षों के लोग एकत्रित होते हैं, और शहर, गाँव या बस्ती के बाहर पंचायत बैठायी जाती है। पंचों की फीस तथा अनुमानित दण्ड दोनों पक्षों से आरम्भ में ही ले लिया जाता है। मोघिया पंचायत में चोर को चोर या बेईमान को बेईमान नहीं कहा जा सकता, बल्कि सर्वप्रथम आरोपी पक्ष का एक पंच हवा, पानी, जंगल, पशु-पक्षी, राजा-रानी आदि पर ढाल कर अप्रत्यक्ष रूप से आरोप लगाता है। इसी समय दोषी पक्ष का भी कोई पंच उठता है और वह भी कहानी या लोककथा सुना कर सफाई देता है। इन कहानियों को 'मिसाल' कहते हैं। इन्हीं मिसालों के आधार पर मुखिया पंच सभी पंचों की इच्छा का सम्मान करते हुए अपना फैसला सुनाता है। मोघिया पंचायत हमेशा एकमत से फैसला करती है। अतः इसे दोनों पक्ष सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं।

मोघिया पंचायत में सामान्य औपचारिकताएँ पूरी होने के बाद आरोप-प्रत्यारोप लगाने वाली लोककथाओं के आरम्भ होने के पहले कुछ वयोवृद्ध पंच इस प्रकार की लोककथाएँ कहते हैं, जिससे झगड़ा आगे न बढ़े और दोनों पक्षों में समझौता हो जाये। उदाहरण के लिए यदि पिता-पुत्र, पति-पत्नी अथवा दो भाइयों या सगे सम्बन्धियों में आपस में झगड़ा हो गया हो तो सर्वप्रथम एक न्यायप्रिय पंच उठकर खड़ा होगा और कहेगा-

'पंच भाइयों! मेरी बात सुनो- सागर के किनारे हंस का एक जोड़ा रहता था। सागर और हंस बहुत अच्छे मित्र थे। उन दोनों में निःस्वार्थ मित्रता, निश्छल प्रेम और प्रगाढ़ स्नेह था। दोनों एक दूसरे के सुख-दुःख के साथी थे। सागर और हंस अच्छे पड़ोसियों की तरह अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे कि अचानक सागर के मन में एक कुविचार आया। उसने अपने मित्र हंस से कहा- 'मित्र यह बताओ, हममें से कौन बड़ा है? हंस इस प्रश्न का आशय समझ नहीं पाया। उसने उत्सुकता से पूछा- 'भैया मैं समझा नहीं?' सागर ने मन ही मन अपनी गहराई नापी और बोला- 'मैं तुमसे बड़ा हूँ। मेरी विशालता से तुम परिचित तो होंगे ही। मेरा विस्तार देखा, दूर-दूर तक जहाँ देखो मेरा जल हिलोरे मारता दिखता है। आज तक कोई मेरी थाह नहीं पा सका। इसलिए मैं बड़ा हूँ।'

पक्षियों के राजा हंस को भला यह कैसे सहन होता? उसने अपने उज्ज्वल पंखों और सुन्दर शरीर को निहारा और कहने लगा– 'नहीं, मैं तुमसे बड़ा हूँ। मेरा रूप–रंग देखो, मेरा सौन्दर्य देखो, मेरा धवल वर्ण आँखों को कितनी शीतलता देता है। मेरी मोहक देह सबके मन को मोह लेती है। मैं पक्षियों का सिरमौर हूँ। मैं बड़ा हूँ।'

दोनों मित्र अपनी–अपनी हठ पर अड़े थे। दोनों अपनी बात मनवाना चाह रहे थे। दोनों अपने गुण और विशेषताओं के उदाहरण प्रस्तुत कर एक दूसरे को नीचा दिखा रहे थे। दोनों मित्रों की इस हठधर्मी और मुर्खतापूर्ण वार्तालाप को सुनकर हंसनी को बड़ा दु:ख हुआ। वह मन ही मन सोचने लगी कि कहीं इतनी सी बात पर दोनों पुराने और अच्छे मित्र एक दूसरे के दुश्मन न बन जायें। उसने हंस को कहा– 'प्रिय! व्यर्थ में लड़ने से अच्छा है कि हम कहीं और चलकर रहने लगें।' इस तरह समझा–बुझा कर हंसनी अपने हंस को लेकर कुछ दूरी पर बहने वाली एक नदी के किनारे रहने लगी।

हंस सागर से दूर रहकर सदैव बड़ा उदास रहता था। उसकी उस उदासी को देखकर एक दिन हंसनी बोली– 'प्रिय हंस! तुम्हें अपनी भूल का फल तो भुगतना पड़ेगा। तुमने जरा सी बात को बढ़ाकर अपना एक अच्छा और पुराना साथी खो दिया। मुझे तो तुम दानों में कोई बड़ा नहीं लगता। बड़ा तो वह होता है, जो दूसरों का सम्मान करे। बड़प्पन की बात तो यह थी कि तुम दोनों एक दूसरे का आदर करते और जीवन भर साथ–साथ प्रेम से रहते। अब तो हमें इस छोटी सी नदी के किनारे ही निर्वाह करना पड़ेगा।'

हंसनी की बात सुनकर हंस को अपनी भूल का एहसास हुआ। उसे अपने मित्र सागर की याद आने लगी। इधर सागर भी अकेला रह गया था। उसे भी अपने व्यवहार पर पछतावा होने लगा। हर समय उसे अपने मित्र हंस की याद आती। हंस के बिना उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। वह भी हमेशा उदास रहता था।

एक दिन की बात है, उधर से चार पंच गुजरे। एक पंच ने कहा– 'देखो! यह सागर है।' दूसरे पंच ने उसकी बात काटते हुए कहा– 'नहीं भैया, यह सागर नहीं है। अगर यह सागर होता तो इसके किनारे हंस अवश्य रहते।' सागर चुपचाप उन पंचों की बातें सुन रहा था। उसे बड़ा दु:ख हुआ। उसने कहा– 'पंचों! मैं सागर ही हूँ। मेरे किनारे हंस भी रहते थे, लेकिन मेरी मूर्खता के कारण हम मित्रों में झगड़ा हो गया और हंस दूसरे स्थान पर चले गये। मैं अपने व्यवहार पर बहुत दु:खी हूँ। अगर तुम्हें हंस मिलें तो उनसे कहना कि तुम्हारा मित्र सागर अपने दुर्व्यवहार पर बहुत पछता रहा है। उसे तुमसे बिछुड़ जाने का बड़ा दु:ख है। क्या तुम फिर से सागर के किनारे रहने आ सकते हो?'

सागर की व्यथा सुनकर पंचों ने उसे आश्वासन दिया– 'प्रिय सागर! तुम उदास न हो। अगर हमें हंस मिलेंगे तो हम अवश्य ही तुम्हारा सन्देश उन्हें देंगे। इतना ही नहीं, हम दोनों का मेल कराने का प्रयास भी करेंगे।' ऐसा कहकर पंच आगे बढ़ गये। कुछ दूर चलने के बाद तीसरे पंच की दृष्टि हंसों पर पड़ी। वह बोला– 'देखो, ये हंस हैं।' चौथे पंच ने कहा– 'नहीं ये हंस नहीं हैं। अगर ये हंस होते तो सागर के किनारे रहते। हंस सदैव सागर के किनारे रहते हैं।'

पंचों की बात हंस के ह्रदय में चुभ गयी। उसने कातर दृष्टि से पंचों की ओर देखा और उदास स्वर में बोला– 'देखो पंचों! हम हंस ही हैं। हम पहले सागर के किनारे ही रहते थे, लेकिन छोटी सी बात पर हमारा सागर से झगड़ा हो गया और हम अलग होकर यहाँ रहने लगे। हम यहाँ बहुत दु:खी हैं। हमें अपने मित्र सागर की बहुत याद आती है। जरा सी बात पर दो मित्र एक–दूसरे से अलग जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हम अपने व्यवहार पर बहुत पछता रहे हैं। क्या तुम फिर से हमारी मित्रता सागर से करवा सकते हो? हम जीवन भर तुम्हारा आभार मानेंगे।' कहते–कहते हंस की आँखों में आँसू आ गये, पास खड़ी हंसनी की आँखों में भी आँसू थे। पंचों ने हंसों को सान्त्वना दी– 'मित्र! तुम दु:खी न हो। हम सागर से अवश्य तुम्हारे मित्रता फिर से करवा देंगे।'

चारों पंच समझ गये कि हंस और सागर बहुत अच्छे मित्र हैं और एक दूसरे से अलग होकर बहुत दु:खी हैं। दोनों को अपनी भूल का पछतावा है। अब वे साथ-साथ रहना चाहते हैं। उन्होंने आपस में कुछ परामर्श किया और हंसों को साथ लेकर सागर के पास पहुँचे। 'चारों पंचों ने हंसों का दु:ख सागर को तथा सागर का दु:ख हंसों को सुनाया। दोनों मित्रों ने एक-दूसरे को भरी निगाहों से देखा और लिपट गये।'

उपरोक्त लोककथा कहने के बाद पंच कहेगा- 'पंच भाइयों! जब दो सगे-सम्बन्धी या मित्र आपस में लड़ते हैं और लड़कर अलग हो जाते हैं तो उनका मान सागर और हंस की तरह कम हो जाता है। जैसे सागर को ताल-तलैया और हंसों को सारस-बगुला समझा गया। लेकिन यदि दोनों पक्ष सच्चे मन से अपनी भूल स्वीकार कर लें और पुन: आपस में मिल जायें तो उनकी खोयी हुई प्रतिष्ठा पुन: वापस मिल जाती है। इसीलिए हे पंच भाइयों! मेरे विचार से इन दोनों को अपनी-अपनी भूल मानकर एक हो जाना चाहिए।'

प्राय: यह देखा गया है कि उपरोक्त लोककथा या इसी प्रकार की अन्य लोककथाएँ सुनाते ही झगड़ा समाप्त हो जाता है और दोनों पक्ष आपस में मेल कर लेते हैं। किन्तु यदि मेल नहीं होता तो पंचायत आगे चलती है। कभी-कभी दुष्ट प्रकृति के कुछ पंच दोनों पक्षों में समझौता या मेल नहीं होने देते तथा ऐसी बातें करते हैं जिनसे झगड़ा बढ़े और पंचायत लम्बे समय तक चले। ऐसी पंचायतों में दोनों पक्षों का भारी नुकसान होता है। अत: इससे बचने के लिए कोई न कोई न्यायप्रिय पंच एक ऐसी लोककथा कहता है, जिससे लम्बे समय तक पंचायत न करनी पड़े। प्राय: बार-बार होने वाली पंचायत से बचने के लिए निम्न लोककथा कहते हैं- 'सुनो पंचों, एक गाँव में एक नेक और इज्जतदार धनी सेठ रहता था। वह दिशा मैदान के लिए प्रतिदिन मिट्टी का एक बर्तन अपने साथ ले जाता था। वह इस बर्तन को बहुत सम्हाल कर रखता था। जब वह दिशा मैदान से लौटता तो बर्तन को ऐसे स्थान पर सुरक्षित रख देता कि वह टूटने न पाये। एक दिन सायंकाल का समय था। सेठ अपनी नियमित दिनचर्या के अनुसार दिशा मैदान के लिए गया। लौटने में अँधेरा हो जाने के कारण उसे एक पत्थर की ठोकर लगी और उसके हाथ से मिट्टी का बर्तन गिर कर टूट गया। धनी सेठ ने बर्तन के टुकड़े बटोरे और उन्हें देख-देख कर रोने लगा। उसका रोना सुनकर चारों ओर भीड़ लग गयी। सभी पूछने लगे कि वह क्यों रो रहा है? धनी सेठ और जोर से रोने लगा। वह किसी से कुछ भी नहीं बोल रहा था। तब लोगों ने उससे बहुत पूछा तो उसने बताया कि उसका मिट्टी का बर्तन टूटने के कारण वह बहुत दु:खी है। इसलिए रो रहा है। सभी को उसकी बात सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। वे सोचने लगे कि इतना बड़ा सेठ एक सामान्य मिट्टी का बर्तन टूटने पर रो रहा है। सेठ से आस-पास खड़े कुछ लोगों ने कहा कि वे सेठ के लिए, जितने कहें उतने बर्तन ला देंगे। मिट्टी के एक बर्तन के टूटने पर इतना दु:खी होने की क्या जरूरत? सेठ का रोना धीरे-धीरे कम हो गया। वह एकत्रित हुए सभी लोगों की ओर देख कर बोला- 'भाइयों! ऐसे मिट्टी के बर्तन तो मैं जितने चाहूँ, ले सकता हूँ, लेकिन इस बर्तन के टूटने का मुझे इसलिए दु:ख है कि इसने बहुत समय तक मेरी इज्जत देखी है। अब जो दूसरा बर्तन आयेगा, वह भी मेरी इज्जत देखेगा।'

उपरोक्त लोककथा या इसी प्रकार की कोई अन्य लोककथा सुनाने के बाद पंच कहेगा- 'पंचों! जितने बार पंचायत होगी, उतनी बार दोनों पक्षों की कच्ची-पक्की बातें दोहरायी जायेंगी, जिससे दोनों की बार-बार बेईज्जती होगी। अत: मेरी राय है कि एक ही पंचायत में तुम लोग फैसला कर लो।'

इस प्रकार की लोककथाएँ इतनी प्रभावशाली होती है कि वर्षों तक चलने वाली पंचायतें एक-दो दिन में ही समाप्त हो जाती हैं। मोघियों में इस प्रकार की अनगिनत लोककथाएँ हैं, जो न्याय व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। यह न्याय व्यवस्था वैज्ञानिक ढंग की हो या न हो, किन्तु इतनी आदर्श हैं कि बड़े-बड़े न्यायाधीशों ने भी इसके महत्त्व को स्वीकार किया है तथा इसे सभ्य समाज की वर्तमान न्याय व्यवस्था से श्रेष्ठ माना है।

- परशुराम शुक्ल

अक्कल होरा गोल्या

एक जंगलना गामड़ा में एक जंगलनो राजो रेहतो थो। वो राजा काष्ठे धन, अक्कल तागत षब हथी, तिन्हा कने गोल्यू न हथे। ईन्हे वाष्तर तो गुषाई कन ते माँगतो रेहतो थो कि म्हूने गोल्यू छई जाये। तिन्हे कोई गोल्यू ना छायू तानू राजाना काम करनहारा आष्षा राजाने वलाह की के राजा तू बीज्जो व्याहब करीले।

राजो तिउनी वात षमझी ने बीज्जो व्याहब कर्‌यो। तो मान्छी जोवा में अच्छी हेथी। करता-करता गुषाईए राजा ने षमझी नान्ही रानी ने गोल्यू छायू ने बादना म्होरी रानी ना बी गोल्यू छायू। बोहे गोल्या नान्हा-नान्हा छाता-छाता म्होरा छावे में आया। नान्ही रानी हेथी तो षोचवा लाग्गी के म्हारा गोल्या ने तो राजो ना छाये। म्होरी रानी नू गोल्या से तिन्हू राजो करसी। एही वात षोच्चीन तो नान्ही रानी नो एक षराब मानषो नान्हापन ने जोयो हुओ, तिन्हे चेने रानी रेहती थी। तो मानषा ने राजाने केहीन तिन्हा काम करनहारो। मेहलना में बोलाई लेहदो।

नान्ही रानी नी वात राजो षमझतो थो। नान्ही रानी षराब थी। तीन्हे तो काम करनहारा मानषाने बोलाईन आष्षी वातें केहीन। तानू काम करनहारा केहवा लाग्गो के- 'आपनी राजा ने म्होरा गोल्याने मारी नाषसी तानू थारा गोल्या राजो हुई जायेस।'

आई जोवे तो म्होरी रानी ना गोल्या रात-दिन आपना लूगड़ा उतारीन बीज्जा लूगड़ा पेरीन आपने गामड़ाहाराउने जाईन जोवा करे। जिन्हें कोई काँईं बी दुःख होवे तिन्हें जोवे भाले। आँईं नान्ही रानी नू गोल्यू सूँ करे के गामड़ाहाराउने लुगड़ा बदलीन ठगे, लूटटे ने अच्छी-अच्छी गोन्नीयूने इज्जत लूटटे। म्होरी रानी ने गोल्या ने ये षबर मालम पड़ी जाये। तो जाईन आपना बाब्बा ने षाम्मे केहे के- 'बाब्बा, नान्हो भाई एवा काम करेस।' करता-करता एक दिन सूँ छायो के नान्ही रानी ए मेहलना में काम करनहारा ने बोलायो, आपना गोल्या ने बोलायो के आपनी बेषीन एक वात बाँधी लीन।

म्होरी रानी ने गोल्या ने तिन्हे बी मालुम पड़ी गी थी के नान्ही रानी ने काम करनहारो आज बेषीन कोई वात करसीं। तो म्होरी रानी ने गोल्या सूँ करा के पहले दर से मेहलना में जाईन, लुगड़ा उतारीन, षताईन कोना में बेष्षी गयो। तिन्हा बादना में नान्ही रानी आई और तीन्हू गोल्यू तो बी आयो, काम करनहारो बी आयो। त्रणा जना बेषीन बतलावा लाग्गा के चीम मारसीं आपने राजाने।

तिन्हा ऊप्पर काम करनहारा केहवा लाग्गो- 'मैं आष्षा षूबटाला उने फदीया आह्लीन तोड़ी लेहदा सीं। ते षूबटाला आज राजाना महलना में तानू काम छासो। तिन्हा में राजाने म्होटी रानी ने गोल्या ने बोहू ने काल मार नाषसीं।' एटटी वात केहीन ते षूबटालाउना तो कामकरनहारे तिहूना नाम बी बताला के आय-आय षूबटाला राजा ने मारसीं। तो म्होरी रानीनू गोल्या आष्षी वात षमझीन रयो थो। एटटी वात ते करीन चलाई ग्यो। म्होरी रानी नू गोल्या उठीन आपना बाब्बा कजे जाईन आष्षी वातें केहीन आष्षा षूबटालाउना नाम बी बताला। राजो हथो तो षमझीन, षूबटाला ने हाथे षबर मोकह्ली के आज वैहना छाते आवी जाओ काम करुवाने। आष्षा काम करनहारा केहवा लाग्गा के- 'आज सूँ वात छई गी? सुकवा वैहना छाते बोलाया?'

वैहना में आष्षा जुड़ी गया। जे षूबटाला राजा ने म्होटा गोल्या मारुवा करी रा था ते षूबटालाउना नाम लेईन राजे तिउने बोलाया। राजा केहवा लाग्गो के- 'तुम्ही षूबटाला आच्छो काम करू से तिन्हा वाष्तर म्हूने तुम्हूने

इनाम बाटसे।' राजा आष्ाउने एक-एक लाड़ू आल्लो लुगड़ो आल्लो। तो लाड़ूना में नषानी चिज्जें हर्थीं। आष्ा षूबटालाउने षड़ाई देददी। आईं तो नान्ही रानी और तिन्हा गोल्या ने लाडू ना आल्ला। ते लाडू षाईन आष्ा षूबटाला बेहोष छई ग्या। तानू आष्ा मानषा केहवा लाग्गा- 'राजा आ सूँ वात छई गी?' तिन्हा ऊप्पर राजा आष्ा मनषूने षाम्मे केही- 'आये षूबटाला आज म्हूने और म्हारा म्होरा गोल्या ने मारुवा करी रा था। और मारीन नान्ही रानी ने गोल्या ने राजो करुवा चाहतो थो। एहूना आष्ाउना, नान्ही रानीने तिहूना गोल्या ने धरीन जेलना में घाल्ली दो।' नान्ही रानी केहवा लाग्गी- 'म्हारो सूँ कषूर छे यामें?'

तिन्हा ऊप्पर राजो केहवा लाग्गो- 'जो रानी आपने कने फइ से, तागत से, अक्कल से। मगर थारो गोल्यो से यो त्रणु चीज्जू नू उल्टू काम लेदूस म्हारो म्होटो गोल्यू से ईन्हे त्रणू ना षाच्चो काम लेदूस ईन्हा वाष्तर षाच्चो राजो छावो लाक योच्ज।' 'यो षाच्ची वात से के जो मनष आ त्रणे चीज्जो नो- धन, तागत, अक्कल, ईन्हू काम आच्छो करेषु गुषाईं तिन्हेज कने राषज।'

बुद्धिमान लड़का

जंगल के एक गाँव में एक राजा रहता था। वह धन, बुद्धि और शक्ति सम्पन्न था, किन्तु उसकी कोई सन्तान नहीं थी। वह पुत्र प्राप्ति हेतु सदैव ईश्वर से विनती करता रहता था। बहुत दिन बीत गये, किन्तु राजा की कोई सन्तान नहीं हुई, तब अपने हितैषियों के बार-बार कहने पर उसने दूसरा विवाह कर लिया। राजा की छोटी रानी बहुत सुन्दर थी। राजा के दिन हँसी-खुशी बीतने लगे। कुछ सयम बाद छोटी रानी के पुत्र उत्पन्न हुआ और उसके कुछ समय बाद बड़ी रानी को भी बेटे को जन्म दिया।

दोनों बच्चे साथ-साथ बड़े होने लगे। छोटी रानी के मन में यह चिन्ता थी कि राज्य बड़ी रानी के पुत्र को मिलेगा, मेरे पुत्र को नहीं। ऐसा सोचते-सोचते एक दिन उसने अपने बचपन के साथी को बुलवाया और उसे राजा से सिफारिश करके सेनापति बनवा दिया। इसके पश्चात् उस सेनापति को

अपनी योजना समझाई कि तुम राजा व उसके बड़े लड़के की हत्या करवा दो, जिससे कि मेरा पुत्र राजा बन जाये। इधर बड़ी रानी का बेटा दिन-रात वेश बदलकर प्रजा के दु:ख-दर्द बाँटता और उनकी उन्नति के कार्य करता था एवं छोटी रानी का बेटा वेश बदलकर गाँव वालों को लूटता, डकैती डालता व स्त्रियों की इज्जत लूटता था। बड़ी रानी का बेटा अपने छोटे भाई के इन बुरे कर्मों की शिकायत अपने पिता से करके दु:खी व्यक्तियों को उससे छुटकारा दिलवाता था।

एक दिन छोटी रानी ने अपने महल में अपने पुत्र तथा सेनापति को बुलाकर राजा व बड़ी रानी के पुत्र की हत्या करने की योजना बनायी। बड़ी रानी के बेटे ने उनकी सारी बातें छुप कर सुनी और राजा को बता दी। उसने उन सभी व्यक्तियों के नाम भी राजा को बता दिये जो इस षड़यंत्र में शामिल थे। इसके बाद बड़े बेटे ने राजा को अपनी योजना भी समझा दी। राजा ने सारी बातें समझकर सभी दरबारियों को, सैनिकों को और प्रजा को बड़े सबेरे एकत्रित होने का आदेश भिजवा दिया। जब सारी प्रजा एकत्रित हो गयी तो राजा ने उन सभी सैनिकों का नाम ले-लेकर पुकारा, जो उसकी हत्या के षड़यंत्र में सम्मिलित थे। राजा ने उनमें से एक-एक को बुलाकर लड्डू खिलाये व दुशाले भेंट किये। लड्डुओं में नशीली जड़ी-बूटी मिली थी, अत: खाते ही सैनिक बेहोश होने लगे। जब प्रजा ने राजा से पूछा कि- 'आपने ऐसा क्यों किया?' तो राजा ने सभी प्रजाजनों के सामने कहा कि- 'ये सैनिक मुझे व मेरे बड़े बेटे को मारने की तैयारी किये हुए थे। छोटी रानी हम दोनों को मरवाकर अपने पुत्र को राजा बनाना चाहती थी। रानी व उसके पुत्र को पकड़कर जेल में डाल दिया जाये।' छोटी रानी कहने लगी- 'राजा मेरा क्या दोष है?' राजा ने कहा- 'देखो रानी, हमारे पास जो पैसा, धन व शक्ति है, उसका दुरुपयोग तुम्हारा बेटा कर रहा है। जबकि मेरे बड़े बेटे ने इन तीनों का सदुपयोग किया है, अत: बड़ा बेटा ही सच्चा उत्तराधिकारी है।'

'यह सच है कि जो व्यक्ति धन, शक्ति व बुद्धि का सदुपयोग करता है, ईश्वर भी उसकी सहायता करता है।'

आपना षेतल्डाउना बीज

एक जंगलना में एक जंगली मानषो रेहतो थो। जोवाना में अच्छो हथो। लम्बो-चौड़ो जोरहारो हथो। तिन्हे आष्षी जंगलनी गोन्नी जोता करती थी। तो एव्हार कमनो हथो के गोन्नीउने दष-बीष धाड़ा राषे निकाल देददो। होम करता-करता चेटटाक बरष छई ग्या। बादना में तिन्हें जोईन कोई बी जंगलहारा मानषा आपनी गोन्नी नू व्याहब तिन्हाकू ना करे।

कई बरष बादना में तो गल्ढ़ो छई ग्यो। एक गल्ढ़ी मान्छी हेथी तिन्हो मानषो मरी ग्यो थो। तिन्हे कने बेत्रण गोल्या हथा। तिन्हषू मानषाना व्याहब करि देददा।

तिन्हा बादना में तिन्हे पचाष-षाठ की उमरना में एक गोल्यू छायू। तो गल्ढ़ो जोवे तो तिन्हें दुख छई ग्यो। करता-करता गल्ढ़ो मरी ग्यो। तिन्हू गोल्या ते बीज्जा आगले मानषा ना गोल्या था ते गोल्याना मारे, तिन्हें षतावे। तिन्हो बाब्बो सूँ करो छलावो छई ग्यो। आन्हें वाष्तर छायो के म्हारा गोल्याने मारसीं षतासीं तो मैं तिउने जोईस।

एक दिन सूँ छायो ते बीज्जो बाब्बाना गोल्या था ते षोचवा लाग्गा आ जो म्हारो छा से यो बी आपनो वाटटो माँगसे इव्हषू एक काम करो आपनी ईन्हें कोई बिषनी जड़ी षड़ाईन मारी नाष्षी।

एटटी षोच्चीन जड़ी गोल्याने षड़ाई देददी। ते जंगलना में नददी बेहीरी थी तिन्हा में फेंकीं देददो। आमसे छलावो जो बाब्बो हथो आईन आपना गोल्याने पाड़ीन बाहर लेई आयो। गोल्याने बचाइन तो षोचवा लाग्गो म्हारा गोल्याने होम्मज करीन षताता रेहीस। मैं बीज्जा मानषा ने गोल्या से तिहूने षताई आऊँ।

एटटी षोच्चीन ते आगला मानषा ने गोल्या कने जियो। तिन्हें घरे जाईन गोल्याउने षताया। ते गोल्या उठीन माँ कने जाईन केहवा लाग्गो- 'तो गल्ढ़ा छलावा छाईन आयो थो हमूने षताई रों थो।'

माँ हेथी तो षमझताजषम एक स्याना मानषा ने बोलाई लेददो। स्यानो आईन केहवा लाग्गो आ घरना में थारो मानषो तो आवस। ते केहवा लाग्गो- 'भाई तीन्हू गोल्या तो मरी ग्यो।'

एटटी वातना में आम से जोवे तो गोल्यू चालतू हुवो आवी रो थो। ते दिनूना में पुरषाउने पानी चढ़ाई रा था। हुक्को मेल्ही रा था। ते जेटटी ते जंगलना में गोन्नी हे थी ते बी गल्ढ़ी छई गी थी। तिउना बी गोल्या हथा। ते गोल्या हुक्को मेल्हता था तो जंगली मानषा हुक्को कोहू आवी ने पाच्छो चला जावे। करता-करता छलावा जोई रो। यो आष्षा हुक्का आवे सी पाच्छा सुकवा चलाई जावे सीं? तानू तो स्याने मानषा ने तिन्हा गोल्या ने बोलाईन तिन्हें हाथ्थे हुक्को मेलड़या तो तिन्हें मिल्यो। आग्गल जेटटा बी गोल्या हुक्का मेल्ही रा था ते आष्षा पापना हथा। धरमना एक्कज नान्हा गोल्या हथा। ईन्हा वाष्तर केहीं सी- 'कोई बी मानष होये, आपना षेतल्डाना में पानी घाल्ले से तो तिन्हा काम में आवस।'

अपने खेत का बीज

एक जंगल में एक व्यक्ति रहता था। वह लम्बा-चौड़ा, स्वस्थ और सुन्दर था। जंगल की सभी युवतियाँ उसकी ओर आकर्षित रहती थीं। वह युवक ऐसा था कि किसी भी लड़की से थोड़े दिन सम्बन्ध बनाता और फिर

उसे छोड़ नयी ढूँढ लेता था। इस तरह से कई वर्ष बीत गये। उसकी इस आदत के कारण कोई भी अपनी बेटी का ब्याह उसके साथ करने के लिए तैयार नहीं होता था। धीरे-धीरे वह बूढ़ा हो गया। तब एक बूढ़ी स्त्री, जो तीन बच्चों की माँ थी और विधवा थी, उसके साथ उसने विवाह कर लिया।

पचास वर्ष की उम्र में उसके एक पुत्र हुआ। उसे देखकर बूढ़ा दु:खी रहता, क्योंकि वह बहुत बूढ़ा हो चला था और बच्चा अभी बहुत छोटा था।

कुछ दिनों बाद बूढ़ा व्यक्ति चल बसा। अब उसके लड़के को उसकी पत्नी के पहले पति के लड़के मारने व सताने लगे। बूढ़े की आत्मा को इन सबसे बहुत दु:ख पहुँचता था। वह भूत बन गया और उसने तय किया कि ये तीनों मेरे लड़के को सताते हैं, मैं इन्हें सताऊँगा।

एक दिन बुढ़िया के पहले पति के लड़कों ने सोचा कि यदि यह लड़का जीवित रहा तो हमें इसे भी हिस्सा देना पड़ेगा। अत: कोई विषैली जड़ी खिलाकर इसे मार डाला जाये। इतना सोचकर उन्होंने विष की जड़ी उस लड़के को खिला दी और बेहोशी की हालत में उसे नदी में फेंक दिया। लड़के का पिता, जो भूत बन गया था, उसने तुरन्त आकर लड़के को पानी से बाहर निकाल लिया। लड़का बच गया।

अब बूढ़े ने सोचा कि मैं भी इन्हें जरूर सताऊँगा। इतना सोचकर वह बूढ़ी के पहले पति के लड़कों के पास पहुँचा और उन्हें सताया। लड़के भयभीत हो गये। उन्होंने अपनी माँ से कहा। माँ समझ गयी। अत: वह एक सयाने ओझा को बुला लाई। झाड़-फूँक करने वाले ओझा ने बताया कि- 'तुम्हारा पति यहाँ आता है।' इस पर बुढ़िया ने बताया कि वह भला क्यों आयेगा? उसका बेटा तो मर गया।

बुढ़िया का इतना कहना था कि दूसरी ओर से उसे बूढ़े का बेटा आता दिखाई दिया। वह पितृपक्ष में पुरुषों को हुक्का-पानी दे रहा था।

इधर बूढ़े के साथ की वे सब स्त्रियाँ भी बूढ़ी हो गयी थीं, जिनके साथ बूढ़े ने अपनी जवानी में रासरंग किये थे। उनके बच्चे भी थे। वे सब भी बूढ़े को हुक्का पानी चढ़ा रहे थे, लेकिन बूढ़ा हुक्का-पानी के पास आता था, पर हुक्का-पानी उसके पास आकर वापस लौट जाता था।

सयाना ओझा सब समझ गया। उसने बूढ़े के लड़के को बुलाया और उसके हाथ से हुक्का-पानी बूढ़े को दिलाया। क्योंकि दूसरे जितने भी लड़के बूढ़े को हुक्का-पानी दे रहे थे, वे सब लड़के तो पाप के थे। उनकी माँ बूढ़े की पत्नी नहीं थी। धर्म का बेटा तो वही था, जो उसकी ब्याहता पत्नी से उत्पन्न था।

इसीलिए कहा जाता है कि- 'कोई भी मनुष्य यदि अपने खेत में पानी डाले तो उसकी फसल उत्पन्न होती है। पराये खेत पर पानी डालने के बाद भी उसका कोई अधिकार नहीं बनता।'

माटटीनो चूल्हो

एक गामड़ा में एक म्होरो मानषो रेहतो थो। तीन्हे कने एक माटीनो चूल्डो हथो। तो हंगुवाने जाने तो तिनमें पानी भरीन लेईन जात्तो थो।

एक दिन सूँ छायो मानषा हंगुवाने वाष्तर चूल्डामें पानी भरीन हंगुवाने जियो। तहाँ तिन्हू माटटीनो चूल्डो फूटटी ग्यो। तो म्होरा मान्छी ने केहवा लाग्गे– 'म्हारो माटटीना चूल्डो फूटटी ग्यो।'

म्होरा मानषा घर आईन गुपचाप बेषी ग्यो। रोल्टो बी ना षाये। तिन्ही मान्छी तिन्ही गोन्नी गोल्या ते केहवा लाग्गा– 'सूँ बात छई गी बाब्बा? तूने बीज्जो माटटीनो चूल्डो लेई आ।' तो केहवा लाग्गो– 'म्हूने ना होनू।'

करता–करता एक बे दिन छई ग्या। तिन्हा बादना में गामड़ाना म्होरा मानषा तिन्हें घर आया। आईन तिन्हें केहवा लाग्गा के– 'सूँ वात छई गी? तू सुकवा षाऊँ चे नथी षाई रौ? एक माटटीना चूल्डाना पसाल सुकवा पाऊँ न थी षाई रौ? तून्हे हमीं बेचार चूल्डो लेईं आसीं। वित्तलना ताम्बाना। तू माटटीना चूल्डाना ऊप्पर करी रौ से?'

तिन्हा ऊप्पर म्होरो मानषो केहवा लाग्गो– 'ए वी कोई बात न थी। मैं आन्हें वाष्तर करी रौ से के आटटे दिनूँनी म्हारी इज्जत योहज माटटीनो

चूल्डेने जोई है थी। तिन्हें वाष्तर मै करी रौ से। हवे बीज्जो माटटीनो चूल्डो लाईस तो बी म्हारी इज्जत जोइसे।'

'ईन्हा वाष्तर कैईं से जो मनष आपनी वातने बैचार जगहे लेई जाये तिन्हीं इज्जत न थी रैहती।'

मिट्टी का बर्तन

एक गाँव में एक धनी सेठ रहता था। उसके पास एक मिट्टी का बर्तन था। वह जब शौच के लिए जाता, उसी बर्तन में पानी ले जाता।

एक दिन उसका मिट्टी का बर्तन फूट गया। वह बहुत दु:खी हुआ। उसने खाना भी नहीं खाया। सबने उसे बहुत समझाया कि– 'तुम्हें दूसरा बर्तन मँगवा देंगे। एक जरा से बर्तन के फूट जाने पर रोना अच्छा नहीं।' लेकिन सेठ का दु:ख कम नहीं हुआ।

जब दूसरे लोगों ने उससे इस तरह दु:खी होने का कारण जानना चाहा, तो सेठ ने कहा– 'मैं इसलिए नहीं रो रहा कि मेरा मिट्टी का बर्तन फूट गया। बल्कि इसलिए रो रहा हूँ कि इतने दिनों तक इस मिट्टी के बर्तन ने मेरी इज्जत देखी थी। अब यदि दूसरा बर्तन लाऊँगा तो वह भी मेरी इज्जत देखेगा।'

इतना कहकर सेठ चुप हो गया। 'यह सच है कि जो मनुष्य अपनी बात को जगह–जगह कहता फिरता है, उसकी कोई इज्जत नहीं होती।

पंचनो हुक्को

एक गामड़ा में एक गल्ढ़ो मानषो रेहतो थो। तिन्हा चार गोल्या था। तो सूँ करे करतो षाँझे तिन्हा घरना षाम्में बेषीन आज वालीन हुक्को मेल्हीन पीत्तो रेहे करतो थो। तिन्हें जोईन ओड़पाषना मनषू तेब्बी आईन बेषीन हुक्को पीता रेहता था। आच्छी वातें वतलाईन करीन आपने घरे चाल्ता था।

एक दिन सूँ छायो, चारे गोल्या केहवा लाग्गा के आज गल्दा बाब्बा ने आषा फदीया उठाड़ी देस। लाकड़ाना हुक्काना में। एक दिन आईन गोल्या केहवा लाग्गा– 'बाब्बा, तू आ फदीया ना उठाड़े कर।' एटटी वात केहीन ते आपने घर चलाई ग्यो।

चार्यू गोल्याउनी तिउनी मान्छी आपना मानषाउना केहे के– 'तुम्हारो बाढबो गल्ढ़ो छई ग्यो से बेषो–बेषो फदीया उठाड़ेस।' फिरियेषते वे चारयू आईन केहवा लाग्गा के– 'बाब्बा तू आ हुक्को और लाकड़ाना वाल्जे। एटटा कदीया जोड़ी लेसी आपनी।'

तिउनी वातें षमझीन बाब्बो केहवा लाग्गो– 'अगर मैं हुक्को पिऊँ सू चार ने पिड़ाऊँ सूँ तुहूने षराब लागेस। मैं आज्जु से ना पिड़ानूँ।'

एटटी केहीन उठीन चलाई ग्यो। करता–करता ते चारयू गोल्या आच्छू मानू के फदीया बी बचसीं मान्छी बी आच्छी रेईसीं।

हवें चारयू भाई जुड़ीन फदीया तो कमाई लेददो।

एक दिन सूँ छायो तिउने षेतल्डाहारा मानषा कू लड़ाई छाईगी। वैहना में जोवे तो न्याव बेबी ग्यो। तो न्यावना में चारे भाई फदीया हारा तो हथा अक्कल हारा न हथा। तहाँ पंचूने षाम्में बेबीन बीज्जा मानषो जो हथा तिऊ कने फदू बी ने अक्कल बी एथी। बोहे बलहारा था।

तिउना षाम्में चारे भाईयूनी ना चाल्ली। न्याव हथो तो हारी ग्या। हाराना बादमें जेट्ठा फदू हथा तो उठी ग्या। न्यावना में बीज्जा घरनावी फदीया बी उठी ग्या। चारयू भाईयूनी मान्छी की चिल्लावा लाग्गी। करता–करता एक दिन सूँ छायो के बाब्बा कने आईन म्होटो भाई केहवा लाग्गो– 'बाब्बा, हमारा ऊप्पर म्होरी मुसीबत आवीगीस।'

बाब्बो केहवा लाग्गो– 'एव्ही सूँ वात छई गी?'

म्होटो भाई केहवा लाग्गा– 'बाब्बा, आपना षेतल्डाउना ऊप्पर मनषाकूँ लड़ाई छई गी, न्याव की हारी रा सीं। जेटटा फदीया हथा ते उठी ग्या। तिन्हा वाष्तर बाब्बा तू फिरियेषते आज वालीन हुक्को लेईन वेषी जा। बेषे सूँ चार मनषूँ आवेसूँ तिउने एकलड़ी वात मिलसें।' एटटी वात केहीन बाब्बो केहवा लाग्गो– 'बेटटा, षाच्ची वात से।'

एक भाई हे थो हुक्को लेई आयो। बीज्जा लाकड़ा लेई आयो। एक आज वाल देददी बीज्जो जगह भाली देददी।

बाब्बो फिरियेषत्ते आज वालीन बेष्षी ग्यो। तिन्तें बेषताने जोईन ओड़पाषना मनषू गल्ढ़ाकने हुक्का पीवाने वाष्तर बैषवा मनषू गल्ढ़ाकने हुक्का पीवाने वाष्तर बैषवा लाग्गा। करता–करता होम करीन एक बे दिना ना बाद में एक गल्ढ़ो अक्कलहारो पंच तो बी तिन्हे कने हुक्को पीवाने वाष्तर आई बेष्षो। गल्ढ़ो केहवा लाग्गो– 'गल्ढ़ा पंच हमारे चारे गोल्यानू एक न्याव अटकी ग्यो से। तो टूटवा नथी आवी रो। तिनमें हमीं हारी रा सीं।'

गल्ढ़े आष्षी बातें पंचना षाम्में केहीं। गल्ढ़ो पंच केहवा लाग्गो– 'अबकी षबतें न्याव बेषी तो थारे चारे गोल्याने आ वात केहीन मोकल्जे। यो वात चैने तुम्हारो न्याव टूटी जासे।'

एटटी वात केहीन गल्ढ़ो पंच उठीन चली ग्यो।

वैहनू छायो। वैहना में चारे गोल्याने बोलाईन तिहूना षाम्में गल्ढ़ा पंचनी वातें केहीन। ते चारे भाई सूँ करा ते ही बातें न्यावना में केहीं। ते वातें षमझीन म्होटो नान्हों पंच आष्षा षमझीन चारयू भाइयूने जीतड़ाई देददो। ते जीली ग्या। जीत्ती ने घरे आया। घरे आईन बाब्बा ने षाम्में केहीन के बाब्बा हमीं न्याव जीति ग्या।

'यो हुक्को ने चार पंच षाच्ची वात से। तिन्हें पंच हथियाई करि देददी चोर भाई मिलीन।'

पंच का हुक्का

एक गाँव में एक बूढ़ा आदमी रहता था। उसके चार बेटे थे। बूढ़ा प्रतिदिन शाम को आग जलाकर घर के सामने बैठता व हुक्का पीता रहता था और आने-जाने वालों को भी हुक्का पिलाता था। इस तरह बूढ़ा आदमी बहुत से लोगों से मिलता और आपस में अच्छी बातें कहता-सुनता था।

एक दिन बूढ़े के चारों लड़कों ने अपनी-अपनी पत्नियों का कहना मानकर बूढ़े का हुक्का पीना व पिलाना बन्द करा दिया। बूढ़ा बहुत दुःखी हुआ, लेकिन क्या करता बेटों की बात माननी पड़ी।

इस तरह बूढ़े के हुक्के व लकड़ी के पैसे बचने लगे। चारों लड़के भी खुश कि चलो अब पत्नियों की बातें भी नहीं सुनना पड़ेंगी व चार पैसे भी बचेंगे। धीरे-धीरे कई दिन बीत गये।

एक दिन बूढ़े के चारों लड़कों की खेत के सम्बन्ध में किसी से

लड़ाई हो गयी। सबेरा होते ही पंचायत जुड़ गयी। अब चारों भाई बड़े परेशान। वे पैसे वाले तो थे, पर अकल वाले बिल्कुल नहीं थे। अतः वे पंचायत में हार गये और पैसा भी सब खर्च हो गया। चारों भाई परेशान होकर फिर अपने बूढ़े पिता के पास पहुँचे और कहने लगे- 'बाबा! हम लोगों पर एक भारी मुसीबत आ गयी है।'

बूढ़ा कहने लगा- 'ऐसी क्या बात हो गयी?' बड़ा बेटा बोला- 'बाबा! खेत में लड़ाई हो गयी। हम लोग पंचायत में हार गये हैं। जितना रुपया था, सब खर्च हो गया। आप फिर से आग जलाकर व हुक्का लेकर बैठने लगो। चार आदमी आयेंगे तो कुछ अकल की बात ही मालूम पड़ेगी।'

बूढ़ा कहने लगा- 'हाँ बेटा! यह तो सच है।' इतना सुनते ही एक बेटा लकड़ी, दूसरा हुक्का ले आया, तीसरे ने जमीन साफ की एवं चौथे ने आग जला दी। इस तरह बूढ़े के पास फिर से आदमी आने लगे।

एक दिन बूढ़े के पास हुक्का पीने एक बुद्धिमान बूढ़ा पंच आया। उससे बूढ़े ने पूछा कि- 'पंच, हमारे बेटे पंचायत में हार गये हैं। मामला अटक गया है। बताओ क्या करें?'

इस तरह अपनी सारी स्थिति बूढ़े ने पंच के सामने स्पष्ट की। पंच ने कहा- 'अब की जब भी पंचायत हो तब अपने बेटों को ये बातें बताकर वहाँ भेजना। तुम्हारी पंचायत टूट जायेगी।' दूसरे दिन पंचायत लगी। बूढ़े ने पंच की बताई बातें सिखाकर अपने बेटों को पंचायत में भेजा। चारों भाई जीत गये। जीतकर घर आये। अपने पिता से कहने लगे- 'बाबा! हम न्याय जीत गये।'

इस प्रकार एक हुक्के के कारण पंचों की मदद व अच्छी सलाह से उन्हें लाभ हुआ। चारों भाइयों ने अपने पिता के उस स्थान को, जहाँ वह हुक्का पीता व पिलाता था। 'पंच हथियाई' (पंचों का चबूतरा) के रूप में निर्मित करा दिया।

राकषना चेष

एक गामड़ाना में एक टाण्डू पड़ू थो। एक दिन सू छाएस, एक मनष उठीन वगड़ौ करुवाने वाष्तर जंगलना में जियो। तहाँ एक आँषरी ने मारी लेददो। मारीन एक वड़नू रूषड़ूना छाएड़ा में बेषीन आँषरी वाडडीन, कालजी बुच्ची काढ़ीन, आज वालीन भूँजवा लाग्गो। भुंजीन आपनी देवी ने चढ़ाईन, षावा लाग्गो। एटटाजना में वड़ना रूषड़ना उप्पर से एक राकष निकली आयो तिन्हा केहवा लाग्गो के– 'ईन्ह में से बोटरी म्हूने बी आल्ल।'

तिन्हा ऊप्पर तो मनषा केहवा लाग्गो के– 'मैं तून्हे ना आल्लूं।' मनषा ने एटटी केहवाजषम बोहूनी लड़ाई छावा लाग्गी। मनष देवीनू वरदानी हथो। राकषनी तीन्ही लड़ाई छाता–छाता षान्झ छावाने आई। ना तो रे राकष मरे ना मनष मरे। तो जू मनषाजून हथो तो हारी ग्यो। राकष तीन्हें मारी ले।'

तानू तो केहवा लाग्गो आपनी देवी ने के– 'देवी, म्हूने आ राकष मारी लेस – तू सूँ करी री?'

एटटी षमझताजषम देवी तिन्हा घरना में गून घूघरा एक पिडडी ऊप्पर मेल्हाई रा था। तिन्ह में चल्हू लेवानू कटार हथी। पिडडीना में से कटान निकली मानषा ने षाम्मे केहवा लाग्गी– 'ले तू हाथ लाम्बो कर आ काती लेई करने राकषनी चोटटी वाडडी ले।'

देवी नी वात षमझीने तीन्हें राकषनी चोट्टी वाडडीली। वाड़ताजषम मनषाजून छई ग्यो। तानू केहवा लाग्गो– 'म्हारा मालिक सूँ काम छे? थारो काम मैं करीस।'

मानष केहवा लाग्गो– 'आँषरी पाड़ीन मूड़ना मेल्हीन घर चाल्ल।' जो मनष केहवे थोज काम राकष करूवा लाग्गो। लेईन घरे चाल्लो तिन्हें।

तिन्ही घरहारी केहवा लाग्गी– 'तू कून्हें लेई आयो? तो केहवा लाग्गो आ आपना काम करनहारो से। आपनी जो केहसी तो काम करसी।'' मनषा ने तिन्ही चोटटी वाडडीन जो लायो थो तिन्हें गूनना में घाल्लीन देददो।

हवे तिन्हीं घरहारी राकषने पानी भरूवाने मोकल्ले। हिंडवाने मोकल्ले, ठामड़ा मंजवाड़े। तो राकष हिंडी–हिंडी ने आपनो काम2 करे। ठीकरी बी पाड़ी ले। ठीकरी गोल करीन तिन्हा ऊप्पर मुत्तरना छींटो मारीन रूपा फदीया करी ले। होम करता–करता चेटटाक दिन छई ग्या।

एक दिना घर में कोई बी ना हथो। राकष चेने मानषानो नान्नहो छियो हथो। राकष छियाने केहवा लाग्गो के– 'चाल्ल आपनी पीसिया करीन।' तो छियो केहवा लाग्गो– 'म्हारे कने चेष नथी।'

तिन्हा ऊप्पर राकष केहवा लाग्गो– 'पले गून मेल्हाई रा से तो गूनना में चेष घलाई रा से ते काढ़ीले मैं तून्हें पीसिया करी आल्लीस।'

आईं घरनामें कोई ना हथू। छिया नू बाब्बा झाड़ा मारूवा ने जंगल मा जियो हथू, माँ पानी भरूवाने जी थी। हवे राकष पिडडी काठठे जात्तो तो देवी बाल देत्ती। तीन्हे वाष्तर छियाने पोषलाईन पीसिया नी वात केहीन चेष कड़लायो।

छिया ने गून में से चेष काढ़ीन राकष ने आल्ल देददो। राकष आपनी चोटटी लेईन आपना मूड़ना पे लगाड़ी देददो। लगाड़ताजषम राकष बनी ग्यो ने आष्षा छोकराउने षाई ग्यो। जेटटू टान्डू पड़ू हथो तिन्हा आष्षाउना मारीन पाच्छा चलाई ग्यो। 'जो भुल्ले से तिन्हा घर ना आवा हाल छाएस।'

भूत के बाल

एक गाँव में एक डेरा पड़ा था। उस डेरे में एक आदिवासी परिवार रहता था। एक दिन उस परिवार का मुखिया शिकार करने जंगल गया। वहाँ उसने एक जानवर का शिकार किया। मारकर उसे साफ करके अपनी देवी को चढ़ाया और खाने लगा। जैसे ही वह खाने को हुआ, बरगद के पेड़ से एक भूत निकल आया और कहने लगा कि– 'मुझे भी माँस खाने को दे।'

इस पर शिकारी कहने लगा– 'मैंने शिकार किया है। मैं तुझे क्यों दूँ?' इतना कहते ही दोनों में लड़ाई होने लगी। शिकारी देवी का भक्त था, अतः वह भूत से बराबर लड़ता रहा। लड़ते–लड़ते शाम हो गयी। दोनों में से कोई हटने का नाम नहीं ले रहा था। धीरे–धीरे शिकारी आदमी की शक्ति कमजोर पड़ने लगी। तब उसने अपनी देवी का आह्वान किया और कहने लगा– 'देवी! मुझे यह भूत मारे डाल रहा है। तू क्या कर रही है?'

उसकी इतनी पुकार सुनकर देवी आदमी के घर पर बने अपने सिंहासन से उतरकर वहाँ प्रकट हो गयी और कहने लगी– 'ले तू हाथ लम्बा कर और मेरी तलवार से इस भूत की चोटी काट ले।'

देवी की बात समझकर आदमी ने भूत की चोटी काट ली। चोटी कटते ही वह आदमी के रूप में आ गया और कहने लगा– 'हे मेरे मालिक! तुम्हारा क्या काम है बताओ? मैं तुम्हारी सेवा के लिए तैयार हूँ।'

शिकारी आदमी कहने लगा– 'उठाकर सिर पर रखो और घर चलो।'

इस तरह वह भूत शिकारी आदमी का नौकर बन गया। जो भी काम वह आदमी कहता, भूत वही करता। वह झाड़ू लगाता, बर्तन साफ करता, पत्थर के टुकड़े बीनकर उन्हें अपने मूत्र से रुपये–पैसे में परिवर्तित कर लेता व आराम से रहता था।

एक दिन शिकारी जंगल गया था, उसकी पत्नी कुएँ पर पानी भरने

गयी थी। घर पर एक छोटे बच्चे के अलावा कोई न था। भूत ने अपने भागने का उपाय सोचा।

भूत की कटी हुई चोटी शिकारी ने लापरवाही से देवी के सिंहासन पर रख दी थी। उसे जलाना भूल गया था। भूत ने जब अपनी चोटी रखी देखी तो उसने शिकारी के छोटे बच्चे से कहा– 'चलो हम तुम्हें पीशिया (चिड़िया पकड़ने का फंदा) बना कर दें!' बच्चा कहने लगा– 'पीशिया कैसे बनेगा? मेरे पास बाल तो हैं नहीं।' भूत कहने लगा– 'वह उधर मेरे बाल रखे हैं तुम उठा लाओ, उन्हीं से मैं पीसिया बना दूँगा।'

बच्चा भूत के बहलाने पर बाल उठा लाया। बालों की चोटी भूत ने जैसे ही अपने सिर पर लगाई, वह अपने असली रूप में आ गया। फिर उसने शिकारी के बच्चों व आसपास जो भी थे सबको खाया और चल दिया।

इसीलिए कहते हैं कि जो लापरवाही करता है उसके घर का यही हाल होता है।

माट्टीनू ढ़ील्लू ने पाँदड़ा

एक म्होटो जंगल हथो। तिन्हा में एक माटटीनू ढ़ील्लो ने पीपलानू पांदड़ू रेहतो थो। तिउनी बोहूनी मिलीने रेहता था। आष्षा जंगलना जिनावर तिऊँ कने आईन न्याव कराता था। रेहता-रेहता बहोत दिन छई ग्या। ते बोहे जना जुड़ीन न्याव तो करूवा लाग्गा कम, फदीया कमावा लाग्गा बहोत।

जंगलना जेटरा जिनावर हथा ने आक्षा हाय भरूवा लाग्गा और गुषाईने षाम्मे चिल्लावा लाग्गा।

तिउनी बात गुषाईए षमझी। षमझीन धरती ना पेटना में माटटीनो ढ़ील्लू और पीपला नू पांदड़ू मष्ती करी रू से। तो तिउने मिटावने वाष्तर वायरा ने बोलायो। वायराने बोलाईन केहवा लाग्गो- 'गुषाईं, धरती ना ऊप्पर तू जा, तहाँ माटटीनू ढ़ील्लू, पीपलाना पांदड़ू जिनावरउना षताई रां से। एटटी जोरनू वायरू चाल्ल कि जिनमें पीपलानू पांदड़ू उड़ी पड़ीन, माटटीनू ढ़ील्लू छीं चलाई जाये बीज्जे।'

एटटी वात षमझीन वायरो आईन धरती ना ऊप्पर एटटी जोन्ना चाल्लो तो चालता षम पीपलानू पांदड़ू हेट छई ग्या तिन्ता ऊप्पर माटटीनू ढ़ील्लू छई ग्या। वायरू चाल्लीन-चाल्लीन थाक्की ग्यू पन ते ना उड़ा तहाँ से।

वायरो हथो तो गुषाईना कने जाईन केहवा लाग्गो- 'गुषाईं, मैं जोन्ना वायरू चल्डाओ मगर ते बोहे जना ना हटा।' केहीन बेषी ग्यो।

गुषाईं केहवा लाग्गो पानी ने बोलाईन- 'पानी तू जाईन धरती ना ऊप्पर माटटीनू ढ़ील्लू ने पीपलानू पांदड़ू पे एटटी जोन्ना पानी बरषा के माटटीनू ढ़ील्लू गली जाये।'

एटटी षमझीन पानी धरतीना ऊप्पर आईन एटटी जोन्नू बरषू के माटटीनू ढ़ील्लू तो हेट छई ग्यो ने पीपलाजू पांदड़ू ऊप्पर छई ग्यो। पानी पड़ीन-पड़ीन तिउने ना हटाई षकू।

पानी पाच्छे गुषाईं कने जाईने केहवा लाग्गो- 'गुषाईं, मैं बी जोन्नू बरषायो ते बोहे जना ना हटा।'

गुषाईं केहवा लाग्गा- 'ते बोहे जना मिलीन रेहीस तानू चाल्ले वायरो तो माटटीनू पांदड़ू ऊप्पर छाएस।' ईन्हा वाष्तर पानी ने वायरू बोहूना बोलाईन गुषाईं फिरियेषत्ते केहीन- 'तुम्हीं बोहे जना जाओ ईकट्ठा। ईकट्ठा जाईन पानी ने बरषाओ, वायरा चलाड़ाओ।'

धरती ना ऊप्पर आईन पानी बी ने वायरो जोन्नी-जोन्नी बरषो, चाल्लो। एकट्ठा चाल्लो तानू पांदड़ू जाने छाँ उड़ीने चलाई ग्यो ने माट्टीनू ढ़ील्लू पिघली ग्यो।

ईन्हा वाष्तर केहीं से- 'एक जना ने बै जना षूँ मिली ने रेहे षूँ।' योहज आच्छो से।

मिट्टी का ढेला और पत्ता

एक घने जंगल में मिट्टी का एक ढेला और पीपल का पत्ता रहता था। ये दोनों मित्र थे। जंगल के जानवरों में जो भी झगड़े होते, ये दोनों ही मिलकर उनका निपटारा करते थे।

धीरे-धीरे कई दिन बीत गये। न्याय करते-करते दोनों के मन में लोभ आ गया और न्याय करने की अपेक्षा दोनों पैसा कमाने लगे। इनके इस व्यवहार से जंगल के सभी जानवर बहुत दुःखी हुए और भगवान के दरबार में पुकार करने लगे। जब भगवान को ढेला और पत्ते की हरकतों का पता लगा कि दोनों न्याय के बदले धन कमाने में लगे हैं, तो उन्होंने हवा को बुलाया और उसे पृथ्वी पर ढेला और पत्ता को नष्ट करने हेतु भेजा।

हवा धरती पर आकर बहुत जोरों से चली, लेकिन मिट्टी का ढेला पीपल के पत्ते पर बैठ गया, जिससे हवा उनका कुछ न बिगाड़ सकी। हवा चल-चलकर थक गयी और अन्त में भगवान के सामने सिर झुकाकर खड़ी हो गयी। अब भगवान ने पानी को बुलाया और कहा- 'पानी धरती पर जाओ और तेज बरसो। वहाँ ढेला और पत्ते ने बहुत उत्पाद मचा रखा है।' भगवान का आदेश पाकर पानी भी तेजी से पृथ्वी की ओर बढ़ा और बरसने लगा। जैसे ही पानी तेजी से बरसा ढेले को पत्ते ने ढँक लिया। इस तरह ढेला गलने से बच गया।

पानी भगवान के दरबार में वापस लौट गया और अपनी हार स्वीकार करके चुपचाप बैठ गया।

उन दोनों को पराजित देख भगवान कहने लगे- 'अब तुम एक साथ पृथ्वी पर जाओ और अपना-अपना काम करो।'

धरती पर हवा और पानी एक साथ पहुँचे और चलने व बरसने लगे। हवा के तेज चलने से पत्ता कहीं दूर उड़ गया, वह मिट्टी के ढेले को न बचा सका और तेजी से वर्षा होने के कारण मिट्टी के ढेला गल गया, वह पत्ते को उड़ने से नहीं बचा सका।

इसीलिए कहा जाता है कि- 'एक से दो मिलकर रहें तो लाभ होता है।'

बे अक्कल नो राजो

एक षहरना में एक लूगड़ाधोन हारा रेहता था। तिन्ह कने लूगड़ा लादुवाने वाष्तर एक गधो हथो। गधानू नाम हयू मोती। कई दिनाना बाद तिन्हा गधा भरी ग्यो। भरूवा चैन धोब्बी आपणे मूड़ मुड़ाई लेददो। सुकता मुंडरई लेद्दो के गधा तिन्हो कमाई ने आत्तो थो।

चार-पाँच दिन छई ग्या। तिन्हा बादना में एक मानषो आयो तो केहवा लाग्गो- 'लूगड़ा धोवनहारा, म्हारा लूगड़ा सुकवा ना आल्ला?' तिन्हा ऊप्पर ते केहवा लाग्गा- 'अरे म्हारा कमानहारा मोती हथो, मरी ग्यो, तिन्हा वाष्तर मुंडराई लेददो।' तो केहवा लाग्यो- 'मोती मरी ग्यो से? थारा मोती मरी ग्यो तो मैं बी मूँड मुडराई लीस।' तिन्हें बी जाईन मूँड मुड़राई लेददू।

ओ मानषा बीज्जा म्होटा मानषा कने चाल्लो। म्होटा मानषा पूच्छो- 'तू सुकवा मूड मुड़राई लेददो?' तिन्ह पे म्होटो मानषो केहवा लाग्गो- 'मोती मरी ग्यो से।'म्होत मानषानी वात षमझीने राजो नाउने बोलाईन आपनो मूड़ मुड़राई लेददो।

राजो चाल्लो हवे मेहलना में तहाँ तिन्ही वेषवानी जगेह हथी। तहाँ जाईन बैष्षो। चारयू बगलजा मानषा जोईन केहवा लाग्गा के- 'राजा, आज तू सुकवा मूँड मुंडराई ल्यो से?'

तिन्हा ऊप्पर राजो केहवा लाग्गा के– 'मोती मरी ग्यो से।' राजा ने न्याव बतावनहारो म्होटो पंच ने राजा केहवा लाग्गो– 'तू बी मूंड़ मुड़राई ले।'

तानू तो म्होटो पंच केहवा लाग्गो के– 'राजा, मैं मूंड तो मुंडराई रै मगर एक वात तो वताल मोती हथो कुण?' राजो केहवा लाग्गो– 'म्हूने नथी मालम।' म्होटो पंच पूच्छा– 'राजा, तुम्हें चीम मालम से के मोती मरी ग्यो?'

राजो केहवा लाग्गो– 'म्होटो मानषो से तिन्हें केहीन।' हवे म्होटा पंच केही के– 'तो म्होटा मानषा ने बोलाओ।' म्होटा मानषा ने बोलायो, बोलाईन तिन्हें पूच्छी– 'यो मोती कुण से?' तो म्होटो मानषा केहवा लाग्गो– 'म्हूने नथी मालम म्हारे षाम्मे तो एक नान्हे मानषा ने केही थी।'म्होटो पंच ने नान्हा मानषा ने बोलाओ। तिन्हें पूच्छी के– 'मोती कुण से?' तो केहवा लाग्गो– 'म्हूने बी नथी मालम कुण से। म्हारो लूगड़ा धोनहारा से तिन्हें मालम से।'

हवे से म्होरा पंच ने लूगड़ा धोनहार ने बोलायो तिन्हें पूच्छी के– 'भाई, मोती कुण हथो?' तानू तो लूगड़ा धोनहारा केहवा लाग्गो– 'म्होटा पंच मोती म्हूने कमाई ने षड़ातो थो और कुण हथो।' तिन्ह पे म्होटा पंच केहवा लाग्गो– 'तो हथो कुण?' लूगड़ाधोनहारा केहीन– 'मोती म्हारो गधो हथो।'

आषा मनषू जोत्ता ना जोत्ता रेही ग्या। केहवा लाग्गा– 'गधा ना पषाल राजा, म्होटा मानषो, नान्हा मानषो आषाउने मूंड मुंडराई लेददो।' तिन्हा ऊप्पर म्होटा पंच राजाने केहवा लाग्गो के– 'राजा, थारे केहे से मैं बी मूंड मुंडरई लेददो तो सूँ हाल छातो?'तिन्हा ऊप्पर राजा केही– 'षाच्ची, वात से बिना षोचे-षमझे कांई काम ना करनू चाहने। बिना षोच्चे करे तेषब बिगड़ी जाइए।'

मूर्ख राजा

एक शहर में एक धोबी रहता था। उसके पास एक गधा था, जिस पर कपड़े लादकर वह घाट पर ले जाता था। गधे का नाम मोती था। कुछ दिनों बाद धोबी का गधा मर गया। उसके मरने पर धोबी ने अपना सिर मुड़ा लिया, क्योंकि गधा उसे कमाकर खिलाता था।

गधे के मरने के चार-पाँच दिन बाद धोबी का एक ग्राहक आया और अपने कपड़े माँगने लगा। धोबी ने उसे बताया कि कपड़े समय पर नहीं धो पाया, क्योंकि मेरा मोती मर गया। इसीलिए मैंने सिर मुड़ा लिया।

धोबी की बात सुनकर उसका ग्राहक कहने लगा– 'ठीक है तुम्हारा मोती मरा तो मैं भी अपना सिर मुड़ा लेता हूँ।' वह भी गया और अपने सिर के बाल मुड़वा आया।

धोबी का ग्राहक एक बड़े सेठ के घर काम करता था। जब वह सिर मुड़ा कर सेठ के घर पहुँचा तो सेठ ने उसे पूछा कि– 'तुमने सिर क्यों मुड़वा दिया?' ग्राहक कहने लगा– 'क्या करूँ मोती मर गया था, इसलिए मुड़वाया है।' इस तरह सेठ ने भी मोती के मरने के दुःख में अपने बाल मुड़वा लिए। सेठ प्रतिदिन राजा के महल में जाता था। जब दूसरे दिन वह सिर मुड़ा कर पहुँचा तो राजा ने उससे पूछा कि– 'सेठ तुमने सिर क्यों मुड़वा लिया?' सेठ कहने लगा– 'क्या करूँ महाराज मोती नहीं रहा।'

राजा ने सोचा, मोती इस सेठ का कोई निकट सम्बन्धी होगा। अतः राजा ने भी दुख प्रकट किया और नाई को बुलवाकर अपने सिर के बाल भी मुड़वा लिए।

दूसरे दिन सुबह राजा राजदरबार में पहुँचा। सभी सभासद राजा को देखने लगे। महामंत्री ने राजा से पूछा कि– 'राजा साहब, यह क्या आपने सिर क्यों मुड़वा लिया?'

राजा कहने लगा– 'भाई, मोती मर गया है, तुम भी जल्दी ही सिर मुड़वा लो।'

महामंत्री कहने लगा– 'राजा साहब, मैं सिर तो मुड़ा लूँगा, लेकिन यह तो मालूम पड़े कि मोती था कौन?'

राजा कहने लगा– 'यह तो मुझे भी नहीं मालूम कि मोती कौन था।'

महामंत्री ने पूछा कि– 'आपको कैसे मालूम कि मोती मर गया?'

राजा ने कहा– 'मुझे तो नगर के सेठ ने कहा।'

अब महामंत्री ने नगर के सेठ को बुलाया और पूछा– 'सेठजी, यह मोती कौन था?'

सेठ कहने लगा– 'भाई, यह तो मुझे नहीं मालूम मेरा एक छोटा सेठ है उससे पूछो।'

इस तरह छोटा सेठ बुलाया गया। जब नगर सेठ ने उससे मोती के बारे में पूछा तो उसने भी यही कहा कि– 'मोती कौन था यह तो मुझे नहीं मालूम। मेरे धोबी को मालूम है।'

अब नगर सेठ ने धोबी को बुलवाया। धोबी से पूछा कि– 'मोती कौन था?' धोबी कहने लगा– 'सेठजी, मेरा मोती मुझे कमाकर खिलाता था।'

सेठ कहने लगा– 'वह तो ठीक है पर था कौन?' तब धोबी ने बताया 'हुजूर मोती मेरा गधा था।'

सभी दरबारी एक दूसरे का मुँह देखते रह गये। आपस में कहने लगे– 'गधे के पीछे राजा, नगर सेठ, छोटे सेठ सभी ने सिर मुड़वा लिया।'

महामंत्री ने राजा से कहा– 'राजा साहब, यदि आपके कहने से मैं भी सिर मुड़ा लेता तो मेरी भी कितनी हँसी होती।'

राजा ने अपनी भूल स्वीकार की और कहा– 'सच बात है, बिना सोचे–समझे कोई काम नहीं करना चाहिए।'

अक्कलहारो पंच

एक गामड़ा में अक्कलहारो पंच रेहतो थो। आपना गोल्याने तानू जोवे तिन्हें केहतो थो के– 'छिया दुनियाना में बाहरेनु षोज म्होटो से।'

तिन्हू गोल्या आंई षमझीन आंई निकाल दे वात ने। करता–करता तो अकली पंचना गोल्यू म्होटो छई ग्यू। तिन्हू व्याहब छई ग्या एक गामड़ा में।

व्याहब छाएन बादना में तिन्ही विदा ना छाई थी। बाब्बो केहवा लाग्गो– 'छिया, तू जाईन थारी मान्छीनी विदा कराई ले ओ।'

तो केहवा लाग्गो– 'जाई रौ सूँ।' छिये सूँ करू मोजा, षाँषड़ा, धोती, लूगड़ा–लत्ता पेहरीन फेटटो बान्धीन हाथना में डाँगरीना में फुन्दा कोडडी लगाड़ीन, पान षात्तो चाल्ला बिदा करावा। चालता–चालता बच्चे एक गामड़ पड़ तहाँ दष पाँच पंच बैबीन पंच फैषलो करी रा था। तिन्हा काठठे ई निकलो ने आषा बैषोन जोया ना तो तिन्हे कोई राम–रूमी करी ना, काँई करी। षांषड़ा षम्मैत पंचो ने चैने जाई बैष्यो।

पंच केहवा लाग्गा– 'भाई, तू कुण से?'

तिन्ता ऊप्पर गोल्या केहवा लाग्गो के– 'म्हूने नथी ओटषतो, मैं पला गामड़ानू सूं म्हारो बाब्बा अक्कली पंच से तिन्हों में छियो सूँ।' एटटो केहताषम पान षात्ता जाइ रौ थूकतो जई रो आपने काहे डांगड़ी मेल्ही राष्षी।

तिन्त पे पंच केहवा लाग्गा– 'भाई, तू षोषड़ा पेरीन पंचू ने वच्चे आयो ने डाँगड़ी लेईन आयों, यो बोहे चीज्जें दांडना काबिल से। पंच हथियाई में यो चीष्जे लेईन आवानो न थो। तून्हें डांड आलनो पड़ेस।'

तिन्ह पे छिया केहवा लाग्गो– 'पांषड़ा म्हारा से, डाँगड़ा म्हारा, पान मैं षई रौ से। तू म्हूने सा वात नू डांड आल्लू?' तिन्हा ऊप्पर पंचे केही– 'बिना डांडना तू ना छुटरे।'

एक गल्ढ़ो पंच केहवा लागो– ''थारो डांड एकज वात से। आ एक टोकरू भुषनू रान्डू वटीन आल्ली दे यो थारो डाँड से।'

छियाना षाम्मे एक टोकरो भुष मेल्ही देददो तो केहवा लाग्गो– 'भाई, पंचू मैं भूषनू रान्डू चीम वटीन आल्लीस?' तिन्ह पे एक पंच केहवा लाग्गो– 'तू वटीन ना आल्ले तो थारा कोई अकली पंच होये तिन्हें लेई आ।' छियो केहवा लाग्गो– 'म्हारो बाब्बो से अकली पंच बाब्बा ने लेईन आई रौ।'

ते पंचूने तो म्होटा अकली ने जोन्नो हथो। पंच केहवा लाग्गो– 'आच्छी वात से तू थारे बाब्बा ने लेई आ बोलाईन। पन एक वात से थारो फेटटो, थारी डाँगड़ी आ पंचू ने वच्चे मेल्ही जा।'

तिन्हें फेटटो उतारीन डाँगड़ी मेल्ही पाच्छी चाल्लो। न्हाटो, न्हाटो बाब्बाने काठे जियो। बाब्बो केहवा लाग्गो– 'छिया सूँ छई ग्यो?' गोल्या केहवा लाग्गा– 'पला गामड़ा में आठ–दस मनष बैषा जाना सूँ करि रया था जो मैं तिहूने काठ्ठे बेषी ग्यो। तिन्हा ते केहवा लाग्गो तू डाँड आल्ल। तू षाँषड़ा पेहरीन, डाँगड़ी लेईन सुकवा आयो?' डाँड यो से के एक टोकरी भरीन भुषने रान्डू वटीन आल्ली जा।'

तिन्ह पे बाब्बो केहवा लाग्गो– 'बेटा, मैं तुम्हें केहतो ना हथो के दुनिया रने बारे में षोज माहेत से। चाल्ल मैं चाल्ली रो।' तीन्हे एक चादरो पाड़ो ने लोड छानुवानी छन्नी घाल्ली लेददी।

गामड़े जाईन तो पाँच कदम दूर से पंचूने राम–राम करीन पंच हथियाई में बेषी ग्यो।

अकली पंच केहवा लाग्गो– 'पंचो सूं वात छे? म्हारो छियो तो यानो से तुम्हीं स्याना से जो बी बात छाई म्हारे छिया ने छोड़ी दो। तिन्हू फेरटू ने डाँगड़ी आल्ली दो।' तिन्ह में एक अकली पंच हथो जो षोच्वी र्यो थो आनूज नाम अकली पंच? आ सानु अकली, नागण नाम से। गल्ढ़े पंच षाम्मे बी भुषजो टोकरो भरीन रान्डू वटीना वाष्तर मेल्ही देददो। ने गल्ढ़ा केहवा लाग्गो– 'भाई, पंच थारा छियाने छुड़ावा होये तो आ भुषना रान्डू वटीना आल्ल दे।'

तिन्हा ऊप्पर अकली पंच केहवा लाग्गा– 'ठीक से भाई मैं रान्डू वटीन आल्ल रो मगर तुम आ छन्नी में म्हूने पानी लेई आल्लो।'तिन्हा ऊप्पर गल्ढ़ो पंच केहवा लाग्गो– 'पंच आ छन्नी मा चीम पानी आवसे?' अकली पंचा केहवा लाग्गो– 'भुषनू रान्डू बी चीम छाएस? तुम्ही म्हारा याना छिया षाम्मे भुषनू टोकरू खू, म्हारा बाम्मे बी आल्ली देददो। एनो हिषाब म्हूने आल्लो। एक रूपू काढ़ीन गल्ढ़ा पंचना षाम्मे टीप छोड़ी देददी।'

छोड़ताषम गल्ढ़ो पंच षमझी ग्यो के बाच्ची अकली पंच से। उठीन हाथ मिलायो के– 'भाई हमी थारी अक्कल जोवा चाही रया था। बीज्जी कोई बात न थी। षाच्ची तू अक्कली पंच से।'

बुद्धिमान पंच

एक गाँव में एक बुद्धिमान पंच रहता था। वह हमेशा अपने बेटे को समझाता रहता था कि– 'बेटा दुनिया में बाहरी ज्ञान और व्यवहार का आना बहुत जरूरी है।' लेकिन उसका लड़का पंच की बात एक कान से सुनता और दूसरे कान से निकाल देता।

धीरे–धीरे लड़का बड़ा हुआ। पास के ही एक गाँव में पंच ने उसका विवाह कर दिया। लेकिन गौना नहीं किया।

कुछ दिनों बाद पंच ने अपने लड़के से कहा कि– 'बेटा तू जाकर बहू को विदा करा ला।' लड़का जल्दी ही तैयार हो गया। उसने जूते, मोजे, नये कपड़े पहने, साफा बाँधा हाथ में लाठी ली। उसमें फुन्दने, कौड़ी लगाकर उसे सजाया और पान खाता हुआ अपनी पत्नी को विदा कराने चला।

चलता-चलता एक गाँव के पास पहुँचा। वहाँ गाँव के बाहर कुछ पंच बैठे थे और पंचायत जुड़ी थी। लड़का वहाँ पहुँचा, बिना पंचों से राम-राम किये, जूते पहने ही पंचायत में जाकर बैठ गया। पंचों ने उसे इस तरह बैठे देखकर पूछा कि– 'भाई तू कौन है?'

लड़का कहने लगा– 'मुझे नहीं जानते? मैं पास के गाँव के बुद्धिमान पंच का लड़का हूँ।' इतना कहकर वह वहीं बैठा-बैठा पान थूकने लगा। पंच कहने लगे– 'भाई! तू जूते पहनकर लकड़ी लेकर पंचों के बीच बैठा। यह दोनों चीजों को पंचायत में लाना मना है। तुझे तो दण्ड मिलेगा।'

लड़का कहने लगा– 'जूते मेरे, काठी मेरी, पान मैंने खरीदकर खाया। तू कौन होता है मुझे दण्ड देने वाला?' एक पंच ने कहा– 'बिना दण्ड दिये मैं तुझे यहाँ से नहीं जाने दूँगा।' एक बूढ़ा पंच कहने लगा– 'तेरा बस एक ही दण्ड है। यह एक टोकरा भूसा ले और इसकी रस्सी बना।'

इतना कहकर बूढ़े पंच ने एक टोकरा भूसा लड़के के सामने रख दिया। लड़का कहने लगा– 'पंच भाइयों, भूसे से मैं रस्सी कैसे बना सकता हूँ?' तो पंच कहने लगा– 'यदि तू नहीं बना सकता तो अपने किसी बुद्धिमान पंच को ले आ।' लड़का कहने लगा– 'मेरे पिता बड़े बुद्धिमान पंच हैं, मैं उन्हीं को लेकर आता हूँ।', पंचों को तो बुद्धिमान पंच देखना था। अतः वे कहने लगे– 'हाँ, तू जाकर अपने पिता को बुला ला और अपना साफा और लाठी यहीं रख जा।

लड़के ने अपना साफा-लाठी पंचों के सुपुर्द की और पिता के पास चला गया।

घर पहुँचा तो पिता ने उसे बिना साफे व लाठी के देखा तो समझ गया, जरूर कोई बात है। उसने लड़के से पूछा कि– 'तेरा साफा व लाठी कहाँ है?' लड़का कहने लगा– 'पिताजी, पास के गाँव में आठ-दस आदमी बैठे जाने क्या कर रहे थे, मैं भी वहाँ जाकर बैठ गया, तो कहने लगे तुझे दण्ड देना पड़ेगा। उन्होंने मुझे एक टोकरी भूसे से रस्सी बनाने का दण्ड दिया है।' पिता बहुत दुःखी हुआ। वह कहने लगा– 'बेटा, मैं तुझसे हमेशा कहता था कि दुनिया के रीति-व्यवहार जानना तेरे लिए बहुत जरूरी हैं। खैर, अब जो हुआ सो हुआ, चल मैं तेरे साथ चलता हूँ।' इतना कहकर उसने एक चादर व आटा छानने की छन्नी ली और चल दिया।

गाँव पहुँचकर पाँच कदम दूर से राम-राम करके वह उनके पास जाकर बैठ गया और पूछने लगा– 'पंचों, क्या बात है? मेरा बेटा तो अज्ञानी है, तुम लोग ज्ञानी हो, मेरे बेटे को छोड़ दो। उसका साफा और लाठी दे दो।' पंचों ने बुद्धिमान पंच के सामने भी भूसे की टोकरी रख दी और कहने लगे– 'अगर अपने बेटे को छुड़ाना हो तो इस भूसे की रस्सी बनाकर दे दो।' बुद्धिमान पंच ने कहा– 'ठीक है भाई, मैं अभी रस्सी बनाता हूँ। जरा तुम इस छन्नी में पानी भरकर ला दो।'

बुद्धिमान पंच की बात सुनकर बूढ़ा पंच कहने लगा– 'पंच, इस छन्नी में पानी कैसे आ सकता है?' बुद्धिमान पंच कहने लगा– 'जब छन्नी में पानी नहीं आ सकता तो भूसे से रस्सी कैसे बन सकती है? तुमने मेरे लड़के के सामने यह दण्ड रखा, मेरे सामने भी भूसे की टोकरी रखकर रस्सी बनाने के लिए कहा। मुझे इसका न्याय चाहिए?' उसने एक रुपया निकाल कर पंचों के सामने रख दिया।

बूढ़ा पंच समझ गया कि वास्तव में यह पंच बुद्धिमान है। बूढ़े पंच ने उठकर बुद्धिमान पंच से हाथ मिलाया और कहा– 'भाई, हम तुम्हारी बुद्धि की परीक्षा ले रहे थे। हमारे मन में तुम्हारे लिए कोई बुराई नहीं है। तुम सच में बुद्धिमान हो।'

बात गाँठ जो बल्हेंडो

एक षहरना में एक गामड़ू हथो। तो गामड़ाना में एक नान्हो षो घर हथो। तहाँ एक गल्ढ़ो मानषो ने तिन्हू गोल्या रेहता था। गोल्या व्याहब ने छई ग्या था। तिन्हें व्याहब ने वाष्तर बीज्जा गामड़ा में गोन्नीहारा कने जियो तहाँ तिन्ही व्याहबनी वात निकली। तहाँ गोन्नीहारे एक वात केही के- 'मैं गोन्नी तो व्याहब करी आल्लीस पन म्हारी एक वात से दूल्हा ने चैने गल्ढ़ा मनषू कोई ना आवजो। षाठ मनषू ज्वान-जवान आवजो।'

एटटी बात गोल्याने बाब्बा मानि लेददी। हवे तिन्हू टिक्कू चली ग्यू। तिन्हू करार बँधाई ग्यो। बाँधीन छियाना बाब्बा आपने घरे आवी ग्यो। घरे आईन बात करीन तिन्हें केही के- 'गोन्नीहारे आ वात केही से के गल्ढ़ा मनषू कोई ना आवजो।' तिन्ह पे गामड़ाना गल्ढ़ा केहवा लाग्गो- ''आन में काँई ना काँई बात छे।'' गल्ढ़ा केहवा लाग्गो- ''व्याहब ना काम चाल्लू करू।'' एक लाकड़ानी पेटटी मोटरी करी तिन्हा में एक गल्ढ़ाने बेषाड़ी देददो ने षाठ जना ज्वान बरात में चाल्ले। चालता-चालता गोन्नी घरे पोंहची ग्या। तहाँ म्होटो रूषड़ो कने आषा मनषू बैषी ग्या। गोन्नीहारा व्हनते एक मनष जोवाने आयो के ईन्ह में गल्ढ़ो तो न थी? जोईन चाल्ली ग्यो ने गोन्नी ने बाब्बा से केही देददो के गल्ढ़ो न थी।

तिन्हा बादना में गोन्नी हारा षाठ मनषू ने षावाना वाष्तर षाठ मोकल्या।

तिन्हें आ केही के- 'षाठ बोकड़ा छीं एक-एक बोकड़ा षाठ जना ने षई ल्यो।' ते केहवा लाग्गो- ''ठीक से षई लेसी।'' गोन्नी हारा चलाई ग्या पाच्छा लौटीन। हवे एक जना लाकड़ानी पेटटी कने जाईन गल्ढ़ाने केहवा लाग्गो- 'गल्ढ़ा गोन्नीहारे एक-एक ना वाष्तर षाठ बोकड़ा मोकल्यो हमीं चीम षाँसी?'

तिन्ह पे गल्ढ़ा केहवा लाग्गो- ''जंगलना में जाईन तुम्ही म्होटा-म्होटा लाकड़ा बीनी ने लाईन आज लगाड़ी दो ने आज ना ओलपाष बेषी जाओ, एक बोकड़ा ने मारीन आजना में नाषी दो तो काँई आज में वली जास काँई तुम्हीं षाठों षई लेओ। तो एक-एक करीन नाषता जाओ ने भुंजी-भुंजी ने षाता जाआ। षाठ ना षाठ वई जासो न मालुम पड़ेसी।'' गल्ढ़ानी वात षमझीन ते षाठ बोकड़ा षई ग्या। गोन्नी द्वारा आईन जोई ग्यो के षाठ बोकड़ा षाई ग्यो। तानू तो केहवा लाग्गो के- 'मैं भावरें तानू आल्लीस के तुम्हीं षात गाठ तू बल्हेड़ों लेई आओ।' तानू ने जो हथा केहवा लाग्गा के- 'हमीं ले आओसीं।' एटटा केहीन न्हाटा-न्हाटा लाकड़ानी पेटटी कने ग्यो के- 'गल्ढ़ा गोन्नीहारा तो षात गाँठ नो बल्हेंडो मंगड़ाइस, आ सूँ चीज छे?' गल्ढ़ो केहवा लाग्गो- 'एक काम करू, जंगलना में जाईन जो घाषनू डाभ छाएस एक षोददी ने आंडू म्होटो लेई लो, तिन्ह में षात गाँठें हो तिन्हें लेईन चार जना पाड़ीन गोन्नीहारा घरे जाओस के ले गोन्नीहारा बल्हेंडो लेई आयो।' गोन्नीहारा लेई देददो, लेईन तिन्हूँ भावरें ऊपड़ीं भावरें उपाड़ी करीन लाग्गो जाओ व्याहब छई ग्या हवे घरे जाओ।'

तो लाकड़ाहारी पेटटी में गल्ढ़ो हथो तिन्हें केही के- 'तुम्ही बिदा ना कराइणो, आ केज्जो के हमीं थारी बे बात मानी हवे तुम्हूने एक बात माननी पड़ेस। गोन्नी जी विदाना में जो बान्धी ने ले जाओ सीं तो तू धुआनू रान्डू करीन आपनी गोन्नी चैने आल्ल, तानू विदा कराईन लेई जाईस तिन्हा हमीं ना लेई जाईस। हमीं भावरे पाड़ीन छोड़ी जाईस।'

गोन्नीना बाब्बो षमझीन घबरावा लाग्गा के दुनियाना में धुंवानू रान्डू कठे छातो? आन में कोई ना कोई जरूर गल्ढ़ो मनष दे। तानू केहवा लाग्गो

के– ''एक बात बतालो के तम्हारे में गल्ढ़ो मनष चे ओ स? तो म्हारा षमधी ने छाँ षात्ती राषोस?' एटटाना ऊप्पर लाकड़ानी पेटटी षोल्लीन बताल देददो गल्ढ़ा ने। बोहे षमझी ने मिलीन केहवा लाग्गो। गोन्री ने बाब्बा ए केही– 'षमधी म्हूने माफ करी दो म्हूनी तीन्ही अक्कल जोई रयो थो। एटटी केहीन बोहूनी गला मिलीन व्याहब करीने आपने घरे चाल्ला।'

सात गाँठ की जड़

एक शहर के पास छोटा–सा गाँव था। वहाँ एक बूढ़ा आदमी अपने बेटे के साथ रहता था। बूढ़े का लड़का जब विवाह योग्य हुआ, तो पास के गाँव में उसका ब्याह तय हो गया। लड़की के पिता ने ब्याह की एक शर्त रखी कि बारात में दूल्हे के साथ कोई भी बूढ़ा व्यक्ति नहीं आयेगा, साठ युवक ही बारात में आयें। लड़के के पिता ने शर्त स्वीकार कर ली। विवाह के सब रीति–रिवाज हो गये। बारात की तैयारी हुई तो बूढ़े ने सबसे यही बात कही कि– 'बारात में एक भी बूढ़ा आदमी नहीं जायेगा।' सब सोचने लगे कि इसमें जरूर कोई न कोई चाल है। बूढ़े ने बारात की तैयारी के बाद एक लकड़ी का सन्दूक मँगाकर उसमें एक बूढ़े को चुपचाप बैठा दिया और सबसे यही कहा कि बस साठ युवक ही बाराती हैं, बूढ़ा कोई भी नहीं गया।

चलते–चलते बारात लड़की के घर पहुँच गयी। लड़की वालों के घर से एक आदमी यह देखने आया कि बारात में कोई बुजुर्ग व्यक्ति तो नहीं आ गया। जब उन्होंने देख लिया कि सभी युवक हैं, तब साठ बरातियों के लिए साठ बकरे भोजन के लिए भेजे और यह कहलवाया कि प्रत्येक व्यक्ति एक–एक बकरा खाये। खाना बचना नहीं चाहिए। बाराती बड़े परेशान कि साठ बकरों में से एक–एक आदमी एक–एक बकरा पूरा कैसे खा सकेगा? अतः एक बाराती चुपचाप लकड़ी के सन्दूक के पास गया और उसमें बन्द बूढ़े आदमी से पूछने लगा– 'दादा, लड़की वालों ने खाने के लिए एक साथ साठ बकरे भेजे हैं। हम लोग कैसे खायें?' बूढ़ा कहने लगा– 'जंगल में जाकर तुम लोग मोटे–मोटे लक्कड़ ले आओ और आग जला दो फिर उसके

आसपास बैठ जाओ। एक–एक बकरा आग में भूनते जाओ। कुछ तो भूनते में जल जायेगा, बाकी बचा तुम लोग खाते जाओ। इस तरह साठ के साठ बकरे खा जाओगे, मालूम भी नहीं पड़ेगा।' बूढ़े की बात समझकर बाराती साठ बकरे बड़ी सरलता से खा गये। लड़की वालों ने आकर देखा तो वे सब खा–पीकर आराम कर रहे थे। अतः लड़की वाले कहने लगे– 'भाई, भाँवरों का समय हो रहा है, लेकिन भाँवरे तो तब पड़ेंगी, जब तुम सात गाँठ की जड़ लेकर आओ।' बाराती कहने लगे– 'ठीक है, हम लोग अभी मँगवाते हैं।' बारातियों का एक आदमी फिर लकड़ी के सन्दूक के पास गया और कहने लगा– 'लड़की वालों ने हमसे सात गाँठ की जड़ मँगवायी है। यह क्या चीज होती है?' बूढ़ा कहने लगा– 'एक काम करो। जंगल जाओ, वहाँ घास की जड़ खोदना उसमें सात गाँठ की जड़ मिल जायेगी।'

बारातियों ने ऐसा ही किया। सात गाँठ की जड़ लेकर वे लड़की वालों के घर पहुँच गये। भाँवरे पड़ गयीं, विवाह हो गया। तब लकड़ी के सन्दूक में बन्द बूढ़े ने कहा– 'अब तुम लोग लड़की विदा नहीं कराना। यह कहना कि हमने तुम लोगों की इतनी बात मानी, अब तुम्हें भी हमारी एक बात मानना पड़ेगी।'लड़की विदा कराते समय जो दूल्हा–दुल्हन का गठबन्धन होता है, उसकी डोर धुँए की बनाकर दो, तब हम तुम्हारी लड़की विदा करायेंगे।' अब भाँवरे पड़ गयी हैं, यदि धुँए की डोरी नहीं मिली तो हम लड़की नहीं ले जायेंगे।'

लड़की के पिता ने जब यह शर्त सुनी तो वह घबरा गया। सोचने लगा दुनिया में धुँए की डोरी कहाँ होती है? इनमें जरूर कोई न कोई बूढ़ा व्यक्ति आया है। इतना सोचकर उसने बारातियों से पूछा– 'यह बताओ बारात में बूढ़ा व्यक्ति कौन आया है? तुम लोगों ने हमारे समधी को कहाँ छिपा रखा है?' बारातियों ने लकड़ी का सन्दूक खोला और बूढ़ा निकलकर बाहर आ गया। दोनों समधी गले मिले। लड़की के पिता ने कहा– 'समधी, मुझे माफ कर दो, मैं इन लोगों की बुद्धि परख रहा था।' इतना कहकर दोनों खुशी–खुशी मिले और लड़की विदा कर दी।

काछी राजानु न्याव

एक गामड़ा में एक अक्कलहारो, गल्ढ़ो मानषो रेहतो थो। तो मानषा कने बीजा-बीजा गामड़ा से न्याव लेईन मानषा आवता था। गल्ढ़ा मानषा ना चार गोल्या, एक गोन्नी हथी। गल्ढ़ा मानषा मरूवाने लाग्गा तो एक कागद लिखू। तो कागदना में आपना षेतल्डा, घर, जायदादनु वाहा त्रण पाड़ा। बीज्जा आ लिखू के जोब्बी ईन्हू न्याव करसे तिन्हें षू म्हारी गोन्नी नो व्याहब छाएस।

एटटी केहीन तो कागद लिबीन मेल्ही ग्यो। एक दिन सूँ छायो के गल्ढ़ा मानषा मरी ग्या। मरते चारयू भाई केहवा लाग्गा के- 'आपनी आपना वाटटा पाड़ी लेईन। तिन्ह में कागद मिल्यू। कागदना में आ लिषाई रयू के म्हारा षेतल्डा, जमीन, घर ना त्रण वाटटा छाएस।' ते केहवा लाग्गा- 'अपन तो चारी जना से त्रण वाटटा चीम?'

एटटी वात केहीन चारी जना आपषना में लड़ुवा लाग्गा। लड़ता-लड़ता बहोत देर छई गई। गामड़ाना मानषा जुड़ी ग्या। मानषा केहवा लाग्गा के- 'सा वात पे लड़ी रा से?' तिन्हा ऊप्पर ते केहवा लाग्गा- 'हमीं चार भाई सीं, बाब्बो त्रण वाटटा पाड़ी ग्या सीं तिन्हा ऊप्पर लड़ाई छाई री से।' गामड़ाहारा मानषा केहवा लाग्गा- 'तुम्हीं पंचायत बेषाड़ो, न्याव कराई ल्यो से।'

हवे वैहना में म्होरो वड़ना रूषड़ा हेट पंचायत बेषी गी। नान्हा म्होटा पंच जुड़ी गया। आष्षा पंचूने षाम्में चारी भाई केहवा लाग्गा- 'हमीं सीं चार भाई, बाब्बो त्रण वाटटा करी ग्यो से।' आष्षा पंच केहवा लाग्गा- 'गल्ढ़ाने तो चारे छिया त्रण वाटटा चीम पाड़ा?' तो न्याव टूटेच ना।

करता-करता में एक वाटटे चालता मानषो जाई रयो थो। तिन्हे बुलायो। तिन्हें आईन पंचूने राम-राम करीन बेषी ग्यो। तिन्हे पूच्छी- 'सूँ वात छे भाई पंचे?' पंच केही- 'आ चार भाई सीं ईन्हा बाब्बा वाटटा त्रण करी ग्यो। यो वात हमारी षमझ में नत्थी आवी री।'

तिन्हा ऊप्पर तो केहवा लाग्गो- 'एक गामड़ा में एक काछी राजो से। तिन्हा कने चला जा। तो राजो दूध नू दूध पानी नू पानी करी देस।' वैहना में उठीन चारयू भाई काछी राजा ने गामड़े चैने चाल्ला।

चाल्ता-चाल्ता तो गामड़े पोहची ग्या। गामड़ाने काठ्ठे एक पानी नो कुँओ हथो। कुँआ कने राजानी गोन्नी पानी भरी री थी। तो गोन्नी ने पूच्छवा लाग्गा- 'काछी राजा हाँ रेहसे?' तिन्हा ऊप्पर गोन्नी केहवा लाग्गी के- 'तो राजो जो से आँधो छई ग्यो से।'

एट्टी वात षमझीन आग्गल चाल्ला। आग्गल जोवे तो एक गल्ढ़ी मान्छी मिली। तिन्हें पूच्छी के- 'हाँ, काछी राजो रेहसे?'तिन्हा ऊप्पर गल्ढ़ी मान्छी केहवा लाग्गी- 'तो बेहरो छई ग्योस।'

एट्टी वात षमझीन पाच्छे आग्गल चाल्ला। आग्गल जोवे तो राजाना मेहलना में से दष-पन्दरा गामड़ाहारा मानषा निकलता आवी रा था। ते राजानी वाह-वाह करता आवी रया था। तिन्ह में एक भाई केहवा लाग्गा- 'तुम्हीं छाँ से आवी रा से?'

तिन्ह पे गामड़ाहारा केहवा लाग्गा- 'हमीं एक न्याव लेईन जिया था। षाच्चो न्याव करी द्रियो से राजा मेहलना में बेषो से।'

आग्गल चाल्ला जोवे तो राजो पंच हथियाईना में बेषो थो। ते चारयू भाई और गामड़ाना पंच आषा राजा ने राम-राम करीन। राजो हथो तो पंच हथियाई से उठीन मिठ्ठी बोलीना में राम-राम करीन केहवा लाग्गो- 'के भाई, सूँ काम से हो पड़ी ग्यो? तो तुम्हीं म्हारे गामड़ा आया?'

तिन्हा ऊप्पर चारे भाई और गामड़ाना पंच केहवा लाग्गा के- 'पेहले ईन्हीं वातें पूच्छीं तिन्हा वादना में आपनी वातें केहसीं। ते राजा हमारी एक वातनू जवाब आल्ल। थारा गामड़ा हमी आया। गामड़ा काठे एक कुँओ हथो, वहाँ एक गोन्नी पानी भरी री थी। तिन्हीं हमीं पूच्छीं, तिन्हें आ केही के- 'राजा आँधो छई ग्यो से।' तिन्हा वादना में एक गल्ढ़ी मान्छी मिली तो मन्छीए आ केही के तो बेहरो छई ग्यो से। तो राजा आ वताल थारा गामड़ा में आव्ही वातें केहीस। ईन्हू जवाब आल्ल के यो सुकवा केहीस?'

तिन्हा ऊप्पर राजे जवाब आल्लो के कुँआना ऊप्पर जो गोन्नी मिली थी तो म्हारी गोन्नी से। तो गोन्नी म्हारी ज्वान छई गईसे। मैं तीन्हू व्याहब नथी कराई रौ से, तिन्हा वाष्तर म्हूने आँधो केही रई से। गल्ढ़ी मान्छी जो हेथी तो म्हारी घरहारी से तो म्हूने चेटटाक वषत केहे से के गोन्नी ज्वान छईगी से, मैं षमझतो नथी ते म्हूने बेहरो केही री से।'

एटटी वात केहीन राजो चुप छाई ग्या। आषा जना केहवा लाग्गा- 'आ राजा षाच्चो न्याव करि देसे। तानू ते अपनो न्यावनी बातें राजाने षाम्में केहीं के राजा हमीं चार भाई सीं। बाब्बो हमारा षेतल्डा, जादात त्रण वाटटा करिने मरी ग्या। ईन्हो न्याव लेईन थारा कने आया। हमीं चार भाई सीं त्रण वाटटा चीम छाएस?'

तिन्हा ऊप्पर राजो केहवा लाग्गो- 'यो थारो न्याव जल्दी टूटि जाइस।' एटटी वात केहीन राजो चारयू भाईने लेईन चाल्ला। त्रण भाई घर ना बेषाड़ा ने म्होटा भाई ने बोलाइन, अलग ले जाईन केहवा लाग्गा- 'एक काम कर तू आ कात्ती ले ने त्रणे, भाईनू वाडडीन्हाक।'

तिन्हा ऊप्पर म्होटो भाई केहवा लाग्गो- 'म्हूने येव्हो बातें ना होनो के मैं म्हारा भाईयूने त्रनू ने वाडडीने वाटटो लाऊँ।' तीन्हे राजा ने कात्ती पाच्छें आल्ल दी। एटटी केहीन बीज्जा ने बोलायो, तिन्हें बी केहवा लाग्गो- 'तू त्रणे नू वाडडी दें आष्षाउना मालिक छाएस।' तो बीज्जो केहवा लाग्गो- 'राजा, म्हूने त्रणू ने वाडडी बाटटो ना होना।' हवे तीषरा ने बोलायो। तीषरा केहवा लाग्गो- 'मैं भाइयूने ना वाडडूँ। येव्हो वाटटो म्हूने ना होना।'

हवें नान्हो रेही ग्यो। तिन्हें बोलायो। बोलाईन राजो केहवा लाग्गो- 'त्रणे भाईयूने तू वाडडी ले।' नान्हो भाई राजी छई ग्यो ने केहवा लाग्गो- 'ला कात्ती आल मैं त्रणे वाडडी दूँ।'

एटटी केहताजषम राजो षमझी ग्यो। राजो सूँ करूँ कात्ती पाड़ीन तीन्हें हाथना आलुवाने वजे तिन्ही गर्दन में मारी देददी। तीन्हे मारी नाष्यो। वाडडीने त्रणू भाईयूने बोलाईन केहवा लाग्गो- 'आ तुम्हारो भाई ना हथो, दुष्मन हथो। ईन्हाज वाष्तर आपना षेतल्डा, घर षब त्रण वाटटा करी ग्या गल्ढ़ा। तम्हारो फैषलो छई गयो।' राजानो फैषलो षमझीन, त्रण वाटटा लेईन त्रणे भाई षुसी छायो। तिहूनी बैहन ना व्याहब काछी राजा ने करी देददो।

आव्हो न्याव काछी राजा करे से।

काछी राजा का न्याय

एक गाँव में एक बुद्धिमान बूढ़ा रहता था। वह बड़ा चतुर पंच था। दूर-दूर के गाँवों से लोग उसके पास न्याय कराने आते थे। उस बूढ़े के चार लड़के और एक लड़की थी। जब बूढ़ा आदमी मरने लगा, तब उसने अपनी वसीयत लिखी कि मेरी सारी जायदाद के तीन हिस्से किये जायें। दूसरी बात यह लिखी कि जो जायदाद के तीन हिस्से करने का कारण पता लगाये और न्याय करे, उसके साथ लड़की का विवाह कर दिया जाये।

बूढ़े के मरने के बाद उसके लड़कों ने वसीयत पढ़ी और तीन हिस्सों के कारण चारों लड़ने लगे। कोई भाई, अपना हिस्सा छोड़ना नहीं चाहता था। जब लड़ाई बहुत बढ़ गयी तो गाँव के पंचों ने उन्हें पंचायत बैठाने की सलाह दी।

दूसरे दिन बरगद के पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। सभी पंच एकत्रित हुए। लेकिन किसी की समझ में यह बात नहीं आयी कि चार लड़कों के बीच तीन हिस्से क्यों हुए। बूढ़े ने ऐसा क्यों किया? आखिर हार कर पंचायत बिना न्याय किये ही उठ गयी। पंच उठकर अपने-अपने घर जाने की तैयारी कर रहे थे कि इतने में उधर से एक मुसाफिर निकला, उसने इतने पंचों को इकट्ठे देखकर पूछा- 'पंचों, क्या बात है, आप लोग यहाँ क्यों एकत्रित हुए हैं?'

पंचों ने कहा- 'भाई, ये बेटे हैं चार और इनके पिता ने जायदाद का बँटवारा तीन हिस्से में किया है। यह बात हम लोगों की समझ में नहीं आ रही है।' इतना सुनकर राहगीर कहने लगा- 'एक गाँव है, वहाँ एक काछी राजा रहता है। उसके पास चले जाओ तो वहाँ एक राजा दूध का दूध और पानी का पानी कर देगा।'सबेरे उठकर चारों भाई काछी राजा के गाँव चले। गाँव पहुँचे तो वहाँ पहले उन्हें एक कुआँ मिला। कुएँ पर राजा की लड़की पानी भर रही थी। भाइयों ने लड़की से पूछा- 'काछी राजा क्या यहीं रहता है?'

उनकी बात सुनकर लड़की कहने लगी- 'क्या तुम उसी काछी राजा की बात कर रहे हो, जो अंधा हो गया है?' चारों भाई आगे बढ़े। आगे चलकर उन्हें एक बूढ़ी औरत मिली। उससे भी उन्होंने पूछा कि- 'काछी राजा यहीं रहता है?'

बुढ़िया कहने लगी- 'कौन काछी राजा? काछी राजा तो बहरा हो गया है।'

चारों भाई फिर आगे बढ़े। सामने से दस-पन्द्रह गाँव के लोगों की भीड़ चली आ रही थी। वे सब काछी राजा की जय-जयकार कर रहे थे। उन्हें रोककर एक भाई पूछने लगा- 'भाई, तुम लोग कहाँ से आ रहे हो?'

गाँव के लोग कहने लगे- 'हम एक झगड़ा लेकर राजा के पास गये थे। राजा बहुत अच्छा पंच है। उसने सच्चा न्याय किया है। राजा अपने महल में बैठा है।' चारों भाई महल में पहुँचे। राजा सामने ही पंचायत के चबूतरे पर बैठा था। सभी पंचों व चारों भाइयों ने उससे राम-राम की। राजा ने सबका स्वागत किया और वहाँ तक आने का कारण पूछा।

चारों भाई व पंच कहने लगे- 'हम अपने आने का कारण तो बाद में बतायेंगे। पहले आप यह बताइये कि कुएँ पर पानी भरती एक लड़की मिली तो उसने हम लोगों को बताया कि राजा अंधा है। आगे बढ़ने पर बूढ़ी स्त्री मिली, जिसने कहा काछी राजा बहरा है। तो राजा, यह क्या बात है? आपको उन्होंने अंधा, बहरा क्यों कहा? '

राजा कहने लगा- 'कुएँ पर जो लड़की मिली थी, वह मेरी बेटी है। वह विवाह योग्य हो गयी है और मैं उसके योग्य वर नहीं ढूँढ पा रहा हूँ, अतः उसने मुझे अन्धा कहा। क्योंकि मेरा ध्यान उसकी युवावस्था की ओर नहीं गया है। जो बूढ़ी स्त्री मिली थी, वह मेरी पत्नी है। वह मुझसे बेटी के विवाह के लिए कई बार कह चुकी है। मैं सुनता नहीं हूँ, अतः उसने मुझे बहरा कहा है।'

इतना कहकर राजा चुप हो गया। वहाँ उपस्थित सभी लोग कहने लगे- 'यह राजा सच्चा न्याय कर देगा।' चारों भाइयों ने राजा से अपनी समस्या बताई कि- 'हम चार भाई हैं और पिता ने वसीयत में तीन हिस्से किये हैं। इसलिए हम आपके पास न्याय के लिए आये हैं।'

राजा सब बातें सुनकर कहने लगा- 'तुम्हारा मामला जल्दी सुलझ जायेगा।' इतना कहकर राजा ने तीन भाइयों को तो बैठाया और सबसे बड़े

भाई को अपने साथ लेकर चल दिया। उसे अलग ले जाकर कहने लगा– 'एक काम करो। तुम तीनों भाइयों को इस तलवार से काट डालो और सारी जायदाद के मालिक बन जाओ।'

बड़ा भाई कहने लगा– 'अपने भाइयों को मैं नहीं काट सकता। मुझे ऐसी जायदाद नहीं चाहिए।' इतना कहकर उसने राजा को तलवार वापस कर दी।

अब राजा ने दूसरे भाई को अलग ले जाकर यही कहा कि– 'तुम अपने तीनों भाइयों को इस तलवार से काटकर सब धन–सम्पत्ति ले लो।' दूसरे भाई ने भी काछी राजा का यह प्रस्ताव ठुकरा दिया और तलवार वापस सौंपकर चला गया।

अब काछी राजा ने तीसरे भाई को बुलाया और उसे भी यह लालच दिया कि वह अपने तीन भाइयों को मारकर सब सम्पत्ति पर अधिकार कर ले। लेकिन तीसरा भाई भी अपने भाइयों को बहुत प्यार करता था। उसने कहा– 'राजा, मुझे ऐसा रुपया–पैसा नहीं चाहिये। मैं अपने प्यारे भाइयों को नहीं काट सकता।'

सबसे छोटा भाई अभी बाकी था। काछी राजा उसे भी अलग ले गया और तीनों भाइयों को काटने की बात कही। छोटा भाई सहर्ष तैयार हो गया। कहने लगा– 'लाओ तलवार, अभी काट देता हूँ।' राजा समझ गया कि यही भाई खतरनाक है। उसने तलवार छोटे भाई के हाथ में पकड़ाने की अपेक्षा उसकी गर्दन पर मारी। वह वहीं मर गया।

काछी राजा ने तीनों भाइयों को सारी बात समझाई कि यह तुम्हारा दुश्मन था, अब फैसला हो गया। तीनों भाई अपना–अपना हिस्सा लेकर प्रसन्न हो गये। पिता की वसीयत के अनुसार चारों भाइयों ने अपनी बहन का ब्याह काछी राजा से कर दिया।

अक्कलहारो काम करनहारा

म्होटा जंगलणा में एक गामड़ा में राजो रेहतो थो। तिन्हो एक कामकरनहारो अक्कलहारो थो। तो राजानु आष्षो काम करतो थो। करता–करता चेटटाक दिन छई गया। एक दिन सूँ छायो के राजानी मान्छी ना भाई बाहर देषनू पदीन आयो तो मान्छी राजाने केहवा लाग्गी के– 'राजा, म्हारी एक वात षमझ के म्हारा भाईने कामकरनहारा राषी के, आपनो काम करनहारा हटाई दे।' तिन्हा ऊप्पर राजो केहवा लाग्गो– 'मैं तिन्हें काम करनहारा ने नथी हटाई षकतो। ई तो कामकरनहारो अच्छो से।' राजानी मान्छी एटटी वात षमझीन रिषाई गी, राजो आपना मेहलना में चलाई ग्यो।

षान्झ छाई। राजो लोटीने पाच्छे आयो, आपनी मान्छी ए केहवा लाग्गो– 'सूँ छई ग्यो।' मान्छी हेथी तो रिषाई री। मान्छी केहवा लाग्गी– 'म्हारा भाईने कामकरनहारा राष्षीस तो मैं रोल्टो पानी षाईस।'

राजो केहवा लाग्गो– 'थारा भाई ने कामना लेवाने वाष्तर म्हूने कांई वरू नथी, थारा भाईना में एटटी अक्कल कोई नी।'तिन्ह पे रानी केहवा लाग्गी– 'थारो काम करनहारो एक जंगली, बिना पढ़ू से, म्हारो भाई बाहर पढ़ीने आयूसे तो राजानो आष्षो काम करसे।' तिन्हा ऊप्पर राजो केहवा लाग्गो– 'आच्छी वात से। काल्ट थारा भाई के राज में मोकल्हे, मैं तीन्हें काम पे राषी लीस।'

वैहनू छायो। वैहनाना मे रानी ना भाई राजा कने जियो। आष्षा दरबारना षाम्में राजो केहवा लाग्गा के– 'तू नवो काम करनहारो से। थारा में अक्कल से। तू एक काम कर आ एक फयू लेई जा। एक फदीया ना एक लाष रूपा करीन वैहना में लेई आवजे।' तो राजानी हुकम षमझीन एक फटू लेईन रानी ना भाई चाल्लीन आपनी बैहन कने जियो। बैहन केहवा लाग्गी– 'भाई तुम्हें काम ना ऊप्पर राषी लेददो?' तो केहवा लाग्गो– 'सान्हू काम हथो?' राजा हे थो म्हूने एक फदू आल्लू ने केहवा लाग्गो– 'आ एक फदीया ने लाख रूपा करीने लाओ। तानू मैं तून्हें काम पर राष्षीस। आ वतालजे बैहन आ एक फदीया रने लाख रूपा चीम करीस?' एटटी वात केहीन रानी हथी तो केहवा लाग्गी के– 'षान्झें राजाने आवा दे मैं तिन्हें केहीस।' षान्झ छई गी। घरे राजो आयो। राजाने षाम्मे रानी केहवा लाग्गी– 'म्हारा भाईने आव्हारा कमनू काम आल्लू से? एक फदीयाना में एक दिनना में लाष रूपा चीम करसे?''

एटटी वात केहीन रानी चुप छई गी। बात षमझीन राजा केहवा लाग्गो– 'एटटू तून्हें करनूं हो तो तून्हे काम मिली षकैं।' तिन्हा ऊप्पर रानी केहवा लाग्गी के – 'थारो पलो जो कामकरनहारो से तो कर देसे? 'मैं वैहना में जोईस?' वैहनू छायू। राजाना दरबारना में रानी ना भाई एक फदू पाच्छे आल्ल देददो। राजो केहवा लाग्गो– 'काम करनहारा तू आ एक फदीया ने लाष रूपा करि देस?' काम करनहारो ऊब्बो छाईन केहवा लाग्गो– 'राजा म्हूने एक फदीया ना में से एक दमड़ी आल्ल दे। एक दमड़ी ना में में एक लाष नी षवा लाष करी दीस। ना लाल्लू तो म्हूने तोपनी मोहरे उड़ाई दीज्जो।' एटटी वात षमझीन एक दगड़ी लेईन आपने घरे आई ग्यो।

वैहनू छायू। एक दमड़ीनी तिन्हें षुत्तल षरीदी। षुत्तल लेईन दष–पाँच मानषा लेईन तहाँ जियो जहाँ म्होटा मानषा रेहता था। तो घरूना षाम्मे जाईन ऊब्बो छई ग्यो। एक–एक मानषा ने बुलाईन षुत्तल हाथ मा आल्ल देददी।

चारी मनष चारी बगल आवा–जावा लाग्गा। म्होटो–म्होटो मानषा निकली ने आयो ने केहवा लाग्गा– 'आज सा वात ना वाष्तर षुतल को नपाई रौ से?' एटटी षोच्चीन आब्बा म्होटा मानषा कामकरनहारा ने केहवा लाग्गा– 'सूँ छाई रौ से?'

तिन्हा ऊप्पर काम करनहारा केहवा लाग्गो के– 'राजाने मेहलना से रथ निकलवा में नान्ही वाट से ईन्हा वाष्तर राजाने हुकम छायो में आ वाट म्होरी छानू से।' ते म्होटा–म्होटा मानषा केहवा लाग्गा– 'यो म्होटा–म्होटा घरू आष्षा फूटटी जासी। हमीं तो मरी जाँसी। एव्हारेकमनी वात नथी छाई षकती? के जिनमें वाट नी वाट छाए ने हमारो घरू ना फूटटे?' काम करनहारो केहवा लाग्गो– 'यो वात छई षकत मगर एक वात से। ईन्ह में म्होत फदू लाग से।'

तिन्हा ऊप्पर म्होरो मानषो केहवा लाग्गो– 'तू फदीयाना फिकर ना कर, चेटटाबी फदीया लागे पनहमारा घरू बचाई लो।' तिन्हा ऊप्पर करनहारा केहवा लाग्गो– 'मूने षवा लाष रूपा आल्ल तो आ तुम्हारा घरूनी वाट छोड़ीन बीज्जी वाट हेरीन राजानो वाट हेटी दीस।' तो म्होटा मानष केहवा लाग्गो– 'योहज काम करी दो।' म्होटा मानषा हेथा तो आपना–आपना घरे जाईन फदीया जोड़ीन षवा लाष रूपा करीन कामकरनहारा ने हाथे आल्ल देददा। कामकरनहारा हेथा तो लेईन राजा ने दरबार जाईन राजाने षाम्मे षवा लाष रूपानी नौली मेल्ही देददी। राजाना दरबार में रानी बी बैषी थी। रानी ना पढ़ो–लिखयू भाई बैषो थो। आष्षा मनषू ना षाम्में राजो केहवा लाग्गा– 'जो तो रानी थारा भाई तो एक फदीया नू एक लाव ना करी षकै, आ म्हारो काम करनहारो ने एक फदीया ने दमड़ी लेईन षवा लाष करी देददू। रानी आ वताल के राजनू काम थारो भाई करी षकै के म्हारो आ जंगली मानष?' तिन्हा ऊप्पर रानी केही के– 'षाच्ची वात से राजा। राजने थोज चलाई षकै जो अक्कलहारो। थारो कामकरनहारो अक्कलहारो से षाच्ची अक्कली से।'

बुद्धिमान मंत्री

एक घने जंगल के पास एक राज्य था। वहीं के राजा का मंत्री बहुत बुद्धिमान था। वह राजा का सर्वाधिक विश्वासपात्र भी था। कुछ दिनों बाद राजा की रानी का भाई विदेश से पढ़कर वापस आया। रानी ने राजा से अपने भाई को मंत्री बनाने की इच्छा व्यक्त की। राजा ने कहा– 'मैं इतने बुद्धिमान मंत्री को नहीं हटा सकता?'

रानी की बात जब राजा ने नहीं मानी तो रानी गुस्सा हो गयी। राजा ने जब उससे नाराजगी का कारण पूछा तो कहने लगी– 'जब आप मेरे भाई को मंत्री बनाओगे, तभी मैं अन्न–जल ग्रहण करूँगी, नहीं तो ऐसे ही भूखी प्यासी पड़ी रहूँगी।' राजा कहने लगा– 'रानी तुम्हारे भाई को मंत्री बनाने में मुझे कोई एतराज नहीं है, लेकिन बात यह है कि तुम्हारा भाई बुद्धिमान नहीं है।'

रानी अपने भाई की प्रशंसा करते हुए कहने लगी– 'तुम्हारा मंत्री तो बिना पढ़ा–लिखा जंगली आदिवासी है। मेरा भाई तो विदेश से पढ़कर लौटा है, अतः बुद्धिमान है। वह राज्य का सारा काम सम्हाल लेगा।' रानी की बात सुनकर राजा कहने लगा– 'ठीक है, कल अपने भाई को दरबार में भेजना, मैं उसे मंत्री बना लूँगा।' सबेरा होते ही रानी का भाई राजा के दरबार में पहुँचा। दरबार लगा हुआ था। सबके सामने राजा ने उससे कहा– 'तुम नये मंत्री बनना चाहते हो, तुम्हारे पास बुद्धि भी है, तुम एक काम करो, यह एक पैसा ले जाओ और सबेरे तक एक पैसे से एक लाख रुपये कमाकर ले आओ।'

राजा से एक पैसा लेकर रानी का भाई रानी के पास पहुँचा। उसे देख रानी ने पूछा– 'भाई तुम्हें राजा ने राज्य का काम दिया या नहीं?' रानी का भाई कहने लगा– 'कौन सा काम? राजा ने तो मुझे एक पैसा दिया और कहा– सबेरे तक इससे एक लाख रुपये कमाकर लाओ, तब मैं तुम्हें काम

पर रखूँगा। बहन तुम्हीं बताओ एक पैसे से कहीं एक लाख रुपये कमाये जा सकते हैं?' रानी कहने लगी– 'ठीक है, राजा को आने दो, मैं उनसे बात करूँगी।' शाम हुई राजा महल में आये। रानी फिर गुस्सा बैठी थी। राजा को देखते ही नाराज होकर कहने लगी– 'मेरे भाई को ऐसा काम दिया, जिसे कोई कर ही नहीं सकता। एक पैसे से कहीं एक लाख रुपये कमाये जा सकते हैं?' राजा कहने लगा– 'यदि तुम्हारा भाई यह काम कर सकता हो, तब ही उसे मंत्री बनाया जा सकता है।' रानी ने कहा– 'तुम्हारा मंत्री इस काम को कर सकता है, मुझे यही देखना है।' सबेरे राजदरबार लगा। रानी के भाई ने राजा को एक पैसा वापस दे दिया।

राजा ने अपने मंत्री को बुलाया और उससे कहा– 'क्यों मंत्री तुम एक पैसे से एक लाख रुपया कमा सकते हो?' मंत्री हाथ जोड़कर खड़ा हुआ और कहने लगा– 'राजा, एक पैसा तो बहुत है। मुझे एक पैसे में से एक दमड़ी दे दो। मैं एक लाख की जगह सवा लाख कमाकर ला सकता हूँ। यदि मैं सवा लाख कमाकर न लाऊँ तो आप मुझे तोप से उड़ा सकते हैं।' इतना कहकर मंत्री एक दमड़ी लेकर अपने घर आ गया। सबेरे एक दमड़ी की उसने सुतली खरीदी। सुतली लेकर उसने दस पाँच सैनिकों को अपने साथ लिया और सेठों की बस्ती में पहुँच गया। वहाँ पहुँचकर उसने अपने साथ के सैनिकों की सहायता से सेठों की बस्ती के आसपास की जमीन नापना शुरू कर दी। सेठ–साहूकारों ने जब यह देखा तो वे बड़े परेशान हुए। उन्होंने मंत्री से जमीन नापने का कारण पूछा। मंत्री कहने लगा– 'राजा के महल से रथ निकलते वक्त रास्ता सँकरा पड़ता है, इसलिए यहाँ बहुत बड़ी सड़क बनायी जायेगी।' सेठ बहुत चिन्तित हुए और वे कहने लगे– 'यदि यहाँ सड़क बनेगी तो हमारे बड़े–बड़े भवन टूट जायेंगे। हम सब तो बरबाद हो जायेंगे। कोई ऐसा उपाय नहीं है कि सड़क भी बन जाये और हमारे भवन भी न टूटें।' मंत्री कहने लगा– 'ऐसा उपाय तो है, लेकिन इसमें बहुत रुपया

खर्च होगा।' सेठ कहने लगे– 'उसकी आप चिन्ता न करें। हम लोग रुपया दे देंगे।' मंत्री कहने लगा– 'हमें सवा लाख रुपया दे दो, हम यह रास्ता छोड़ दूसरे रास्ते पर सड़क बना लेंगे।' सेठ कहने लगे– 'ठीक है आप पैसे ले लो और दूसरी तरफ सड़क बना लो।' सभी सेठ अपने-अपने घर गये और रुपये इकट्ठे करके मंत्री को दे दिये। मंत्री ने राजदरबार में राजा के सामने जाकर सवा लाख रुपयों की थैली रख दी।

राजदरबार में रानी भी बैठी थी। सब दरबारियों के सामने राजा ने रानी से कहा-'रानी, तुम्हारा भाई तो एक पैसे से एक लाख नहीं कर सकता, मेरे मंत्री ने एक दमड़ी से सवा लाख रुपये कमाकर दिये हैं। अब बताओ, तुम्हारा भाई ज्यादा बुद्धिमान है या मेरा यह जंगली आदिवासी मंत्री?' रानी लज्जित होकर कहने लगी– 'राजा सच बात है, वही व्यक्ति राज्य चला सकता है जो बुद्धिमान हो। तुम्हारा मंत्री वास्तव में बुद्धिमान है।'

गल्ढ़ो नौहरी

एक म्होटा जंगल हथो। जंगलना में एक गामडू हथो तहाँ एक राजाना मेहल बी हथो। एक दिन सूँ छायो तो मेहलना ऊप्पर रानी निकली वायरो षावना वाष्तर। निकलीन तीन्ही आपनी देहना हाथ गोडडा ऊच्चा वाडीन पाडुवा लाग्गी। एटटा जना में जंगलना में से गल्ढ़ो नौहरी षबते पेहले बोल्लो तिन्हा बादना में जेटटा नौहरी हथा आष्षा बोलुवा लाग्गा। रानी षमझवा लाग्गी के म्हूने जोईन आ जंगलना नौहरी हंषी रा सीं। एटटी षमझीन घर आईन आपना षाल्टा ऊप्पर षुई गी।

थोड़ी देर बादना में राजो तिन्हे कने आयो तो राजो केहवा लाग्गो के– 'आ सूँ वात छई गी रानी? सुकवा रिषाई रीस?' तिन्हा ऊप्पर रानी आ केहवा लाग्गी– 'तू म्हारे वाष्तर काँई काम न थी करतो।' तिन्ह पे राजो केहवा लाग्गो– 'तू के तो सूँ काम छे?'

रानी केहवा लाग्गी– 'काम एटटू से के जंगलना में जेटटा बी नौहरी सीं तू नौहरी ने मराई नाष।' तिन्हा पे राजो केहवा लाग्गा– 'एटटी षी बात पे रिषाई लग्गी? मैं वैहना में मराई दीस आष्षे।'

वैहनू छायू, जेटटा राजाना काम करनहारा हथा, शिकार करनहारा

हथा तिन्हू आषाउना बोलाईन राजा केहवा लाग्गा– 'जेटटाबी नौहरी सीं आषाउना धरीन लाओ।'

राजाना हुकम षमझता षम कामकरनहारा जाईन नौहरीनू धरी लाईन। षांझ छई गी। एक कामकरनहारा आईन राजाने केहवा लाग्गा– 'राजा आषा नौहरी धरी लायासीं।'

राजा हथो तो उठीन नौहरीने कने आयो तो भराई देददो। बीज्जा दिन रानी सूँ करी आपना मेहलना ऊप्पर फिरी वायरो षावाना वाष्तर। फिरिये षब नौहरी बोलवा लाग्गा। रानी हेथी तो फिरियेषत्ते रिषाई न घरना में जाईन षाटपाटी लेईन षुई गी। फिरिये राजो आईन केहवा लाग्गो के– 'हवे रानी सूँ छई ग्यो?' तिन्हा ऊप्पर रानी केहवा लाग्गी– 'मैं अन्न पानी तानू षाईस के तू आब्बा नौहरी नू भराई दीस।' फिरिये राजा तिन्ही वातो ना मैं आवी ग्यो। फिरिये कामकरनहारा बोलाईन राजा हुकम आल्ली के आष्षा नौहरी ने धरी लाओ।

कामकरनहारा जंगल जाईन आषा नौहरी नो धरी लायो। फिरिये पूच्छवा लाग्गा राजा के– 'आवी ग्या षब नौहरी?' तिन्ह पे षब नौहरी केहवा लाग्गा– 'गल्ढ़ो जौहरी गुषाईने घरे जियोस ते ना आयो।' षान्झ पड़े जोवे तो आम से गल्ढ़ो नौहरी हचकातो आवी ग्यो। फिरिये पूच्छो राजा के– 'गुषाईं घरे सूँ छायो?'

तिन्हा ऊप्पर गल्ढ़ा नौहरी केहवा लाग्गो– 'गुषाई दुषी छई रौ थे के धरती ना ऊप्पर झुठठा मनष बढ़ी रा से।' तिन्ह पे राजो केहवा लाग्गो– 'झुठठा मनषू तो दुनिया में नथी। होम चीम गुषाईं ने केही।' गल्ढ़ो नौहरी केहवा लाग्गो– 'गुषाईंए आ केही से के जो मनष आपनी बात केहीन बदली जाये, तिन्हें झुठठो केहे से।'

तिन्हा ऊप्पर राजो षोचवा लाग्गो नौहरीना कान्ह में छोड़ाई देददा था। आज पाच्छे पकड़ाई देददा तो मैं झुठने मनष छाएस। तिन्हा वाष्तर नौहरी नो छोड़ी दूँ। हवे गल्ढ़ो नौहरी ने जस्ते षम एक बात आ केही के– 'मान्छी नी जात नी अक्कल आच्छी हो तो पाल लेनू चाहिये ने षराब हो तो बात ने ना पाड़नू चाहिये ने काती के वाड़ीन पाड़ीन चाहिये।'

एटटी वाट केहीन गल्ढ़ो नौहरी आष्षाउना नौहरी ने लेईन जंगलना में चलाई ग्यो। राजो हथो तो रिषाईन हाथणा में कात्ती लेईन रानी कने जियो के आज रिषाई तो मैं तिन्हें वाडडी देईस। राजानी वातें रानी ने षाम्में पेहलेज जाईन कोई केही देज्जी। राजो आयो। आवताणषम रानी हंषवा लाग्गी। राजो बी कात्ती फेंकीन हंषवा लाग्गो।

ईन्हा वाष्तर केंहीसीं के– 'कोई वात करू पन मान्छीनी अक्कलना मैं ना चाल्लो।' गल्ढ़ा नौहरीनी आपनी जातहारा ने बचाई लेददो।

बूढ़ा सियार

घने जंगल के पास एक राजा का राज्य था। एक दिन राजा की रानी खुली हवा में टहलने के लिए महल की छत पर गयी। छत पर टहलते-टहलते उसने हाथ ऊपर करके अँगड़ाई ली, इतने में जंगल से एक सियार के बोलने की आवाज उसे सुनाई दी। एक सियार के बोलने के बाद सभी सियार चिल्लाने लगे। रानी समझी कि सियार उस पर हँस रहे हैं, अत: वह गुस्सा होकर महल में आकर चुपचाप सो गई।

शाम हुई जब राजा महल में आया तो रानी गुस्से में चुपचाप पड़ी रही। राजा ने पूछा– 'रानी यह क्या बात है, तुम गुस्सा क्यों हो?' रानी कहने लगी– 'राजा, आप मेरा बिल्कुल ध्यान नहीं रखते, न ही आप मेरा कोई काम करते हैं।' राजा कहने लगा– 'तुम कहो तो, तुम्हारा ऐसा कौन सा काम है जो मैं नहीं कर सकता।'

रानी कहने लगी– 'बस इतना सा काम है कि आप जंगल के सब सियारों को मरवा दीजिये।' सबेरा हुआ। राजा ने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि– 'शिकारियों से कहकर सब सियारों को पकड़वा कर मेरे सामने हाजिर किया जाये।'

राजा का आदेश सुनते ही सैनिक गये और शाम तक सभी सियारों को पकड़ लाये, बस एक बूढ़ा सियार नहीं आया। राजा ने जब बूढ़े सियार के न आने का कारण पूछा तो सब सियार कहने लगे– 'महाराज, वह सियार तो भगवान के दरबार में गया है, आता ही होगा।' थोड़ी देर में बूढ़ा सियार भी आ गया। राजा ने उससे पूछा– 'क्यों तुम भगवान के घर गये थे?'

बूढ़ा सियार कहने लगा– 'राजा साहब, मैं रोज सबेरे भगवान के दरबार में जाता हूँ और शाम को वापस आ जाता हूँ।' राजा पूछने लगा– 'आज भगवान के घर में क्या बातें हुई?'

बूढ़ा सियार कहने लगा– 'भगवान बहुत दुःखी हैं। वे कह रहे थे, इस धरती पर आदमी कम होते जा रहे हैं और स्त्रियों की संख्या बढ़ती जा रही है।' राजा ने कहा– 'यह बात कैसे सम्भव है? यहाँ तो स्त्री पुरुष बराबर हैं।'

तब बूढ़ा सियार कहने लगा– 'राजा जी, भगवान कह रहे थे कि जो आदमी औरत की बात मानता है, उसे स्वर्ग में स्त्रियों में गिना जाता है।' इतना सुनकर राजा सोचने लगा कि मैं इन सब सियारों को स्त्री का कहना मानकर ही तो मरवा रहा हूँ। यह भी गलत है। मेरा नाम भी स्त्रियों की श्रेणी में रखा जायेगा।

राजा ने तुरन्त आदेश दिया– 'सब सियारों को छोड़ दिया जाये, ये कोई नुकसान नहीं करेंगे।' रानी समझी कि राजा ने सब सियारों को मरवा

दिया। अतः रानी दूसरे दिन फिर महल की छत पर टहलने गयी। सियारों ने फिर चिल्लाना शुरू कर दिया। रानी को बहुत गुस्सा आया, वह चुपचाप आकर लेट गयी।

राजा के आने पर रानी वैसे ही गुस्सा बैठी रही। जब राजा ने बहुत मनाया, नाराजगी का कारण पूछा तो रानी कहने लगी– 'राजा जी, अगर आप आज सियारों को नहीं मरवायेंगे तो मैं अन्न–पानी नहीं ग्रहण करूँगी।'

राजा फिर रानी की बातों में आ गया। राजदरबार में उसने फिर आदेश दिया कि– 'शाम तक सभी सियारों को पकड़ लाया जाये।' शाम तक तब सियार तो इकट्ठे हो गये। बस वही एक बूढ़ा सियार देर से आया। राजा ने उससे पूछा– 'आज भगवान के दरबार में क्या चर्चा हुई?' बूढ़ा सियार कहने लगा– 'आज भी भगवान बहुत दुःखी हो रहे थे। वे कह रहे थे कि धरती पर झूठे मनुष्यों की संख्या बढ़ रही है।' राजा आश्चर्य व्यक्त करते हुए बोला– 'यह बात कैसे हो सकती है? यहाँ तो कोई झूठ नहीं बोलता।'

बूढ़ा सियार अपनी बात समझाते हुए कहने लगा– 'भगवान ने यह कहा है कि जो अपनी बात कहकर बदल जाता है, वह भी झूठा माना जाता है।' अब राजा सोचने लगा– 'सियारों को मैंने पहले छुड़वा दिया कि इन्हें मारना नहीं और आज मैंने इन्हें मरवाने के लिए फिर पकड़वा लिया, अतः मैं झूठा हो गया। मुझे इन सब को छोड़ देना चाहिए।' इतना सोचकर उसने सब सियारों को फिर मुक्त करवा दिया।

जाते–जाते बूढ़ा सियार राजा से कहने लगा– 'भगवान ने एक बात और कही कि यदि स्त्री अच्छी बात करे, उसकी बुद्धि अच्छी हो तो ही उसे रखना चाहिए, यदि खराब बात कहे तो उसकी बात कभी नहीं मानना चाहिए और यदि फिर भी वह अपनी बात मनवाने की जिद करे तो उसे तलवार से काट देना चाहिए।' इतना कहकर सब सियारों को साथ लेकर

बूढ़ा सियार जंगल चला गया। इधर राजा गुस्से से भरा हुआ हाथ में तलवार लिए रानी के महल की ओर चला कि यदि आज रानी ने जिद की तो उसे काट दूँगा। राजा की स्थिति के बारे में किसी ने रानी को पहले ही चेतावनी दे दी कि राजा तलवार लिए आ रहा है।

राजा जैसे ही रानी के महल में आया, रानी हँसने लगी। रानी को प्रसन्न देखकर राजा भी तलवार फेंककर हँसने लगा। इसीलिए कहा जाता है कि कोई काम करो तो बुद्धि से करो।' बूढ़े सियार ने इस तरह अपनी जाति को संकट से बचाया।

हुषियार मान्छी

एक गामड़ा में राजानू मेहल हथो। तिन्हे काष्ठे एक गरीब मनष रेहतो थो। एक दिन आव्हो समै छायो के मेहलना में से राजानी गोन्री निकलीन घूमवाने जाई री थी। तिन्ही नजर गामड़ाने गरीब मानषूना ऊप्पर पड़ी। तिन्हे जोईन केहवा लाग्गी के आ मानषो तो बहोत अच्छो से आन्हा में अक्कल छे के जाने नथी? ईन्ही अक्कलनी म्हूने जोनूसे। तिन्हे आपनी बान्दी केही के– 'ले आ मानषू ने षाम्मे एक गड़ुवो भरीन पानी रड़काई दे।' बान्दी ने पानी भरीन रड़काई देददो ने नाष्षी गी।

पानी ने जोईन मानषो आपनी मान्छी ने आईन केहवा लाग्गो के– 'आज जाने सूँ छायो से पली मेहलनी गोन्री म्हारे षाम्में उतारो करी गईस।' मान्छी पूछवा लागी– 'सूँ करी गईस?' तिन्ह पे तिन्हे केही के– 'एक गड़ुवो पानी भरीन म्हारा षाम्मे रड़काई गईस।' मान्छी केहवा लाग्गी– 'थारा षाम्में उतारो नथी करो तूहूने नद्दीना घाटना ऊप्पर बुलाई गईस। तू वैहना में तहाँ चलो जाज्जै।'

वैहना में उठीन नद्दीना घाट पे जियो तहाँ जोवे तो राजानी गोन्री मिली गी। जोईन तिन्हें केहता लाग्गी– 'आवी तो ज्यो बान्दी एक काम करू, एक अनार पाड़ीन मेल्ल दे षाम्मे।' बान्दी अनार मेल्ही ने नाष्षी गी। फिरिये जाईन मान्छी ने केहवा लाग्गो के– 'हवे तो षाच्ची उतारो करी गी म्हारा षाम्मे अनार

मेल्ही गी।' तिन्हा ऊप्पर मान्छी केहवा लाग्गी– 'तिन्हें उतारो न थी करो तून्हे तो अनार बागना में बुलाई गईस। वेहना में जाईन जोज्जे। अनार बाग ना मिलीस गोन्नी।' वैहना में जाईन जोयो तो गोन्नी अनारबाग ना मिली गी। राजानी गोन्नी केहवा लाग्गी– 'यो है अकली। तिन्हें सूँ करू के बान्दी ने केहीन के ईन्हा षाम्में एक रान्डू नाषी दो।' रान्डू नाष्षीन बान्दी नाष्षी थी।

तानू आवीने केहवा लाग्गो के– 'राजानी गोन्नी मिली थी पन हवे तो म्हारो ऊप्पर उतारा करीन जाईस।' मान्छी केहवा लाग्गी– 'सूँ बात छई। वात तो वताल?' तो तिन्हे केहवा लाग्गी– 'तून्हे तो आपना मेहलना में बुलाई गईस। तिन्हा महलना पसाल जाईन देषणो तून्हे रान्डू पडू मिलीस। रान्डू धरीन ऊप्पर चढ़ी जाज्बो।' बैठना में जियो तो ऊप्पर चढ़ी ग्यो। राजानी गोन्नी ने षुसी छाई के षाच्ची अकली से यो तो। ते बोहे जना एक षाल्टा पे बैषा। हवे राजाना षूबटाला हथा तो मेहलना में चाल्ला करीराथा। केहवा लाग्गा– 'आ रान्डू सुकवा पड़ूँ से। राजानी गोन्नी कने मानषो जियो से।' तहाँ जाईन जोवे तो राजानी गोन्नी ने मनषा बोहे जनाना षाल्टा सम्मेत धरी लेददो। धरीन बोहूने जेल्ला में घाल्ली देददो।

वैहना छायू ने राजाने षबर गोकल्ली। एटटी केहीन स तो षूबटाला बन्द करीन षिया ने तो राजानी गोन्नी एक तमाचो षेच्चीन मानषा के मारी ने केहवा लाग्गी– 'एटटी अक्कल तो तूहूने हथी कै तू म्हारी सब बातें षमझतो थो ते रान्डू पाड़ीन ऊप्पर सुकवा न करि लेददू?' तानू तो मानषा केहवा लाग्गो– 'मैं न थी अकली। अकली तो म्हारी घरहारी से तो केहीन कराती थी षब।'

राजानी गोन्नी केहवा लाग्गी– 'हवे वैहना में राजाने षाम्में वात छाएस। तिन्हें आपनी बान्दीने बोलाई ने केही के आ जो मानषो से ईन्हा घरना षाम्में जाईन तू बै बात केहजे।' बान्दी जाईन केहवा लाग्गी– 'जो अकली हो तो षमझी लेज्जो मुण्डो ना दियो छुट्टो चाल्लो फिंडी रयो थो तो जेलना मा बन्द छई ग्यो से। तिन्हें छुड़ानों हो तो छुड़ाई लेज्जे, वैहना में फाँषी लगी जाईस।' एट्टी वात षमझीन अकली मान्छी सूँ करू के आच्छा लुगड़ा पेहरीने नषाना लाडू

करीर षूबटाला कने चाल्ली। तहाँ जाईन केहवा लाग्गी– 'म्हारा गामड़ा में षुसी छाई तिन्हा वाष्तर आषा गामड़ाउना लाडू षड़ाई री सूँ।' आषा षूबटाला लाडू षाताषम नषा में छई ग्या। मान्छी षन्षन्तीना में जाईन आपना मानषा ने राजानी गोन्नी ने छोड़ीन। राजानी गोन्नीना लुगड़ा हथा ते आपन पेहरी लेददा ने आपना लुगड़ा राजानी गोन्नी ने आल्लीन केही के तू– 'षन्षन्तीना ते निकली जा।' राजानी गोन्नी निकलीन आपना मेहलना में चाल्ली रातीरात।

म्होटो षूबटाला जाईन राजा ने केही आयो के– 'राजा थारी गोन्नी ने एक गामड़ावा मानषा तिन्हा मेहलना ऊप्पर धराइस षन्षन्ती में बान्धी गयोसे।' राजा केहवा लाग्गो– 'चाल्ल तू चीम केही रौ से?' आईन जोवे तो राजानी गोन्नी तो मेहलना में षुई री से। तो राजो केहवा लाग्गो– 'म्होटो षूबटाला तू म्हारी गोन्नी ना ऊप्पर चीम माटटी नाष्षीस?' म्होटो षूबटाला केहवा लाग्गो– 'राजा साहब, मैं षाच्ची केही रौ से म्हूने आँषूनो जोयो थो के थारी गोन्नी ने गामड़ाना मानषू चैने हथो।' तिन्हें बादना में षनषन्ती कने म्होटा षूबटाला राजाने लेईन चाल्लो। तहाँ जाईन जोवे तो एकज षाल्टा ऊप्पर मान्छी ने मानषा बँधाइने पड़्या था। राजा केहवा लाग्गा– 'आ सूँ चीज से?'तो गामड़ावा मान्छी मानषा केहवा लाग्गा– 'राजा हमूने गर्मी लागी री थी तिन्हें वाष्तर हम षाल्टो नाषीने बाहर षुई रौ से तो थारो षूबटालो आईन म्हूने षाल्टा षमैत षनषन्ती में नाष्षी देददो। राजा हमी तो मान्छी मानषो से।' तो षूबटाला केहवा लाग्गो– 'राजा साहब, आ चीम बात छई गी?' राजाने म्होटा षूबटालाउने डाँटीन मान्छी मानषा ने छुड़ाई देददी। ते आपने घरे आवी ग्या। घरे आईन तो राजानी गोन्नी पे बात निकली के म्होटो षूबटाला ने राजानी गोन्नी ने एक मानषा ने धरो हथो। यो आषा गामड़ा में छावा लाग्गी तो राजा हे थो आषा ने बोलाईन केहवा लाग्गो– 'सूँ बात छे भाई?'

तिन्हा ऊप्पर गामड़ाहारा केहवा लाग्गा– 'थारी गोन्नी पे बात निकली, थारी गोन्नी ने गोलाना षम सी षम आल्ली तो षाच्ची।' आष गामड़ा में ड़ोंडी पिटाई देददी के– 'राजानी गोन्नी नी षम सीं, काल वैहना में षम लेईस।'

मान्छी थी अकली। मान्छी नी षमझ में आवी गी। तो केहवा लाग्गी– 'राजानी गोन्नी धराई गी। षम षासे झुठठो तो मरी जासे। ईन्हा वाष्तर एक काम कर– तू एक षादू छई जा। छईन वैहना में जोत्तो रेहजेके राजानी गोन्नी षम षावा जाये तानू तिन्हे वगलना में निकलीन तिन्ही हाथ मारीन केहजे राजानी गोन्नी तू षम षावा तो जई री पन षाददूनी भिष्षा तो आल्ली जा। आषा मनषू ने षाम्में छीज्जे ताने।' आष्षा मनषू जोई रा था के षाददू ने राजानी गोन्नी ने छी भिष्षा माँगी रौ से।

राजानी गोन्नी अक्कलहारी हथी। तिन्हें षमझी गी के थोज मानषो से। तिन्हें गोलानू षम षई री कि आ जो षाददू जई रौ से ईन्हें म्हारी देह छियाई से बीज्जा कोई मनष ने देही छिवाई से तो गोलाना षम म्हारी देही मा आज बली जा।' हुषियार मान्दी मानषाए बचाई लेददो ने राजा नी गोन्नी बी बचाई लेददी।

बुद्धिमान स्त्री

एक राज्य में राजा का महल था। उसके पास एक गरीब आदमी की झोपड़ी थी। एक दिन राजा की राजकुमारी टहलने के लिए महल से निकली तो उसकी नजर गरीब आदमी पर पड़ गयी। राजकुमारी को पहली नजर में वह युवक बहुत अच्छा लगा। राजकुमारी अपनी दासी से कहने लगी– 'यह आदमी देखने में तो बहुत अच्छा है, पता नहीं इसमें अकल है या नहीं? मैं आज इसकी परीक्षा लूँगी। दासी तुम एक लोटा पानी इस युवक के सामने जमीन पर डाल आओ।' दासी जमीन पर पानी डालकर लौट गयी। युवक ने अपने सामने उसे पानी डालते देखा तो घबरा गया। घर जाकर वह अपनी पत्नी से कहने लगा– 'आज न जाने क्या बात है, पास के महल की राजकुमारी मुझ पर उतारा कर गयी।' युवक की पत्नी कहने लगी– 'कैसा उतारा कर गयी?' तब युवक ने दासी द्वारा लाह्यटा भर पानी डाले जाने की बात बतायी। पत्नी ने कहा–'उसने तुम्हारे सामने उतारा नहीं किया है। वह तो तुम्हें नदी के घाट पर मिलने के लिए बुला गयी है। यह उसी का संकेत था।'

सबेरा हुआ तो पत्नी के कहे अनुसार युवक उठकर नदी के घाट पर गया। वहाँ उसे राजकुमारी मिल गयी। युवक को देखकर उसने अपनी दासी से कहा– 'दासी युवक के सामने एक अनार डाल दे।' दासी ने एक अनार युवक के सामने रख दिया। युवक फिर अपनी पत्नी के पास गया और कहने लगा– 'आज तो उसने निश्चित रूप से मुझ पर जादू टोना किया है। आज वह एक अनार मेरे सामने रखवाकर चली गयी।' पत्नी बुद्धिमती थी। वह कहने लगी– 'राजकुमारी ने टोना जादू नहीं किया। उसने तो तुम्हें अनार बाग में बुलाया है।'

सबेरा होते ही युवक अनार बाग पहुँचा, वहाँ राजकुमारी पहले से ही अपनी दासी के साथ बैठी थी। उसने जैसे ही युवक को देखा, दासी से कहने लगी– 'अब इसके सामने एक रस्सी डाल दो।' दासी ने रस्सी युवक के सामने रख दी। युवक घर आकर अपनी पत्नी से कहने लगा कि–'तुम्हारे कहने पर मैं अनार बाग गया था, लेकिन इस बार तो उसने मेरे सामने रस्सी रख दी। अबकी तो उसने सच में उतारा किया है।'

पत्नी कहने लगी– 'तुम तो बेकार डर रहे हो, उसने उतारा नहीं किया। आज तो वह रात में तुम्हें महल में बुला गयी है। तुम रात में उसके महल के पीछे जाकर देखना, तुम्हें रस्सी पड़ी मिलेगी। रस्सी बाँधकर ऊपर पहुँच जाना।' रात होते ही युवक महल के पीछे गया और रस्सी के सहारे महल में पहुँच गया। राजकुमारी ने जब उसे महल में देखा तो बहुत खुश हुई कि यह तो सचमुच ही बुद्धिमान है। राजकुमारी उसके साथ एक ही पलंग पर बैठ गयी। इधर राजा के पहरेदार महल के आसपास घूम–घूमकर पहरा दे रहे थे। उन्हें महल के पीछे रस्सी बँधी दिखी तो उन्होंने राजकुमारी के महल में आकर देखा। महल में युवक और राजकुमारी एक ही पलंग पर बैठे थे। पहरेदारों ने दोनों को पकड़कर जेल में डाल दिया।

सबेरा होते ही राजा को खबर भेजी गयी कि राजकुमारी एक युवक के साथ महल में पकड़ी गयी है। इधर राजकुमारी ने युवक को एक तमाचा

मारा और कहने लगी कि–'तू जब मेरे सारे संकेत समझता था। इतना बुद्धिमान है तो ऊपर आने के बाद रस्सी क्यों नहीं खींची?' युवक कहने लगा– 'मुझमें बुद्धि नहीं है बुद्धिमती तो मेरी पत्नी है, उसी के कहने से मैं यह सब करता रहा।'

राजकुमारी कहने लगी– 'कल सबेरे राजा के सामने बात होगी।' इतना कहकर उसने अपनी दासी को बुलाया और कहा– 'यह युवक जो मेरे साथ बंदी है, इसके घर के सामने जाकर दो बातें कहना।' दासी वहाँ जाकर कहने लगी– 'जो बुद्धिमान हो, समझदार हो, वह समझ ले कि उसका छुट्टा साँड़ घूम–फिर रहा था, अब वह जेल में बन्द है। उसे छुड़ाना हो तो जल्दी छुड़ा लो, नहीं तो सबेरे फाँसी लग जायेगी।'

युवक की पत्नी सब समझ गयी। उसने जल्दी से नये कपड़े पहने और नशे की चीज मिलाकर लड्डू तैयार किये। महल के पहरेदारों के पास जाकर कहने लगी– 'मेरे गाँव में त्योहार मनाया गया, उसका प्रसाद ले लो।' पहरेदारों ने जैसे ही लड्डू खाये नशे में बेहोश हो गये। पत्नी जेलखाने में गयी और अपने कपड़े राजा की लड़की को पहनाये और उसके कपड़े खुद ने पहने, फिर उसे जेल से बाहर करके खुद अपने पति के पास बैठ गयी। इतना सब रातोंरात करके वह सबेरे की प्रतीक्षा करने लगी।

सबेरे राजा अपनी राजकुमारी और युवक को देखने जेल में पहुँचा। वहाँ देखा तो युवक और उसकी पत्नी थे, लेकिन राजकुमारी नहीं थी। राजकुमारी अपने महल में आराम से सो रही थी। राजा अपने सेनापति पर बहुत नाराज हुआ और कहने लगा– 'तुमने मेरी लड़की की इज्जत पर मिट्टी उछाली? मैं तुम्हें दण्ड दूँगा।' सेनापति राजा के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। कहने लगा– 'राजा साहब, मेरे साथ सारे राज्य के लोगों ने देखा था कि राजकुमारी और युवक एक पलंग पर बैठे थे।' राजा सेनापति के साथ जब जेल पहुँचा तो वहाँ वही युवक अपनी पत्नी के साथ बैठा था। राजा ने उनसे पूछा कि 'तुम लोग यहाँ कैसे आये?' तो उस युवक की पत्नी कहने

लगी– 'राजा साहब, हम लोग गर्मी के कारण परेशान थे, घर से बाहर सो रहे थे, आपका पहरेदार हम लोगों को पलंग सहित उठा लाया। हम दोनों तो पति–पत्नी हैं।' राजा ने पहरेदार को डाँटकर उन दोनों को छुड़वा दिया।

कुछ दिन बीत गये, लेकिन राजकुमारी की यह बदनामी बढ़ती गयी। सबके मुँह से एक ही बात सुनाई देती कि राजकुमारी उस युवक के साथ पकड़ी गयी। राजा ने जब यह सुना तो राज्य की प्रजा को बुलाकर पूछा। लोग कहने लगे– 'राजा, आपकी राजकुमारी पर कलंक लगा है, उसे अग्नि परीक्षा देना होगी, तभी हम उसे निर्दोष मानेंगे।'

दूसरे दिन सारे गाँव में राजकुमारी की अग्नि परीक्षा की डुग्गी पिटवा दी गयी। युवक की पत्नी को भी पता लगा। वह चतुर थी, उसने उपाय सोचा और अपने पति से कहने लगी– 'यदि राजकुमारी झूठी सौगन्ध उठाती है तो मर जायेगी, सच उठाती है तो बदनामी होगी। अत: तुम एक काम करो साधु का वेश धारण करो। जब सबेरे राजकुमारी अग्नि परीक्षा के लिए जाये तो उसके पास से निकलना और उसके हाथ पर हाथ मारकर कहना– राजकुमारी तू सौगन्ध उठाने तो जा रही है, साधु को भिक्षा तो दे जा। सभी दरबारियों के सामने तुम राजकुमारी को छू लेना।' सबेरे सबने देखा कि साधू राजकुमारी को छूकर उससे भिक्षा माँग रहा है।

जब उस युवक ने राजकुमारी को छूकर भिक्षा माँगी तो राजकुमारी समझ गयी कि यह वही युवक है। अत: उसने निश्चिन्त होकर अग्नि की सौगन्ध खायी कि 'यह तो साधू है, इसने मेरे शरीर का स्पर्श किया है। यदि इसके अतिरिक्त किसी दूसरे पुरुष ने मेरा स्पर्श किया हो तो मैं अभी जलकर नष्ट हो जाऊँ।'

इस प्रकार राजकुमारी अग्नि परीक्षा में खरी उतरी। उस बुद्धिमती स्त्री ने अपने पति को तो बचाया ही, राजकुमारी को भी कलंकित नहीं होने दिया। उसकी लाज बचायी।

जेहू करषो तेहू भरषो

एक गामड़ा में म्होटो मानषो रेहतो थो। मानषो आच्छो थो। षान्झ वैहना आषाउना धरम करतो रेहतो थो। तिन्हे आया गामड़ाहारा म्होटा मानषानी मानता था। करता-करता चेटटाक दिन बीति ग्या। एक बषत सूँ छायो त्रण ल्हीकड़ा आईन म्होटा मानषा, पे भूटकाली चलाईन, फदीया नी पेटटी लूटटीन नाष्षी ग्यो।

मानषाने मान्छी ने नान्हो गोल्या उठीन जोवा लाग्गा। ल्हीकड़ा ने बाब्बाए मारी देदो। माँ कहवा लाग्गी– 'बेटा, तू ना जाज्जे।'

होम केहीन एटटाजना में गामड़ाहारा मानषाउने मालम छई के म्होटा मानषाउना घरना में ल्हीकड़ो छावी रयो से। भूटकाली चाल्लीस। आषा गामड़ाना मानषा नाहटा हुआ आवी ग्या। तिउने जोईन ल्हीकड़ा नाषी ग्या। गामड़ाना मानषाउने म्होटा मानषा नी मान्छी ए षमझड़ाओ रने दाग लगाड़ुवा देददो। बारह बरष बीति ग्या।

गोल्या नान्हो हथो ने म्होटा मानषानी मान्छी चेने फदू धेलूँ तो हथो न। तो बीजाउना घरे जाईन काम करीन गोल्यानू पेट भरे। होम करता-करता एक थाड़े गोल्यू केहवा लाग्गो– 'माँ तू गल्ढ़ी छई गी हवै मै वैहना में बाहर जाईन, काम करीन फदीया लाईस।'

माँ केहवा लाग्गी– 'आच्छी वात से बेटा, वैहना ना में रोल्टो करीन माये छियाने आल्ल देददो। एक रोल्टो लेईन छिया बाहर चाल्लो।' आग्गल जंगलना में एक म्होटो वड़नू रूषडू हथो वहाँ छाएड़ा में गोल्यू बैषो, बैष्षीन षावाने वाष्तर रोल्टू काढू। रूषड़ाना ऊप्पर जोवे तो एक करकेट हथू। वैषो मूड़ हलड़ाई रै थो। तो केहवा लाग्गो करकेटने के– 'तू भूच्चे से?'

करकेट हथो मूड़ हलड़ावे। हवै रोल्टो तीन्हे करकेट ने आल्ल देददो। करकेट षई ग्यो। षाईन फिरी मूड़ हलड़ावा लाग्गो। तो गोल्या कने बाँषली हथी करकेट तीन्हे दाषीने न्हाटो। गोल्यू बी न्हाटो। करकेट जाईन जंगलना में एक नान्हा रूषड़ा चैने बैषी ग्यो। गोल्यू जोवा लाग्गो।

तिन्हा बादना में करकेट रूषड़ाउसे निकलीन बाहर आयो, बाक्काना में मोहर घाल्ल लायो षोन्ना नी। गोल्यू जोवा लाग्गो– 'मैं तून्हें रोल्टा षड़ायो थो तिन्हा पल्टे तू म्हूने षोन्नानी मोहर आल्ली रै से?'

करकेट फिरिये मूड़ हलड़ाई नान्हा रूषड़ा ने बैषी ग्यो। नान्हा रूषड़ा ने काट्ठे जोवे तो बै कोथली तहाँ गड़ी। बोहे कोथली पाड़ीन षूददे माँ कने आयो के– 'माँ म्हूने फदीया मिल्यो से।' माँ ने षाम्में आषी बात्तें केहीं। माँ कोथलो जोटटो षम ओल्षी लेददा। केहवा लाग्गी– 'बेटा, आ कोथला अपनो से। बारह बरष पेहले आ कोथला ल्हीकड़ा लेई ग्या था। ते करकेट नथी गुषाईं हथो। तू वैहना में तिन्हा वाष्तर रोल्टो लेईन जाज्जे।'

बीज्जे दिन वैहना में गोल्यू रोल्टो लेईन थोज रूषड़ा कने चाल्लो। तहाँ वड़ना रूषड़ा कने करकेट ना मिल्यो। तहाँ कूतरो मिल्यो। गोल्याने जोईन कूतरो पूंछड़ी हलड़ावा लाग्गा।

गोल्यू केहवा लाग्गा– 'तू भूच्चे से' तो कुतरो फिरिये पूंछ हलड़ावे। गोल्याने तिउने षाम्मे रोल्टो आल्ली देददो। कूतरो षई ग्यो। हवे कूतरो बी गोल्यानी बांषली पाड़ीन नाहटो। तिन्हें पषाल-पषाल गोल्यू बी न्हाटो।

कूतरो म्होटा भाटरा काट्ठे जियो ने गोड्डाउने हटाईन तो गोल्या जोईन।

तहाँ बै कोथला बीज्जा मिल्या तिन्ह में षोन्ना, अशर्फी हर्थी। गोल्या फदू लेईन पाच्छे माँ लने आवी ग्यो। माँ केहवा लाग्गी– 'आ बी कोथलो आपना। आ जो से गुषाईं से। वैहना में तू त्रण रोल्टा लेई जाज्जे। एक करकेटना वाष्तर, एक कूतराना वाष्तर ने एक थारे वाष्तर।'

वैहना में आच्छा–आच्छा रोल्टा करीन फिरियेषत्ते रोल्टा करीन गोल्या चाल्लो रूषड़ा कने। तहाँ जाईन जोवे तो न किरकेट ना कूतरो। तहाँ ढूँढ़ो ऊब्बो छई रा था। ढूँढ़ो मूड़ हलड़ावा लाग्गा। गोल्या केहवा लाग्गा– 'तून्हे भूच्चो से?' तिन्हें फिरिये मूड़ हलड़ाई देददो। ढूँढ़ाने षाम्मे गोल्या त्रण रोल्टो नाष्षी देददो। त्रण रोल्टो षाईन गोल्या नी बाँषली पाड़ीन ढूँढ़ा बी जंगलना हेट नाहटी ग्यो। पषाल–पषाल गोल्या नाहटो।

एक म्होटू जंगलना में घर हथू तहाँ ढूँढ़ो चलाई ग्यो, पषाल गोल्यू बी। तहाँ जाईन जोवे तो बै कोथला भराई रा। गोल्या बोहू कोथला पाड़ीन फिरिये माँ काठ्ठे आवी ग्यो। कोथलाना जोत्ता षम माँ केहवा लाग्गी– 'बेटा, आ कोथला बी आपना सीं। यो छाँ मिल्यो? चल म्हूने बड़ना रूषड़ा कने लेई चाल्ल।'

माँ ने गोल्यू वड़ना रूषड़ा कने चाल्ले। तहाँ जाईन जोवे तो ना किरकेट, कूतरो ना ढूँढ़ा। तहाँ जंगल में जोवे तो त्रण मनष काला लूगड़ा ओढ़ीन षुई रा था। गोल्यानी माँ केहवा लाग्गी– 'आ त्रणे तेहज छीं जो थारा बाब्बा ने मारीन यो फदू लेई ग्या था। गुषाईंने तिउने करकेट, कूतरो ढूँढ़ो करयो थो। ईन्हा वाष्तर ये त्रणे मिलीन आपनो फदू पाच्छे आल्ल दीस।' षाच्ची वात से बेटा गुषाईं कने षाच्चो न्याव से जो आपनू मेहनतनू फदू हथो पाच्छो आल देददो।

जैसी करनी वैसी भरनी

एक गाँव में एक धनी सेठ रहता था। वह बहुत नेक और ईमानदार था। सारा गाँव उसे बड़ा आदमी मानता था।एक दिन तीन डाकू आये और बन्दूक चलाकर सेठ को मारकर उसकी सम्पत्ति लूट के ले गये। सेठ का

एक बेटा था। सेठ की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी और पुत्र अकेले हो गये। वे मुसीबत में दिन गुजारने लगे।

धीरे–धीरे बारह वर्ष बीत गये। एक दिन लड़का अपनी माँ से कहने लगा– 'माँ अब तुम बूढ़ी हो गयी हो इसलिए कमाने के लिए मैं परदेश जाऊँगा।' माँ कहने लगी– 'ठीक है बेटा, जैसी तेरी इच्छा।' सबेरा हुआ, माँ ने जैसे–तैसे थोड़े से आटे की एक रोटी बनाकर उसके साथ रखी। लड़का घर से चल दिया। थोड़ी दूर पहुँचने के बाद सामने जंगल में एक बरगद का वृक्ष दिखा। लड़का उसकी छाँव में बैठ रोटी खाने लगा। जैसे ही उसने रोटी का ग्रास बनाया, वैसे ही सामने एक गिरगिट आ गया। लड़के ने सोचा– शायद गिरगिट भूखा है। अतः उसने अपनी रोटी उसके सामने रख दी। गिरगिट रोटी खाने के बाद फिर अपना सिर हिलाने लगा। लड़के के पास एक बाँसुरी थी। गिरगिट उसकी बाँसुरी मुँह में दबाकर भागा और एक छोटे से पेड़ के पास जाकर एक मोहर मुँह में लेकर लड़के के पास आ गया।

लड़का कहने लगा– 'अच्छा, मैंने तुझे रोटी खिलाई, उसकी कीमत तू मुझे मोहर दे रहा है?' गिरगिट फिर भी सिर हिलाता रहा और एक छोटे से पेड़ के पास बैठ गया। लड़के ने वहाँ जाकर देखा तो दो थैली गड़ी थीं, जिनमें बहुत सारी मोहरें थीं।

लड़का थैलियाँ लेकर माँ के पास आया और कहने लगा– 'माँ मुझे जंगल में धन मिला।' इतना कहकर उसने सारी बातें विस्तार से माँ को बतायीं। माँ ने जैसे ही थैलियाँ देखी तो कहने लगी– 'बेटा ये थैलियाँ तो अपनी ही हैं। आज से बारह वर्ष पहले डाकू ये धन लूटकर ले गये थे। तुझे जो गिरगिट मिला, वह भगवान था। कल तू फिर उसके लिए रोटी ले जाना।' दूसरे दिन सबेरे लड़का रोटी लेकर फिर उसी पेड़ के नीचे चल दिया, लेकिन उसे गिरगिट नहीं मिला। वहाँ उसे एक कुत्ता मिला। लड़के को देखकर कुत्ता पूँछ हिलाने लगा। लड़के ने उससे भी खाने के लिए कहा और उसके सामने रोटी डाल दी। रोटी खाने के बाद भी कुत्ता पूँछ हिलाता

रहा और लड़के की बाँसुरी मुँह में दबाकर एक ओर भागा। लड़का भी उसके पीछे-पीछे भागा। कुत्ता एक बड़ी चट्टान के पास जाकर रुक गया। लड़के ने पत्थर हटा कर देखा तो वहाँ भी उसे एक थैली मिली, जिसमें अशर्फी और सोना था।

लड़का थैली लेकर फिर अपनी माँ के पास लौट आया। माँ देखते ही थैली पहचान गयी और अपने बेटे से कहने लगी- 'बेटा, यह थैली भी अपनी है। यह सब भगवान कर रहा है। कल तू तीन रोटियाँ ले जाना - एक गिरगिट के लिए, एक कुत्ते के लिए और एक तू अपने लिए ले जाना।

सबेरे अच्छी घी चुपड़ी रोटियाँ लेकर लड़का फिर जंगल पहुँचा। वहाँ जाकर देखा तो न वहाँ गिरगिट मिला न कुत्ता, वहाँ एक बैल खड़ा था। लड़के को देखकर बैल सिर हिलाने लगा। लड़के ने बैल को भी भूखा समझ तीनों रोटियाँ उसके सामने डाल दीं। बैल ने रोटियाँ खाईं और लड़के की बाँसुरी लेकर एक ओर भागा। पीछे-पीछे लड़का भी भागा। जंगल में एक टूटा-फूटा घर था, वहाँ बैल घुस गया। लड़का भी उसके पीछे-पीछे अन्दर चला गया। वहाँ जाकर लड़के ने देखा दो थैले धन से भरे पड़े हैं। उसने थैले उठाये और माँ के पास आया। थैले देखते ही माँ कहने लगी- 'बेटा, ये भी अपने थैले हैं। ये तुझे कहाँ मिले? चल मुझे भी बरगद के पेड़ के नीचे ले चल।'

माँ बेटे दोनों बरगद के नीचे पहुँचे। वहाँ उन्हें गिरगिट, कुत्ता व बैल कोई नहीं मिला। थोड़ा आगे बढ़कर देखा तो तीन आदमी काले कपड़े पहने सो रहे थे। उन्हें देखकर माँ कहने लगी- 'बेटा, यही तो तीनों हैं जिन्होंने तेरे पिता को मारकर धन लूटा था। भगवान ने इन्हें गिरगिट, कुत्ता व बैल बना दिया था। इसलिए इन तीनों ने मिलकर अपना धन वापस लौटा दिया।' सच बात है, 'भगवान के घर सच्चा न्याय है।' अपनी मेहनत का पैसा उसने वापस दिलवा दिया।

बै गरीब मानषा

एक गामड़ा मैं बै गरीब मानषा रेहता था। वैहना ते षान्झे तक माँगीन षात्ता था। रेहता-रेहता तिउने कई दिन छई ग्या था। एक दिन एक म्होटे मानषा ने तिउने माँगनहाराउने गेहूँना रोल्टो और छाँछ आलड़ी। ते बोहे जना जाईन एक कुँआना काठ्ठे बैष्षी ने छाँछ रोल्टो षावा लाग्गा- 'षाता-षाता बोहे जना बतलावा लाग्गा के आवारषम रोल्टो और छाँछ जिंदगीना में कदी न थी षाददो।' एक केहवा लाग्गो- 'आपने कने षेतल्डा हो तो आपनी बी गोहूँना रोल्टो षाईन।'

एक केहवा लाग्गो- 'आपने कने गाय-भैंष हो तो आपन घी-छाँछ षावाँ। आपनी एक काम करसीं बोहे जना मिलीन षेतल्डा बीलेंसी ने गायें बी लेंसी। एक काम कर तू लेई ले षेतल्डा ने मैं लेई लूँ गाय-भैंष।'

बोहे जना बतलावा लाग्गा के- 'म्हारा षेतल्डा में गेहूँ ऊभा करसीं ने तू भैंषनी चराईन तिउनो दूध निकालजे।' बतलाता-बतलाता षई करीन षुई ग्या बोहे जना। वैहना छायो वैहना में उठीन एक केहवा लाग्गो के- 'भाई, तू षेतल्डा करी लेज्जे।' तो बीज्जो केहवा लाग्गो- 'मैं गाय-भैंष लीस तो षहीं तिउने चरवानू वाष्तर थारा खेतल्डा मा बाँधा करीस।' षेतल्डाहारा केहवा लाग्गो- 'मैं म्हारा षेतल्डामा सुकवा चरावा दीस? मैं ना चरावा दूँ म्हारा षेतल्डाना मा।'

होन केहीन बोहे जना लड़ुवा लाग्गा। तो लड़ता जोईन गामड़ाहारा आया केहवा लाग्गा– 'भाई, तुम्हीं सुकवा लड़ी रा से?' तिन्हा ऊप्पर एक जना केहवा लाग्गा के– 'म्हारे तो से षेतल्डा ने आनी से गाय–भैंष। यो आ केही रौ से के म्हारा षेतल्डाना में गाय–भैंष ना चरावना वाष्तर। मैं नाहीं करी रौ सूँ।'

तिन्ह में एक मानषो तिहूनी वात्तें षमझीन केहवा लाग्गो– 'तुम्हीं आपष में सुकवा लड़ी रा से? तुम्हीं एक पंचायत बैषाड़ी लो।'एटटी केहताषम पंचायत बैषी गी। पंचायत ना में पंच पूच्छवा लाग्गा– 'के हो भाई, सूँ वात छे?' एक मानषो केहवा लाग्गो– 'पंचो, म्हारा से षेतल्डा।'

बीज्जो केहवा लाग्गो– 'म्हारी गाय भैंष सी। मैं ईन्हा षेतल्डा में चरावा चाहूँ सूँ, तिन्हा ऊप्पर यो लड़े से।' करता–करता वैहना नी षान्झ छई गी। पंचूने षमझ में काँई वात ना आल्ली। तिन्हा ऊप्पर एक गल्ढ़ो पंच केहवा लाग्गो– 'तुम्हीं बोहे जना एकल्ला बात केज्जो आग्गल से केज्जो।'

एटटी षमझीन एक केहवा लाग्गो– 'पंचों, हमीं तो माँगनहारा सीं। एक दिन सूँ छायो के एक गामड़ा के म्होटे मानषू ने हमीं गोहूना रोल्टो ने छाँछ चेने आल्ली। हमीं जिन्दगी में यो षाऊँ ना षाददो हथो तो षावाने जोई हमीं बोहे बतलावा लाग्गा 'आपने कने गोहूँ ना षेतल्डा और गाय–भैंषें हों तो आपनी गोहूँना रोल्टा चैने छाँछ षाता रे।' होम केहीन एक षेतल्डा लेवाने केही ने एक गाय–भैंष लेवाने केही।'

तिन्हा ऊप्पर एक पंच केहवा लाग्गो के– 'तुम्हारे कने षेतल्डू छाँ से?' तो केहवा लाग्गो– 'षेतल्डा हमीं लेईस।' बीज्जा ने पूच्छवा लाग्गो के– 'हमीं गाय–भैंष लेई षम ना।' गल्ढ़ा पंच केहवा लाग्गो– 'तुम्हीं हमना सुकवा लड़ी रा से?'

आष्षा पंचू ने षाम्मे केही के– 'आग्गल तुम्हीं षेतल्डा, गाय–भैंष ले लीन तिन्हा बाद लड़जो तुम्हीं।'

यों माँगीनषान हारा सीं। जाओ तुम्हीं मेहनत करीन गाय–भैंष ले लीन तिन्हा बाद लड़जो तुम्हीं। होम केहीन गल्ढ़ो पंच ने फैषलो करी देददो।

दो भिखारी

एक गाँव में दो भिखारी रहते थे। वे सुबह से शाम तक भीख माँगते थे। दोनों एक साथ रहते थे। एक दिन एक सेठ ने उन्हें भीख में गेहूँ की रोटी और छाछ खाने के लिए दी। दोनों एक कुएँ के पास बैठकर छाछ रोटी खाने लगे। खाते वक्त दोनों बात करने लगे। पहला भिखारी कहने लगा– 'ऐसी छाछ और घी चुपड़ी रोटी तो मैंने आज तक नहीं खाई।'

दूसरा बोला– 'यदि अपने पास खेत हो तो अपन भी गेहूँ की रोटी खा सकते हैं। अपन एक काम करें, मैं खेत ले लूँ और तुम भैंस खरीदो। दोनों रोज छाछ–रोटी खायेंगे।' पहला भिखारी कहने लगा– 'तुम खेत में गेहूँ उगाना, मैं भैंस चराऊँगा और उसका दूध निकालूँगा।' दोनों इस तरह बातें करते–करते सो गये।

सबेरा हुआ तो उन्होंने रात में खायी रोटी–छाछ का स्वाद याद करते हुए फिर से खेत और भैंस खरीदने की बातें शुरू कर दीं। एक भिखारी कहने लगा– 'भाई, ऐसा करना कि तू खेत जरूर खरीद लेना।' उसकी बातें सुनकर दूसरा भिखारी बोला– 'मैं खेत खरीद लूँगा, पर गाय–भैंस जरूर खरीदना।'

पहला भिखारी कहने लगा– 'मैं गाय–भैंस खरीद तो लूँगा, किन्तु उन्हें चराने के लिए तुम्हारे खेत पर ही बाँधूँगा।' खेत वाला भिखारी कहने लगा– 'मेरे खेतों में मैं भैंस क्यों चराने दूँ? मैं अपने खेत में भैंस नहीं चराने दूँगा।' इतना कहते–कहते दोनों में लड़ाई होने लगी। शोर सुनकर गाँव वाले इकट्ठे हो गये और कहने लगे– 'भाई, तुम दोनों क्यों लड़ रहे हो?' इस पर एक भिखारी कहने लगा– 'मेरे पास खेत है और इसकी हैं गाय–भैंस। यह मेरे खेतों में अपनी गाय–भैंस चराने के लिए कह रहा है। मैं इसके लिए मना कर रहा हूँ। बस, यही हम लोगों के झगड़े का कारण है।'

उन दोनों की बातें सुनकर एक व्यक्ति कहने लगा– 'आपस में लड़ने से क्या होगा? तुम लोग पंचायत कर लो, तुम्हारा झगड़ा सुलझ जायेगा।' पंचायत बैठ गयी। पंचायत में पंच पूछने लगा– 'क्यों भाई, तुम लोग क्यों लड़ रहे हो? तुम्हारा क्या झगड़ा है?'

एक भिखारी कहने लगा– 'मेरे खेत हैं व इसकी गाय–भैंस। यह मेरे खेतों में अपनी गाय–भैंस चराना चाहता है। मुझे यह मंजूर नहीं है। इसी पर हमारी लड़ाई हो रही है।' पंचायत लगे हुए शाम हो गयी, लेकिन दोनों का झगड़ा नहीं निपटा। दोनों की बात सुन–समझकर एक बूढ़ा पंच कहने लगा– 'तुम दोनों अपनी–अपनी बात अलग–अलग कहो। अपनी बात शुरू से बताओ। झगड़ा कब से शुरू हुआ?'

पंच की बात सुनकर एक भिखारी कहने लगा– 'पंचों, हम लोग भिखारी हैं। एक दिन एक गाँव के सेठ ने हम दोनों को भीख में घी चुपड़ी गेहूँ की रोटी और छाछ खाने को दी। हमने जिन्दगी में कभी इतना स्वादिष्ट खाना नहीं खाया था। खाना खाते–खाते हम लोग बात करने लगे और सोचने लगे कि अगर अपने पास खेत और भैस हो तो अपन भी गेहूँ की रोटी और छाछ खा सकते हैं। बातें करते–करते हम दोनों ने तय किया कि एक भैंस खरीदे और दूसरा खेत।'

दोनों भिखारी की बात सुनकर बूढ़ा पंच कहने लगा– 'तुम्हारे खेत कहाँ हैं?' भिखारी ने कहा– 'कहाँ, हम तो लेने की बात कर रहे हैं।' पंच ने दूसरे भिखारी से पूछा– 'भाई, तुम्हारी गाय–भैंसें कहाँ हैं?' वह भी कहने लगा– 'अभी कहाँ हैं, हम तो गाय–भैंस लेने की सोच रहे हैं?'

बूढ़ा पंच कहने लगा– 'जब तुम्हारे पास खेत नहीं हैं, गाय–भैंस नहीं हैं, तो फिर झगड़ा किस बात का है? तुम लोग अभी जाओ, मेहनत करो, रुपया कमाओ। जब रुपये इकट्ठे हो जायें तब खेत और गाय–भैस खरीदना उसके बाद लड़ना।' इतना कहकर बूढ़े पंच ने दोनों का फैसला कर दिया।

बै भाई

एक गामड़ा में बै भाई रेहता था। एक भाई षुद्दो हथो, एक अक्कलहारो। बोहे भाई मिलीन आपना गामड़ाना में षेतल्डा करता था। करता–करता चेटटाक दिन छई ग्या। म्होटो भाई केहवा लाग्गो के– 'भाई, मैं बाहर जाईन काम करीन फदीया–धेला कमाई लाऊँ।' एटटी केहीन म्होटो भाई चाल्लो।

चाल्तो–चाल्तो गामड़ा हेट पोंहची ग्यो। आईन तहाँ एक म्होटा मानषा कने काम करूवाने वाष्तर पूच्छवा लाग्गो। केहवा लाग्गो– 'म्होटा मानषा मैं थारो काम करीस तू म्हूने रष्षीस?' म्होटो मानषो केहवा लाग्गो– 'म्हारी एक षरत से। मैं तून्हे जावानु केहूँ काम छोड़ीन तो म्हारी एड्डी चोटटीनु चामड़ो वाडडीन हारीस। तू जावा केहीस तो थारो एडडी चोटटीनु चामडू वाडडी लीस।' तो केहवा लाग्गो– 'म्हूने षरत मन्जूर से मैं थारे काठ्ठे काम करीस।'

'एक काम बीज्जो से' म्होटो मानषो केहवा लाग्गो– 'तू पाँदड़ा भरीन षाईस के कद्दू भरीन?' काम करनहारा केहवा लाग्गो– 'कददू भरीन सूँ करीस मैं तो पाँदड़ा भरीन रू षाईस।'

हवे म्होटो मानषा षब दिन तो काम करावे फिरि षान्झे एक इमलीनू पाँदड़ूँ तोड़ी लावे ने एक दानू दरियानू मेल्हि दे तो इमलीनू पाँदड़ू भराई जाये। एटटू षाऊँ षड़ावे, एक दानू तो भूच्चे रैही जाये।

करता–करता बहोत दिन छई ग्या तो म्होटो भाई पातलो छायो। फिरि केहवा लाग्गो– 'म्होटा मानषा म्हूने थारे काठ्ठे काम नथी करनो मैं म्हारे घरे जई रौ से।' तानू म्होटो मानषो केहवा लाग्गो– 'तून्हे म्हारी षरत तो मंजूर से? चोटटीना चेष वाडडीने आल्ली दयो तो आपने घरे चाल्लो।' तहाँ जाईन जोवे तो नान्हो भाई मिल्यो तो केहवा लाग्गो– 'भाई, तू फदीया कमावा जियो थो थारा सूँ हाल छई ग्या?' तिन्हा ऊप्पर म्होटा भाई ने नान्हा भाई षूँ आषी वातें वताल दीं। नान्हा भाई केहवा लाग्गो– 'भाई, तू घरना ऊप्पर रेह मैं जाई रौ से काम करूवाने।'

हवै नान्हो चाल्लो। तहाँ जाईन थोज मानषा कने पोंहचो तो केहवा लाग्गो– 'म्होटो मानषा म्हूने काम आल्लीस मैं काम करूँ से।' म्होटो मानषो केहवा लाग्गो– 'म्हारी दो षरत से अगर तू काम छोड़ीन जाईस तो एडडी चोटटीनु चामड़ू आल्लू पड़ेस। और मैं तुम्हें निकालीस तो म्हारो एडडी चोटटीनू चामड़ू ने चोटटीनू चेष तू वाडडी लीस। बीज्जी एक वात से के पाँदड़ू भरीन षाईस के कददू भरीन।' तो नान्हो भाई केहवा लाग्गो– 'म्होटा मानषा षाईस तो पाँदड़ा भरीन पर पाँदड़ा लाईस म्हारा मन नूं।' तीन्हें मंजूर छई ग्यो।

हवे नान्हो भाई काम करूवा लाग्गो। षब दिन काम करे और षान्झे जाईन एक केलानू पाँदड़ू तोड़ी लावे ने मेल्हि दे। पूरो पाँदड़ो भराई ले। आल्डू षावे ने आल्डू फेंकी दे। करता–करता चेटटाक दिन छई ग्या। एक दिन म्होटो मानषो केहवा लाग्गो– 'षेतल्डाना ऊप्पर चनाना रूषड़ा बषेरा सीं। अने घारे भवे नान्हा–नान्हा षूटटा छई रा से तिन्हें आषाउने ठीक करीने साफ करी ले।' तो चनाना रूषड़ा धरीन वताली ग्यो थो। पूरा षेतल्डाना में जेटटाक चना ऊबा छाई रा था तिउना आष्षाउना उषाड़ी ने फेंक्की देददा।

एकज रूषड़ो रेहवा देददो। तिन्हें म्होटो मानषो वताली ग्यो थो। आईने जोवो तो पूरा षेतल्डाना नाष करी नाष्षू। तो म्होटो मानषो केहवा लाग्गो– 'आ सूँ करू तू ए?'

तो केहवा लाग्गो– 'म्होटो मानषो, तू केही ग्यो थो के एक वचाइजे ने सफाई करी दीज्जे।' बीज्जे दिन सूँ छायो गामड़ा में से गोहूना बोरा आयो। ते म्होटो मानषो केहवा लाग्गो– 'आ बोरा लेई जाज्जे, घर ना उतारी देज्जे। म्होटो मानषो केही मेरी माँ केहे तहाँ मेल्ही दीज्जे।' हवे बोरो लेईन घरना में आयो वे गल्ढ़ी मान्छीए पूच्छवा लाग्गो– 'आ बोरो छाँ मेल्लूँ?' गल्ढ़ी केहवा लाग्गी– 'छाँ मेल्हि दे, म्हारा मूड़ पे मेल्हि दे।'

तीन्हे गल्ढ़ी ना ऊप्पर बोरा पाड़ी देददो। गल्ढ़ी तीम्मज कमजोर हथी तो मरी गी। आम से म्होटो मानषो आयो आईन केहवा लाग्गो– 'छाँ उतारो बोरो?' 'जहाँ थारी माँए केही तहाँ उतारी देददो।' आ जोवे तो गल्ढ़ी बोरोने चबदाईन मरी गी। म्होटो मानषो केहवा लाग्गा– 'तू काम करनहारा म्हारी माँ ने मारी नाष्षी।'

तिन्ह पे केहवा लाग्गो– 'तून्हे तो केही थी के जहाँ म्हारी माँ केहवे तहाँ नाष्षी दीज्जे।' बीज्जा दिन म्होटा मानषाने गोल्या के बाहर बैषवाने वाष्तर पेरजा मैं दरद छई रौ थो। तो म्होटा मानषा ने कामकरनहारा से केही के– 'होर आओ आ गोल्याने बाहर बैषड़ाई ला।' हवे गोल्याने लेईन चाल्ला बाहर बैषवाने। वहाँ जाईन गोल्याने से केहवा लाग्गा– 'हग्गीस तो थारी गोल वाडडीदीस, मूतरीस तो थारा मोल ताडडी दीस।' होम केहीन बैषाड़ी रयो।

गोल्या ना हगरू ना मूतक। पाच्छो लौटी आयो। पाच्छो आईन गोल्या फिरिये केहवा लाग्गो– 'बाब्बा, म्हारा पेट माँ हग्गीस सूँ दरद छई रौ।' फिरिये काम करनहारा ने बोलड़ी ने केहवा लाग्गो– 'हवे गोल्याने आच्छी करीन बाहर बैषड़ाई ला।' काम करनहारा फिरिये लेईने जियो ने फिरिये षत्ते थोज केहवा लाग्गो– 'गोल्या ने ना हगरयू ना मूतरयू।' गोल्या पाच्छे केही– 'बाब्बा, मैं हंगीस।' म्होटो मानषो ने फिरिये तीन्हे बोलाईन केही के– 'आ गोल्याने पेट आच्छी करीन साफ करीने लेई आओ।' तो गोल्याने लेई जाईन चाक्कू घाल्लीन पेट चीरी देददो। आंतरा साफ करीने लेई आयो ने केहवा लाग्गो– 'आ ले थारा गोल्या पेट साफ करी लायो।' 'आ तो गोल्या मरी

ग्यो।' म्होटो मानषो रोवा लाग्गो।'तू ऐ तो केही थी के पेट साफ करी ला तो मैं करी लायो।'

म्होटो मानषो केहवा लाग्गो- 'तू एक म्हारो गोल्या ने म्हारी माँ बै जना ने मारी नाष्षो, षेतल्ड़ा आष करी नाष्षा। ईन्हा वाष्तर मैं तून्हें निकाली रौ से।' कामकरनहारा केहवा लाग्गो- 'थारी षरत पूरी कर। तानू मैं जाईस। चोटटी ने चामड़ा निकालीने लेई जाईस।' म्होटो मानषो हेथो आपनी चोटटीने चेष ने एडडी नो चामड़ा वाडडीन काम करनहारा ने आल्ला देददा। चोटटीना चेष ने चामड़ो लेईन घरे पाच्छे चाल्लो। जाईन म्होटा भाईए केही के- 'भाई, थारो बदलू लेई आयो।' बोहे भाई षुसी छायो।

दो भाई

एक गाँव में दो भाई रहते थे। एक बहुत सीधा था, दूसरा चालाक था। दोनों भाई मिल-जुलकर खेती करते थे। एक दिन बड़े भाई ने छोटे भाई से कहा- 'भाई, मैं बाहर जाकर रुपया कमाना चाहता हूँ।' इतना कहकर बड़ा भाई परदेश कमाने निकल गया। चलते-चलते वह एक बड़े शहर पहुँचा। वहाँ एक सेठ के घर काम पर लग गया। सेठ ने उसे नौकर रखने के पहले एक शर्त रखी कि 'अगर मैं तुम्हें काम छोड़कर जाने को कहूँ तो तुम मेरी चोटी के बाल काट लेना और एड़ी का चमड़ा भी काट लेना। यदि तुम अपने मन से काम छोड़कर जाओ तो मैं तुम्हारी एड़ी का चमड़ा व चोटी के बाल काट लूँगा।'

बड़े भाई ने सेठ की शर्त मंजूर कर ली और उसके घर काम करना शुरू कर दिया। इतना ही नहीं, सेठ ने उससे यह भी पूछ लिया कि वह कद्दूभर भोजन करेगा या पत्ताभर। बड़ा भाई सीधा था, अतः उसने पत्ताभर भोजना करना मंजूर कर लिया। सेठ बहुत ही चालाक था। वह दिनभर तो बड़े भाई से काम करवाता और शाम को इमली के पत्ते में चार-छः दाने चावल रखकर उसे दे देता। इतना थोड़ा-सा खाना उसे मिलता। धीरे-धीरे भूख के कारण बड़ा भाई अत्यन्त दुर्बल हो गया। अब उससे सेठ के घर का

काम भी नहीं होता था। अतः एक दिन उसने सेठ से कहा- 'अब मैं तुम्हारे घर काम नहीं कर सकता। मैं अपने घर वापस जा रहा हूँ।' सेठ ने उसे शर्त की बात याद दिलायी और उसकी एड़ी का चमड़ा व चोटी के बाल काट लिये। बड़ा भाई बीमार और दुःखी हालत में जब घर पहुँचा, तो छोटे भाई को उसकी स्थिति देखकर बहुत दुःख हुआ और वह कहने लगा- 'भाई, तुम तो पैसा कमाने गये थे, तुम्हारा यह क्या हाल हो गया?' छोटे भाई के पूछने पर बड़े भाई ने आपबीती उसे विस्तार से सुना दी। छोटे भाई ने बड़े को घर सम्हलाया और स्वयं सेठ से बदला लेने के लिए चल दिया। चलते-चलते वह उसी सेठ के घर पहुँचा और काम करने की इच्छा व्यक्त की। सेठ ने छोटे भाई के सामने भी दो शर्तें रख दीं। एक तो यह कि यदि वह अपनी इच्छा से काम छोड़कर जाये तो उसकी एड़ी का चमड़ा व चोटी के बाल सेठ काट लेगा। दूसरी, वह एक पत्ते में भरकर खाना खायेगा या कद्दू में भरकर? छोटे भाई ने पहली शर्त तो स्वीकार कर ली व दूसरी शर्त के बारे में कह दिया कि मैं खाऊँगा तो पत्ताभर के लेकिन पत्ता मैं खुद लाऊँगा।

सेठ ने छोटे भाई की बात मान ली। इस तरह वह सेठ के घर काम करने लगा। वह दिनभर काम करता और शाम को केले का एक पत्ता तोड़ लाता, उसे पूरा चावल से भरवा लेता। जितना खाते बनता खाता, बाकी फेंक देता। इस तरह से छोटे भाई के दिन आराम से बीतने लगे।

एक दिन सेठ ने उससे कहा- 'खेत पर चने के पौधों के आसपास छोटी-छोटी घास उगी है, उसे साफ कर लेना।' सेठ ने चने का एक पौधा पकड़कर उसे समझाया था। उसने सेठ के जाते ही क्या किया, कि जितने चने के पौधे थे, सब उखाड़कर फेंक दिये। बस एक वही पौधा रहने दिया, जिसे सेठ ने बताया था। जब सेठ लौटकर आया तो उजड़ा खेत देखकर बहुत दुःखी हुआ। लेकिन वह क्या कर सकता था? नौकर को खुद तो निकाल नहीं सकता था। दूसरे दिन गाँव से गेहूँ के थैले आये। सेठ ने छोटे भाई से कहा- 'घर चले जाओ, वहाँ मेरी माँ मिलेगी। वह जहाँ कहे, वहीं ये गेहूँ भरे थैले उड़ेल देना।' छोटा भाई थैले लेकर घर पहुँचा। दरवाजे पर उसे

बूढ़ी माँ मिल गयी। वह किसी बात पर नाराज थी। छोटे भाई ने उससे पूछा कि– 'ये थैले कहाँ रख दूँ?' बुढ़िया गुस्से में बोली– 'मेरे सिर पर रख दे।' इतना सुनते ही उसने कमजोर बुढ़िया पर गेहूँ के थैले पटक दिये। बुढ़िया थैलों के नीचे दबकर मर गयी।

जब सेठ लौटा तो उसे माँ मरी मिली। उसने छोटे भाई को डाँटा तो वह कहने लगा– 'तुमने ही तो कहा था, जहाँ मेरी माँ कहे वहीं गेहूँ के थैले पटक देना।' सेठ चुप रह गया। एक दिन रात में सेठ के लड़के के पेट में दर्द होने लगा। सेठ ने छोटे भाई को बुलाया और कहा– 'जाओ, बच्चे को शौच के लिए बाहर बैठा दो।' छोटा भाई बच्चे को लेकर बाहर गया। बाहर बच्चे को बैठाकर उसे धमकाकर कहने लगा– 'देख, अगर तू शौच करेगा तो मैं तुझे मारूँगा।' लड़का बेचारा डर गया। उसने शौच नहीं किया। वैसे ही उठ गया। लौटकर आने के बाद फिर उसके पेट में दर्द होने लगा। लड़का फिर से रो-रोकर अपने पिता से कहने लगा– 'पिताजी, मुझे शौच मैदान जाना है।'

इस बार सेठ ने छोटे भाई को बुलाकर कहा– 'इसे बाहर ले जाओ और इसका पेट अच्छे से साफ करा लाओ।' छोटा भाई लड़के को लेकर गया और चाकू से उसका पेट काटकर अंतड़ियाँ निकाल दीं। लड़का मर गया। जब सेठ ने अपने लड़के को मरा देखा तो बहुत रोया। छोटे भाई को कहने लगा– 'तुमने मेरी माँ को मार डाला, खेत उजाड़ दिये और लड़के को मार दिया। इसलिए मैं तुमको नौकरी से हटा रहा हूँ।' छोटा भाई कहने लगा– 'पहले अपनी शर्त पूरी करो, तब मैं काम छोड़ूँगा।'

सेठ ने अपनी एड़ी का चमड़ा व चोटी के बाल काटकर दिये और उसे काम से हटा दिया। चोटी के बाल व एड़ी का चमड़ा लेकर छोटा भाई घर पहुँचा। अपने बड़े भाई के पास जाकर कहने लगा– 'लो भाई देखो, मैं तुम्हारा बदला ले आया।' दोनों भाई बहुत खुश हुए।

लड़ानहारो मानषो

एक गामड़ा में एक ल्हीकड़ो, बदमाष ने एक लड़ानहारो रेहतो थो। बहोत दिन बीति ग्या। ते षोचवा लाग्गा के आपनी बाहर चाल्हीन कमाई लाईन। होम षोच्चीन त्रणे आपनो गामड़ो छोड़ीन निकली ग्या। चालता-चालता चेटटाक दिन बीति ग्या। तहाँ एक म्होटो षहर मिल्यू। तिन्हे काठठे राजाना षूबटाला त्रणू ने धर लेददा ने पूच्छवा लाग्गा– 'तुम्ही कुण से?'

तिन्ह पे ते केहवा लाग्गो– 'हमीं काम करूवाना वाष्तर घर छोड़ीन निकल्या सीं।' षूबटालाए नाम पूच्छा तो केहवा लाग्गा– 'म्हारा नाम से लड़ानहारा।' बीजा केहवा लाग्गा– 'मैं बदमाष सूँ।' एक ने केही– 'मैं ल्हीकड़ो सूँ।' षूबटाला तिउने राजा कने लेई ग्या। केहवा लाग्गा– 'राजा, आ बाहरना मनषू आया से।' राजा पूच्छवा लाग्गो– 'सूँ काम करसी तुम्हीं?'

एक केही 'राजा म्हारो काम से लड़ावाणू', एक केही 'म्हारो काम से ल्हीकड़ो करनो' ने बीज्जा केहवा लाग्गा 'मैं बदमाष सूँ'। तिन्हा ऊप्पर राजा केहवा लाग्गो– 'ना तो ल्हीकड़ो ना बदमाष सू काम से। मैं तो आ जोवा चाहूँ सू के लड़ानहारो सूँ करे से?' लड़ानहारा ने कामना ऊप्पर राष्षी लेददो ने बोहूना निकाली लेददो। काम करता-करता लड़ानहारा ने बहोत दिन छई ग्या।

एक दिन नी वात छई। लड़ानहारा राजा काठ्ठे जाईन केहवा लाग्गो

के– 'राजा, थारी मान्छी नागिन से। तिन्ही जीभना में विष छे। तो तून्हें रोज जींभ कूँ चाटीस। थारो लोहू पी री से। तून्हे भरोषो ना हो तो रात्ते जागतो रेहजा।' तिन्हा बादना में चाल्लो रानी काठ्ठे। रानी ने काठ्ठे जाईन केहवा लाग्गो– 'आज रात्ते राजो थारे कने षूवे तो तिन्हें जीभ कू चाटटीन कड़ना उघाड़ीन जोज्जे तिन्ह में षारू नून मालम पड़से। तानू षमझी जाज्जे के चामड़ाना में नून नाष्षी आयो राजा।' रानी केहवा लाग्गी– 'आज रात्ते मैं जोईरा।'

षान्झ छई गी। राणो रानी षई पी नी आपना षाल्टाना ऊप्पर षुई ग्या। राजा हथो तो बी जाग्गी रयो थे आँई जोवो तो रानी बी जाग्गी री थी। रातना बारा–एक बाज्जो रानी ए सूँ करूँ राजानी फुर्ती पाड़ीन तिन्हीं कम्मर में जीभषूँ चाटवा लाग्गी। राजा जगी रयो थो। राजा केहवा लाग्गो– 'दूर हट नाहटी जा। तू नागन म्हारा लोहू पीवे से।' तिन्ह पे रानी केहवा लाग्गी– 'तू ढ़ंढा वाडनहारो गमार से। थारी देह में से नून फूटटी ने निकल्यी रयो से।' राजा–रानी बोहे लड़ुवा लाग्गा। करता–करता कई दिन बीति ग्या। राजानो एक गुरु हथो तो केहवा– 'राजा सूँ बात छे?'

तिन्हा षाम्मे राजा केहवा लाग्गो– 'म्हारी मान्छी ना थी यो तो नागन से, म्हारो लोहू पीवे से।' तिन्हा बादना में गुरु रानी कने जियो। रानी ने पूच्छी। रानी केहवा लाग्गी– 'म्हारो मानषो यो राजो न थी यो ढ़ंढावाडनहारो से। ईन्हीं देहीना में से नून निकल्यी रयो से।' तो गुरु हथो तो षमझी ग्यो के आहूने कोईए लड़ाइस। राजाना मेहलना में तिन्हें पंचायत बोलाईने तानू गुरु केहवा लाग्गा– 'तुम्हारे षाम्मे यो वात्तें कुण केही थी?' राजो केहवा लाग्गा– 'म्हूने पले लड़ानहारो ने केही थी के थारी रानी जीभषूँ चाटटीन थारो लोहू पी री से।'

रानी ने पूच्छी तो रानी केहवा लाग्गी– 'योहज लड़ानहारो ने म्हूने केही थी के थारो राणो ढ़ंढावाडनहारो से। तून्हें अगर भरोषो ना होए तो तिन्हीं किडनी जीभषू चाटटीन देषजो। तून्हें नून मालम पड़से।' बोहूने वात्तें षमझीन गुरु हथो तो लड़ानहारे ने बोलाया।

लड़ानहारो पंचायत ना वच्चे, अषाउना षाम्मे केहवा लाग्गो के– 'म्हारो तो काम्मज छे लड़ावना। नान्हा म्होटाउना में लड़ाउतो थो तो कोई ना जोत्तो, आज मैं राजा–रानी ने लड़ाई देददो।' एटटी वात षमझीन राणो षुसी छायो। षुसी छाईन तिन्हें षजाना आल्ली, ईनाम आल्ली ने बिदा करी देददो के– 'भाई, जा तू षाच्ची म्होटो लड़ानहारो से।'

लड़ाई कराने वाला आदमी

एक गाँव में एक चुगलखोर, एक बदमाश और लड़ाने वाला रहते थे। एक दिन तीनों ने मिलकर निर्णय लिया कि धन कमाने के लिए दूसरे देश चला जाये। ऐसा सोचकर तीनों अपना गाँव छोड़कर चल दिये। चलते–चलते कुछ दिन बीत गया। वहाँ एक बड़ा नगर मिला। तीनों को घूमता देखकर राजा के सिपाही ने उन्हें पकड़ लिया। तीनों का नाम पता पूछा, तो वे कहने लगे– 'मेरा नाम है लड़ाने वाला, दूसरा बोला मुझे चुगलखोर कहते हैं और तीसरा कहने लगा मैं बदमाश हूँ।' तीनों की बातें समझकर राजा का सिपाही उन्हें राजा के पास ले गया। राजा को जब उन तीनों की विशेषताएँ मालूम पड़ीं, तो वह कहने लगा– 'न तो बदमाश मेरे काम का न चुगलखोर। मुझे तो यह लड़ाने वाला चाहिये। मुझे देखना है कि यह कैसे लड़ाई करवाता है।'

राजा ने लड़ाने वाले को काम पर रख लिया। उसे काम करते–करते बहुत दिन हो गये। एक दिन वह राजा के पास गया और कहने लगा– 'राजा, आपकी रानी नागिन है, उसकी जीभ में विष है। वह आपको जीभ से चाटती है। आपका रक्त पी रही है। यदि मेरी बात का विश्वास न हो तो आज रात को आप जागते रहिये। आपको पता लग जायेगा।'

इसके बाद वह रानी के पास पहुँचा। रानी के पास जाकर कहने लगा– 'आज रात को जब राजा आपके पास लेटें तो उनकी पीठ अपनी जीभ से चाट कर देखियेगा, वह खारी लगेगी। बस आप समझ जाना कि

राजा चमड़े में नमक डालकर आया है। वह मरे जानवर उठाता है।' रानी कहने लगी– 'ठीक है, मैं आज रात को ही देखती हूँ।' रात हुई। राजा खाना खाकर अपने बिस्तर पर लेट गया। लेटे-लेटे जागता रहा और लड़ाने वाले की बात याद करता रहा। इधर रानी भी गुस्से से भरी जाग रही थी। आधी रात के समय रानी ने राजा का कुर्ता उघाड़ा और उसकी पीठ जीभ से चाटने लगी। राजा तो जाग रहा था, चिल्लाकर कहने लगा– 'चल दूर भाग यहाँ से, तू नागिन है, मेरा रक्त पीना चाहती है।'

इस पर रानी कहने लगी– 'तू जानवर उठाने वाला है। तेरे सारे शरीर से नमक निकल रहा है।' इस तरह दोनों जोर-जोर से लड़ने लगे। दोनों को लड़ते-लड़ते कई दिन बीत गये। राजा बहुत उदास रहने लगा। एक दिन राजा के गुरु ने राजा से उदासी का कारण पूछा। राजा ने बताया कि– 'मेरी पत्नी स्त्री नहीं नागिन है। वह मेरा रक्त पी रही है।' इसके बाद गुरुजी रानी के पास गये। रानी से पूछा। रानी कहने लगी– 'मेरा पति राजा नहीं है, वह तो मरे जानवर काटता है। उसके शरीर में वही नमक लगा रहता है।' गुरुजी समझ गये कि इन दोनों को किसी ने लड़वाया है।

दूसरे दिन उन्होंने राजा के महल में पंचायत बुलायी और राजा से पूछा कि– 'आपसे ये बातें किसने कहीं?' राजा ने बताया– 'मैंने जो नया नौकर रखा है, उसने यह बातें बतायीं।' गुरु ने रानी से पूछा, तो रानी ने कहा– 'इसी आदमी ने मुझसे कहा कि तुम्हारा राजा ऐसा है।' गुरु ने दोनों की बातें सुनकर लड़ाने वाले को बुलाया और उससे पूछा। लड़ाने वाले ने सारी पंचायत के सामने स्वीकार किया कि ये बातें उसने ही कही थीं। वह कहने लगा– 'मेरा तो काम ही है लड़ाना। अभी तक साधारण लोगों को लड़वाता था तो कोई ध्यान नहीं देता था, किन्तु आज मैंने राजा-रानी को लड़वा दिया।'

राजा ने जब उसकी चतुराई देखी तो बहुत प्रसन्न हुआ। उसे ईनाम दिया और विदा कर दिया।

अक्कलहारी मान्छी

एक गामड़ा में चार जना आच्छा काम करनहारा हथा। कई दिन छई ग्या तो केहवा लाग्गा, बीज्जी तिउनी मान्छी बी केहवा लाग्गी– 'तुम्हीं बाहर जाईन काम करीने कमाइने लाओ।' चारे जना षलाह करीन वैहना में निकली ग्या। चाल्ता-चाल्ता म्होटा गामड़ा में पोंहची ग्या। तहाँ जाईन काम करूवाना वाष्तर मानषाउन को मिला, केहवा लाग्गा– 'हमीं घरनू काम आच्छू करीं सीं।' तिन्हा ऊप्पर गामड़ाहारा मानषा केहवा लाग्गा– 'हमारा गामड़ा में एक देवतानू मन्दर करी दो।' तिउने काम मिली ग्यो।

ते गामड़ाहाराउनते आच्छी-आच्छी चीज्जे मंगड़ावे ने मन्दर में लगाड़ता जावे। मेहना बेमेहना में येव्हारकगनू मन्दर करि देददू के जोवा में भाल्लो। आठे-आठे गामड़ा में बी एव्हारकय मन्दर न हथो। ते गामड़ाहारा मानषा जोईन केहवा लाग्गा के– 'आ ए काम करनहारा हाँ मन्दर करू आग्गल बीजाईन करसीं तानू आपना गामड़ानू नाम ना रेहवानू। ईन्हा वाष्तर एक काम करसीं, आपनी ईन्हा वाष्तर चारी जनाउवा हाथ वाडडी देईस तो बीज्जो मन्दर जा करे यो।'

एक गामड़ानी मान्छी हथी तो वात षमझी री थी तो मान्छी पानी भरूवाने वाष्तर वैहना में कुँआना ऊप्पर चाल्ली तो काम करनहारा बाहर बैषवाने वाष्तर गड़ुवो लेईन जाई रयो थो। कुँआ ने ऊप्पर ते मान्छी आष्षी

वतलाई री थी– 'आव्हारकम गामड़ाहारा मानषा छी के पला चार जनाउजा कने काम कराई लेददू हवे तिउने हाथ वाडडी दीस।' तो बाहर बैषवा जाई रौ थो तो यो बात षमझतो जई रौ थो। जाईन आपना ने त्रणू जवाउने केहवा लाग्गो के– 'कुँआना ऊप्पर मान्छी वतलाई री थी के पला चारे जना काम करनहाराउने हाथ वाडडी दीज्जू एटटी में षमझीन आयो सूँ।' चारे जना षलाह करि लेददी। वैहना में आषा गामड़ाउना मानषा जुड़ा जुड़ीने केहवा लाग्गा– 'काम करनहारा आ मन्दर छई ग्यो हवे?'

तिन्हा ऊप्पर काम करनहारा केहवा लाग्गा के– 'गामड़ाहारा तीम तो अन्दर आच्छो छई ग्यो से, आग्गल बे चीज्जें बीज्जी लाग्गी जाएँ तो दुनियाना मैं येव्हो धरती ना ऊप्पर कोई मन्दर ना छाएस।' तानू गामड़ाहारा मानषा पूच्छवा लाग्गा– 'यो सूँ चीज्जें से हमीं लिषी हारों हमीं लेई आओ से।' ते लिषीने गामड़ाहाराउने आल्ला। ते लिखी 'यो सूँ डोरू', 'मोनू लोढ़ू' यो बे चीज्जें जाईन लेई आओ तुम्हीं। गामड़ाहारा दुकान ने पूच्छवा जिया– 'भाई आ दो चीज्जें आल्ल दो तुम्हीं।' दूकान वाला ने नाहीं कर दी के– 'हमूने नथीं आल्ल षकें यो सूँ चीज्जें से?' तो गामड़ाहारा पाच्छे आवी ने केहवा लाग्गा के– 'आ तो बै चीज्जें काँईं ना मिली म्हूने।' तिन्हा बाद में काम करनहारा केहवा लाग्गा के– 'बीज्जे गामड़ा में मिली जाईस।' चार मनषू ने घोड़ा पे बैषाईन बीज्जे गाम मोकल्यो, तहाँ बी ना मिलीं। ते चारे जना पाच्छे आवी ग्या। हवे काम करनहारा केहवा लाग्गा– 'तहाँ बी नाहीं मिलीं तो एक काम करू हमीं एक गामड़ाना में मन्दर करू थो तिन्ह में से थोड़ी बचाई मेल्ही हथी हमारे घरे तुम्हीं चला जावों घरे मिली जाईस।'

तिन्हा ऊप्पर गामड़ाहारा म्होटा मानषू केहवा लाग्गा– 'भाई, तुम्हारा गामड़ा छाँ से?' ते कामकरनहारा केहवा लाग्गा– 'हमीं षब बताड़ीस तुम्हीं म्होटा मानषा आपना-आपना चारी गोल्या मेल्हो हमीं लिखींन मोकलरासी। जात्ताषम तुम्हूने चीज्जें मिल जासीं हमारी मान्धी आल्ली दीसीं।' म्होटा मानषा केहवा लाग्गा– 'आच्छी वात में हमीं हमारे चारी छिया मोकल दीसीं।' तिन्हा ऊप्पर ते कामकरनहाराउणे एक कागद लिखू के– 'जीवनडोरी मोनू लोठू

आउने हाथ मोकल्जो।' एटटी वात लिषीन लेईन ते चारे गोल्या तिउने गामड़े चाल्ला। चारे जना जाईन कामकरनहाराउनी मान्छी ने पूच्छी के– 'आ नाम ना मानषाउनी मान्छी चे वींसीं?'

गामड़ाहाराउने तिउने बोलाई तो कागज मांछीउने हाथ में आल्लो तो कागद पढ़ीन मान्छी जोई के तिन्ह में लिवाई रौ– 'जीवनडोरी ने मोनू लोढू।' तिउनी मान्छी अक्कली हथी। एटटी कागदनी वात षमझता षम ते केहवा लाग्गी– 'षमझी रा सूँ। गामड़ाहारा? हमारे चारे मानषाउना कने आटटा दिनू से काम कराई रा तहाँ हवै तिहूने मारवा करासीं। तिन्हा वाष्तर आ लिषावे 'जीवनडोरी' मलतब हमूने जीवाने आष करती हो तो आ चारे जना आया सीं ते ईन्हें हथकड़ी पेहनाई देज्जो।'

एटटी षमझताजषम गामड़ाहाराउने चारे गोल्याउने धरी लेददा। धरीने तिहूने हथकड़ी नाष्षी बान्धी लेददा। आंई से गामड़ाहाराउना भन्ते एक कागद लिषू के तुम्हीं हमारा काम करनहाराउने तिउने दाम फदीया देईन छोड़षूँ। तानू तुम्हारा चारी गोल्या हमीं छोड़सीं। एटटी केहीन कागद लिषीन एक मानषा ने हाथ्थे गामड़ा में आल्ल देददो। तहाँ जाईन तो कागद वतालू के तुम्हीं चारे जनाउना फदीया आल्ली मोकल्जो तानू तुम्हीं चारयूने गोल्याने मारी नाषसीं।

एटटो पढ़ताषम म्होटो मानषो चिल्लावा लाग्गा। तिउनी मान्छी रोवा लाग्गी। तिन्हा ऊप्पर गामड़ाहारा सूँ करू के आषा गामड़ा से फदीया जोड़ी ते चारे जनाउना दाम फदीया आल्ला। षड़ाई, पिड़ाई करीन। तिन्ह पे ते चारे जना केहवा के– 'हमीं आच्छू करेसीं तुम्हारा गामड़ा में ईन्हा वाष्तर हमारा हाथ वाडुवाना वाष्तर केहयो तुम्हीं?' कामकरनहाराउने गोड्डा धरीन गामड़ाहारा केहवा लाग्गा– 'तुम्हीं घरे जाओ ने हमारा गोल्याउने मोकल दीज्जो।' एटटी केहीन, षमझीन चारे घरे चाल्ला। घरे जाईन मान्छीउने मिलीन, गामड़ाजना से मिलीन गोल्याउने छोड़ी देददो। तानू ने अपना गामड़ा में रेहवा लाग्गा। ईन्हा वाष्तर केहीं से– 'मान्छी अक्कलहारी छाएस।'

बुद्धिमति स्त्रियाँ

एक गाँव में चार कारीगर रहते थे। वे चारों बहुत होशियार कलाकार थे। एक दिन उन चारों ने अपनी स्त्रियों के साथ बातचीत कर निर्णय किया कि थोड़े दिनों के लिए परदेश जाकर कमाई कर लायें। चारों दूसरे दिन परदेश के लिए चल दिये। चलते-चलते वे चारों एक बड़े शहर में पहुँचे। उस शहर में उन्होंने काम की तलाश की। शहर के सेठ-साहूकारों ने उनसे कहा- 'हमारे शहर में अच्छा-सा मन्दिर नहीं है। अत: तुम लोग एक ऐसा मन्दिर बनाओ, जिसकी तुलना में दूसरे सब मन्दिर फीके पड़ जायें।'

साहूकारों की बात सुनकर चारों कारीगर मन्दिर बनाने के लिए तैयार हो गये। थोड़े ही समय में उन्होंने इतने सुन्दर मन्दिर का निर्माण किया कि उतना सुन्दर मन्दिर आसपास कहीं नहीं था। अब शहर के सेठ-साहूकार विचार करने लगे कि इन चारों ने इतना सुन्दर मन्दिर बनाया है कि इसकी जोड़ का दूसरा मन्दिर मिलना मुश्किल है। अब यदि ये यहाँ से चले जायेंगे तो दूसरी जगह भी ऐसा ही मन्दिर बना देंगे तो इस मन्दिर की प्रसिद्धि नहीं होगी, अत: हम लोगों को इन चारों के हाथ काट देना चाहिए।

शहर के सेठ-साहूकारों की यह बातचीत एक स्त्री चुपचाप सुन रही थी। सबेरे वह दूसरी स्त्रियों के साथ कुएँ पर पानी भरने गयी और एक कारीगर शौच जाने के लिए उसी रास्ते से निकला, तो उसने सुना कि स्त्रियाँ आपस में बतला रही थीं कि- 'ये बेचारे चार कारीगर, इतना अच्छा काम करते हैं, इनसे यहाँ के सेठ लोगों ने सुन्दर मन्दिर बनवा लिया और अब इनके हाथ काटने की तैयारी कर रहे हैं।' कारीगर ने जाकर अपने तीनों साथियों को यह बात बतायी। चारों कारीगरों ने अपने बचाव के लिए योजना बना ली। दूसरे दिन सबेरे नगर सेठ उनके पास आये और कहने लगे- 'क्यों भाई, यह मन्दिर पूरा बन गया?' कारीगर कहने लगे- 'वैसे तो मन्दिर पूरा बन गया है, लेकिन यदि इसमें दो चीजें और लग जायें तो यह दुनियाभर के मन्दिरों में श्रेष्ठ हो जायेगा।' सेठ पूछने लगे- 'तुम लोग चीजों के नाम

बताओ, हम अभी मँगवा देते हैं।' कारीगरों ने दोनों चीजें लिखकर एक कागज पर दे दीं। सेठ-साहूकार दुकानों पर पूछते रहे, लेकिन उन्हें दोनों वस्तुएँ- 'जीवनडोर और हथकड़ी' नहीं मिली। उन्होंने कारीगरों के पास वापस जाकर बताया कि- 'भाई, हमने सब दुकानों पर पता किया, लेकिन हमें तो ये दोनों चीज़ें नहीं मिलीं।' कारीगर कहने लगे- 'आप लोग एक काम करो, हमने एक गाँव में एक मन्दिर बनाया था तो उसमें थोड़ी-थोड़ी ये दोनों चीजें हमारे पास बच गयी थीं। आप हमारे घर चले जाइये। वहाँ ये दोनों मिल जायेंगी।' सेठ कहने लगे- 'तुम्हारा गाँव कहाँ है?' कारीगर कहने लगे- 'हम सब बता देते हैं। आप अपने चार लड़के हमारे हाथ का लिखा यह कागज लेकर भेज दो। ये चीजें हमारी स्त्रियाँ आपके लड़कों को दे देंगी।'सेठ कहने लगे- 'ठीक है, हम लोग अपने चार बेटे भेज देते हैं।'

कारीगरों के हाथ की चिट्ठी लेकर चारों लड़के कारीगरों के गाँव की ओर चल दिये। गाँव पहुँचकर कारीगरों की चिट्ठी उनकी पत्नियों को दे दी। पत्नियाँ बड़ी चतुर थीं। उन्होंने पत्र पढ़ा। पत्र में लिखा था- 'हमारी जीवनडोरी की आशा करती हो तो इन्हें हथकड़ी दे दो।' इतना समझते ही उन्होंने गाँव वालों की मदद से चारों को कैद कर दिया एवं एक चिट्ठी लिखकर भेज दी कि 'हमारे चारों आदमियों को उनकी मेहनत का पैसा देकर जल्दी छोड़ दो, तभी हम तुम्हारे चारों लड़कों को छोड़ेंगे। यदि तुमने ऐसा नहीं किया, तो तुम्हारे लड़के मार दिये जायेंगे।' पत्र पढ़ते ही सेठ रोने-चिल्लाने लगे। उनकी पत्नियाँ रोने लगीं। उन्होंने जल्दी से पैसा इकट्ठा करके चारों कारीगरों को दिया। उनका खूब स्वागत-सत्कार किया। कारीगर कहने लगे- 'सेठजी, हमने आपके साथ भलाई की। अच्छा मन्दिर बनाया। बदले में आप लोग हमारे हाथ कटवा रहे थे।'

सेठ-साहूकारों ने चारों कारीगरों के पैर पकड़ लिये। उनसे क्षमा माँगने लगे। कहने लगे- 'आप लोग घर जाओ। हमारे बच्चों को भी अच्छी तरह वापस कर देना।' चारों कारीगर अपने गाँव चले गये। गाँव पहुँचकर उन्होंने चारों लड़कों को छोड़ दिया और अपने गाँव में सुख से रहने लगे। इसीलिए कहते हैं कि- 'स्त्रियाँ चतुर होती हैं'

म्होटो ल्हीकड़ो

एक गामड़ा में चार ल्हीकड़ो रेहता था। आग्गल गामड़ा में एक म्हेटो ल्हीकड़ो रेहतो थो। तो बी ल्हीकड़ो करतो रै न तो बी ल्हीकड़ो करता रै। आपषना में ते चार ल्हीकड़ा वतलावा लाग्गा के आपनी पला म्होटा ल्हीकड़ा ने ल्हीकड़ू कर लाईन। होम षोच्चीन ते चारी जना तो गागड़े चाल्ला।

म्होटा ल्हीकड़ा ने मालम पड़ी गी। तीने आपनी मान्छी ने केहीयो के– 'मैं षान्झे आईस तो म्हारा वाष्तर षावाने षुमाली, हलुवो आच्छी–आच्छी चीज्जें करीन मेल्हि राषणे। पाँच जनाउना षाऊँ करीन मेल्हि राषणै। तानू मैं आऊँ मैं तून्हें केहीस के दातीनू चैल्लू आवी ग्यो थो? तहाँ तू केही दीज्जे हौं आवी ग्यो थो। तीन्हे आवी ने म्हूने केही थी।' तो एक दातीनू चेल्लू लेईन बाँधी ग्यो ने एक चैने लेई ग्यो थो। चारयू ल्हीकड़ा सूँ करा षेतल्डा ऊप्पर म्होटा ल्हीकड़ा कने आया। तीन्हें षू आईन शमरूमी करी। म्होटा ल्हीकड़ा ने तीन्हें बेषाड़ी लेददा। ते चारी ल्हीकड़ा केहवा लाग्गा– 'थारे घरे जथी चाल्ली रयो?'

तिन्हा ऊप्पर म्होटा ल्हीकड़ा केहवा लाग्गा– 'म्हूने षेतल्डाने काम करनू से।' आँईं जोवे तो षान्झ छावा लाग्गी। म्होटा ल्हीकड़ा दातीन चेलुवा ने काढ़ीन केहवा लाग्गो– 'तू म्हारे घरे जा, घरनी मान्छीने जाईन केही दीज्जे के पाँच जनाउना षाऊँ करी ले, षुमाली, हलुवो ने आच्छी–आच्छी चीज्जें करी

ले। हमीं षान्झे आओस।' होम केही दांतीना चेलुवा ने जंगलवा छोड़ीन देदो। दातीन चेलुवा कुचलता चाल्ली ग्यो। ते चारी ल्हीकड़ा बेषा–बेषा जोई रया था। जोईन षान्झ छाई गी। हवें पाँच जना षेतल्डाना ऊप्पर से चाल्ला घरे। मान्छी पाँचूना बैषाड़ीने षाऊँ षड़ाई। षावाना में षुमाली आल्ली, हलुवो आल्ला ने आच्छी–आच्छी चीज्जे। तीन्हा ऊप्पर चारयू ल्हीकड़ा मान्छीए केहवा लाग्गा के– 'तून्हे चीज मालम पड़ीगी के हमीं आवी रा ने आ षाऊँ षासी?' म्होटा ल्हीकड़ानी मान्छी केहवा लाग्गी– 'आ दात्तीनू चेल्लू आईन म्हूने केही देददी ते चारे ल्हीकड़ा आपषना में बतलावा लाग्गा। आ दातीनू चेल्लू आपनो काम नू से।' ते षोचवा लाग्गा– 'आपनी ये दातीनू चेल्लू न लेई चाल्ली। आपनी बी मान्छी कने ईन्हें गोकल्ली ने षाऊँ रधांई करसी।' ते म्होटा ल्हीकड़ानू केहवा लाग्गो– 'भाई, तून्हें षाऊँ षड़ाऊँ पन एक चीज माँग्गी रा सीं।' म्होटो ल्हीकड़ो केहवा लाग्गो– 'माँगो तुम्हीं सूँ माँगीस? मैं आल्लीस।' तिन्हा ऊप्पर ते केहवा लाग्गा– 'आ दात्तीनू चेल्लू हमीं आल्लीस, हमारी मान्छी कने काम कराइस।' म्होटा ल्हीकड़ा ने दातीनू चेलुवा आल्ली दीस।

चारे ल्हीकड़ा दातीन चेलुवा ने लेईन आपना गामड़ा चलाई ग्या। जाईन वैहना में चारी ल्हीकड़ा उठीन षेतल्डाना ऊप्पर जिया तहाँ काम करुवा लाग्गा। काम करता–करता षान्झ छाई गी। एक ल्हीकड़ा केहवा लाग्गा– 'चाल्लो घरे चाल्ली आपनी।' एक केहवा लाग्गो– 'न थी आ दातीनू चेलुवा ने घरे मेल्हि दो, घरनी मान्छी षाऊँ राँधी दीस।' ते दातीना चेलुवा ने केहवा लाग्गा– 'जाईन केही दीज्जे षुमाली, हलुवो, आच्छी–आच्छी चीज्जें, तरकारी करी लीज्जे हमीं रातें आओस।' होम केहीन दातीनू चेलुवा ने मेल्हि देददू। दातीनू चेलुवो कुचकतो जंगलना में नाष्घी ग्यो। चारी ल्हीकड़ाउनी मान्छी तिउने मानषाना के तानू तक तो षाऊँ ना राँधे। ते षोच्ची री हमना आवे मनषा, हमना आवे मनषा। तीन्हें तीम्मज बैषी षाऊँ ना राँध्यू।

हवे ते चारी ल्हीकड़ा राते आपने षेतल्डाउना काम करीन न्हाईन धोईन आईन केहवा लाग्गा– 'लाओ षाऊँ भूच्च लागी री, षाऊँ छो से?' ते मान्छी केहवा लाग्गी– 'तूम्हीं षाउना सूँ केही ग्या था?' ते केहवा लाग्गा–

'तमारो बाब्बो दातीनू चेलुवा नथी आवीने केहीस?' मान्छी केहवा लाग्गी- 'दुनियाना में दातीनू चेल्लू आईन बोलवासे?'

तानू ते ल्हीकड़ा षोचवा लाग्गो के- 'म्होटो ल्हीकड़ो आपनो ने ल्हीकड़ू करि लेददो।' वैहना में चारीयू जना म्होटा ल्हीकड़ानू कने चाल्लीस ने षोचवा लाग्गा- 'हवे तो तीन्हा घरना में ल्हीकड़ा करीन लाओसे।' होम षोच्चीन ते चाल्ला। तानू म्होरा ल्हीकड़ा तीन्हीं मान्छी ए केहवा लाग्गो के- 'हवे चारी ल्हीकड़ा फिरी आओस तून्हें मैं आ ल्हाषड़ाषू मारीस, तू मरी जाज्जै। मैं आ ल्हाकड़ू थारे बाक्का कने लगाड़ू तानू तू उठी पड़ी जाज्जै। तानू पूच्छे तो आ केही दीज्जे के आ तो रोज मारे फिरिये षत्ते जिड़ाई लेईस।'

हवे ते चारी ल्हीकड़ा आया। चारयूने जोटता षम म्होटो ल्हीकड़ो तीन्हीं मान्धीने मारूवा लाग्गा चारी ल्हीकड़ा जोई रया था। मारता-मारता मान्छी मरीगी, जीव षाती राष्यू। मिसियाचने वाष्तर मरूवा वाने छई गी। चारयू ल्हीकड़ा केहवा लाग्गो- 'सूँ छाई ग्यो म्होटो ल्हीकड़ा?' म्होटो ल्हीकड़ा केहवा लाग्गो- 'मान्छीने तो होम्मज मारनो चावे।' चारयू जोवे तो केहवा लाग्गे- 'थारी मान्छी तो मरीगी।'

तिन्ह पे म्होटा ल्हीकड़ा केहवा लाग्गो- 'मैं ईन्हें जिड़ाई लीस। ल्हाकड़ो पाड़ीन तिन्हा नाक कने षूंघड़ाई के उट्ठी पड़े।' एटटा करताषम मान्छी उठी पड़ी। तिन्हा ऊप्पर चारी ल्हीकड़ा केहवा लाग्गा- 'आ ल्हाकड़ू आच्छो से थारो, हमूने आल्ल दे। हमारी मांछीउने बी होम्मज मारूँ से। मारीन फिरिये जिड़ाई लीस ते बी बहोत मष्ती करींस।' म्होटो ल्हीकड़ो ने लाहकड़ो नो षोटटो तीन्हू हाथ में आल्ल देददो। चारयू लेईन पाच्छे आपने गामड़े चलाई ग्यो। आपने गामड़ाआ जाईन आपनी-आपनी मांछी ने लड़ुवा लाग्गा। मान्छी केहवा लाग्गी- 'चीम उल्टो वतलाई रौ से म्हारे?' एटटी वात केहताषम मान्छीउना नाकवाक्कोना में मारयू ते मरीगी चारयू। मरूवाना बादना हवै चारयू बैष्षा जोई रया। ते केहवे हवै हमूने मान्छीने जिड़ाई रौ से। तो ल्हाकड़ो षूटटो लेईन नाक कने षूंघड़ायो के हवै उट्ठी पड़। ते सुकवा उठती तो षाच्ची मरी

गी। हवै लहकड़ा नाक ने बाक्का में घाल्लू लाग्गा। दाँत टूटटी गे, ते बी ना उठे। ते चारी मरी गी। चारयू ल्हीकड़ा केहवा लाग्गा- 'आपनी मान्छी षाच्ची मरी गी। हवै चाल्लीने म्होटा ल्हीकड़ाने मेल्ली।' चारे जना रिषाईन म्होटा ल्हीकड़ाने गामड़ा चाल्ला। तो केहवा लाग्गो आपनी मान्छीए- 'चारी ल्हीकड़ा आवी रा से। आपनी मान्छीउना मारी आयो। तू म्हूने धरीन लेई जासे, तू एक काम करजे। जेट्टू आपने कने षोन्नू, चाँदी से, फदीया से, मोहरें रीं आषी उना एकठ्ठी करीन मेल्हि राषें।'

एटटाजना में चारी ल्हीकड़ा तीन्हा घरना ऊप्पर आवी ग्या। आईन ना हेटटी जोईन ना उच्ची जोईन धरीन तीन्हें कोथला में घाल्लीन बाक्को बान्धीन तीन्हें नद्दीना ऊप्पर नाष्षूना वाष्तर लेई चाल्ला। चारयू केहवा लाग्गा- 'तीन्हें नद्दीना में नाष्षीन आईन तानू ईन्हीं मान्छीए गहनो, फदीयो लूटटी लेईस।' चालता-चालता नद्दीना काठ्ठे वच्चे जंगल हथो। तो जंगलना में हेट कोथला मेल्ही देददू। बैषीन मूतरवाने, हंगुवाने वाष्तर ते चलाई ग्यो कोथाला तहाँज मेल्ळी राष्षो।

आन ते ढ़ंढा चरानहारो आयो। ते कोथला ने काठ्ठे ते निकल्यो। हाल्तो कोथला जोईन केहवा लाग्गो- 'भाई, आन में कुण से?'तिन्हा में से म्होटो ल्हीकड़ा वात केही के- 'भाई, मैं मनष सूँ म्हूने पला चारी जना जबरण्ती ले जाई राँ सीं व्याहब करावने वाष्तर। मैं व्याहब करूवानो नथी चाहीरया से।' तो ढ़ंढाहारा केहवा लाग्गो- 'तू व्याहब ना करे तो मैं व्याहब करीस।' म्होटो ल्हीकड़ो केहवा लाग्गो- 'एक काम करीन तू कोथलाना बाक्को छोड़ी दे तू बैषीजा म्हूने बाहर करी दे।' म्होरो ल्हीकड़ो बाहर निकलीन ढ़ंढाहारो ने कोथला में बंद करीन बाक्को बाँधीन नाष्षी ग्यो। ते चारयू आईन कोथला पाड़ीन लेई जाईन एक म्होटी नद्दीना में फेंकी आयो। फेक्कीन केहवा लाग्गो- 'चाल्लो म्होटा ल्हीकड़ाने घरे चाल्लीन, ल्हीकड़ा करी लाईन।'

आंई म्होटो ल्हीकड़ो आपने घरे पोंहची ग्यो। जाईन मान्छी कने बैषी ग्यो ने माटटीना में बेषो-बेषो जोई रौ। ते चारी ल्हीकड़ा आईन केहवा लाग्गो- 'म्होटो ल्हीकड़ो आ चीम पाच्छे सुकवा आवी ग्यो?' म्होटो ल्हीकड़ो

केहवा लाग्गो– 'तुम्ही म्हूने नद्दी में फेंक्की देददो तहाँ एक षजानो हथो तीन्हें आग्गल बीज्जो बी है। षोन्ना–चान्दी तिन्ह में भराई रौ से। तुम्हीं म्हूने जरा बी आग्गल फेंक्की देत्ता तो हीरा–मोती–पन्ना मिलतो म्हूने।' म्होटा ल्हीकड़ा चार कोथला लेई ग्या। एक–एक कोथला में एक–एक ल्हीकड़ाने पाड़ीन कोथलाना बाक्का बाँधीन एक–एक ने नाषतो चलाई ग्यो। चारयू मरी ग्या। ते नान्हा ल्हीकड़ा था। तानू ईन्हू नाम म्होटो ल्हीकड़ो वाज्यू।

महाठग

एक गाँव में चार ठग रहते थे। पास के एक गाँव में एक महाठग रहता था। ये सब ठगी करते थे। एक दिन चार ठगों ने तय किया कि महाठग को ठगा जाये। ऐसा सोचकर चारों ठग महाठग के गाँव चल दिये। महाठग को जब पता लगा कि चारों ठग उसे ठगने आ रहे हैं, तो उसने अपनी पत्नी से कहा– 'मैं शाम को लौटूँगा, तुम पूड़ी, हलुवा और अच्छी–अच्छी चीजें बनाकर रखना। पाँच लोगों के लिए खाना बना लेना। जब मैं घर आऊँ तो तुम कहना कि खरगोश ने आकर कहा था।' इतना कहकर महाठग ने एक खरगोश पत्नी के पास घर पर बाँध दिया और एक अपने साथ लेकर खेत पर चला गया। चारों ठग महाठग के पास खेत पर पहुँचे, राम–राम की और बैठ गये। थोड़ी देर बाद महाठग से कहने लगे– 'हमें अपने घर नहीं ले चलोगे?'

महाठग कहने लगा– 'मुझे खेत पर काम करना है, थोड़ी देर बाद ले चलूँगा।' धीरे–धीरे शाम होने लगी। महाठग ने चारों ठगों के सामने अपने लाये खरगोश से कहा– 'खरगोश, तू घर जा, मेरी पत्नी से कहना कि पाँच लोगों के लिए पूड़ी, हलुवा, तरकारी व अच्छे–अच्छे पकवान बना ले। हम लोग शाम होने के बाद आयेंगे।' इतना कहकर उसने खरगोश को छोड़ दिया। वह उछलता हुआ भाग गया।

सूर्यास्त होने पर वे चारों महाठग के साथ उसके घर पहुँचे। महाठग की पत्नी ने पाँचों को बैठाकर वही सब पकवान खिलाये, जो महाठग ने खरगोश को बताये थे। चारों ठग आपस में विचार करने लगे कि महाठग का

यह खरगोश तो बड़े काम का है। यदि हम लोग यह खरगोश ले चलें तो हमें भी अपनी पत्नियों को खबर भेजने में कठिनाई नहीं होगी। ऐसा सोचकर उन्होंने महाठग से कहा– 'भाई, तुमने हमें खाना खिलाया है, एक चीज और हम माँग रहे हैं। हमें दोगे?' महाठग कहने लगा– 'माँगो, क्या चीज चाहिए? मैं जरूर दूँगा।' इस पर चारों ठग कहने लगे– 'यह खरगोश हमें दे दो। हम भी इसके द्वारा अपनी औरतों को खबर भेज दिया करेंगे।'

महाठग ने उन्हें खरगोश दे दिया। दूसरे दिन वे खरगोश को लेकर अपने खेतों पर गये। जब काम करते–करते थक गये तो आपस में कहने लगे– 'चलो, अब घर चलें।' इतने में एक ठग को खरगोश की याद आयी। उसने कहा– 'नहीं, अभी घर नहीं चलो। इस खरगोश को भेज दो, यह खबर कर देगा। औरतें खाना तैयार कर लेंगी।' जैसा महाठग ने किया था, उसी प्रकार इन ठगों ने भी खरगोश से कहा– 'जाओ, हम लोगों के घर जाकर औरतों से कह देना पूड़ी, हलुवा, तरकारी व अच्छे–अच्छे पकवान तैयार रखें।' इतना कहकर उन्होंने खरगोश को छोड़ दिया। खरगोश उछलता–कूदता जंगल में भाग गया। इधर चारों ठग रात को सारा काम निपटाकर नहा–धोकर भूख से परेशान घर पहुँचे। पत्नियों से कहने लगे– 'लाओ जल्दी–जल्दी खाना परसो, बहुत भूख लग रही है।' पत्नियाँ कहने लगीं– 'कैसा खाना? अब आये हो, बताओ क्या बनायें? तुम लोग खाना बनाने के लिए तो नहीं कह गये थे।'

चारों ठगों को क्रोध आ गया, वे अपनी–अपनी पत्नियों को डाँटकर कहने लगे– 'तुम्हारा बाप खरगोश नहीं आया? उसने आकर नहीं बताया?' स्त्रियाँ कहने लगीं– 'दुनिया में खरगोश भी कहीं आदमियों की बोली बोलते और समझते हैं?' चारों ठग सोचने लगे कि महाठग ने उन्हें धोखा दिया है, ठग लिया है। सबेरा होते ही चारों ठग नाराज होते हुए महाठग के घर चले। इधर महाठग अपनी पत्नी से कहने लगा– 'देखो, अभी चारों ठग फिर आते होंगे। मैं उनके सामने तुम्हें डण्डे से मारूँगा, तुम मर जाना। फिर मैं यह डण्डा तुम्हारे मुँह के पास लगाऊँगा, तुम उठकर बैठ जाना। जब चारों ठग पूछें तो

कहना ये तो रोज मारते हैं, डण्डा सुँघा देते हैं और मुझे जिन्दा कर देते हैं।' इतने में चारों ठग आ गये। उन्हें देखते ही महाठग अपनी पत्नी को जोर-जोर से डण्डे से मारने लगा। थोड़ी देर बाद महाठग की पत्नी मरी-सी बनकर पड़ गयी। उसने साँस साध ली। उसे मरा देखकर चारों ठग घबरा गये और कहने लगे- 'महाठग, यह क्या हो गया?' महाठग कहने लगा- 'औरतों को तो ऐसे ही मारना चाहिए।' चारों कहने लगे- 'अरे महाठग! तुम्हारी पत्नी तो मर गयी।'

महाठग कहने लगा- 'घबराने की कोई बात नहीं, मैं इसे अभी जिन्दा कर दूँगा।' इतना कहकर उसने पत्नी की नाक पर डण्डा रखा, पत्नी उठकर बैठ गयी। उसे जीवित देखकर चारों ठग कहने लगे- 'अरे! यह डण्डा तो बड़े काम का है। यह तो तुम हम लोगों को दे दो। हम लोग अपनी पत्नियों को भी ऐसे ही मारेंगे फिर ऐसे ही जीवित भी कर लेंगे। हमारी औरतें भी बहुत बिगड़ गयी हैं, मनमानी करती हैं।' महाठग ने अपना डण्डा उन चारों ठगों को सौंप दिया। चारों ठग डण्डा लेकर अपने गाँव पहुँचे। घर पहुँचते ही बिना कारण अपनी पत्नियों से लड़ने लगे, उन्हें डाँटने लगे। पत्नियाँ परेशान होने लगीं और वे भी बहस करने लगीं। चारों ठगों ने बारी-बारी से डण्डा उठाया और इतना पीटा कि चारों की पत्नियाँ मर गयीं। चारों को मार-मारकर चारों ठग आराम करने लगे और सोचने लगे, जल्दी क्या है, अभी थोड़ी देर बाद जीवित कर लेंगे। कुछ देर बाद चारों ठगों ने अपनी-अपनी पत्नियों की नाक पर डण्डा लगाया, मुँह में डाला, उनके दाँत टूट गये पर वे नहीं उठीं। वे कैसे उठतीं, क्योंकि वे सचमुच मर गयीं थीं। जब चारों को पता लगा कि ये तो वास्तव में मर गयीं तो बड़े दु:खी हुए। महाठग पर उन्हें बहुत क्रोध आया। चारों चले महाठग को जान से मारने के लिए।

महाठग समझ गया कि चारों उसे मारने अवश्य आते होंगे। अत: उसने अपनी पत्नी से कहा- 'चारों ठग आ रहे हैं, वे मुझे पकड़कर ले जायेंगे, तुम एक काम करना कि जितना अपने पास सोना-चाँदी, रुपया-पैसा है, सब एक साथ इकट्ठा करके उसके पास बैठी रहना।' इतने में चारों

ठग आये। बिना कुछ सोचे-समझे उन्होंने महाठग को बोरे में बन्द किया और नदी में फेंकने के लिए लेकर चल दिये। चारों ने सोचा इसे नदी में फेंक आयें, फिर इसकी पत्नी व गहने सब लूटकर ले चलेंगे। चलते-चलते बड़ी देर हो गयी। चारों ठगों में से किसी को लघुशंका जाने की आवश्यकता पड़ी, तो कोई दीर्घशंका जाने के लिए तैयार था। अत: चारों ठगों ने थैला एक स्थान पर रखा और बड़ी दूर दिशा मैदान के लिए निकल गये। इधर से एक चरवाहा निकला। उसने हिलता-डुलता बोरा देखा तो उसके पास आया और पूछने लगा- 'भाई, तुम कौन हो? बोरे में कैसे बन्द हो गये?' महाठग कहने लगा- 'भाई, मैं एक आदमी हूँ। चार लोग मुझे जबरदस्ती पकड़कर मेरा ब्याह करने के लिए ले जा रहे हैं। मैं अभी ब्याह करना नहीं चाहता।' चरवाहा कहने लगा- 'मैं ब्याह करना चाहता हूँ।'

महाठग ने कहा- 'ऐसा करो तुम मुझे इस थैले से बाहर निकाल दो और तुम्हें मैं इसमें बन्द किये देता हूँ।' इतना कहकर वह तो थैले से बाहर निकला और चरवाहे को बन्द कर दिया। चारों ठग आये, थैला उठाया और नदी में फेंक दिया। फेंकने के बाद चारों ने तय किया कि महाठग के घर जाकर सब सामान व उसकी पत्नी को ले जायें। इधर महाठग पहले ही अपने घर पहुँच गया एवं रुपया-पैसा, सोना-चाँदी रखे अपनी पत्नी के साथ बैठा चारों ठगों की राह देख रहा था। जैसे ही चारों ठग-महाठग के घर पहुँचे तो उन्होंने महाठग को बैठे देखा। आश्चर्यचकित होकर कहने लगे- 'अरे महाठग! तुम वापस कैसे आ गये?' महाठग कहने लगा- 'तुम लोगों ने मुझे नदी में फेंका था, वहाँ एक बहुत बड़ा खजाना था। आगे और भी कई खजाने नदी की गहराई में हैं। पर दु:ख की बात है कि तुमने मुझे गहराई में नहीं फेंका। यदि गहराई में फेंकते तो मुझे बहुत से हीरे-पन्ने, जवाहरात मिलते।'

चारों ठग कहने लगे- 'महाठग, चलो जल्दी चलो, उसी खजाने के पास तुम हम चारों को फेंक दो।' महाठग तो यही चाहता था। उसने चार थैलों में चारों ठगों को बन्द किया और नदी की बीच धार में बड़ी गहराई में फेंक आया। वे चारों ठग छोटे ठग थे, मर गये। महाठग ने उन्हें भी ठग लिया। इसीलिए इसका नाम 'महाठग' पड़ा।

षाददूनी सीष

एक गामड़ा में एक मानषो ने तिन्ही मान्छी रेहता था। तिन्ही मान्छी मानषा ने केहती रेहती थी के– 'तू बीज्जा गामड़ा में जाईन कमाईन हिंडीन फदीया करी ला। बीज्जा देषना जाईस तो तून्हें ज्यादा फदीया मिलीस।' तिन्हा मानषो केहवा लाग्गा– 'आच्छी वात से। मैं काल चलो जाईस। म्हूने बै रोल्टो बाँधी दीज्जे।'

हवे वैहना में उठीन कमावने वाष्तर घर छोड़ीने चली ग्यो। चाल्तो–चाल्तो एक म्होटा गामड़ामा जाईन पोंहची ग्यो। गामड़ामें एक म्होटो मानषो हथो, तिन्हें केहवा लाग्गो– 'म्होटो मानषो कोई काम होये तो म्हूने राष्षी लै, मैं थारो काम करीस।' म्होटो मानषो केहवा लाग्गो– 'काम तो कराईस एक मेहना नू एक आनो आल्लीस।' तो केहवा लाग्गो– 'म्हूने मंजूर से।' होम केहीन म्होटा मानषा कने काम करूवा लाग्गो। काम करता–करता चेटटाक बरष छई ग्या तिन्हें कने चार षौ रूपा जुड़ा। तो केहवा लाग्गो– 'हवे तो मैं म्हारा गामड़े आपनी मान्छी कने चाल्लूँ।' म्होटा मानषाए होम केहीन आपने गामड़े चाल्लो। चाल्ते–चाल्ते वच्चे एक जंगलू पड्यो। जंगलनामें म्होटो षाददू धूनी लगाड़ी ने बैषो, तहाँ म्होटा–म्होटा मानषा तिउने गोड़डा पड़ी रा था। षाददू आषाउना बात्तें वताली रयो थो। तहाँ तो बी जाईन बैषी ग्यो। तो केहवा लाग्गो– 'षाददू महाराज, म्हूने बी एक वात पूंच्छनो से।'

षाददू केहवा लाग्गो– 'म्हारी एक वात ना जवाब में षौ रूपा आल्लीस।' तो केहवा लाग्गो– 'म्हारे कने चार षौ रूपा सीं मैं एक षौ नी वात पूच्छी लीस।' षौ रूपा आल्लीन एक वात पूच्छी तो षाददू ने एक वात केही– 'जो चारे जना कहे मानजे।' तो केहवा लाग्गो– 'महाराज, आ तो कोई वात ना छाई। बीज्जू वताल म्हारे।' षाददू केहवा लाग्गो– 'बीज्जी पूच्छे तो बीज्जे षौ रूपा आल्ल।' तो षौ रूपा बीज्जे आल्ले तो षाददू केहवा लाग्गो– 'घाटना ऊप्पर चानू बी ना नाहजै। उज्जड़ घाट नाहने।' तो केहवा लाग्गो– 'आ बी कोई वात नी म्हूनी बीज्जी बताल।' षाददू केहवा लाग्गा– 'बीज्जी बात पूच्छे तो आल्ल बीज्जे षौ रूपे।'

तीन्हे बीज्जे षौ रूपे आल्ले तो षाददू ने जवाब आल्लो– 'कोई बी षात्ती करे तिन्हें जोई लीज्जे आच्छी करीन।' तो केहता लाग्गो– 'आ बी कोई बात ना छाई, बीज्जी वताल म्हूने।' तिन्हा ऊप्पर षाददू केहवा लाग्गो– 'बीज्जी पूच्छे तो बीज्जे षौ रूपे आल्ल।' तो केहवा लाग्गा– 'हवे म्हारा त्रण षौ रूपा तो चलई ग्यो षौ रूपा लेईन काँई करूँ?' तिन्हें फिरिये षौ रूपा आल्ला। रूपा आल्लीन फिरिये वात पूच्छी। षाददू ने जवाब आल्लो– 'कोई बी काम करे तो छो मेहना आग्गल छो मेहना पषाल षोच्ची लीज्जे।' तो केहवा लाग्गो– 'महाराज, आ तो कोई जवाब ना आल्लो म्हारी आटटा बरषनी कमाई तिन्ह में चलाई गी।'

एटटी केहीन आपना गामड़ा में चाल्लो। चाल्ता–चाल्ता एक म्होटो गामड़ो पड़ो। तो गामड़ा माँ एक मंगनहारो मानषो कोडडी हथो। तिन्हा हाथ गोडडाना में से गांध निकल री थी। तो मरी ग्यो। तो गामड़ाना में आल्डा मानषा बाम्हन हथा, आल्डा म्होटी जातना। ते आपषना में केहे– 'तू पाड़ीन फेंकी दें, तें केहे तू पाड़ीन फेंकी दी।' ते बोहूना में आपषना में लड़ाई छई री। न ते पाड़े न ते पाड़े। माँगनहारा मरीने षड़ी रयो। तो गामड़ाना म्होरो मानषो केहवा लाग्गो– 'एक काम करी या पलो मुसाफिर जई रयो तिन्हें केही दो यो पाड़ीन फेक्कीं दीस।' चार जना ऊब्बा छाईन आवाज लगाड़ी। तो केहवा लाग्गो– 'सूँ वात छे?' तिन्हा चार जना केहवा लाग्गा– 'हमारा गामड़ा में एक माँगनहारा मरी ग्यो से तिन्हें पाड़ीन तू फेंकी दे।' तिन्हा ऊप्पर रीषूना

में केहवा लाग्गो- 'मैं सूँ?' तुम्हारा काम करनहारा? तम्हारे गामड़ानी वात म्हूने काँई करनो। एटटी केहीन जावा लाग्गो। तानू बादमा षोच्चीन आ तो षादूदनी षौ रूपानी वात सी, चारना केही मानना चाब्बे। ते षोच्चीन पाच्छो आईन माँगनहारा ने घसीटीन फेंकीन चाल्लो।

माँगनहारानी कड़ना में जिंदगी नी रोकड़ एक नौली हथी। नौली कड़षू बाँधी राषी। तिन्ह में मोहरें अशर्फी हथीं। तो तिउने नौली दीषी। लूगड़ो फाटी ग्यो थो। मोहरें अशर्फी बगरी री थीं। तिन्हें पाच्छे फिरीने केहवा लाग्गो- 'आ तो मोहरें सीं।' आषाउना समेटी लेददू। लूगड़ा में बाँधी ली न केहवा लाग्गो- 'षाददू महाराजनी आ षौ रूपानी वात काम नी। पण त्रण षौ रूपा म्हारा तीम्मज जिया।'

एटटी षोच्चीन आग्गल चाल्लो। कोड्डीने घसीटो थो तो न्हावनो हथो। न्हावाने वाष्तर नद्दीने हेट जियो। तहाँ घाटना ऊप्पर जियो तो षोचवा लग्गो के- 'आ बी षौ रूपानी वात से। के घाट पे ना न्हावनो चाज्जे। तो उजड़ घाट जियो जाईन अशर्फी, मोहरौना पोल्टो मेल्ली देददो। आपना लूगड़ा लत्ता धोईन न्हाईन उठो तो चालतो चलो ग्यो। अशर्फी तहाँ छोड़ी ग्यो। आग्गल जाईन तिन्हें बुध छाई तो पाच्छे नाहटी ने आयो तो पोल्टो तहाँज मिल्यो। तो षोचवा लाग्गो षाददू नी आ वात बी षाच्ची से। म्हारा बै षौ रूपा तीम्मज जाऐस।'

एटटी षोच्चीन आग्गल चाल्लो। तिन्हा गामड़ाना काठठे म्होटो जंगल हथो। हवे षोचवा लाग्गो। म्हूने आ जंगलना अक्केलो जाईस कोई लूटटी के। एक मनष बीज्जो छई जाये तो आच्छी वात से। तो वाटटे कई मनषू आवे तिहूने तो केहवे- 'मैं बी चाल्लीस थारे गामड़े मगर म्हूने काम से। तुम्हीं जरा बैषी जाओ मैं हँसी आऊँ।' एटटो केहीन जाये, परे ऊब्बो जोत्तो रै वे मनष जोईन चला जावे। करता-करता बहोत जना आया, चलाई ग्या। वाटटे एक बछुवो मलई ग्यो। तो केहवा लाग्गो- 'भाई, काछुवो तू छां जई रौ से?' तो कछुवो केहवा लाग्गो- 'मैं पला तलाब जई रौ से। ' तो मानषो केहवा लाग्गो- 'मैं पला गामड़ा, जई रौ से।' एटटी केहीन काछुवो ने केहवा लाग्गो- 'तू जरा देर बेषी जा तानू मैं थारे चैने चाल्लीस।'

कछुवो तहाँ बैषो तो हंगुवाने केहीन जियो। तिन्हें जोत्ता-जोत्ता बैगण घण्टा छई ग्या मगर काछुवों तहाँज बैषो। तानू तो षोचवा लाग्गो आवे चैने षाथ आच्छो होम षोच्चीन बोहे मिलीन आग्गल चलुवा लाग्गा। चालता-चालता भुपार छई ग्यो। एक पीपलानू रूषड़ो हेट बोहे जना तिन्हें छाएड़ा में बैषी ग्यो। षष्ताने वाष्तर। मानषो हथो आड्डो छई ग्यो। काछुवो तिन्हें काठठे बैषो थो। होम्मण करीन जंगलना में एक षाँप ने एक कागड़ो चैने रहता था। षाँप मनषूने कल्डी षाये ने कागड़ो आईन आँषा, वोट्टीने चोटटी-चोटटी ने षई ले।

षाँप ने सूँ करू ईन्हे की कल्डी षायो। कल्डाता षम मानषो मरी ग्यो। काछुवो मानषाने काठठे बैषो थो। कागड़ा उड़ीन आईन तिन्हें माटटीनू ढ़ील्लो जानीने ऊप्पर बैषी ग्यो। बैषता षम कछुओ सूँ करू आपनो बाक्को काढ़ीन कागड़ानू गोडडो धरी लेददो। गोडडो धरीन बाक्का में घाल्ली ल्यो। कागड़ा चिल्लावा लाग्गो- 'म्हारा गोडडा धरी लेददो, म्हूने बचाड़ो।'

हवे षाँप आयो नाहटो। षाँटा आईन काछुवो ने ऊप्पर फन मारे। काछवा ने काँई अषर ना छाए। तानू काछवा केहवा लाग्गो के तू जल्दी म्हारा षातहारा ने विष षेच्चीन जिड़ाई ले नथी में थारा षातहारा ने गटकी जाऊँ।' आंई कागड़ा चिल्लावे- 'म्हूने बचाई ले, म्हूने बचाई ले।' एटटी वात षमझीन षाँप जाईन मानषानू ज विष षैंच्चीने लेददो। नषाए जिड़ाई लेददो। तानू कागड़ाना गोडडा कछुवो ने छोड़ी देददो। तानू कागड़ा ने षाँप चलाई ग्यो। ते बोहे उठीन चाल्वा लाग्गा। तहाँ बी षोचवा लाग्गा। षादूनी आ वात बी षाच्ची षौ रूपानी। हवै म्हारा षौ रूपा जिया। हवै आग्गल चाल्लो। तलाव आवी ग्यो। काछुवाने तहाँ छोड़ी देददो। ते आपने गामड़े चलाई ग्यो।

गामड़ा मा जाता-जाता षान्झ छई गी। तिन्ही मान्छी तिन्हा घरना में एक षाल्टाना ऊप्पर आपना गोल्याने लेईन षुई री थी। गोल्यो म्होटो छई ग्यो थो। मानषा आईने तिन्हें जोयो। जोत्ताजषम मनना में केहवा लाग्गा- 'म्हारा जावाने बादमें बीज्जो मानषो करी लेददा।' तिन्हें सूँ करी कात्ती पाड़ीन तिउना

बोहूना वाडुवाना वाष्तर करुवा लाग्गो। आम वाडतो एटटा जना में मन मा षोच्ची आ बी षौ रूपानी वात से। ईन्हा वाष्तर तिहूने उठाड़ीन तीन्हें वाडडीस।

एटटी षोच्चीन आपनी मान्छीए केहवा लाग्गो– 'उठ षषरी, लुगडू धरीने षेच्चू।' मान्छी उठीने ऊब्बी छई गी ने केहवा लाग्गी– 'गोल्या जाग थारो बाब्बो आवी ग्यो, गोडडा पड़ीं।' तो केहवा लाग्गो– 'यो कुण से?' तो केहवा लाग्गी– 'तानू तो हिंडी षावाने जियो थो, ताने मैं भारी गोडडे हेथी। थारो छियो से यो।' एटटी केहताषम बाब्बो, छियो, माँ त्रणू गले मिल्यो। ने केहवो लाग्गो– 'षाददूनी आ वात बी षाच्ची। मैं वाडडी नाषतो तो गोल्यू ने मान्छी मरी जाती। ईन्हा वाष्तर केहीं सीं के कोई काम करू षोच्ची षमझीने करू।'

साधू की सीख

एक गाँव में एक पति-पत्नी रहते थे। पत्नी हमेशा अपने पति को परदेश कमाने जाने के लिए कहती रहती थी।

एक दिन पत्नी की बात मानकर दो रोटी साथ लेकर वह परदेश के लिए निकल गया। चलते-चलते वह एक बड़े शहर में पहुँचा। वहाँ एक सेठ के घर वह एक आना महीना पर नौकरी करने लगा। धीरे-धीरे कई वर्ष बीत गये। उसके पास इतने दिनों की कमाई के चार सौ रुपये इकट्ठे हो गये। अब उसने सोचा अपने घर चला जाये। सेठ से छुट्टी लेकर वह अपने गाँव चल दिया। चलते-चलते रास्ते में एक बड़ा जंगल मिला। वहाँ एक साधू धूनी रमाये बैठा था। बड़े-बड़े सेठ साहूकर साधू के चरणों में सिर झुकाये बैठे थे। वह आदमी भी साधू के पास जाकर बैठ गया और साधू से कहने लगा– 'महाराज मुझे भी एक बात पूछनी है।'

साधू कहने लगा– 'मेरी एक बात की कीमत सौ रुपये है। सौ रुपये हों तो बात पूछ लो।' आदमी सोचने लगा– 'मेरे पास चार सौ रुपये हैं, चलो सौ रुपये खर्च करके एक बात पूछ लेता हूँ।' उसने सौ रुपये निकालकर

साधू के सामने रखे और उसे एक बात बतलाने के लिए कहा। साधू ने कहा– 'जो चार लोग कहें उसे मानना।' आदमी कहने लगा– 'महाराज, यह तो कोई बात काम की नहीं है, दूसरी बात बताओ।' साधू ने फिर कहा– 'सौ रुपये दो, फिर दूसरी बात बताता हूँ।' उसने फिर सौ रुपये साधू के सामने रख दिये। साधू ने बताया– 'कभी भीड़ भरे घाट पर मत नहाना, सूने घाट पर नहाना।' वह कहने लगा– 'अरे महाराज, यह तो बात काम की नहीं है। कोई दूसरी अच्छी बात बताओ।' साधू ने कहा– 'सौ रुपये और दो, तीसरी बात भी बताये देता हूँ। कोई भी मित्र बनाना, बहुत सोच समझकर बनाना।'

आदमी फिर भी सन्तुष्ट नहीं हुआ। वह कहने लगा– 'कोई और अच्छी बात बताओ। यह बात तो बड़ी साधारण है।' साधू ने उसके पास बचे अन्तिम सौ रुपये लेकर एक बात और बता दी कि– 'कोई काम करने से पूर्व बहुत दूर की सोच लेना, फिर काम करना।' आदमी चारों बातें सुनकर साधु से कहने लगा– 'महाराज, ये बातें तो महत्त्व की नहीं हैं। मेरे इतने वर्षों की कमाई बेकार चली गयी।' इतना कहकर वह दु:खी मन से अपने गाँव चल दिया। रास्ते में एक बड़ा गाँव पड़ा। वहाँ एक कोढ़ी मर गया था। उसकी लाश सड़ रही थी। गाँव के लोग आपस में लड़ रहे थे। कोई उसकी लाश फेंकने के लिए तैयार नहीं था। इतने में यह आदमी उस गाँव के पास से निकला। गाँव के लोगों ने इससे कहा कि तुम लाश को फेंक दो। उसे साधु की सीख याद आ गयी थी कि 'जो चार लोग कहें वह बात मान लेना चाहिए।' अत: उसके कोढ़ी को कुछ दूर तक घसीट कर फेंक दिया। जैसे ही इसने कोढ़ी को फेंका, कोढ़ी की कमर में बँधी उसकी जीवनभर की कमाई मोहरें खनखना कर गिर पड़ी। इसने लाश फेंकी व मोहरें लेकर खुशी-खुशी यह सोचकर चल दिया कि साधु की एक बात तो सत्य हुई। सौ रुपये भी वसूल हो गये। लेकिन तीन सौ रुपये बेकार ही गये।

इतना सोचते-सोचते वह नहाने के लिए नदी की तरफ बढ़ा। जैसे ही घाट पर गया उसे साधु की दूसरी सीख याद आ गयी कि 'उजड़े घाट पर

नहाना, भीड़ में नहीं'। अतः वह सूने घाट पर जाकर नहाने लगा। नहा-धोकर आगे बढ़ा, तब उसे याद आया कि मोहरें तो वह घाट पर ही छोड़ आया। दौड़ता हुआ वापस घाट पर पहुँचा तो मोहरें जहाँ की तहाँ सुरक्षित मिलीं। वह फिर सोचने लगा- 'साधु की यह सीख भी काम की निकली, मेरे सौ रुपये वसूल हो गये। लेकिन लगता है कि दो सौ रुपये बेकार ही गये। इतना सोचकर घर जाने के लिए आगे बढ़ा। उसके गाँव के रास्ते में घना जंगल पड़ता था। वह सोचने लगा- 'अब मुझे इस जंगल से अकेले आगे बढ़ना पड़ेगा, इतना धन पास में है कोई लूट न ले, अतः एक साथी मिल जाये तो अच्छा।'

उसे रास्ते में कई आदमी मिले। उसने साधु की सीख के अनुसार उन्हें परखा, लेकिन उसे कोई भी विश्वासपात्र नहीं लगे। इस तरह जब कई आदमी निकल गये तो उसे एक कछुआ मिला। उसने कछुए से पूछा- 'भाई कछुए, तुम कहाँ तक जा रहे हो?' कछुआ कहने लगा- 'मैं उस तालाब तक जा रहा हूँ।' वह कहने लगा- 'भाई मैं भी तालाब के पास के गाँव तक जा रहा हूँ। तुम्हारे साथ चलूँगा। तुम थोड़ी देर बैठ जाओ। मैं अभी लौटकर आता हूँ। फिर हम तुम साथ चलेंगे।' कछुए को बैठाकर वह थोड़ी दूर जाकर छिप गया और देखता रहा कि कछुआ उसकी प्रतीक्षा में रुकता है या नहीं। कछुआ बेचारा घंटे-दो घंटे रुका रहा। तब उसने निश्चय किया कि यह सच्चा साथी है। अतः इसके साथ चल देना चाहिए। इतना सोचकर वह कछुए के साथ जंगल पार करने लगा। चलते-चलते दोपहर हो गयी। धूप और थकान के कारण कछुआ और आदमी दोनों एक पेड़ के नीचे बैठ गये। आदमी लेट गया, कछुआ पास बैठ गया।

उसी जंगल में पेड़ के पास एक साँप व एक कौआ रहते थे। साँप राहगीरों को काट लेता, जब आदमी मर जाता तो कौआ उसकी आँखें नोंचकर खा जाता। साँप ने इस आदमी को भी डँस लिया। कछुए ने देखा तो वह बहुत दु:खी हुआ। इतने में कौआ उड़ता हुआ आया और मिट्टी का ढेला समझकर कछुए पर बैठ गया। जैसे ही कौआ कछुए की पीठ पर बैठा,

कछुए ने अपना मुँह बाहर निकाल कर कौए का पैर कसकर मुँह में दाब लिया। कौआ जोर-जोर से चिल्लाने लगा। कौए की चीख पुकार सुनकर साँप दौड़ता हुआ आया, और कछुए पर फन मारने लगा। लेकिन कछुए की मोटी पीठ पर साँप के फन का कोई असर नहीं हुआ। वह कौए का पैर कसकर मुँह में दाबे रहा, कौआ रोता-चीखता रहा।

जब साँप ने देखा कि उसके मित्र कौए के प्राण संकट में हैं तो उसने आदमी के पास जाकर अपना विष वापस खींच लिया। आदमी उठ बैठा। कछुए ने कौए का पैर छोड़ दिया। कौआ और साँप चले गये तो वह सोचने लगा, साधु की तीसरी बात कि साथी समझ-बूझकर बनाना चाहिए। यह भी सत्य निकली। बस मेरा थोड़ा नुकसान हुआ। सौ रुपये ही गये। इतना सोचकर वह आगे चला। कछुए को उसके तालाब में छोड़कर वह गाँव पहुँचा। गाँव पहुँचते-पहुँचते रात हो गयी। घर पहुँचकर खिड़की से अन्दर झाँका तो देखता क्या है कि उसकी पत्नी एक युवक के साथ पलंग पर सो रही है। देखते ही सोचने लगा- अच्छा यह बात है, मेरे जाने के बाद इसने दूसरा विवाह कर लिया है। इतना सोचकर उसने तलवार निकाल ली कि दोनों को अभी समाप्त कर दूँ। लेकिन इतने में ही उसे साधु की अन्तिम सीख याद आ गयी कि किसी भी काम को करने से पूर्व भलीभाँति सोच-विचार कर लेना चाहिए। अतः इन्हें पहले जगा लिया जाये, फिर इन्हें मारूँगा। इतना सोचकर वह अपनी पत्नी को आवाज देकर कहने लगा- 'उठ ससुरी।' पत्नी-पति की आवाज सुनकर उठ बैठी। कहने लगी- 'बेटा, उठ तेरा पिता वापस आ गया। उठ कर पैर छू।'

आदमी पूछने लगा- 'यह लड़का कौन है?' पत्नी कहने लगी- 'जब तुम कमाने के लिए परदेश गये, तब मैं गर्भवती थी। यह तुम्हारा बेटा है।' तीनों गले मिले। वह कहने लगा- 'साधु की चारों बातें सच्ची हैं। यदि मैं अभी तलवार चला देता, तो मेरी पत्नी और लड़का दोनों मर जाते।'

हुषियार नौहरी

एक जंगलना एक नौहरी रहतो थो। तीन्हें देहिना में षाज गूमड़ी छई गई। तीन्हें बहोत पांदड़ाउने रगड़ी-रगड़ी ने लगाड़ू तीन्हें कोई फायदा न छायो। दिन-दिन तीन्हीं षाज गूमड़ी बढ़ती जाई री, कम ना छाऐ तो बहोत परेसान रहो! तीन्हा बादना में जंगलना एक मैया तू मंदिर हतू तो मैयानू नाम षजऊ होय! तीन्हा बादना में जंगलना एक मैया नू मंदिर हतू तो मैयानू नाम षजऊ हतो! तहां आषा जंगली जानवर जाईन तीन्हा परकम्मा आलता था।

तहाँ दिन नौहरी अपना मन में षोच्ची के मै षजऊ मैया ने जाईन गोड्डु हाथ पड़ूँ, जो म्हारी षाज अच्छी छई जाये। वैहना में उठीन ता मंदिर कने चाल्लो। तहाँ मढ़िया ने जाईन वहाँ मढ़िया ने जाईन वहाँ केहवा लाग्गो के- 'मैया, म्हारी आ षाज गूमडी अच्छी कर दीस तो मैं तुम्हने नाहरनू कालजो और जंगली षूल्डा नी कालजी दीन्हीं। तून्हें मैं भेंट चढ़ाइस। म्हूने आराम छाई जानो चहिये।'

मैया षजऊ मन मा षोचवा लागी कि आ तो जंगलो ना नौहरी से आ नाहर नू अन षूल्डानू कालजो चीम लाओ से? सो मैया नेसू करू के नौहरी नी षाज हथी धीरे अच्छी करवाने चालू सी। करता-करता दस-पाँच दिना में नौहरी बिल्कुल अच्छी छई ग्यो। कुम गौर करे षात महीना बेनहीरा में नौकरी बिल्कुल छई ग्यो। मैयानू नाम भूलि ग्यो। तो मैया ने हेथी रीष लागी के जो

म्हूने कई ग्यो थो नौहरी भेंट करवाने तो भूलि ग्यो। हमना तक तीन्हें भेंट ना चढ़ाई। नौहरी ने एकड़ी करना गोड्डा में फिरिये षत्ते षाज गूमड़ी चालू कर दें दी। जो षाज छाई नौहरी में तीन्हें फट छई ग्यी। के मैं षजऊ मैया ने नाहर ने षूल्डा ने कालजो चढ़ावानी कही थी तो मैं ना चढ़ाई तो फिरि य दुबारा षाज छाई थी। तीन्हें आ कहू के- 'मैया म्हूने माफ करणे मैं षूल्डानी ने नाहर नी कालजी की भेंट चढ़ाई जरूर।'

तहाँ से जंगलना में चाल्लो तहाँ जंगलना नाहर नू बड़ हतो तहाँ नाहर ने नाहरनी और तीन्हा चेलुवा एक हन ने मारीन षईर्या तहाँ नौहरी पौहचा ने केहवा लागो के- 'काका अच्छे से?' तो नाहर केहवा लागो- 'आवो-आवो बहोंत दिनना आयों, सूँ काम पड़ ग्यो म्हारा ने?' नौहरी केहवा लागो के- 'नथी काका, काम तो काई न थी एक बात छे के जंगलनों षूल्डा जो से तो उल्टी-षुट्टी बात्तें तूम्हने केई रयो थो। तो काका मैं तीन्हें बात्ते षमझी र्यो काका मैं सूँ करी षकतो? मैं तो नान्हो नौहरी।'

नाहर केहवा लागो- 'तू फिकर ना कर मैं तीन्हें काल नद्दी ना उटपर पानी पीवा आवो से तानू मैं तीन्हें जोईलीस बहोत मोट्टी-मोट्टी बातें केही से।' एही बातें कहीन नौहरी वड़ना में से निकलीन बाहर आवी ग्यो। नौहरी नू आल्डो काम छई ग्यो। तहाँ से आग्गल चाल्लो बीजा जंगलना में एकेलो षूल्डो रेहतो! तहाँ जाईन नौहरी तीन्हा कू राम सभी करीन तानू केहवा लागो के- 'बहोत दिनान बाद आयो तू? सू काम पड़ी ग्यो म्हारा सूँ?' 'मामा काई बात नथी तीम्मज आवो सूँ मैं थारा कने। एक बात से मामा के जंगलनो जो नाहर से तो तून्हें उल्टी षुद्दी बातें कहि रो से।' 'तिन्हें सूँ कही नाहरे?'

तीन्हा पे नौहरी ने जवाब आल्लो के- 'तो आ कई रो से के जंगलनो राजा मैं सूँ, नाहर और आषा जनावरू ने मारीन खाई।' तीन्हा ऊपर मैं आ कही के- 'म्हारो मामो षूल्डो से बी सी आहारो से।' तीन्हा ऊपर नाहर ने जवाब आल्लो- 'म्हूने के मैं तो तीन्हें मारीन षई जाईस। तो मामा मैं सूँ करतो? मैं तो नान्हो षो नौहरी हतो।' एही कहीन नौहरी चुप छई ग्यो। तीन्हा ऊपर

षूल्डा केहवा लाग्गो– 'तू फिकर ना कर कल नाहर पानी पीवाने आवे से नद्दी ना घाट ऊपर तहाँ मैं तीन्हें जोईलीस तू जा थारे घरे।' नौहरी हथो तो तहाँ से बाहर निकली आयो। हवे नौहरी नू काम पूरी छई ग्यो से। बोहे बगल आग लगाड़ी आयो।

तीन्हा वैहना नाहर हथो हवे नद्दी ना घाटना ऊपर पानी पीवा चाल्हो और षूल्डा जोहतो आवी रयो। परे से जोवे तो षूल्डा आवी रयो। वो भी जोत्तो आवी रयो के नाहर आवे। तो चला–चला आवता–आवता ना में नद्दी ना काठे पानी बी ना। पीद्दू तीने पहले तीउने आमने–षामने छई गी। नाहर हथो तो रिषाइन जोइनी बोल्हो के– 'तून्हें सूँ कई थी म्हारा बाराना में? तून्हें बोहत घमण्ड छई ग्यो से बीसी आहारा में?' तो षूल्डो हथो तो तीन्हें बी अपनी कॉप मॉटीना में मारी न मारी चीरीन तागत से केहवा लाग्गो नाहर ने के– 'तु भी बहोत बी सी आहारो से।' बोहे जना आमें–षामें लड़वाने आवी ग्या।

नाहर हथो तो अपना गोड्डा ने पाड़ीन षूल्डाने बाकाने ऊपर मारो षूल्डा बचाइ लेद्दो तेन्रा वारने। तीन्हा बादना से षूल्डाने नाहरना ऊपर वार करो। करता–करता बोहे बहोत देर छई गी। अईं नाहर बी जंगलनों राजा हथो और बीसी आहारो हथो और अईं धूल्डो बी बहोत बीसी आहारो हथो। बोहे हारुवा ने नामोण न लेते। वैहना में से लड़ता–लड़ता हारुवाज नामोन ले। अईं नौहरी जो हथो तीन्हों तमाषो जोइर्यो। एक रूषड़ा को वड़ाईहू डूँड़ हथो तीन्हा ऊपर नौहरी जो हथो पोद टेकीन बेषी ग्यो थो। तो रूषड़ा हयो बंबूलनो हवे आग्गल नाहरनी ने षूल्डानी ने लड़ाई छात–छाता वैहना में से साँझ छई गी। नाहरे हथो तो एक पंजो मारो षूल्डा ने तो तीन्हा बोही निकली गी, पेटनी। तोबी तो लड़ी रै षूल्डा। और षूल्डा जो हथो तीन्हें काँप मारी नाहर ने तो नाहर ने गर्दन में वाजी गी। तीन्हूँ गलू चिराई ग्यू। बोहे जना लड़ता–लड़ता तीन्हीं छाती फाटी गी। बोहे तहाँज मरी ग्या।

नौहरी हथो तो जोई र्‌यो थो। बा षोच्या लाग्गा हवे म्हारो काम छई ग्यो। बोहे मरी ग्या। हवे षजऊ मैया नू नाहर ना ने षूल्डो ना कलेजी काढ़ीन

मैं तीन्हें भेंट चढ़ाई दूँ। जो नौहरी उठवा लग्गो डूँड पे से तो डूँड पे तीन्हूँ पोंद चपकी ग्या। तो उठवा नो षाहरो करे तो न उठाये, अपना हाथ नो षहरो ले तो हाथ वी चिपकी ग्यो। बीज्जा हाथ नो षाहरो ले तो वा बी चपकी ग्यो। तो चपकी ने तहाँज नौहरी बी मरि ग्यो। इना वाष्तर, 'जो षाता पीत्ता घर ने फोड़े से या चुगली करीन लड़ावे से जो नौहरी ना हाल छाया एवा हाल छाएसे।'

चालाक सियार

एक जंगल में एक सियार रहता था। एक बार उसके पूरे शरीर में खाज निकल आई। उसने बहुत सी जंगली जड़ी–बूटियाँ लगायीं, लेकिन उसे कोई फायदा नहीं हुआ। दिन पर दिन उसकी खाज कम होने की जगह बढ़ती गई। इससे वह बहुत परेशान हो गया। उसी जंगल में मैया का एक मन्दिर था। उन्हें 'खजू माता' कहते थे। जंगल के जानवर वहाँ जाकर पूजा परिक्रमा आदि करते थे।

एक दिन सियार ने सोचा कि मैं भी खजू माता के पास जाऊँ और उनके हाथ–पाँव जोड़ूँ, हो सकता है उससे मेरी खाज अच्छी हो जाये। वह तुरन्त उठकर मन्दिर चल पड़ा। मन्दिर पहुँचकर उसने देवी से कहा कि– 'हे माँ! मेरी खाज ठीक कर दो] मैं तुम्हें शेर और जंगली सुअर के कलेजे की भेंट चढ़ाऊँगा।' खजू माता ने सोचा कि यह तो जंगल का एक छोटा सा जानवर सियार है, यह शेर और जंगली सुअर का कलेजा कैसे ला सकता है। इसलिए सियार की परीक्षा लेने के लिए देवी माँ ने उसकी खाज ठीक कर दी। दस–पाँच दिन में सियार बिल्कुल ठीक हो गया। ठीक होने के बाद सियार मैया का नाम ही भूल गया। इससे देवी नाराज हो गयीं और उन्होंने सियार की एक टाँग में फिर से खाज पैदा कर दी।

सियार की टाँग में खाज होते ही उसे देवी की याद आ गयी। उसने सोचा कि उसने देवी मैया को शेर व जंगली सुअर का कलेजा भेंट करने का वचन दिया था, लेकिन अभी तक भेंट नहीं किया इसीलिए दुबारा खाज हो

गयी। सियार ने तुरन्त देवी माँ का स्मरण किया और कहा कि– 'माँ मुझे माफ करना, मैं शेर और जंगली सुअर का कलेजा अवश्य भेंट करूँगा।'

सियार तुरन्त जंगल की ओर चल पड़ा और शेर की गुफा के पास पहुँचा, वहाँ शेरनी और उसके बच्चे एक ताजे मारे हुए हिरन का स्वाद ले रहे थे। सियार ने वहाँ पहुँचकर शेर से राम-राम की और हाल-चाल पूछा। शेर ने सियार का स्वागत करते हुए कहा– 'आओ भाई सियार, तुम बहुत दिन बाद आये, तुम्हारा मुझसे क्या काम पड़ गया?' सियार कहने लगा– 'काका, मेरा तो कोई काम नहीं है, बात यह है कि जंगली सुअर तुम्हारे बारे में बहुत उल्टी-सीधी बातें करता है। काका, तुम तो समझते ही हो कि मैं क्या कर सकता हूँ? मैं छोटा-सा सियार हूँ।' शेर कहने लगा– 'सियार, तुम फिकर मत करो। कल नदी के किनारे जब जंगली सुअर पानी पीने आयेगा, तो मैं उसे देख लूँगा। आजकल वह बहुत बड़ी-बड़ी बातें करने लगा है।' इतनी बातें कहकर सियार गुफा से बाहर आ गया। सियार का आधा काम हो गया था।

सियार अब जंगल में उधर चल पड़ा, जहाँ जंगली सुअर अकेला रहता था, सियार जंगली सुअर के पास पहुँचा और राम-राम करके दु:खी मुँह बनाकर खड़ा हो गया। उसे देखकर जंगली सुअर बोला– 'कहो क्या बात है? बहुत दिन बाद आये हो, क्या मुझसे कोई काम पड़ गया?' सियार बोला– 'मामा, कोई बात नहीं है। मैं तुम्हारे पास ऐसे ही आ गया हूँ। एक छोटी-सी बात है। जंगल का शेर तुम्हारे बारे में बहुत उल्टी-सीधी बातें कहता है।' जंगली सुअर बोला– 'शेर मेरे बारे में क्या कहता है?' सियार बोला– 'मामा, शेर कहता है कि मैं जंगल का राजा हूँ। मैं जंगल के सभी जानवरों को मारता-खाता हूँ। इस पर मैंने कहा कि मेरा मामा भी बहुत ताकतवर है, तो शेर बोला कि– अरे! मैं तो उसे भी मारकर खा सकता हूँ। तुम्ही बताओ मामा, मैं क्या करता? मैं तो छोटा-सा सियार हूँ।' इतना कहकर सियार चुप हो गया। इतना सुनकर जंगली सुअर बोला– 'तू फिकर मत कर, कल नदी पर शेर पानी पीने आयेगा, मैं उसे वहीं देख लूँगा।'

सियार बाहर आ गया। उसका काम पूरा हो गया था। उसने दोनों तरफ आग लगा दी थी। दूसरे दिन सबेरे शेर नदी पर पानी पीने गया, उसने देखा सामने से जंगली सुअर आ रहा था। जंगली सुअर ने भी शेर को देखा, दोनों तेजी से चलते हुए एक दूसरे के सामने पहुँच गये। वे पानी भी न पी पाये थे। शेर गुस्से में था, वह जंगली सुअर को देखते ही बोला– 'तुमने मेरे बारे में क्या कहा है? तुम्हें अपनी ताकत का बहुत घमण्ड हो गया है।' जंगली सुअर गुस्से में अपना सींग मिट्टी में रगड़ते हुए शेर से बोला– 'तू बहुत ताकतवर हो गया है?' दोनों आमने-सामने आ गये और लड़ने लगे। शेर ने अपना पंजा जंगली सुअर के मुँह पर मारा, जिसे वह बचा ले गया। इसके बाद जंगली सुअर ने शेर पर वार किया। दोनों को लड़ते-लड़ते बहुत देर हो गयी। शेर जंगल का राजा था और बहुत शक्तिशाली था, जंगली सुअर भी बहुत शक्तिशाली था। दोनों में कोई हारने का नाम नहीं ले रहा था। उधर सियार दूर से तमाशा देख रहा था। जब वह थक गया तो एक ताजे कटे हुए बबूल के ठूँठ पर बैठ गया।

शेर और जंगली सुअर को लड़ते-लड़ते शाम हो गयी। अचानक शेर ने पूरी ताकत से जंगली सुअर के पेट पर वार किया, उसके पेट का मांस निकलकर बाहर आ गया। उसने भी शेर की गर्दन पर सींग मारा, शेर की गर्दन फट गयी। दोनों क्रोध से भरे हुए एक दूसरे पर झपटे, तभी लड़ते-लड़ते उनकी छाती फट गयी और दोनों वहीं पर मर गये। सियार इसी का रास्ता देख रहा था। उसने सोचा, उसका काम हो गया। दोनों मर गये, अब वह खजू मैया को शेर व जंगली सुअर के कलेजे चढ़ा सकता है। सियार ने ठूँठ से उठने का प्रयास किया, लेकिन न उठ सका। ताजे कटे बबूल के ठूँठ से वह चिपक गया था। उसने उठने के लिए एक हाथ का सहारा लिया, उसका हाथ भी चिपक गया, उसने दूसरे हाथ का सहारा लिया, दूसरा हाथ भी चिपक गया। सियार बबूल के ठूँठ में चिपके-चिपके ही मर गया। इसीलिए कहते हैं कि– 'जो खाते-पीते घरों को फोड़ता है या चुगली करके लड़ाता है, उसका अन्त सियार के समान होता है।'

लाकड़ानी पेट्टी

एक गामड़ा ना में एक षेतल्डहारा मानषो रेहतो थो। एक समानी वात छई, पानी नापडू तो तिन्हा षेतलड़ा में काई न छाई। तो षेतल्डहारा गरीब हतो, तिन्हीं घरहारी आपना मानषा ने केहवा लाग्गी के- 'आपनी परदेष चाल्लीन कईं कमाई षई अंईं।' घरहारीन वात षमझीन केहवा लाग्गो के- 'चाल्ली परदेष अपनी मगर एक बात से के जो आपने कने चार पोन्ने सीं, बब्बा, दाद्दाउनी हाथूनी तिन्हें अपनी छाँ मेल छीं?'

घरहारी केहवा लाग्गी- 'अपना गामड़ानू म्होरो मानषो से, तिन्हें कने मेल्ही दो।' घरहारीन वात षमझीन एक महीनो घड़ो मां गोहूँ भरीन तिन्हा मा चार पोन्ने आल्ली देद्दी, तिन्हूँ बाको बाँधीन म्होरा मानषा कने लेईन चाल्ला। म्होरा मानषा ने कने षेतल्डहारा केहवा लाग्गो के- 'हमी परदेषना में कमाई षावा जई रया सी, मगर नाजनू जो घड़ो से यो तू मेल्ही ले।'तो म्होरो मानषो केहवा लाग्गो- 'ठीक से भाई, केन्हा में मेल्ही दे।' तो मेल्ही ने षेतल्डहारो ने तिन्हीं घरवारी बोहे जना कमाई षावाना वाष्तर निकली ग्या। करता-करता कमाता-षाता तिउने चार-पाँच बरष बीती ग्या।

एक समानी वात छई के जो गामड़ानी म्होते मानषो हतो अपना घर मा झाड़ी रो थो तो घड़ो जो हथो एकड़ी कर मेल्ही देद्दो तो आम से म्होरा मानषानी घरहारी आयी, तिन्हों गोडडो बाजी ग्यो। गोडडा बाजताजषम महीनो

घड़ो फुट्टी ग्यो। फूटताषम गोहूँ बषरी ग्या। तिन्ह मा चार पोन्ने हथी दिषाई। तो म्हारो मानषानी नजर पड़ीगी। तिन्हें पोन्ने नू जोईनी तिन्हीं आच्छे बदली गी। तानू तो केहवा लाग्गी के- 'आय तो पोन्नी सीं।' तानू तिन्हीं घरहारी केहवा लाग्गी- 'आपनू ने सूँ करनो से नान्हा षा षेतल्डहारो ने से गुषाईनु आल्लु आपना कने तो बहोत से।' तिन्ह ने म्होता मानषू केहवा लाग्गो- 'यो फदू से, या फदीया वाष्तर तब वात्ते करनू पड़े से। आ चारे पोन्ने आपनी तेट्टीना में घाल्ली आ।' तो म्होरा मनषानी घरहारी ना जी, तिन्हें वादना में म्होरो मानषो उठोन चारे पोन्ने पाड़ीव पेट्टी मा घाल्ले दी। करता-करता चार-पाँच बरष बीती ग्या। नान्हा षेतल्डहारा आपना गामड़ा में पाच्छो आयो। आईन म्होरो मानषोनो कने केहवा लाग्गो के- 'म्होरा मानषा जो हमारो माहीना घड़ा मेल्ही ग्या था तो घड़ो म्हारो आल्ली दे।'

तो म्होरो मानषो केहवा लाग्गो के- 'भाई, थारो घड़ो तो फुट्टी ग्यो से, थारा जो गोहूँ से पोल्टो बाँधीन मेल्ह राषो से, लेई जा तू।' पोल्टो पाड़ीन आपना घरे लेई ग्या। तो घरे जाईन पोल्टोने छोड़ीन जोयो तिन्ह में चार पोन्ने ना थी। तो षेतल्डहारो रोवा लाग्गो। तिन्ही घरहारी बी रोवा लाग्गी। केहवा लाग्गी- 'आपना बाब्बा दाददानी, हाथूनी हथी। जल्दी जाईन म्होरा मानषा ने कही के भाई चार पोन्ने हथी ते छे चली गी?' तो म्होरो मानषो केहवा लाग्गो के- 'तू नान्हा षेतल्डहारा थारे कने छाँ से पोन्ने आई? मैं थारी पोन्ने नू लेईन सूँ करीस?' तिन्हा वादना में नान्हा षेतल्डहारो जोन्ही-जोन्ही बतलावा लाग्गो। चिल्लावा लाग्गो। तो आई आम से बे चार पंच आवी ग्या। केहवा लाग्गो- 'भाई, सूँ बात छे?'

तानू नान्हा षेतल्डहारा केहवा लाग्गो के- 'मैं आ म्होरो मानषो कने चार पोन्ने मेल्हीन जीओ थो, कमाई षावाना वाष्तर। ईन्हें म्हारी चार पोन्ने षात्ती लेद्दी से।' आंईं गामड़ा नू म्होते मानषो केहवा लाग्गो के- 'भाई, ईन्हीं चार पोन्ने लेईन मैं सूँ करीस?'

ते बे चार पंच केहवा लाग्गो- 'के एक काम करो के तुम्हारी बात होम न टुट्टे, तुम्हीं पंचायत जोड़ी लो। अपनो बेषीन फैसलो करीलो।'

एहे षम बीज्जे दिन बैहना में एक रूषड़ाना हेट पंचायत बेषी गी। आई जोवो तो नान्हा षेतल्डहारा नी वाते पंच षमझे आंई गामड़ा नो म्होरो मानषो तिन्ही वात्तें षमझे तो पंचो ने काँई बात षमझना आवे। तो करता-करता पन्द्रह-बीस दिन छई ग्या। पंचायत टूटवाना नाम ना ले। तिन्ह में एक चौधरी गल्दो पंच हथो। तिन्हें उठीन आषान पंचूने षामने एक बात केही के- 'काल यो पंचायत टुट्टी जाईस। मगर एक बात से, एक लाकड़ानी पेट्टी लाम्बी तुम्ही बोहे जना लेईन आवणो।'

तिन्हा ऊप्पर नान्हा षेतल्डहारो तो केहवा लाग्गो के- 'पंच देवता, म्हारा कना तो एक फदूबी न थी।' गामड़ाना म्होरो मानषो केहवा लाग्गो के- 'पंच ठीक से, मैं तुम्हारा वाष्तर पेट्टी लेई आईस।' तिन्हे जाइन आपना घर से लाकड़ानी पेट्टी करीन पंचो कने मोकल देद्दी और गल्डो चौधरी पंच ने हुकुम आल्लो के- 'वेहना मा आल्वा पंच जुड़ी जइजो।'

तिन्हीं वात षमझतासषम गामडानो म्होरो मानषो बी ने तिन्हीं घरहारी बी और नान्हा षेतल्डहारो ने तिन्ही घरहारी ने बी के ही देद्दी के वेहना मा आलषा आई जाज्जो। हाँ तो चौधरी गल्ढो पंच ने एक बे पंच बीज्जा मिली ने लाकड़ानी पेट्टीना में एक पंच ने बेषाड़ी देद्दो। तिन्हा हाथना में लिषवाना वाष्तर कलम और कागज आल्ली ने देद्दी तो पंच ने केह देद्दी के- 'जो नान्हो षेतल्डहारो ने तिन्ही घरहारी काँई बी बात केहे तिन्हे तू लिष्षी लीज्जो। तिन्हा बादना में गामड़ाना म्होरो मानषो ने तिन्ही घरहारीनी बात लिष्षी दीज्जो।' होम केहीन एक पंचना पेट्टीना में षात्ती देद्दो। वेहनो छायो ने आषा पंच और म्होरो मानवो, नान्हो षेतल्डहारो, तिन्ही घरहारी आषा जुड़ी ग्यो। आषा पंच केहवा लाग्गो के- 'भाई चौधरी पंच, लाकड़ानी पेट्टी सुकवा मंगड़ाई थी?'

तिन्हा उप्पर चौधरी पंच केहवा लाग्गो- 'मैं आ लाकड़ानी पेट्टीना में भारत कांकरा यो भरा से। एकज बात के लिए षाम्मे पीपलानू रूषड़ो दिषाई रयो से तो हाँ से नान्हा षेतल्डहारो ने तिन्ही घरहारी बोहेजना मूड़ में मेल्हीने रूषड़ाने फिरीन पाच्छी पेट्टी हॉज आईन उतारे।'

तो चार पंच पाड़ीन पेट्टीन नान्हा षेतल्डहारो ने तिन्ही घरहारी ने मूड़ पर पेट्टी मेल्ह देद्दी। पंच केहवा लाग्गो- 'पला रूषड़ा तक जईन आवो।' नान्हा षेतल्डहारो ने तिन्ही घरहारी मूड़ पे पेट्टी मेल्हीन चाल्लो। तिन्ही घरहारी केहवा लाग्गी- 'जो वो षेतल्डहारो एट्टी मुसीबत छई री एक तो आपनी चार पोन्रे चलीगीने आपना उप्पर आ विपदा पड़ी री से।' तिन्हा उप्पर षेतल्डहारो केहवा लाग्गो- 'तू गुषाईंना उप्पर भरोषो राष। गुषाईं अपनो अच्छोस करसे।'

एट्टी केहीन चुप छई ग्या। लकड़ाने पेट्टी लेईन पंचो कने आईन पेट्टी उतार देद्दी। हवे चौधरी पंच केहवा लाग्गो के- 'भाई, म्होरा मानषा तू ने थारी घरहारी मूड़ पे पेट्टी मेल्हीन पीपलाना चक्कर मारीन आओ।' चार पंच पाड़ीन लाकड़ानी पेट्टी ने म्होरा मानषो ने तिन्ही घरहारी ने मूड़ पे मेल्दी दीद्दी। ते चाल्ला पीपलाना रूषड़ा कने। गर्मीना दिन हया। हेट माटटी गरम छई री। गामड़ोनो म्होरो मानषो ने तिन्ही घरहारी काई काम ना करता था। तिन्हा मूड़ना पे वजन मिलई रो ने हेट से गोडडा बली रो। हवे तो म्होरा मानषानी घरहारी कहें से- 'मैं तून्हे पेहलेज के ही थी के तू नान्हा षेतल्डहारा की हाय सुकवा ले से? आपने कने सू कमी थी। चार पोन्रे षात्ती लेद्दी। ने तू चार पोन्रे षात्ती ने आपना उप्पर आ मुसीबत आत्ती।'

तिन्हा उप्पर म्होरा मानषो केहवा लाग्गो के- 'तूने सूँ मालूम चुप छई जा। या फदू से। फदीयाना वाष्तर षब करनू पड़े।' यो बातें करीन और ताँ से रूपड़ाना पीपलाने चक्कर मारीन पंचो नू आवी ग्या। तहाँ आईन पेट्टी मेल्ही दीद्दी। तिन्हा वादना में आषा पंचू ने एकठ्ठा करीन तानू तो पेट्टी ने षोल्लीने। तिन्हा में से एक पंच निकलो। गल्ढ़ो चौधरी पंच के ही के- 'पंच बताना नान्हा षेतल्डहारो ने तिन्ही घरहारी की सूँ बात छे?' तिन्हे कागज लिषू तो पंचों ने हाथ में आल्ली देद्दो। तिन्ह में आ लिषई रयू थो के नान्हा षेतल्डहारानी घरहारी तो आ केहती जई री थी कि- 'एक तो चार पोन्रे चल्ली गी और एक आ मुसीबत छई ग्यी।' तिन्ह पे नान्हा षेतल्डहारो केहवा लाग्गो- 'गुषाईना उप्पर भरोषो कर अच्छो कर से।' आषा पंच पर बात षमझीन लेददी।

गामड़ाने म्होरो मनषो नी ने तिन्ही घरहारी नी बात पुच्छी। तिन्हे कागज बतालू। तिन्ह में लिषई रयू थो के म्होरो मानषो नी घरहारी के ही री थी के– 'तू नान्हा षेतल्डहारानी चार पोन्ने षात्ती न किती मुसीबत छई री से। मैं तून्हे पेहले केही थी के यू चार पोन्ने नाषाव।' तिन्हा उप्पर म्होरो मानषो केहवा लाग्गो– 'चुप छई जा, फदीया वाष्तर षव करनू पड़े से।' तिन्हू कागज पढ़ी लेददो।

तिन्हा वादना मा पंचू ने फैसला करीन तो नान्हा षेतल्डहारो नी चार पोन्ने गामड़ाना म्होरा मानषानी कने ते आल्डाई। ने म्होरो मानषो ने कालो बाको करीन गामड़ा भा चक्कर लगड़ायो। हाँ जो से पंचू कने दूधनदूध पानीन पानी छाएस। पंच परमेश्वर छाएस।

लकड़ी का सन्दूक

एक गाँव में एक गरीब किसान रहता था। एक बार वर्षा न होने से उसके खेत में फसलें नहीं हुईं। तब किसान की पत्नी ने उससे कहा कि– 'अपन परदेश कमाने चलें।' पत्नी की बात समझकर उसने परदेश चलने का फैसला किया और कहने लगा– 'एक बात की चिन्ता है कि अपने पास बाप–दादाओं की दी गयी चार मोहरें हैं, उन्हें कहाँ रखें?' पत्नी ने कहा– 'अपने गाँव के साहूकार के पास रख दो।' तब किसान ने एक मिट्टी के घड़े में गेहूँ भरे व चारों मोहरें उसमें रखकर घड़े का मुँह बाँध दिया और सेठ के पास पहुँचा और सेठ से कहने लगा– 'सेठजी, हम कमाने–खाने परदेश जा रहे हैं। हमारे पास अनाज का एक बड़ा घड़ा है, इसे आप अपने पास रख लो।' सेठ ने कहा– 'ठीक है भाई, रख दो।'

घड़ा सेठ के पास रखकर किसान व उसकी पत्नी परदेश के लिए चल पड़े। धीरे–धीरे चार वर्ष बीत गये। एक दिन सेठ अपने घर की साफ–सफाई कर रहा था। तब कोने से उठाकर उसने किसान का घड़ा एक दूसरी तरफ कोने में रख दिया। इतने में सेठ की पत्नी उधर से निकली और उसकी ठोकर लगने से घड़ा फूट गया और गेहूँ बिखर गया। सेठ को गेहूँ में

चार मोहरें दिख गयीं। मोहरें देखते ही उसकी नीयत बदल गयी और वह मोहरें अपने पास रखने लगा।

सेठ की पत्नी ने मना किया और कहने लगी– 'भगवान का दिया अपने पास बहुत कुछ है, बेचारे गरीब किसान की मोहरों पर हमें क्या लालच करना।' सेठ कहने लगा– 'ये पैसा है, पैसे के लिए तो सब करना पड़ता है। ये चार मोहरें अपनी सन्दूक में रख आओ।' सेठ की पत्नी इसके लिए तैयार नहीं हुई, तो वह स्वयं जाकर मोहरें सन्दूक में रख आया। चार–पाँच वर्ष बीतने के बाद किसान अपने गाँव लौटा और उसने सेठ के पास जाकर अपना घड़ा माँगा।

सेठ कहने लगा– 'भाई, तुम्हारा घड़ा तो फूट गया। उसका गेहूँ मैंने पोटली बाँधकर रख दिया है। तुम ले जाओ।' किसान पोटली लेकर घर आया। उसने पोटली खोली तो उसमें चार मोहरें नहीं थी। किसान रोने लगा। उसकी पत्नी भी दुःखी होकर रोने लगी। किसान रोता हुआ सेठ के घर पहुँचा और उसने अपनी चार मोहरें माँगी। सेठ ने कहा– 'तू तो गरीब किसान है। तेरे पास चार मोहरें कहाँ से आईं? मैं तेरी मोहरें लेकर क्या करूँगा?' इतना सुनकर किसान जोर–जोर से रोने लगा। उसका चिल्लाना सुनकर यहाँ–वहाँ के दो–चार पंच आ गये और उससे चिल्लाने का कारण पूछने लगे।

किसान ने कहा– 'मैं इस सेठ के पास अपनी चार मोहरें रखकर कमाने के लिए परदेश चला गया था। इसने मेरी चार मोहरें चुरा लीं।' इधर सेठ कहता था– 'भाई, मैं तो इतना बड़ा सेठ हूँ। इसकी चार मोहरें लेकर क्या करूँगा?' दोनों की बातें सुनकर पंच कहने लगे– 'तुम्हारी बात ऐसे खत्म नहीं होगी, तुम लोग पंचायत कर लो।' दूसरे दिन सबेरे एक पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। किसान और सेठ दोनों अपनी–अपनी बात पर दृढ़ थे। पंचों की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि गलती किसकी है।

इस तरह पन्द्रह–बीस दिन बीत गये। पंचायत चलती रही और कोई

निर्णय नहीं हुआ। उसी पंचायत में एक वृद्ध पंच था, उसने खड़े होकर कहा– 'तुम दोनों एक लकड़ी की पेटी ले आओ, तो कल यह पंचायत तुम्हारा निर्णय कर देगी।' किसान के पास तो पैसे थे नहीं, अत: उसने पेटी लाने में अपनी असमर्थता व्यक्त की। सेठ पेटी लाने के लिए तैयार हो गया।

उसने तुरन्त एक पेटी बनवायी और पंचों को दे दी। चौधरी पंच ने सबको दूसरे दिन सुबह आने के लिए कहा। इधर चौधरी पंच ने लकड़ी की पेटी में कागज कलम देकर एक पंच को बैठा दिया और उससे कहा कि किसान व उसकी पत्नी जो बात करें, उसे एक तरफ व सेठ व सेठानी की बात कागज के दूसरी तरफ लिख ले।

सबेरा हुआ तो सेठ-सेठानी व किसान और उसकी पत्नी आ गये। दूसरे कई पंच भी आ गये। सब पंच चौधरी पंच से पूछने लगे कि– 'भाई चौधरी पंच, यह लकड़ी की पेटी मँगायी थी?' चौधरी पंच ने कहा– 'इस लकड़ी की पेटी में पत्थर-कंकर भरे हैं। इस पेटी को लेकर सेठ और किसान अपनी-अपनी पत्नियों के साथ बारी-बारी से पीपल के पेड़ तक जायेंगे और यहाँ वापस लौटकर आयेंगे।'

चौधरी पंच के कहने पर चार-पाँच पंचों ने पेटी किसान व उसकी पत्नी के सिर पर रख दी। चौधरी पंच ने किसान से कहा कि– 'उस पेड़ तक जाकर वापस आओ।' किसान व उसकी पत्नी सिर पर पेटी रखकर चले। चलते-चलते किसान की पत्नी बोली– 'देखो, एक तो अपनी चार मोहरें चली गयीं और ऊपर से यह मुसीबत उठानी पड़ रही है।'

तब किसान कहने लगा– 'तू भगवान पर भरोसा रख, वे अपना भला ही करेंगे।' इतना कहकर वह चुप हो गया और पेड़ का चक्कर लगाने के बाद वापस पंचों के पास लौट आया। तब चौधरी पंच बोला कि– 'सेठ, अब तुम अपनी पत्नी के साथ पेटी सिर पर रखकर पेड़ का चक्कर लगा आओ।' चार पंचों ने पेटी सेठ के सिर पर रख दी।

गर्मी के दिन थे। धरती गरम हो रही थी। सेठ-सेठानी ने कभी कोई काम तो किया नहीं था, इधर सिर पर वजन था और पैर भी जल रहे थे। सेठानी सेठ से कहती जाती थी– 'मैं तुम्हें पहले ही मना कर रही थी कि गरीब किसान की हाय मत लो। अपने पास क्या कमी थी, जो तुमने उसकी चार मोहरें ले लीं। न तुम चार मोहरें लेते न यह मुसीबत आती।'

इस पर सेठ कहने लगा– 'तुम्हें क्या मालूम चुप हो जाओ, पैसे के लिए सब कुछ करना पड़ता है।'

इतनी बातें करते हुए उन्होंने पीपल के पेड़ का चक्कर लगाया और पंचों के पास वापस आ गये।

अब चौधरी पंच ने सभी पंचों को इकठ्ठा किया और पेटी खोली। उसमें से एक पंच निकला। बूढ़े चौधरी पंच ने उससे कहा– 'पंच, अब बताओ किसान व उसकी पत्नी ने क्या कहा?' पंच ने लिखा हुआ कागज चौधरी पंच को दे दिया। उसमें लिखा था कि 'किसान की पत्नी कहती थी कि एक तो चार मोहरें चली गयीं और यह मुसीबत उठानी पड़ रही है, तब किसान बोला था– भगवान पर भरोसा रख वे भला करेंगे।'

अब चौधरी पंच ने सेठ व उसकी पत्नी की बात पूछी। उसमें लिखा था कि– 'मैं तुम्हें पहले ही मना करती थी कि किसान की चार मोहरें मत लो। न तुम मोहरें लेते न यह मुसीबत आती। इस पर सेठ ने कहा था, चुप हो जाओ। पैसे के लिए सब कुछ करना पड़ता है।'

दोनों की बातें पढ़ने के बाद चौधरी पंच ने फैसला कर दिया। उसने सेठ से किसान की चारों मोहरें वापस दिलवायीं और उसका काला मुँह करके सारे गाँव में घुमाया।

इसीलिए पंचों के पास दूध का दूध और पानी का पानी होता है। 'पंच परमेश्वर है।'

हीरानी अंगूठी

एक घना जंगलू मा एक राजो राज करतो थो। तिन्हों मंगी मुषलमान हथो। तो मुषलमान वैहना में उठीन गुषाईना षाम्मे एक बात कहे के– 'गुषाई कोई ना उप्पर काई बात लाग्गे तो छाई बात लाग्गे बिना छाई बात न लाग्गे।'

एक दिन सूँ छायो जंगलना राजो अपना हवेलीना उप्पर से मंगी ने जोयो तो मंगी सूँ केही रो के– 'कोई जने छाई बात लाग्गो बिना छाई बात ना लाग्गे।' तिन्हें षोच्ची के यो रोज केह। म्हूने ईन्हें अजमावो से। राजो तिन्हें बुलायो। बुलाईन अपनी आँगलीना मा से हीरानी अंगूठी काढ़ीन मंगी ने आल्ली। तिन्हें आ केही के– 'म्हूने बे दिन बाद पाच्छी आल्ली दीज्जे।'

मंगी केहवा लाग्गो– 'हम्बे राजा मैं आल्ली दोस।' होम केहीन हीरानी अंगूठी लेईन मंगी आपने घरे चाल्लो। अपनी घरहारी ने केहवा लाग्गो के– 'राजा, म्हूने हीरानी अंगूठी आल्ली से, आ अंगूठी ने तू आच्छे करीन घाल्ली के, म्हूने बे दिन के बाद आली दीज्जे।' आंई राजो सू करू के बे चार माँछीनू बुलायी, तिन्हा षाम्में राजा आ केही के– 'मंगी म्हारी हीरानी अंगूठी लेईन ज्यो से। तो हीरानी अंगूठी म्हारे कने पाच्छी आवी जानी चहिये, यो तमारो काम से। बीज्जी एक बात से के यो बात मंगी ने मालम ना पड़े के मैं अंगूठी मंगडाईस।' तो चारे मांछीन मंगी ने घर चाल्ली। तिन्हें मंगी नी घरहारी मिली। तिन्हीं मांछिन जाईन सेवा करूवा लाग्गी। गोडडा हाथ दाबबो लाग्गी। तिन्हें मंगी नी, घरहारी षुशी छाई।

करता–करता थोड़ी देर बादना मंगी नी घरहारी ने ऊँघ लाग्गी गी ते चारों जनी ने हीरानी अंगूठी आँगली से निकाली लेईन पाच्छी राजा कने चाल्ली। राजा के हाथ मा हीरानी अंगूठी आल्ली देददी।

राजो तिन्हें सू करूँ के अंगूठी ने लेईन अपना घरने काठे में एक तलाओ हथो तिन्हा में अंगूठी फेंकी देददी। जो अंगूठी फेक्की तो हेट एक नान्हो माछलो हथो तो अंगूठी ने षई ग्यो। एहा जना में परे से म्हारो माछलो आईन नान्हा माछलाना षई ग्यो।

आई हजो हथो बे दिन ने बाद राजे ने मंगीना बोलवाड़ों ना केहे– 'मंगी, तू अंगूठी म्हारी पाच्छे आल्ली दे।' तो मंगी केहवा लाग्गो– 'मैं हमनाज जाईन लेईन आवी रयो घर से।' घरे आईन घरहारी ने पूच्छी के– 'तू हीरानी अंगूठी आल्ली दे, राजा मंगड़ाइस।' तो हीरानी अंगूठी ना मिली। हाँ झुंडे, पने झुंडे ना मिली। तानू घरहारी केहवा लाग्गी के– 'अंगूठी तो कोई नी।'

झुंडी झुंडाइईन करीन राजा कने मंगी चाल्लो पाच्छो। तिन्हें जाईन राजा ने केहीन के– 'राजा, अंगूठी तो ना मिली।' राजो केहवा लाग्गो– 'यो तो मैं पेहलेज जानतो थो के थारी नीयतना में फरक छई जाइस। तो हवे आ के ही रो सूँ के तू काल जल्दी म्हारी हीरानी अंगूठी लेई आवजे। अगर ना लाईस तो तून्हें मारी नारवीस।' एही बात षमझीने राजाना मंगी आपने घरे आइ ग्यो। आंई मंगी ने तिन्ही घरहारी बोहे जना आंई आन झुंडे ते ना मिले। करता–करता वेहना छई ग्यो। तिन्हें बहुत फिकर लागी रो के हवे राजो सूँ कर से?

मंगी राजा कने पोहच्चो, केहवा लाग्गो– 'राजा साहब, थारी अंगूठी तो न मिली।' तानू राजा केह देददी के– 'तून्हें मौत नी सजा छे। थारा मानना मा सूँ बात छे? आषिरी तू केह?'

तिन्हा उप्पर मंत्री केहवा लाग्गो के– 'राजा, म्हारे मानना में तो काई बात न थी, मगर एक बात छे जरूर। मैं ताजी बोही माछला की षावा चाहूं सूँ।'

एही केहताषम राजा ने चार माछला घरनहारा ने बुलायो ने मंगी ने घरहारी बी मोकल देददी के जल्दी जाइन ताज्जो मांस मंगी ने षड़ाई देददो। ईन्हीं बात पूरी छाए।

जत्ताषम राजाना तलाउना मा जान्यू नाष्बो तो तिन्हा में जो माछलो षई ग्यो थो थोज माछलो बाजी रयो। तो माछला धरनहारा धरीन मंत्री नी घरहारी ने तिन्हे आल्ली देददू ने के– 'आने करीन रांधीन जल्दी लेईन आवीजा।' तो माछलाना लेईन मंगी नी घरहारी आपना घरे चाल्ली। तिन्हीं साफ–सफाई करीन तिन्हें वाडडू। तो वाडडषू तिन्हा में नान्हों माछलो निकलो। तो मंगी नी घरहारी तिन्हा जोता लाग्गीं के– 'गुषाईं आ सूँ चीज से? के माछलाना में माछलू?' तानू ते नान्हा माछलाने वाडडू। तिन्हा में से हीरानी अंगूठी निकली आई। तानू तो मंगी नी घरहानीनी षमझमें आवी गी बात। के रांजे जो हथो ते नाचनहारी ने मोछली थी म्हारे कने ते म्हूने बेल्डाइन करीन म्हारी आंगली से अंगूठी काढ़ीने लेजी थी। तिन्हें राजा ने आल्ली देददी। तिन्हें नान्हू मछले षावी ग्या, नान्हा माछलाने म्होते माछलो षई ग्यो से।

एही बात मन में षोच्चीन माछलानो काच्चो ने कांधो एक टोकरी में मेल्हीन तिन्ह में अंगूठी मेल्हीन चाल्ली राजा कने। केहवा लाग्गी– 'राजा साब, म्हारा घरहारा ने सू बात नी पसाल मारी रा सूँ?' राजे केही के– 'थारा घरहारा म्हारी हीरानी अंगूठी षात्ती केदीस।' तिन्हा उप्पर मंगीनी घरहारी टोकरी मा से काढ़ीन माछला वलाला राजा ने। तिन्हा उप्पर राजा केहवा लाग्गो के– 'तून्हें माछला रांधी ने लावाना हथा। तू काच्चा लाई से?'

'मैं राजा तून्हें वतालवाना वाष्तर लाई से। के जो राजा आ म्होते माछलो से, आ नान्हा माछलू। तो राजा यो भाई न भाई बैर केर से। म्होते भाईने नान्हा भाईन षई ग्यो। तो होम्मच करीन के राजा तू राजो से ने म्हारा घरहारा थारो मंगी से। तू तिन्हें मारुवा चाही रयो से।' तिन्ह पर राजा केहवा लाग्गो– 'सूँ केही रई हतूँ?'

मंगीनी घरहारी ने हीरानी अंगूठी काढ़ीन मेल देददी षाम्मे। 'आ थारी हीरानी अंगूठी राजा। तू ए चार मांछी मोकली म्हारा कने। हीरानी अंगूठी पाच्छी मंगड़ाई लेददी थी। तिन्हें तू अपना तलावड़ा मा नाष्षी देददी थी। तिन्हें नान्हा माछली षई ग्यो थो, नान्हा माछलू ने म्होरो माछलो षई ग्यो। तानू तू मंगी ने पुच्छी के 'थारी आखिरी बात सूँ छे?' तो तिन्हा बाका से माछलू षावानी बात निकली, तो माछला से यो थारी हीरानी अंगूठी निकली। गुषाईना घरे देर से मगर अंधेर न थी।'

मंगीनी घरहारी बात षमझीन, हीरानी अंगूठी जोईन राजो बड़ो खुषी छायो। राजो इज्जत षूँ मंगी ने बुलायो, आष्षा मनूष ने षाम्में राजा केही के– 'आ मंगीनी बात जो थी के जो या केहतो थो के 'हे गुषाईं होनी लागजे ना होनी ना लागजे'।' इन्हें जोवाना वाष्तर में आ काम करू से। आज मैं इंसाफ जोई लेद्दो गुषाईंना। के– 'होनी लागे से बिना होनी न थी लगती।'

हीरे की अँगूठी

एक जंगल में एक राजा राज्य करता था। उसका मंगी मुसलमान था। मंगी रोज सबेरे उठकर एक बात कहता था कि– 'हे मालिक! किसी पर होनी लगे बेहोनी न लगे।' एक दिन राजा ने अपने महल की छत से मंगी को यही दुआ माँगते देखा। उसने सोचा कि यह रोज ऐसा कहता है, मुझे इसे आजमाना चाहिए। ऐसा सोचकर उसने मंगी को बुलवाया और अपनी उँगली से हीरे की अँगूठी उतार कर उसे देते हुए कहा कि– 'यह अँगूठी ले जाओ, दो दिन बाद मुझे वापस कर देना।'

मंगी ने कहा– 'ठीक है, राजा साहब। दो दिन बाद वापस कर दूँगा।' ऐसा कहकर अँगूठी लेकर मंगी घर पर आ गया और अपनी पत्नी से बोला– 'यह अँगूठी तुम अच्छी तरह रख लो। दो दिन बाद मुझे वापस दे देना।' इधर राजा ने मंगी को अँगूठी देने के बाद अपनी चार दासियों को बुलाया और कहा– 'अँगूठी मेरे पास वापस आ जाना चाहिए, लेकिन यह बात मंगी को न मालूम हो सके।'

चारों दासियाँ मंगी के घर पहुँची। उन्हें मंगी की पत्नी मिली, तो वे उनसे कहने लगीं कि– 'हम आपकी सेवा करने के लिए आये हैं।' इतना कहकर वे मंगी की पत्नी के हाथ–पैर दबाने लगीं। मंगी की पत्नी बहुत खुश हुई। हाथ–पैर दबवाते ही उसे आराम मिला और वह सो गयी, तब चारों दासियों ने उसकी उँगली से अँगूठी निकाली और राजा को दे दी।

राजा ने अँगूठी अपने महल में बने तालाब में फेंक दी। तालाब में एक छोटी मछली अपने शिकार की ताक में मुँह खोले थी, अँगूठी सीधी उसके मुँह में गिरी और पेट में चली गयी। इतने में एक बड़ी मछली आयी और वह छोटी मछली को खा गयी। इधर दो दिन बाद राजा ने मंगी को बुलाया व अँगूठी माँगी। मंगी ने घर जाकर पत्नी से अँगूठी माँगी, लेकिन घर में अँगूठी कहीं नहीं मिली।

मंगी ने आकर राजा को अँगूठी खोने की बात बतायी, राजा बहुत नाराज हुआ और उसने मंगी को फाँसी की सजा सुना दी। जब मंगी को फाँसी के तख्ते पर खड़ा किया तो राजा ने मंगी से पूछा कि– 'तुम्हारी आखिरी इच्छा क्या है?' मंगी ने कहा– 'राजा साहब, मैं ताजा मछली का माँस खाना चाहता हूँ।'

राजा ने चार मछुआरों को बुलाया व मंगी की पत्नी को भी मछुआरों के साथ भेजा कि जल्दी से ताजी मछली का माँस पकाकर ले आये। मछुआरों ने जाल डाला तो वही मछली पकड़ में आयी, जिसने छोटी मछली को खाया था, जिसके पेट में हीरे की अँगूठी थी।

मछली लेकर मंगी की पत्नी घर गई। उसने जैसे ही बड़ी मछली का पेट काटा, तो उससे एक छोटी मछली निकली। फिर उसने छोटी मछली को काटा तो अन्दर से हीरे की अँगूठी निकली। अब मंगी की पत्नी की समझ में सारी बात आ गयी, कि राजा ने दासियाँ भेजी थीं, उन्होंने अँगूठी चुराई और राजा को दे दी, राजा ने उसे तालाब में फेंक दिया, जिसे छोटी मछली ने खाया, छोटी मछली को बड़ी मछली ने खाया।

इतना सब सोचकर उसने मछली पकायी भी नहीं और कच्ची ही एक टोकरी में रखकर राजा के महल पहुँची और राजा से कहने लगी– 'राजा साहब, मेरे पति को किसलिये जान से मार रहे हैं?' राजा ने कहा– 'इसने मेरी अँगूठी रख ली है।'

तब मंगी की पत्नी ने कच्ची मछली राजा के सामने रख दी। राजा ने हैरान होकर पूछा– 'तुम मछलियाँ कच्ची क्यों ले आयी? इन्हें तो बनाने के लिए कहा था।'

मंगी की पत्नी बोली कि– 'राजा ये छोटी मछली है, इससे बड़ी मछली बैर करती थी, अतः इसे खा गयी थी। राजा, भाई–भाई से बैर करता है। इसलिए तुम मेरे पति को मारना चाहते हो, क्योंकि आप राजा हैं और मेरे पति छोटे हैं, वे मंगी हैं, अतः आप उन्हें फाँसी दे रहे हैं।'

राजा ने कहा– 'तुम क्या कह रही हो? मेरी समझ में नहीं आ रहा।'

तब मंगी की पत्नी ने हीरे की अँगूठी राजा के सामने रख दी और कहा– 'ये आपकी हीरे की अँगूठी'। आपने चार दासी मेरे पास भेजीं और हीरे की अँगूठी धोखे से वापस मँगा ली और उसे तालाब में फेंक दी। उसे छोटी मछली खा गयी और छोटी मछली को बड़ी मछली ने खा लिया। मेरे पति को आपने फाँसी की सजा दी व उनसे आखिरी इच्छा पूछी तो उनके मुँह से अपने आप यह निकला की उन्हें ताजा मछली की बोटी खाना है। मैंने मछली काटी तो यह हीरे की अँगूठी निकली। राजा साहब, मालिक के घर देर है, अँधेर नहीं।'

मंगी की पत्नी की बात समझकर राजा बड़ा खुश हुआ। उसने बड़े सम्मान से मंगी को बुलाया व भरे हुए दरबार के सामने कहा कि– 'मंगी कहते थे कि हे मालिक होनी लगे बेहोनी न लगे। इनकी परीक्षा लेने के लिए मैंने यह काम किया। आज मैंने ईश्वर का इंसाफ देख लिया कि होनी ही होती है, अनहोनी नहीं हो सकती।'

हंस और षषूचर

एक जंगलना से हंसना-हंसनी उड़ती हवा आवी री थी। उड़ता-उड़ता कई दिन छई ग्या था तो हंसनी केहवा लागी हंस के- 'म्होरे कने ना उड़ाये अवे मैं थाकी गी सूँ।'

हंस केहवा लाग्गो- 'अच्छी बात से मैं हेर नजर पाड़ीने जोई रयो सूँ।'

तो हेट एक रूषड़ा दिखायू जंगलना में, हंसनी ने लेईन तहाँ उतरी आयो। रूषड़ा पे बेषताषम षषूचर हथो बोल्लो के- 'भाई, तुम्हीं कुन सूँ? तुम्हीं उड़ी जावो, आ जगह म्हारी से, बीजा मनष न आवाँ दूँ कोई ने।'

तीन्हा ऊप्पर हंस ने जवाब आल्लो के- 'भाई षषूचर, म्हारी हंसनी जरा थाकी गई से, हमीं रात भर रै सी वैहना में चला जा सी। हमी बहोत दूर ना मनषू सी।' तीन्हीं हंसनी बात षमझी ने षषूचर केहवा लाग्गो- 'रही जाओ।'

रात छई गई तो हंस हथो एक जाड़ा डुग्गाना उप्पर अपनो षुई ग्यो। हंसनी तीन्हा काठे षुई गी। बहोत दूर ना थाका हुआ हथा तो ऊने ऊँघ लागी गी।

षषूचर ने तो राते जागवानी आदत हथी तो सुकता षुत्तो थो? तो हंसनी ने काठे आईन आपनो गोडडो हंसनी ने उप्पर नाष्षो तो हंसनी उठ्ठी ने तीन्हा गोडडा ने ढकेल देद्दो परे तीन्हा बाद फिरयेगोड्डा नाष्षो फिरिये तीन्हें हटाई देददो।

करता-करता रात भर छई गी। एट्टाज में वैहनो छई ग्यो। वैहनो छातो सो हंस उठीन षषूचर ने राम रूमी करीन, केहवा लाग्गो- 'भाई, हमी जाई रा से।' ते अपना उड़वाना वाष्तर पांषड़ा ढिल्ला करूवा लाग्गो। तानू षषूचर कहे से- 'हंस, जई रॉ से त जा चलो जा मगर म्हारी माँछी ने छां लई ज्योरे से, या तो म्हारी माँछी से।' ती यूनी बोहनी बतलावाना छावा लागी। करता-करता पंचायत जोड़वाना बात छई गी।

हंस ना कोई पंच जानताज न था तीन्हें। षषूचर ने आषा जानता था। षषूचर षब से पहले नाहर कन्ने चाल्लो। 'भाई, नाहर जो हतो राजो से और तो म्हारो पंच से। पंच नाहर मैं हंसनी माँछी ने राषी लेद्दी से तो तुम्हीं म्हारा भनेनी बात केज्जो।' तो नाहर केहवा लाग्गो- 'के भाई मैं चीम कैह सी बात, यो बात मैं ना केहूँ उल्टी। भाई हंसनी हंसनी से, षषूचरनी षषूचरनी से मैं यो बात ना केहूँ।'

तीन्हा उप्पर षषूचर केहवा लाग्गो- 'ठीक से भाई, ना कहे तो म्हारा भनेनी बात तो मैं थारा छोकरानू नामनू भाट्टो पाड़ीन कुँआ में नाषी दीस तेनू नाम लीन्ह। तीम्ह-तीम्ह भाट्ठो घुलसी, तीम्ह-तीम्ह थारो छोकरो घुलसी।' तो नाहर केहवा लाग्गो- 'ठीक से भाई, मैं थारे भरनेनी बात केहीस।' केहीन तीन्हा आग्गल चाल्लो, बीज्जा जनावर तू कने। जेट्टा बी जंगल मा नान्हा मोहटा पंच हे था तीन्हा आषाहू न षाम्ने येज बोल बोल्या के म्हारा भनेजी वात केहजो। तो आष्षा वेहनाना में पंचायत जुड़ीगी। तीन्हा वाद माँ आषा पंच केहवा लागा के- 'भाई हंस, षषुचर के सुकवा पंचायत जोड़ी से?'

तीन्हा बाद में हंस केहवा लाग्गो के- 'भाई, हमीं बाहर ना मनष सी, हमीं उड़ता हुवा जई रया था त म्हारी हंसनी केहवा लाग्गी के मैं थाकी गी। तीन्हा वाष्तर हमीं एक रातना आराम करूवा वाष्तर आ रूषड़ा पर आवा था कि रात रहीन वैहना में चला जा सी तो आ षषूचर केही रो के आ हंसनी म्हारी माँछी से। भाई आ बतालो पंच महाराज के या हंसनी षषूचरनी से? के म्हारी से?'

पंचे कैयूँ– 'ठीक से थारी बात आवी गी। अब भाई षषूचर, तू कै थारीं सूँ बात से?' षषूचर केहवा लाग्गो के– 'यसो हंसनी नथी तो याते म्हारी माँछी से मैं व्याहब करीन लायो सूँ। तीन्हा म्हारा गवाह सी।' तो पंच गवाह पुच्छा तो गवाह षबसे पहले नाहर ने कर्यो। नाहर जंगलनो राजो हथो तो भाई नाहरोनी गवाही आल्दी के– 'यो हंसनी नो व्याहब षषूचर नो छायो थो।'नान्हा मोहटा पंच जो हथा ते बी गवाह बोली ग्या।

तीन्हा उप्पर हंस त केहवा लाग्गो के– 'मैं तो षमझतो थो के पंच परमात्मा छाएस तुम्हीं इंसाफ कर देद्दो तो ठीक से।' पंच अपनी–अपनी जगह उठीन चलाईग्या। षषूचर ने हंसनी आल्ली ग्या। पंच चलई ग्या। हंस हथोतो रोतो हुवो उड़वानी कोशिश करवा लाग्गो। तानू षषूचर कै से– 'जो भाई दुनिया ना में आव्हार कम न्याव रही ग्या से।' तो हंस हथा तो बोल्या– 'सूँ केही र्या भाई?'

तीन्हा षषूचर ने केहदो के– 'भाई, तू म्हारा मेहमान से मैं तो जंगलना राजा ने नान्हा मोहटा पंच आषानी जोई रयो थो के ये आषा न्याव करेसी के न थी करता। थारी हंसनी से तू हंस से। म्हारी तो बेहन नी बराबर से।' बोहे हंस ने हंसनी उड़ीन राम–राम करीन अपना देषना में चला ग्या।

हंस और उल्लू

एक जंगल में हंस और हंसनी का एक जोड़ा उड़ता हुआ जा रहा था। उड़ते–उड़ते उन्हें कई दिन हो गये। हंसनी बहुत थक गयी थी, वह हंस से बोली– 'अब मुझसे नहीं उड़ा जाता, मैं बहुत थक गयी हूँ।'

हंस बोला– 'अच्छी बात है, मैं इधर–उधर कोई रुकने योग्य स्थान देखता हूँ।' उसी समय घने जंगल में एक पेड़ दिखाई दिया। हंस अपनी हंसनी के साथ उसी पेड़ पर उतरा। उस पेड़ पर एक उल्लू रहता था। हंसों के जोड़े को देखकर वह बोला– 'भाई, तुम लोग कौन हो? तुम लोग उड़ जाओ, यह हमारी जगह है। दूसरा कोई भी यहाँ नहीं रह सकता।'

इस पर हंस बोला कि– 'भाई उल्लू, मेरी हंसनी थोड़ी थक गयी है, हमें रातभर यहाँ विश्राम कर लेने दो, प्रातःकाल हम यहाँ से चले जायेंगे। हम बहुत दूर से आये हैं।' हंस की बात समझकर उल्लू बोला– 'ठीक है, रुक जाओ।' रात में हंस एक पेड़ की मोटी डाल पर सो गया। हंसनी भी उसके पास सो गई। वे बहुत दूर चले थे, थक गये थे, अतः उन्हे जल्दी ही नींद आ गयी। उल्लू की तो रातभर जागने की आदत थी तो वह क्यों सोता? वह हंसनी के निकट आया और उसने अपना एक पैर हंसनी पर रख दिया। हंसनी ने उसका पैर अलग कर दिया। उल्लू ने दुबारा अपना पैर रखा, हंसनी ने फिर हटा दिया। इसी प्रकार रात बीत गई और सबेरा हो गया। हंस प्रातः उठा, उल्लू से राम–राम की और बोला– 'भाई, हम लोग अब जा रहे हैं।' हंस और हंसनी ने उड़ने के लिए अपने पंख फैलाये। तभी उल्लू बोला– 'हंस भाई, तुम जा रहे हो तो जाओ, मगर मेरी स्त्री को कहाँ ले जा रहे हो, यह तो मेरी पत्नी है।' उल्लू का संकेत हंसनी की ओर था। इस पर हंस और उल्लू में बहस होने लगी और पंचायत बैठाने की स्थिति उत्पन्न हो गयी। हंस को उस जंगल का कोई पंच नहीं जानता था। उल्लू को सभी पंच जानते थे।

सबसे पहले उल्लू शेर के पास पहुँचा और बोला– 'शेर भाई, तुम तो जंगल के राजा हो और हमारे पंच भी हो, मैंने एक हंसनी को अपनी घरवाली बना लिया है, पंचायत में तुम मेरे पक्ष में ही बोलना।' इस पर शेर बोला– 'सुनो भाई, मैं ऐसी बात कैसे कह सकता हूँ? यह उल्टी बात मैं नहीं कह सकता। हंस–हंस होता है और उल्लू–उल्लू होता है।' तब उल्लू बोला– 'ठीक है, यदि पंचायत में तुम हमारे पक्ष की बात नहीं कहते हो तो मैं तुम्हारे बेटे का नाम लेकर एक मिट्टी का ढेला कुएँ में डाल दूँगा, जैसे–जैसे ढेला घुलेगा, तुम्हारा बेटा भी घुलेगा।' शेर बोला– 'ठीक है भाई, मैं तुम्हारे पक्ष की बात कहूँगा।'

शेर से इतनी बात करके उल्लू दूसरे जानवरों के घर चल पड़ा। जंगल में जितने भी बड़े–बड़े पंच थे, उल्लू सबके पास गया और इसी तरह की धमकी देकर उन्हें अपने पक्ष में बोलने के लिए बाध्य कर आया।

प्रात:काल पंचायत बैठ गयी। पंचों ने पूछा– 'क्यों भाई हंस व उल्लू, यह पंचायत क्यों बुलवायी है?' पंचों की बात सुनकर हंस बोला– 'पंच भाइयों, हम परदेशी हैं, हम यहाँ से उड़ते हुए जा रहे थे कि मेरी हंसनी बोली कि वह बहुत थक गयी है, इसलिए हम एक रात के लिए आराम करने के लिए इस पेड़ पर यह सोचकर आ गये कि रातभर विश्राम करके प्रात: चले जायेंगे। इस पर चलते समय यह उल्लू कहने लगा कि यह हंसनी मेरी घरवाली है। पंच महाराज, आप लोग ही यह बताओ कि यह हंसनी उल्लू की घरवाली है या मेरी घरवाली है?' पंच बोले– 'ठीक है हंस, हमने तुम्हारी बात सुन ली। अब भाई उल्लू, तुम बताओ क्या बात है?'

उल्लू बोला– 'यह हंसनी नहीं है, मेरी घरवाली है। मैं इसे ब्याह कर लाया था, मेरे पास इसके गवाह भी हैं।' पंचों ने गवाह पूछे तो सबसे पहले शेर आगे आया। शेर जंगल का राजा था, उसने सबसे पहले गवाही दी– 'पंचों, हंसनी का ब्याह उल्लू के साथ हुआ था।' अन्य छोटे–बड़े पंचों ने भी शेर के समान ही गवाही दी। उनकी ये सब बातें सुनकर हंस बोला– 'मैं तो समझता था कि पंच परमात्मा होते हैं, न्याय करते हैं, तुमने ठीक ही किया।'

पंच फैसला करके अपनी–अपनी जगह से उठे और चले गये। हंसनी उल्लू को मिल गयी। हंस भी रोते हुए आगे की यात्रा के लिए उड़ने की तैयारी करने लगा। तभी उल्लू बोला– 'देखो भाई हंस, आज की दुनिया में इस तरह का न्याय रह गया है।' हंस दु:ख भरे स्वर में बोला– 'क्या कह रहे हो, भाई?'

इस पर उल्लू बोला– 'हंस भाई, तुम तो मेरे मेहमान हो। मैं तो तुमको दिखाना चाहता था कि जंगल के राजा शेर से लेकर सभी छोटे–बड़े पंच किस प्रकार का न्याय करते हैं (न्याय करते हैं या नहीं करते हैं)। तू हंस है, वह तेरी हंसनी है, मेरी तो बहन जैसी है।' हंस–हंसनी दोनों खुश हो गये। उन्होंने उल्लू से राम–राम की और अपने देश की ओर उड़ चले।

वांदरू और बया

एक जंगलना एक नान्ही षी चिड़िया रेहती थी। तीन्हू नाम बया थो। एक दिन ने वषत में बयानू व्याहब करूवा नी षोच्ची। तानू तिन्हे पहले अपनो घर करून जरूरी से। बया ने तीन्हू घरहारो बोहे जना लगीन अपनू घर करी लेद्दी। एक नद्दी के काठे एक रूषड़ो हथो, रूषडूनी अरना उप्पर अपनो घोषलो करी लेद्दो। तीन्हा बाद में व्याहब छई ग्यो। बया ने बे चेलुआ छाया। ते चेलुआना लेईन घोषलाना में रही रही थी। करता–करता चेलुआ स्याना छई ग्या।

एक दिन एहौ समै छायो के वरषात पडुवा लागी। बहोत जोरनू बरषात छावा लाग्गी। बया अपना चेलुआना वाष्तर दाना दुनका लेवा जेई थी, आईन अपना चेलुआना षड़ावा लाग्गी। एहा–जना में जोवे तो हेटना जंगल में एक रूषडाना हेट एक वांदरू और एक वांदरी न तीन्हा वेषिन चेलुआ पानी में भिंजई रा से। तनू बया हथी तो केहवा लाग्गी के– 'वांदरा काका, तू सुकवा भिंजई रो से? मैं आवड़ी षी जी से गुषाईं ने म्हूने हाथ गोड्डा काई नथी आल्ला। नान्हीं षी चोच आल्ली से। मैं जो सूँ नान्ही षी चोचहारी चिड़िया सूँ मैं म्हारा चेलुआना वाष्तर आग्गल धर से घर करी लेद्दू सू। थारा कना गुषाईंना आल्ला हुवा हाथ गोड्डा मनषाजून सरीषो थारो बाको से। मनषाजून सरीषी अक्कल बी से तू अपनू घर पैल्ले कर लेतो तो आ पानी ना में आ मुसीबत ना पाड़नी पड़ती।'

वांदरू जो हथो तो एक भिंजई रो थो ने एक भुच्चे बी हथो तिन्हें रीष लागी कि आंवड़ी षी चिड़िया छईन म्हूने अक्कल वतालरी से। वांदरू रूषड़ा पे चढ़ीन बहोत जोर से हलडाईन, तिन्ह पे घोषलाना में बयाना चेलुआ हथा। तीन्हे हलडाईन तो बीघोषलो ना पड़ो।

तीन्हे वांदरू जोईन के ना पड़ो घोषलो। तीन्हे बादना में रूषडूनू डुग्गू तोड़ी देदू। बयाना घोषलो, तीन्हा चेलुआ न बया चारो जू नद्दी ना में जई पड़ा। नदीना में बेहीन चला ग्या। इन्हा उप्पर केही से- येव्हा मनष ने सीष आह्लो जो सीष षमझे। वांदरूना सू सीख आह्ले जू उल्टू ब्यानू घर जाये।

बन्दर और बया

एक जंगल में एक चिड़िया रहती थी, उसका नाम बया था। एक दिन बया ने अपने विवाह के विषय में सोचा, इसके लिए अपना घर होना जरूरी था, अत: बया और उसके प्रेमी ने मिलकर अपना घर बनाया। एक नदी के किनारे एक पेड़ था, बया ने उसी पर अपना घोसला बनाया। इसके बाद दोनों ने ब्याह किया। बया के दो बच्चे हुए, वे दोनों घोसले में आराम से रहते थे। धीरे-धीरे बच्चे बड़े होने लगे।

एक दिन बरसात आरम्भ हो गयी, बहुत तेज पानी बरसने लगा। बया अपने बच्चों के लिए दाना चुगने गयी थी, उसने आकर अपने बच्चों को दाने खिलाये। इसी समय बया ने देखा कि उसी जंगल में सामने एक पेड़ पर बन्दर-बन्दरिया और उसके बच्चे पानी में भींग रहे थे। उन्हें देखकर बया बोली- 'बन्दर काका, तुम क्यों भींग रहे हो? मैं तो एक छोटा-सा जीव हूँ। भगवान ने मुझे हाथ-पैर कुछ भी नहीं दिये हैं, बस एक छोटी-सी चोंच दी है। मैंने अपनी छोटी-सी चोंच से अपने बच्चों के लिए पहले से ही घर बना लिया था। तुम्हें तो भगवान ने अच्छे हाथ-पैर दिये हैं और बिल्कुल मनुष्यों

के समान बनाया है। तुम्हें मनुष्य जैसी बुद्धि भी दी है। यदि तुम पहले अपना घर बना लेते तो आज तुम्हें यह मुसीबत न उठानी पड़ती।'

बन्दर एक तो भींग रहा था, दूसरे उसे भूख लग रही थी। इस पर नन्हीं-सी चिड़िया द्वारा उपदेश दिये जाने पर उसे क्रोध आ गया। वह उसी पेड़ पर चढ़ गया और उसे जोर से हिलाने लगा, जिस पर बया का घोसला था। बया का घोसला, बया व उसके बच्चों सहित नदी में जा गिरा और बह गया। इसीलिए कहते हैं कि उसे ही उपदेश देना चाहिए, जो उपदेश का महत्त्व समझे। बन्दर जैसे को सीख देने से क्या फायदा, जो बया का घर ही नष्ट कर दे।

रेषम नी षुत्तल

एक गामड़ा मा एक आच्छो म्होटो मानषो रेहतो थो। तो अपनो गुषाईने देवताउने पुज्जे करीन रेहतो थो। गामड़ाना मानषाउने आच्छे तरीये ने जोत्तो थो। बीज्जू चैने चेने रेषमना षुत्तल बी काम करतो थो। तिन्हे घर ना काठठे एक बीज्जो म्होटो मानषो रेहतो थो। तिन्हीं और तिन्ही ना बनती थी।

एक दिन सूँ छायो के राजा कने से षबर आयी के आ बरष ना मा रेषमनी षुत्तल मैं बेच्चीस बीज्जो कोई ना बेचनू षके। एट्टी वात म्होटो मानषा षमझी। तिन्हा घरना मा रेषम नी षुत्तल भर लेददी थी। हवे म्होटो मानषो षोचवा लाग्गो– 'हवे सू छाये म्हारो।' तिन्हा बादना मा राजाना षूबटालो आयो ने आईन ते डोंडी पिटराई, तिन्हा ऊप्पर आ केही के– 'आ बरष में राजा हुकुम आल्लो के कोई बी मनष अगर रेषम नी षुत्तल बेचसे, तन्हा ऊप्पर दण्ड–जुर्माना मारनो पड़से, जो मनष म्हूने आईन बतालसे के फला काठे रेषम नी षुत्तल से तिन्हें मैं म्होटो इनाम आल्लीस।'

एट्टी वात षमझीन म्होटो मानषो घबरावा लाग्गो ने बीज्जा पाड़ोषी मानषो केहवा लाग्गो– 'आ अच्छी वात छई ग्यी। म्होटो फदीया हारो हथो। म्हारे से ईन्ह मैं केहीन राजा ने इन्नी रेषम नी षुत्तल थराई दीस ने राजा कने से ईनाम लेई लीस। मैं म्होटो छाई जाईस।'

एट्टी षोच्चीने पाड़ोषी मानषो राजा कने चाल्लो। म्होटो मानषो ने काम करनहारा ने तिन्हे राजा काठे जात्ता षम जोई लियो। तिन्हे आईन केही देददी के बीजो बगलहारो पाड़ोषी थारी वात केहीन राजा कने जियो से।

एट्टाना ऊप्पर म्होटो मानषो केहवा लाग्गो के– 'जाईन जोवो के छाँ जियो से।' जाईन जोवो तो बगलहारा राजा काठ्ठे जाईन केही रो थो के– 'पला म्होटा मानषा कने चारे बगल हेट ऊप्पर घर सीं ते घरुना में रेषम नी षुत्तल भराई री तो बेचस।' एट्टी वात षमझीन काम करनहारा नाहटो आईन म्होटो मानषाने केहवा लाग्गो के– 'बगलहारा ने राजाए केही देद्दी। राजो हवे तून्हें धरचा आवी रौ स।' म्होटा मानषो केहवा लाग्गो– 'जेत्ती म्हारा काठ्ठे रेषम नी षुत्तल से तिन्हे आज लगाड़ी दो।'

आज लगाड़ीन थोड़ी देरमा बलीन राष छई गी। तिन्हे आष्षी ने षमेटीने एक लुधड़ा में बाँधी देददी। म्होटो मानषो पोल्टी लेईन घर से बाहर जई रौ थो एट्टाजना मा राजाना षूबटाला आईन म्होटा मानषाने घरना चारीं बगल से धरी लेददो। म्होटा षूबटाला आईन किवाड़ षड़षड़ावा लाग्गा ने केहवा लाग्गो– 'किवाड़ षोल्लो म्होटा मानषा।' तिन्हा ऊप्पर म्होटो मानषो केहवा लाग्गो– 'सूँ वात छई गी? सुकवा आया?'

षूबटाला केहवा लाग्गा– 'म्हारे पतो लाग्गो के थारे कने रेषम नी षुत्तल घर मा भराई री से।' म्होटो मानषो केहवा लाग्गो– 'भाई, म्हारा घरे षुत्तल न थी। आज्जज म्हारे घरे नान्ही षी पूजा थी, तिन्हा हवन गंगाजी मा सिरावाँ जई रौ सूँ।' षूबटाला केहवा लाग्गा– 'थारा काम करनहारा ने पोल्टी लेईन मोकल ने तू काठठे चाल, थारा घरनी झुँरवी आला।'

षूबटालाउने लेईन म्होटो मानषो घर चाल्लो। हेटना घर बताल देददूँ। पूरो घर बताल देददू। रेषम नी षुत्तल नो एक डोरा बी ना मिल्यो।

तिन्हा ऊप्पर षूबटाला केहवा लाग्गो– 'तून्हे अमी आच्छे तरीये सी

जानू, तू आच्छो मनष रे। मगर आ थारो बगलहारो ना मानो आ जबरन झूठ्ठी- षाच्ची केहीन हमूने आफत कर देददी और तून्हे बी आफत कर देददी।'

होम केहीन षूबटालो म्होटा मानषाए माफी माँगीन चलाई ग्यो। जाईन राजाने षाम्मै केहीन के- 'हमें जाईन तिन्हा घरा मा हेट ऊप्पर जोया तिन्हा घरना मा रेषम ना एक षुत्तल बी ना निकल्यो।' हवे राजा केहवा लाग्गो के- 'झुठ्ठी वात करनहाराने बी सजा मिली। ईन्हें एक षौ एक कोल्डो मारा जाये ने पाँच हजार षोन्ने नी गिन्नी ना जुलुम।' एट्टी केहीन ने तिन्हा बगलहारो हथो तो हवे षोन्ना नी गिन्नी आल्लीने कोल्डानी मार षाईन हवे आयो म्होटा मानषा काठ्ठे। म्होटा मानषाने बोलाईन बेषाड़ो। केही के- 'काई षावा पीवान ले। तिन्हा षावा, पिवानू षड़ाईन।' बगलहारो पाड़ोषी केहवा लाग्गा के- 'म्होटा मनष, तू आ तो बता के थारे कने म्हारी जोई हुवी रेषम नी षुत्तल हथी। तू ए आही जल्दी चीम षतम करि देददी? षाच्ची वात वताल तू?'

तिन्हा ऊप्पर म्होटा मानषो केहवा लाग्गो- 'जा बषत षूबटालो आयो थो तानू जो राष लेईन जाई रो थो पोल्तना मा तो आष्षी राष रेषम नी षुत्तल नी हथी। म्हूने पतो चल ग्यो थो के षूबटाला घरना ऊप्पर आनहारा से। तिन्हा वाष्तर में तिन्हें पेहले बाली राष्षी।' तिन्ह पे बगलहारा केहवा लाग्गा- 'एट्टी षुत्तल आट्टा फदीया नी बाली देद्दी?'

तिन्हा ऊप्पर म्होटो मानषो केही- 'यो षुत्तल बली गी तो काल फिरिये ले लीस। जो षूबटाला म्हूने धरीन घर से लेई जाता तिन्हें म्हारी इज्जत चली गयी। तिन्हा वाष्तर म्हूने म्हारी इज्जत वचाल देददी।' फदू चलू जाइस तो पाछू आ जाएस पन इज्जत नथी आएस।

रेशम की गाँठें

एक गाँव में एक धनी सेठ रहता था। वह बड़ा धर्मात्मा था। गाँव में उसका बड़ा सम्मान था। वह रेशम का व्यापार करता था। धनी सेठ के पड़ोस में एक साहूकार रहता था। वह सेठ से बहुत ईर्ष्या रखता था। एक

बार राजा ने यह घोषणा करवायी कि इस वर्ष रेशम का व्यापार मेरे अलावा कोई नहीं करेगा। रेशम की खरीदी-बिक्री सिर्फ मैं ही करूँगा।

धनी सेठ ने यह बात सुनी तो वह सोच में पड़ गया। उसके घर भी रेशम भरी थी। धीरे-धीरे कुछ दिन बीत गये। एक दिन फिर राजा ने राज्य में यह डोंडी पिटवा दी कि- 'इस साल राजा का हुकुम है कि कोई भी व्यक्ति रेशम की खरीदी-बिक्री नहीं करेगा। जो व्यक्ति ऐसा करता पकड़ा जायेगा, उसे जुर्माना देना होगा। इतना ही नहीं, रेशम का व्यापार करने वाले की सूचना देने वाले को भारी ईनाम दिया जायेगा।'

जब धनी सेठ ने यह सूचना सुनी तो वह घबरा गया। किन्तु पड़ोसी साहूकार बहुत खुश हुआ। वह सोचने लगा कि यह तो बड़ा अच्छा हुआ। अब मैं ही इसकी शिकायत राजा से करूँगा कि इसके गोदामों में रेशम भरी है और फिर राजा से ईनाम भी लूँगा। इस तरह धनी सेठ की बदनामी होगी, उसे जुर्माना देना होगा और मैं ईनाम पाकर और धनवान हो जाऊँगा। इतना सोचकर वह राजा के पास चला।

धनी सेठ के सेवक ने उसे राजमहल की ओर जाते देखा तो उसने सेठ को यह बात बतायी। सेठ ने अपने सेवक को निर्देश दिया कि जाकर देखते रहो कि साहूकार कहाँ जा रहा है? सेवक ने देखा कि वह राजमहल में ही गया। अब तो धनी सेठ समझ गया कि वह उसकी शिकायत करने गया है। उसने बिना देर लगाये, तुरन्त निर्णय ले लिया और अपने सेवक को आदेश दिया कि जितनी भी रेशम गोदामों में भरी है, सबमें आग लगा दो। रेशम जला दी गयी व थोड़ी देर में राख बन गयी। सेठ ने उसे उठवाकर एक गठरी बनवाई और घर से बाहर निकलने लगा। इतने में राजा के सिपाहियों ने सेठ का मकान चारों तरफ से घेर लिया और एक सेनापति आकर दरवाजे खटकाने लगा। सेठ ने द्वार खोला एवं पूछा कि क्या बात है? सेनापति कहने लगा कि- 'सेठजी, हमें पता लगा है कि आपके घर में रेशम भरी है। हम इसीलिए यहाँ आये हैं।' सेठ ने कहा- 'भाई सेनापति, मेरे यहाँ रेशम नहीं है,

आज मेरे घर छोटी-सी पूजा थी, हवन हुआ था, मैं उसकी राख ठण्डी करने जा रहा था।' सेनापति कहने लगा- 'यह गठरी आप सेवक के हाथ भिजवा दो और मेरे साथ अन्दर चलो, मुझे आपके घर की तलाशी लेना है।'

सेठ सेनापति को साथ लेकर अन्दर गया, पूरे घर की तलाशी दे दी। रेशम का एक धागा भी नहीं मिला। सेनापति भी लज्जित हो गया। वह सेठ से क्षमा माँगने लगा और बोला- 'मैं आपको अच्छी तरह से जानता हूँ कि आप बहुत ईमानदार हैं, लेकिन आपके पड़ोसी ने शिकायत की, इसलिए हमें आना पड़ा।' इतना कहकर सेनापति धनी सेठ से माफी माँगकर चला गया। राजा के पास जाकर उसने सारी बातें बतायीं, तो राजा को भी बहुत क्रोध आया। उसने आदेश दिया कि इस साहूकार ने झूठी खबर दी है, अत: इसे एक सौ एक कोड़े मारे जायें एवं पाँच हजार सोने की गिन्नियाँ जुर्माना लिया जाये। साहूकार एक सौ एक कोड़े की मार खाकर एवं पाँच हजार गिन्नियाँ जुर्माना देकर घर आ गया। घर आने के बाद वह धनी सेठ के घर पहुँचा।

सेठ ने उसे बड़े प्यार से बैठाया एवं जलपान कराया। साहूकार कहने लगा कि- 'सेठजी, एक बात बताओ। आपके पास तो बहुत रेशम थी। आपने उसे इतनी जल्दी कैसे खत्म कर दिया? मुझे सच-सच बताइये।' धनी सेठ कहने लगा- 'जिस समय राजा का सेनापति आया, तो जो राख की गठरी मेरे हाथ में थी, वह सब रेशम ही थी। जैसे ही मुझे पता चला कि राजा के सिपाही मेरे घर आने वाले हैं, मैंने सारी रेशम जला दी।' साहूकार को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह कहने लगा- 'इतने रुपयों का नुकसान आपने कर दिया? रेशम तो बहुत महँगी थी।' सेठ ने जवाब दिया- 'रेशम जल गयी तो फिर खरीद लेंगे, लेकिन यदि राजा के सिपाही मुझे पकड़कर ले जाते तो मेरी इज्जत चली जाती। वह वापस नहीं खरीदी जा सकती थी। मैंने तो अपनी इज्जत बचा ली।' 'गया पैसा वापस आ जाता है, पर गयी हुई इज्जत नहीं।'

त्रन भाई सिलड़ी

एक गामड़ाना मा गल्ढ़ा लुघड़ा करनहारा रेहता था। तिन्हा त्रन बिया हथा। ते तने सिलड़ी हथा। तिउनी सिलड़ी वातूना में कोई गामड़ाहारा ना बुलाता था। आपने घरे बैठा लुघड़ा करता रेहे। आपने आपना बतलाता रेहे के- 'आपुने ना कोई ना बुलावे, एक जगा पंचायत छाई री से म्होटो भाई तू जाईन अक्कलनी वात षमझी आवजे।'

वेहनू छायो, म्होटो भाई उठीन चाल्लो। गामड़ाना बाहर एक रूषड़ो हथो तहाँ एक पंचायत छाई री थी। चालता-चालता बच्चे जोवे तो एक जामुननू रूषड़ो मिली ग्यो। गामड़ाना गोल्या जामुन षई रया था। तहाँज ऊप्पर रूषड़ा पे चढ़ीन तिन्हें बी जामुन षाददी। षात्ता-षात्ता में भुपार छई ग्यो। म्होटो भाई उतरीन रूषड़ाना हेट आयो। पेट भराई रयो थो, तिन्हें ऊँघ लाग्गी गी। करता-करता तिन्हें षान्झ छई गी। नाहटो-नाहटो पंचायत मा जियो तो तहाँ पंचायत षतम छई री थी। तिन्ह में एक गल्ढ़ो पंच हथो। एक बोल केहो के- 'नौ तेरह जी'। बस एट्टी बात म्होटो भाई ने षमझी ने आवी ग्यो घरे।

घरे आईन भाईउना षाम्मे केहवा लाग्गो के- 'म्हूने सीषीली अक्कलनी वातें।' बीज्जो भाई हथो नान्हो तिनषे तो केहवा लाग्गो- 'भाई, मैं बी जाईस।'

बीज्जो एक दिन पंचायत मा चाल्लो। जाईन बेषी ग्यो। बेषताना मा एक

पंच एक वात केही के– 'षमझे अषाउनी बात ने केहीन जाईन कोईनी वात।'

एट्टी वात षमझीन षुददो आपने घरे आवी ग्यो। आईन म्होटो भाईने षाम्मे केहवा लाग्गो के– 'मैं बी अक्कलनी वात षमझीने आवी ग्यो सूँ।' बोहे सीषी ग्यो। हवे नान्हा भाई रेही ग्यो। हवे नान्हा भाई चाल्लो बीज्जे दिन।

गामड़ाना काठे रूषड़ाने हेट एक पंचायत भराई री थी। तानू तो नान्हो भाई चाल्तो–चाल्तो वच्चे जामुन नू रूषड़ो मिली ग्यो। गामड़ाना गोल्या जामुन षई रया था। नान्हो भाईनेबी रूषड़ा पे चढ़ीन जामुन षाददी। षात्ता षात्ताना मा भुवार कई ग्यो। उतरीन हेट आयो। आईन रूषड़ा कने षुई ग्यो। थोड़ी देरना बाद उठयो, षान्झ छई गी। तहाँ न्हाटीने ज्यो पंच कने। तहाँ एक पंच आ वात केही रो थो के– 'तोड़ी करीन दूर करो।'

एट्टी वात षमझीन नान्हो भाई आवी ग्यो। आईन म्होटो भाई षाम्मे केहवा लाग्गो के– 'मैं अक्कली वात सीषी आवी ग्यो।' तरने भाई मिलीन आपनी सिल्ड बगेड़ता रेहता। तरने आ केहे के– 'आपनी अच्छा म्होटो चौधरी पंच छाएसी गामड़ा ना मा। आपनी बात भूली ना जाज्जो, याद करता रेहो।' तरने भाई लुघड़ा करुवा बेषे तो एक भाई तो केहे के– 'जोवो भाई मैं अक्कलनी वात वताल रो सूँ। नौ तेरह जी, नौतेरह।' होम्मज केहतो रे थो। बीज्जो भाई आ केहे के– 'षमझी अषाउनी जाये केही काहूनी ना जाये।' षब ते नान्हो भाई आ केहे के– 'तोड़ी करीन दूर करो जी।' आ तरने बेठठा लुघड़ा करता जाये ने आ वात्तें केहता जाये।

एक बषत गामड़ाना मा माँगनहारा षाददू आयो तो तिउना घरना षाम्मे माँगवा लाग्गो। नान्हा भाई केहवा लाग्गो म्होटो भाईने के– 'पलाना षाम्मे अक्कल नी वात केही दे।' तो षाददू ऊब्बो छई रो थो। तो तिउने षाम्मे म्होटो भाई केहवा लाग्गो– 'नौ तेरह जी, नौ तेरह।' फिरिये षाददू ने माँगा तो थोज वात केही। तरने वषत 'नौ तेरहजी' केही।

बीज्जो भाई हथो तो केही रौ के– 'षमझे अषाउनी बात ने केही जाये कोईणी वात।' तो नान्हो भाई केहवा लाग्गो के– 'तोड़ी करनी दूर करो।'

यो तरने वात्तूने मिलाईन षाददू षोचवा लाग्गो के आए तो सिलड़ी से आउने अक्कल नी वात वतालनू से। षाददू एट्टी वात षोच्चीन म्होटा भाई ने केहवा लाग्गो के– 'म्हारा बाईष रूपा थारे काठे छीं तू म्हारे कसे लेददा था।' तो म्होटो भाई केहवा लाग्गो के– 'षान्हा थारा बाईष रूपा छीं?'

एट्टी केहता–केहता बे चार पंच आवी ग्यो। पंच केहवा लाग्गो– 'सूँ वात की लड़ाई से?' तो षाददू केहवा लाग्गा के– 'म्हारा बाईष रूपा उधार लेददा था आने म्होटा भाई ने।' पंच केहवा लाग्गा– 'तुम्हीं पंचायत करीलो। पंचायतना मा तून्हें फदीया मिली जाईस।' वेहनू छाता मा पंचायत जुड़ी गी।

पंचायत ना षाम्में षाददू ने आ केही के– 'आ लुघड़ा करनहारा जो से ईन्हे म्हारा काठ्ठे थे बाईष रूपा लेददा था। तिन्हा बोहे भाई म्हारा गवाह सीं।'

एक पंच ने केही म्होटा भाईने के– 'भाई, तू लुघड़ा करनहारा तू षाददू काठ्ठे ते बाईष रूपा लेददा था?' हवे आपष मा त्रने भाई बतलावा लाग्गा के– 'जो आपने अक्कलनी वात्तें षमझी ते वात्तें काम आवीं सी भूलजो ना।' हवे म्होटे भाई ने पंचूने षाम्मे जवाब आल्लो– 'नौ तेरह जी, नौ तेरह।' फिरिये पुच्छी तो थोज जवाब आल्लो– 'नौ तेरह जी, नौतेरह।'

तरन बषत पुच्छाना बादमा आष्षा पंचना मन मा आवी गी के नौ तेरह बाईष छई ग्या। हवे पंचूने बीज्जा भाई गवाह ने बुलायो ने पुच्छा के– 'थाई भाई ने षाददू ते बाईष रूपा लेद्दा था?' तिन्हें बी थोज वात केही के– 'षमझी अबाउनी बात ने केहीन काउनी वात।' तरन बषत पंचूने पुच्छी तो तरन बषत मंझलो भाई योज जवाब आल्लो के– 'षमझी अषाउनी जाये केही बहूनी ना जाये।'

तिन्हें बादना नान्हा भाईने बुलायो, पंचे तिन्हें पुच्छी के– 'तू वताल सूँ वात से?' नान्हो बी अक्कल नी वात सीषो हुओ थो। तिन्हें केही– 'तोड़ी करीन दूर करो।' फिरिये पंच पुच्छी। तरने बषत पुच्छी तो तरने बषत जवाब आल्लो के– 'तोड़ीन करीन दूर करो।'

तरने भाईनी वात्तें षमझीन पंच फैषलो करो के– 'भाई, म्होटो भाई तो केही रो से के 'नौ तेरह', बीज्जो केही रो से के 'षमझी अषाउनी जाये केही काहूनी ना जाये।' तो यो भाई षाच्ची केही रो से, नान्हो भाईनी गवाही लेददी तो आ केही रो से के 'तोड़ी करीन दूर करो'। तो मतलब आ छायो के जल्दी पंचायत निपटाई ने बाईष रूपा षाददूना अलड़ाई दो।'

पंच फैषला करीन षाददूने बाईष रूपा अलड़ाई देददा। षाददू आपना घर चाल्ला। ते त्रन भाई अक्कलनी वात सीषनहारा, हुषियार छानहारा, मूड़ धरीन बेष्षा रही ग्या।

तीन मूर्ख भाई

एक गाँव में एक बूढ़ा जुलाहा रहता था। उसके तीन लड़के थे। वे तीनों मूर्ख थे। उनकी मूर्खतापूर्ण बातों के कारण गाँव का कोई भी व्यक्ति उनसे सम्बन्ध नहीं रखता था। वे तीनों आपस में ही बातें करते और कपड़ा बुनते रहते थे। एक बार तीनों भाइयों ने मिलकर तय किया कि उन्हें भी कुछ अकल की बातें सीखनी चाहिये। दूसरे दिन गाँव में एक पंचायत थी। दोनों छोटे भाइयों ने बड़े भाई से कहा कि तुम पंचायत में जाओ और समझदारी की कुछ बातें सीखकर आओ। बड़ा भाई तैयार हो गया और पंचायत में सम्मिलित होने के लिए घर से चला।

रास्ते में एक जामुन के पेड़ के नीचे से गुजरा तो उसने देखा, गाँव के बहुत सारे लड़के जामुन तोड़कर खा रहे हैं, उसे भी जामुन खाने की इच्छा हुई, अतः वह भी रुक गया। भरपेट जामुन खाने के बाद उसे सुस्ती आ गयी और वह जामुन के पेड़ के नीचे ही सो गया। धीरे-धीरे शाम हो गयी। जब उसकी आँख खुली तो अँधेरा होने वाला था, उसे पंचायत का ध्यान आया और वह दौड़ता हुआ पंचायत स्थल पर पहुँचा। जब बड़ा भाई वहाँ पहुँचा, तो पंचायत खत्म हो रही थी एवं एक पंच यह कह रहा था कि– 'नौ तेरह जी।' बस इतनी सी बात सुनकर बड़ा भाई घर की ओर चल दिया। घर आकर उसने अपने भाइयों को यह अकल की बात बतायी। दूसरा भाई

कहने लगा कि– 'भाई, मैं भी पंचायत में जाऊँगा और अकल की बात सीखकर आऊँगा।' दूसरे दिन मँझला भाई भी पंचायत में गया।

जब वह वहाँ पहुँचा तो एक पंच कह रहा था– 'सुनी सबकी जाये, लेकिन कही किसी की न जाये।' बस इतना सुनकर मँझला भाई भी अपने आपको बुद्धिमान समझता हुआ घर आ गया। तीसरा सबसे छोटा भाई भी इस बात से परेशान था कि वह अभी तक अकल की बात नहीं समझ पाया, अतः तीसरे दिन वह भी पंचायत के लिए चला। छोटे भाई को भी अपने बड़े भाई के समान जामुन बहुत पसन्द थे, वह भी उसी जामुन के पेड़ के नीचे रुका व भरपेट जामुन खाकर आराम करने के बाद पंचायत में पहुँचा। जैसे ही छोटा भाई पंचायत में बैठने लगा, उसने सुना कि एक पंच कह रहा है– 'तोड़ो-फोड़ो, दूर करो।' इतना सुनते ही छोटा भी उठ खड़ा हुआ। घर आकर उसने अपने दोनों बड़े भाइयों को अपनी समझदारी की बात बतायी।

अब तीनों भाई अपने आपको बुद्धिमान समझकर रटी हुई इन बातों को दिनभर दोहराते रहते थे। एक कहता था– 'नौ तेरह जी, नो तैरह' तो दूसरा कहता– 'सुनी सबकी जाये लेकिन कही काऊ की न जाये', तीसरा भी अपनी रटी-रटाई समझदारी की बात दोहराता– 'तोड़ो-फोड़ो दूर करो।' इस तरह कई दिन बीत गये।

एक बार गाँव में एक साधु भिक्षा माँगने आया, उसे देखते ही छोटे भाई ने बड़े भाई से कहा कि– 'भैया, इसके सामने हमें अकल की बातें कहना चाहिये।' सबसे पहले बड़ा भाई बोला– 'नौ तेरह जी, नौ तेरह।' साधु ने फिर भिक्षा माँगी तो मँझला बोल उठा कि– 'सुनी सबकी जाये पर कही काऊ की न जाये।' तीसरी बार साधु ने जैसे ही फिर भिक्षा माँगी तो छोटा भी बोल उठा– 'तोड़ो-फोड़ो दूर करो जी।' अब साधु समझ गया। वह सोचने लगा कि ये तो मूर्ख हैं, अतः इन्हें सबक सिखाना चाहिये। इतना सोचकर वह बड़े भाई को कहने लगा– 'मेरे बाईस रुपये वापस करो। तुमने मुझसे उधार लिये थे।' बड़ा भाई मानने को तैयार नहीं था। धीरे-धीरे दोनों में बहस

होने लगी और बात बढ़ गयी। इधर-उधर के पंच भी झगड़ा सुनकर आ गये। उन्होंने दोनों को पंचायत करने की सलाह दी।

सबेरा होते ही पंचायत जुड़ गयी। पंचों के सामने भी साधु ने यही कहा कि इस बड़े भाई ने मुझसे बाईस रुपये उधार लिये हैं और इस बात के गवाह इसके दोनों छोटे भाई हैं। पंचों ने बड़े भाई से पूछा कि- 'क्या तुमने साधु से बाईस रुपये उधार लिये हैं?' पंचों को जवाब देने के पहले तीनों भाइयों ने तय किया कि यहाँ वे अकल की बातों का अवश्य उपयोग करेंगे। पंचों के दुबारा पूछने पर बड़ा भाई बोला- 'नौ और तेरह जी, नौ तेरह।' पंचों ने तीन बार पूछा, तीनों बार बड़ा भाई बोला- 'नौ और तेरह जी, नौ तेरह।' अब पंचों की समझ में आ गया कि नौ तेरह दो बार रुपये लिये होंगे, अत: नौ तेरह बाईस हो गये। फिर पंचों ने मँझले भाई को गवाह के रूप में बुलाया और पूछा कि- 'क्या तुम्हारे बड़े भाई ने साधु से बाईस रुपये उधार लिये हैं?' ऐसा पंचों ने तीन बार पूछा और मँझले ने तीनों ही बार यही जवाब दिया कि- 'सुनी सबकी जाये, पर कही काऊ की न जाये।' पंच समझ गये कि मँझला सब जानता है, पर झगड़े में पड़ना नहीं चाहता, इसलिए ऐसा कह रहा है। अन्त में पंचों ने छोटे भाई को बुलाया और बड़े भाई द्वारा उधार लिये रुपयों के बारे में पूछा। छोटे ने समझदारी की रटी-रटायी बात को तीन बार दोहराया कि- 'तोड़ो-फोड़ो दूर करो जी, तोड़ो-फोड़ो दूर करो।'

तीनों भाइयों की बात सुनने के बाद पंचों ने फैसला किया कि बड़ा भाई 'नौ और तेरह जी' कह रहा है, अत: इसने नौ तेरह दो बार में बाईस रुपये उधार लिये हैं। मँझला झगड़े में हस्तक्षेप करना नहीं चाहता, इसलिए कह रहा है 'सुनी सबकी जाये, पर कही काऊ की न जाये' और छोटा भाई झगड़ा बढ़ाना नहीं चाहता, इसलिए 'तोड़ो-फोड़ो दूर करो'- कहकर वह इस बात को खत्म करना चाहता है। इस तरह पंचों ने फैसला कर दिया और साधु को बड़े भाई से बाईस रुपये दिलवा दिये। साधु अपने घर गया और तीनों भाई सिर पकड़कर अपनी मूर्खता पर पश्चाताप करते रहे।

एक मानषो एक षाँप

एक गामड़ा मा एक गोल्यू रेहतो थो। जोवाना मा अच्छो हथो। रोज जंगलमा जायू करतो थो। थोड़ा गामड़ाना किनारे एक बंजाराऊनी टान्डू पड़ू हथो। तिन्हा में एक बंजारानी गोन्री अच्छी हथी।

एक दिन सूँ छायो के गोल्यू जई रो थो जंगलना था। बंजाराउनी गोन्री ने गोल्यूनी आँछें मिली गी। फिरिये बेचार बषत तिन्हें तो जोवे तिन्हें तो जोवे। करता-करता कई धाड़ा बीती ग्या। एक दिन एट्टो आयो के बंजाराउना हाँ कोई नी वात छई री थी। आष्षा बंजारा गंधाली पी रौ थो। नाच गानो करी रौ थो। तो गामड़ानू गोल्यू तिन्हू जोई रयू थो। एट्टाजना मा एक बंजारा ना गंधाली पी षाल्ली बोतल फेंक्की देददी। परे गोल्यू ऊब्बो छई रयो थो। बोतल तिन्हा मूड पे जाई वाज्जी। तिन्हें लोहीलुहान निकली आयो मूड फुट्टी ग्यो। बेहोष छई जाई पड्यो।

एट्टाजना मा बिना गंधाली पीददा बंजारा हथा ते नाष्षी ज्या। जाईन जोवे तो एक मानषो पड़ो। आष्षा ने जोई करीन तिन्हें उठाड़ो। जोहे तो तिन्हे वाज्जी गी। एट्टाजना मा बंजारीउनी गोन्री बी आवी गी। तिन्ही आईन जोयो तो षोच्वा लागी आ तो थोज गोल्यो से इन्हें म्हारी आच्छें मिली री थी। तिन्हें आष्षा बंजाराउना हटाईन लेई गी।

तहाँ जाईन तिन्हें गोल्या ने लोही ऊंछू, लोही ऊंछीन काठे डिबिया में रूषड़ी मिलई री थी तिन्हें पाड़ीन रूषड़ी घावना मा भरीन पट्टी बाँध देददी। थोड़ी देरना मा तिन्हें आराम छई ग्यो। तो गोल्याने आच्छे षोल्ली, जोवो तो षाम्में बंजाराउनी गोत्री बैष्षी। करता-करता ते बोहे अच्छे करीन बतलावा बोलवा लाग्गा- 'रेहता-रेहता रोजाज षान्झ वेहना ना मिले।'

कई दिन बीती ग्या। एक दिन बंजाराउनी गोत्री केहवे से के- 'म्हूने तो छोकरू छान हारू से।' तिन्हा ऊप्पर गामड़ानू गोल्या केहवा लाग्गो के- 'आपन जल्दी व्याहब कर लेईस।' ते आ भी जानता था के मैं गामड़ानू गोल्यू सू ने ये बंजारानी गोत्री से। हमारा व्याहब ना छाएस। जात अलग-अलग से।

थोड़ा दिनना बादना मा बंजाराउनी गोत्री ने एक नान्हो षो छोकरू छायो। जोवाना में अच्छो हथो। तिन्हीं माँ सूँ करी के तिन्हे बँधे पीठ करि लेददी। तिन्हें बाब्बा ने आल्ली देददो के- 'आने जंगल मा जाईन नाष्षी आ।' तिन्हो बाब्बो बंजारो सूँ करू के गोल्या ने लेईन जंगल भने चाल्लो।

तहाँ जंगलना मा जोवे तो एक बहोत म्होटो भाटटो हथो। तो भाटटाना ऊप्पर नान्हा गोल्याना गेल्हीन पाच्छो आवी ग्यो। आन नान्हो गोल्या रोवा लाग्गो। तो भाटटोने हेट एक षाँप रेहतो थो। तो षाँप निकलीने चारों बगल जोयो मनषा जून कोईनी। तानूँ षाँप जोईन केहवा लाग्गो- 'आ नान्हा गोल्या ने कोई जिनावर षई जासे। ईन्हीं जान बचानूस।' तहाँ जाईन नान्हा गोल्याना ऊप्पर आपनो फन पाड़ीन ऊब्बो छाई ग्यो। षाँपना फनना छाँएरो नान्हा गोल्याना बाक्का ऊप्पर पड़ी रौ थो।

करता-करता थोड़ी देर बादना जोवे तो कागड़ा, षमली ने जंगली जिनावर नौहरी, बैक्कड़ ये चारे बगल से गोल्याने षावे वाष्तर जोई रया। पन षाँप ना भौत्रे कोई ना आवे। करता-करता बहोत बषत छई ग्या। तिन्हा बादमा जोवे तो वैहनो छई ग्यो। परे से जोवे तो पाँच पंच आवी रा था। आवता पंच गोल्या ने जोवा। तिन्ह में से एक पंच केहवा लाग्गो- 'आ जोवो गुषाईनी माया छाई री सी के जो पालनोहारो थो तो मारूना नाष्षी ग्यो और जो

मारनहारा हथो तो वचाई रौ से।' एट्टी वात केहीन पंच ऊब्बा छाईन जोई रा। तानू तो षाँप पाँचे पंच ने जोईन अपनो फन हेट्टो करीन पाच्छो आपना भाट्टा ने हेट चलाई ग्यो।

तिन्हे पे पाँचे पंच केहवा लाग्गा- 'आ जो षाँप आपना वाष्तर जोई रौ थो। गोल्यानी रक्षा करनू आपनो काम से।' तिन्ह में से एक पंच आग्गल चालीन तो नान्हा गोल्यानू पाड़ी लेददू। पाड़ीन आपने चेने लेई ग्या।

आदमी और सर्प

एक गाँव में एक युवक रहता था। वह बहुत सुन्दर और हृष्ट-पुष्ट था। वह प्रतिदिन जंगल जाता था। गाँव के किनारे जंगल में ही बंजारों के कुछ डेरे लगे थे। उनमें एक बंजारा युवती भी थी। एक दिन युवक की बंजारा युवती से आँखें मिल गयीं, दोनों एक दूसरे को बहुत अच्छे लगे। वे इसी प्रकार प्रतिदिन दूर से ही एक दूसरे को देखा करते। धीरे-धीरे उनका इस तरह देखना प्रेम में बदल गया।

एक दिन बंजारों के डेरों पर कोई उत्सव था। सभी बंजारे बहुत खुश थे। खुशी के इस अवसर पर उन्होंने शराब भी पी थी और नशे में नाच-गा रहे थे। गाँव का यह युवक दूर खड़ा इस नाच-गाने को देख रहा था। इतने में ही किसी बंजारे ने नशे के जोश में नाचते-नाचते एक बोतल बड़ी तेजी से एक ओर उछाल दी। बोतल उस युवक के सिर पर लगी और वह लहूलुहान हो गया। बंजारों की बस्ती में हलचल मच गयी। बंजारा युवती ने सुना तो वह भी आ गयी। जैसे ही उसने युवक को देखा तो वह सभी बंजारों को हटाकर उसे अपने घर ले गयी। थोड़े से उपचार के बाद युवक कुछ स्वस्थ हुआ, तो उसने देखा कि उसका सिर उसी बंजारी सुन्दरी की गोद में है, जिसे वह प्यार करता है और पाना चाहता है। युवती को देखकर वह बहुत खुश हुआ और दोनों बड़ी देर तक प्यार की बातें करते रहे। उनका प्रेम दिनोंदिन बढ़ता ही गया।

एक दिन बंजारा युवती ने युवक को बताया कि वह उसके बच्चे की माँ बनने वाली है। युवक बहुत प्रसन्न हुआ और कहने लगा कि– 'अब हम जल्दी ही विवाह कर लेंगे।' लेकिन दूसरे ही पल वह उदास हो गया, क्योंकि वह अच्छी तरह जानता था कि अलग–अलग जाति के होने के कारण उन दोनों का ब्याह होना असम्भव है। कुछ दिनों बाद बंजारा युवती ने एक सुन्दर बेटे को जन्म दिया। बच्चे के जन्म के बाद युवती ने उसकी ओर मुँह फेर लिया, क्योंकि वह चाहते हुए भी बच्चा नहीं पाल सकती थी। युवती के पिता ने बच्चा उठाया और उससे जंगल में एक पत्थर पर रख आया।

बच्चा थोड़ी देर बाद रोने लगा। उसका रोना सुनकर पत्थर के पास बने बिल से एक साँप निकल आया और उसने बच्चे को अकेले लेटा देखा। उसने बच्चे की जान बचाने का निश्चय किया। वह उस बच्चे की रक्षा के लिए उसके सिर पर अपने फन की छाया करके खड़ा हो गया। धीरे–धीरे वहाँ कौआ, चील, लोमड़ी, सियार आदि जंगली जानवर आये, लेकिन साँप के भय के कारण बच्चे के पास नहीं आ सके। इस तरह सबेरा हो गया।

थोड़ी देर में उधर से कुछ पंच निकले और उन्होंने इस अनोखे दृश्य को देखा। एक पंच कहने लगा– 'देखो पंचों, ईश्वर की माया कितनी विचित्र है कि पालने वाला तो मारना चाह रहा है और मारने वाला रक्षा कर रहा है।' इतना कहकर पंच वहीं खड़े होकर बालक को देखने लगे। सर्प ने जब पंचों को बालक के पास खड़े देखा, तो अपना फन नीचा करके बिल में चला गया। पंच कहने लगे– 'देखा, साँप अपनी ही प्रतीक्षा कर रहा था। अब इस बच्चे की रक्षा करना अपना काम है।' एक पंच ने बालक को गोद में उठा लिया और आगे बढ़ गया।

सिलड़ी मानषो ने अकली मान्छी

एक गामड़ा मा एक मान्छी ने मानषो रेहतो थो। एक दिन वात छाई के कोई म्होटो दिन आयो तिन्हा में मानषे मान्छीने आ केही के– 'म्हूने मिठ्ठा षानू से।' मान्छी हेथी तो गोल, तेल, लेट लेईने आवीगी। तिन्हें मान्छीए गोलना पूड़ा करा। पहले वषलाना मा तेल घनू हथू तिन्हे मारे म्होते म्होटो पूड़ा छाई रा था। फिरिये तेल कम छात चलू ग्यू तो नान्हा पूड़ा छावा लाग्यो।

तिन्हा मानषा ने मिठ्ठा पूड़ा थालीना में घालीक आणि मोकल्ला। मानषा ने षाई लेददा। तिन्हा बादना मा बीज्जा पूड़ा मंगड़ाया तो बीज्जी थाली ने घालीन पूड़ा आल्ली मोकल्ला। ते नान्हा पूड़ाउना जोत्वा षम मानषो रिषाई ग्यो। चिल्लाईन केहवा लाग्गो– 'नान्हा पूड़ा सुकवा मोकल्या? म्हूने म्होटा पूड़ा आल्लो।' तिन्ह पे मान्छी केहवा लाग्गी के– 'गोलना, तेलना ने लोटना पूड़ा सी एक से षई ले।'

मानषा केहवा लाग्गो– 'मैं म्होटा पूड़ा षाईस।' एट्टाजना में मानषो रिषाईन बाल्टा ऊप्पर षुई ग्यो। षाँष रोकी ने षटपाटी लेईन षुई ग्यो। मान्छी हेथी तो चिल्लावा लाग्गी, रोवा लाग्गी। तिन्हा में आई आमना घरूहारो मानषा अवी ग्या। एकट्ठा छई ग्या। केहवा लाग्गा– 'सूँ वात छई गी?'मान्छी केहवा लाग्गी– 'म्हारा मानषाने जाने सूँ छई ग्यो। सुकवा नथी उट्ठी रयो।'

मानषा हथो तिन्हें हाथ धरीन, नाड़ी जोईन केहवा लाग्गो– 'आ तो मरी ग्यो।' एट्टी केहीन मानषा लाकड़ा, लुगड़ो लेवाने चलाई ग्यो। लेईन आवी ग्या, तानू तिन्ही मान्छी केहे से के– 'म्हूने म्हारा मानषा ने कान मा एक वात केहनू से, गुषाईंना घर जाईन यो वात केहे से।' तो मान्छी जाईन कानना में केहवा लाग्गो– 'मानषो जोवो थारा लुगड़ा, लाकड़ा षब आवी ग्या सीं, ले तू नान्हा पूड़ा षई ले यो म्होटानी वात छोड़ी दे।'

मानषा केहवा लाग्गो– 'नान्हो पूड़ो ना षाऊँ, षाईस तो म्होटो षाईस।' पाच्छी आवी गी मान्छी। मानषा काठी करीन तिन्हें ऊप्पर पाड़ीन मेल्लो। तानू फिरिये मान्छी केहीन के म्हारा मानषाना छान ना फिरिये एक वात केहीन। त्रणस बषत केही जाईस। फिरिये तिन्हीं केहीस के– 'जोवो थारा लाकड़ा आवी ग्या सीं तू यो वात मानी जा, तू नान्हा षई ले।'मानषो केहे– 'ना मैं षाईस तो म्होटो षाईस नान्हा ना षाऊँ।' तिन्हा बादना मा तिन्हीं काठी पाड़ीन बालुवानी जगह लेई ग्या। तहाँ जाईन आज लगाड़ुवानी वात छाई। फिरिये मान्छी केहवा लाग्गी– 'यो एक वात म्हूने बीज्जी केहनू से।' तानू फिरिये कान में जाईन केहे से के– 'जोवो तून्हें बालवाना वाष्तर आवीग्या जंगलना मा, तू हमना बी म्हारी वात षमझी जा के नान्हा षाई ले तू।' मानषा केहवा लाग्गो– 'ना–ना नान्हा ना षाऊँ म्होटो षाईस।' एट्टी केहीन मान्छी आँई आवी गी। एट्टाजना मा एक मानषे जाईन काठीना मा आज लगाड़ देददी। लगाड़ता ना जो लू–लपट निकली तिनमें तानू हवे कुद्दीन चिल्लावा लाग्गा के– 'भाई आज उलाही दो मैं नान्ही षाईस, नान्ही मोटी षब षाईस।'

मूर्ख पति और बुद्धिमान पत्नी

एक गाँव में एक पति–पत्नी रहते थे। एक दिन पति ने पत्नी से कहा कि मुझे गुलगुले खाना है। पत्नी बाजार गई और गुड़, तेल एवं आटा ले आयी। कढ़ाही में तेल डालकर उसने गुलगुले बनाये। जब तक कढ़ाही तेल से भरी रही, वह बड़े–बड़े गुलगुले बनाती रही, लेकिन जैसे–जैसे तेल कम होता गया, गुलगुले भी छोटे होते गये। पत्नी ने एक थाली में गुलगुले रखे और पति को दे आयी। वह खाता गया। दूसरी बार फिर वह गुलगुले देने गयी।

इस बार वे कुछ छोटे थे। पति उन्हें देखकर नाराज हो गया और कहने लगा– 'ये छोटे–छोटे गुलगुले क्यों बनाये? मुझे तो बड़े–बड़े खाना है।' पत्नी ने कहा– 'गुड़, तेल और आटे के ये भी बने हैं। छोटे हैं तो क्या, स्वाद तो एक–सा ही है।' लेकिन पति नहीं माना। वह जिद करता रहा और गुस्सा होकर चुपचाप साँस रोककर चारपाई पर सो गया। जब पत्नी ने उसे ऐसे पड़े देखा तो वह रोने–चिल्लाने लगी। इधर–उधर के लोग इकट्ठे हो गये, सभी उससे हाल पूछने लगे। पत्नी ने बताया कि मेरे पति को न जाने क्या हो गया, ये उठते ही नहीं। लोगों ने उसकी नाड़ी देखी और कहने लगे कि यह तो मर गया है। इतना कहकर वे सब उसके दाह–संस्कार की तैयारी करने लगे।

जब वे सब सामान लेकर आये तो पत्नी बोली कि मुझे अपने पति के कान में कुछ सन्देश कहना है, जिसे यह भगवान के घर जाकर बतायेगा। इतना कहकर वह अपने पति के कान में कहने लगी कि– 'प्रिय देखो, तुम्हारे दाह–संस्कार का सब सामान आ गया है, अब तो तुम छोटे गुलगुले खा लो। बड़े गुलगुले खाने की जिद छोड़ दो।' पति नहीं माना, कहने लगा– 'मुझे छोटे नहीं खाना, मैं खाऊँगा तो बड़े ही खाऊँगा।' पत्नी फिर चुपचाप बैठ गयी। इतने में लोगों ने अर्थी तैयार की और पति को उस पर लेटा दिया। पत्नी ने फिर उसके कान में कहा कि– 'मैं फिर से कह रही हूँ, तुम मेरी बात मान जाओ, छोटे गुलगुले खा लो।' लेकिन पति नहीं माना और बड़े गुलगुले खाने के लिए कहता रहा। अब लोग उसे उठाकर श्मशान की तरफ चल दिये और दाह–संस्कार की बात करने लगे। पत्नी फिर बोली कि– मुझे एक बात और अपने पति के कान में कहना है। इस तरह सबकी अनुमति लेकर वह पति के कान में कहने लगी कि– 'देखो, तुम्हें जलाने की तैयार पूरी हो गयी है। ये लोग श्मशान तक तुम्हें ले आये हैं, अभी भी समय है, तुम मान जाओ और छोटे गुलगुले खा लो।' पति कहने लगा– 'नहीं, नहीं। मैं छोटे नहीं खाऊँगा, मुझे तो बड़े गुलगुले ही खाना है।' पत्नी फिर वापस आकर बैठ गयी। इतने में एक आदमी ने अर्थी में आग लगा दी, जैसे ही पति को लपट लगी, वह अर्थी से बाहर कूदकर चिल्लाने लगा कि– भाई, आग बुझा दो, मैं छोटे गुलगुले खा लूँगा। मैं छोटे–बड़े सब खाऊँगा।

पंच हथियाई

एक समै ने वात से के गुषाईं महादेव और गौरा बोहे जना देषने जोवाने वाष्तर धरतीना ऊप्पर आईन जोत्ता किंडीरा। जोत्ता फिरता-फिरता एक गामड़ू ना काठे एक बहोत म्होटो बड़नू रूषड़ो हथो। बड़ना रूषड़ा काठे एक पंच हथियाई हथी। तहाँ नान्हा म्होटा लड़ाइनी वात्तें पंचायतना में करीन निपटाई देत्ता था। तो पंच हथियाईने काठे आईन गोरा गुषाई महादेव बोहे निकला, तीन्हें पंच हथियाई ने गोड्डु पड़ौ। तीन्हें गौरा जोई री थी जोईन केहवा लाग्गी के- 'गुषाईं तून्हें चाक षूटना देवता गोड्डु पड़ीस तू ए कौन्हें गोड्डु पड़ा? थारे से म्होटो कुण से?' तिन्हा ऊप्पर गुषाई केहवा लाग्गो- 'गौरा, तू नथी जानती चाल आग्गल।' केहीन गुषाईं आग्गल चाल्लो। गौरा केहवा लाग्गी- 'तू ईन्हो म्हूने भेद ना वताले तो मैं थारे चैने ना आऊँ।'

तिन्हा ऊप्पर गुषाई केहवा लाग्गो- 'इन्हा वाष्तर मैं माँछीनी जात ने चेने लेईन नथी आवतो। गौरा मैं तून्हें वतालूँ के म्हारे से म्होटो कुण से?' गुषाई जाईन बड़ना रूषड़ा कने गौरा ने मोमनी माँछी करीन रूषड़ा पे बेषाड़ देददी, तो बैठठी-बैठठी जोत्ती रैणे। तिन्हा वादना मा गुषाईं चाल्लो।

एक बोकड़ीहारो बोकड़ी चराई रौ थो। गुषाई ए तिन्हू रूप धरी लेददो। रूपधरीन बोकड़ी हाराने घेर चाल्लो।

जाईन किवाड़ षड़षड़ाओ, तिन्ही घरहारीने नाम लेईन केहवा लाग्गो के- 'किवाड़ षोल।' तिन्ही आवाज षमझीन किवाड़ षोल्ली देददो। किवाड़ षोल्लीने केहवा लाग्गी के- 'तून्हें सू छई ग्यो? सुकवा आई ग्यो?' तिन्ह पे गुषाईं केहवा लाग्गो- 'म्हारो जिऊ षराब छई रयो से।' तिन्ही घरहारी केहवा लाग्गी- 'बोकड़ी छीं सीं?' तिन्ह पे केहवा लाग्गो- 'एक मनक पे छोड़ी आयो सू, चराई न षान्झे लेई आवस।' होम केहीन षाल्टाना ऊप्पर षुई ग्यो। तिन्हीं घरहारी हथी तिन्हा गोड्डा हाथ दाब्बी री मूड दाब्बी री मषल री। करता-करता जा में षान्झ छई गी।

आम से जोहे तो बोकड़ीहारो बोकड़ी लेईन आपने घरे आवी ग्यो। घरे आईन आपनी घरहारीने आवाज लगाड़ो। तो हवे तो घरहारी जोवा लाग्गी के- 'आ चे ओस बीज्जो?' तिन्ही आवाज भी तिन्हा घरहारा ओना लाग्गे। गुषाईं षुत्तो-षुत्तो केही रै- 'ईन्हे फदीया आल्ल दे।' तो घरहारो केहवा लाग्गो- 'तू कुण से भाई?' तो गुषाई केहवा लाग्गो- 'हो रे तू जानता न थी? मैं तो घर मालिक हूँ।' तिन्ह पे बोहे जना आम्मे-षाम्मे लड़ुवा लाग्गा। घरहारी जोई री, ऊब्बी छाई री- 'के म्हारो घरहारो चे ओ स? आ तो बोहे एषरी षा सीं?'

करता-करता एट्टा जना मा गामड़ाना बे चार पंच आवी ग्या। आईन केहवा लाग्गा- 'सूँ वात छई गी? सुकवा लड़ी रा से?' तिन्हा ऊप्पर गुषाई केहवा लाग्गो- 'जो वो पंच म्हारा पेट मा दर्द छई ग्यो, म्हारा जिऊ षराब छई ग्यो तो बोकरी चराने वाष्तर ईन्हा नौकर करि आयो थो, यो केही रौ से म्हारी घरहारी से, बोकड़ी से, घर से।'

अषली जो हथो तो केहवा लाग्गो- 'भाई, आ कुण से? बोकड़ी घरहारी म्हारी सीं।' ते पंच केहवा लाग्गा- 'हमारी षमझ में नथी आवी री। के तुम बोहे एषरी षा सो। तुम्हीं पंचायत जोड़ी लो। पंचायतना में जो फैषलो छई जाये तिन्हें मानजो।' ते बोहे जना केहवा लाग्गा- 'ठीक से भाई, बैहना में पंचायत जोड़ी लो।'

तिन्हा बादना बैहना मां पंचायत जुड़ी गी। गुषाईने गौरा ने केही दे थी-

'के हवै तू जोत्ती रैजे।' हाँ ते बोहे जाईन पंचों ने षाम्मे हाजिर छई ग्या। हवे गुषाईंने पंचे पूछी- 'के भाई, सूँ वात छे?' तो गुषाईं केही के- 'घरहारी म्हारी से, बोकड़ी म्हारी सी, घर म्हारो से, म्हारो जिऊ षराब छई ग्यो थो तिन्हा वाष्तर मैं ईन्ने बोकरी चरावना वाष्तर केहो आयो थो। मैं रूपो बेल पाक दीस। तू म्हारी बोकड़ी चराइन षान्झे लेई आवजो। यो आईन केही रौ से के बोकड़ी म्हारी, घरहारी म्हारी से।' तिन्हा बादना में पंचूने बोकड़ीहाराने पूछी- 'भाई, तेरी सूँ वात छे?' तो केहवा लाग्गो- 'बोकड़ी म्हारी से, घरहारी म्हारी से, घर म्हारो सो, यो जाने कुण से?' बोहे बगलनी वात षमझीने, पंचना षमझ में ना आवे।

करता-करता एक पंच केही के- 'भाई, थारी घरहारी ने चानू व्याहब छायो थो? ने चेवा गामड़ानी घरहारी से ने चेवा थारा पंच था जो व्याहब में जिया था?' अलग-अलग करीन पूच्छा बोहूने। तो गुषाईं तो अन्तर्धानी हथो, तिन्हें षब मालुम हथी। तिन्हें गुषाईं षब केद्दी के षषरो षाष तिन्हूँ नाम वतालू, तिन्हा गामड़ाना नाम वतालू ने व्याहब टाइम पर सूँ-सूँ वातें छाईं थीं, आष्षी वातें वताली। घरहारी जी तिन्ही वात्तें निषानी वताली। तिन्हा वादना मा बोकड़ीहाराने पूच्छी तिन्हें बी विचारे ने हेण आष्षी वातें वताली। बोहे वात्तें पंचूने षाम्में आईं। बोहे वातें एक षरी षीं लाग्गी। तो हवे तिन्हा में चेवाने झूठ्ठो करे? पंच परेसान छई रा। पंच फैषला छावाने ना आवे।

तिन्ह में एक गल्ढ़ा पंच हथो तो केहवा लाग्गो- 'पंचों, मैं एक वात कहूँ, तिन्हें पंच तुम्हीं मानो तो।' तिन्ह पे आष्षा पंच केही देद्दी- 'ठीक से, हमी मानसीं थारी वात ने।'

तिन्हा ऊप्पर गल्ढ़ा पंच एक हुक्को मंगड़ाओ, मंगड़ाईन आष्षा पंचूने वच्चे मेल्ही देददी। मेल्हीने गल्ढ़ा पंच बोहे जनाउने गुषाईने, बोकड़ीहारो ने केहवा लाग्गो के- 'जो षाच्चोमनक से तो आ हुक्काना मा आइन त्रण बषत निकली जाईन। जो ना निकले तो झुठ्ठो।' आँईं गल्ढ़ा पंच आष्षा पंचूने एषारो आल्ली देददो के- 'जो चिलमना में निकली जाए तो छलावोस, तिन्हें धरीन आष्षा पंचूने षावड़ा तिन्हें मूड़ पे मारजो।' होम केहीन आष्षा पंचूने षमड़ाई देददो।

हवे चिलम वच्चे में रही री थी। तो बोकड़ीहाराने अषली ने केहवा लाग्गा के- 'भाई, तू निकल तो चिलम ने पाड़ीन।'

बोकड़ीहारा केहवा लाग्गो पंचूने हाथ जोड़ीन- 'पंच देवता चिलमना में म्हारी हाथनी आँगली नथी पेषी षकती। म्हारी आवड़ी म्होटी देहीं चीम निकलसे?' होम केहीन पंचूने हाथ जोड़ीन चिलम हेट मेल्ही देददी। गुषाईंने बुलायो हवे- 'के तू चिलमना में निकली जाइस?'

तानू गुषाईं तो चिलमना लेईन हाथना में केहवा लाग्गो के- 'पंचों, मैं तो षाच्चो सूँ। तुम्हीं त्रण बषत केही रा सूँ मैं षात बषत निकली जाईस।'

होम केहीन आष्षा पंचूने षाम्मे चिलमना छेका मा नान्हों षो छाईन षात बषत निकली ग्यो। पंच हथा तो केहवा लाग्गा- 'आ से झुठ्ठो, आ धरी लो।' हवे गुषाईंने धरी लेददो। आष्षा पंच तिन्हें षूब षावड़ा मूड़ना पे मारो। गौरा बड़ना रूषड़ा पे बैठी जोई री थी। केहवा लाग्गी- 'गुषाईं तू मार षाइरो से?' गुषाईं केहवा लाग्गो- 'तून्हें मैं केही थी तू ना मानी हवे जोत्ती जा, सूँ-सूँ छाएस।' गुषाईंने षूब मार पड़ी री। गौरा रोई री- 'गुषाईं आवीजा, थारे जिद् ना करूँ हवे।' गुषाईंनू कालो बाक्को करीन आष्षा पंचूने गामड़ा ने बाहर निकाली देददो। निकलीन गौरा महादेव चलाई ग्यो।

तिन्ह पे गुषाईं ने गौरा से केही- 'आनू नाम पंच हथियाई। हाँ दूध नू दूध पानी नू पानी छाएस।' होम केहीन आग्गल चलाई ग्या।

पंच हथियाई

एक बार की बात है, शिव-पार्वती पृथ्वीवासियों का दु:ख देखने के लिए भ्रमण करने निकले। रास्ते में एक पुराने वटवृक्ष के नीचे पंच हथियाई थी। शिवजी ने वहाँ रुककर उसे प्रणाम किया और आगे बढ़ गये। पार्वती

सब देख रही थीं। उन्होंने शिवजी से पूछा कि- 'हे नाथ! आप तो तीनों लोकों के देवता हैं, सभी आपको प्रणाम करते हैं। आपने किसे प्रणाम किया?' शिवजी ने बात टालना चाही, लेकिन गौरा जिद करने लगीं। अन्ततः शिवजी को बताना ही पड़ा कि- 'यह पंच हथियाई है।' पार्वती ने कहा- 'मुझे इसका भेद अवश्य बताइये।' शिवजी ने कहा- 'ठीक है, तुम चुपचाप देखती जाओ।' इतना कहकर उन्होंने पार्वती को मधुमक्खी बनाकर उसी पेड़ पर बैठा दिया और स्वयं चल दिये।

वे एक गड़रिये के घर उसी का रूप धारण करके पहुँचे। गड़रिये के घर पहुँचकर उन्होंने दरवाजा खटकाया। गड़रिये की पत्नी ने दरवाजा खोला तो सामने अपने पति को देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने पूछा- 'क्या बात है? आज तुम जल्दी घर क्यों आ गये? तबियत तो खराब नहीं है?' गड़रिया के वेश में शिवजी कहने लगे- 'आज मेरी तबियत ठीक नहीं है। मैं एक आदमी को बकरी चराने के लिए छोड़ आया हूँ। वह शाम तक बकरी लेकर आ जायेगा।' इतना कहकर गड़रिया सो गया और पत्नी उसके हाथ-पैर दबाती रही।

धीरे-धीरे शाम हो गयी और असली गड़रिया जंगल से बकरियाँ चराकर वापस लौट आया। उसने पत्नी को आवाज लगायी, वह असमंजस में पड़ गयी कि मेरा पति तो अन्दर सो रहा है, फिर यह दूसरा कौन है जो वैसी ही आवाज में बोल रहा है? पत्नी ने दरवाजा खोला तो दोनों गड़रिये आमने-सामने खड़े और अपने को घर का मालिक बताकर लड़ने लगे। शोर सुनकर दो-चार पंच आ गये और पंचायत करने की सलाह देने लगे।

पंचायत जुड़ी तो पहला गड़रिया बोला- 'यह मेरी पत्नी है, बकरी मेरी है, घर भी मेरा है, यह दूसरा व्यक्ति न जाने कौन है?' गड़रिये के वेश में शिवजी ने कहा- 'नहीं, यह झूठ बोल रहा है। आज मेरी तबियत ठीक नहीं थी, इसलिए मैं इसे पैसे देकर बकरी चराने के लिए छोड़ आया था, अब यह मेरे घर का मालिक बन रहा है।' पंचों की समझ में नहीं आ रहा था

कि असली गड़रिया कौन सा है? अब पंचों ने उनसे अलग-अलग कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण बातें पूछीं। पहले उन्होंने असली गड़रिये से पूछा कि उसका ब्याह कब हुआ? पत्नी का क्या नाम है, ससुराल कहाँ है... आदि? गड़रिये ने सब सच-सच बता दिया। फिर दूसरे गड़रिये से पूछा। शिवजी तो अन्तर्यामी ठहरे, उन्होंने भी पंचों को सही-सही बातें बता दीं। पंच परेशान कि अब वे किसे झूठा मानें।

इतने में एक बूढ़ा पंच उठा और सभी पंचों की सहमति से उसने एक हुक्का मँगवाया और पंचों को भी समझा दिया कि ऐसा लगता है कि इनमें से एक तो साधारण व्यक्ति है तथा दूसरा देवता। इस चिलम के छेद से जो व्यक्ति निकल जाये, वही झूठा माना जायेगा। इधर दोनों गड़रियों से पंच ने दूसरी बात कही। उसने कहा कि जो चिलम के छेद से निकल जाये, वह सच्चा माना जायेगा। पहले पंचों ने असली गड़रिये से कहा कि वह हुक्के के छेद से बाहर निकले। गड़रिया हाथ जोड़कर बोला- 'पंचों, इस छेद से तो मेरी उँगली भी नहीं निकल सकती, मैं पूरा कैसे निकल सकता हूँ?' इतना कहकर उसने चिलम वापस कर दी। अब पंचों ने शंकरजी से कहा, तो वे बड़ी शीघ्रता से चिलम के छेद से दूसरी तरफ सूक्ष्म रूप धारण करके निकल गये। पंच समझ गये कि यही झूठा है। बस फिर क्या था? सब पंचों ने मिलकर शिवजी को पकड़ लिया और उनकी खूब पिटाई की।

पार्वती पेड़ पर बैठी सब देख रही थीं। शिवजी को पिटते देखकर वे बहुत दुःखी हुईं। शिवजी कहने लगे- 'गौरा, मैंने कहा था तुम जिद मत करो, अब देखती जाओ क्या-क्या होता है?' पार्वती ने शिवजी से क्षमा माँगी, कहने लगीं- 'हे शिव! इस बार वापस आ जाओ, अब मैं कभी जिद नहीं करूँगी।' पंचों ने शिवजी का काला मुँह कर दिया और उन्हें गाँव के बाहर निकाल दिया। दोनों गाँव के बाहर आ गये। शिव ने पार्वती से कहा- 'इसी का नाम पंचायत है। यहाँ दूध का दूध और पानी का पानी होता है।' इतना कहकर वे आगे चल दिये।

गुषाईंनू न्याव

एक गामड़ा में एक मान्छी ने मानषो आच्छी करीन रेहता था। ते हर दिन जंगलना में जाईन, लाकड़ा वाडडीन वेच्चीन षात्ता था। करता-करता चेटटाक दिन बीति ग्या। एक दिन जंगलना लाकड़ा वाडुवा जिया तो जोवे तो बंबईना में से षाँप निकलीन मान्छी ने कण्डी षाददो। मान्छी मरी गी। तिन्हो मानषो जोईन रोवा लाग्गो, चिल्लावा लाग्गो, रूषड़ाउना भाटाउना में मूड मारवा लाग्गो। तीन्हें रोईन-रोईन लाकड़ा एकठ्ठा करदो के मैं बी म्हारी मान्छी चेने मरीस।

एट्टाजना में गुषाईं महादेव, गौरा देषने जोत्ता फिंडीरा था। तानू तो जंगलना ऊप्पर निकल्या तो गौराजी नजर मानषा पे पड़ी, तानू गुषाईंने केहवा लाग्गी- 'हे गुषाईं, आ सूँ वात से? जंगल मा मनष सुकवा रोई रौ से?'

तिन्हा ऊप्पर गुषाईंए केहवा लाग्गो के- 'चाल्ल आ तो धरती से। आ धरती ना पेट में कोई रोई रू से कोई हषी रू से। तूने सूँ करनू? चाल आग्गल।' तिन्हा पे गौरा केहवा लाग्गी- 'ईन्हों तूने म्हूने भेद वताल। तो मैं थारे चैने चाल्ली। न थारी वाट पली से म्हारी वाट आस। थारे चैने मैं ना आऊँ। गौरा रिषाई गी।' तिन्हा ऊप्पर महादेव केहवा लाग्गो- 'ईन्हा वाष्तर मैं तून्हें चैने लेईन नथी आवतो।' गुषाईंए ने गौरा ने केही के- 'जोवो वली ईन्ही

मान्छी से, तिन्ही बीष बरष नी उमर हथी, उमर पूरी छई गी तिन्हा षाँप कल्डीने मरी गईस। यो तिन्हों मानषो से यो रोई रौ मान्छी ने जिवाड़ा वाष्तर।'

तिन्हा ऊप्पर गौरा केहवा लाग्गी- 'आपनी मान्छी ने जिड़ावना वाष्तर यो रोई रौ से तो ईन्ही मान्छी ने जिड़ाई दे। तू तो गुषाईं से।' गुषाईं केहवा लाग्गो- 'चाल्ल धरती ना पेटे अपन चाल्ली।' गुषाईं ने गौरा बाम्हन-बाम्हनी ना भेष धरीन रोता हुवा मानषा काट्टे चाल्ला। तहाँ जाईन गुषाईं मानषाए पूछवा लाग्गा- 'तून्हे सूँ दुख छई रौ से?' मानषा जवाब आल्लो- 'बाम्हन, म्हारी मान्छी रोल्टो पानी करीन षड़ाती थी, जोवा भाली करती थी, तो मरीगी तिन्हें चेने मैं बी मरीस।'

तिन्हा ऊप्पर गुषाईं केहवा लाग्गो- 'तू थारी मान्छीने जिड़ाईस? तो मैं कहूँ तिन्हें कर। तू थोड़ो षो पानी हाथना में ले। पानी लेईन तू आ केहे के 'म्हारी आल्डी उमर म्हारी मान्छी ने आल्डे' एट्टी केहे षूँ थारी मान्छी जीवी जाईस। तिन्हा बादना में तुम्ही बोहे एकज दिन मरसे।'

मानषो षुसी छायो ने केहवा लाग्गो- 'पानी आल्ली दीस।' गुषाईं ने केही- 'मगर एक वात से यो वात तू कोई ना षाम्मे, आपनी मान्छी ना षाम्मे बी ना केजे। कोई बषत ना जरूरत पड़ी जाये तो मान्छीना हाथ को पानी पाच्छे ले लेईस तो थारी मान्छी मरी जाईस।'

एट्टी वात केहीन गुषाईंए पानी आल्लू। तिन्हे पानी लेईन मान्छीने ऊप्पर नाष्षो ने केहवा लाग्गो के- 'म्हारी आल्डी उमर म्हारी मान्छी ने ऊप्पर आल्ली दे।' केहता षम मान्छी ऊब्बी छई गी। केहवा लाग्गी- 'म्हूने बहोत जोन्नी ऊँघ लागी गी थी। तून्हें उठाड़ो ना म्हूने?' बाम्हन-बाम्हनी तो अलोप छई ग्या। हवे बोहे लाकड़ा लेईन आपना घरे चाल्ला। मानषो जो हथो छई ग्या चालीष बरष को। मानषा नी उमर हथी षाठ बरष। ने तिन्ह में बीष बरष तो बढ़ई ग्या था ने बीष बरष मान्छी ने आल्डे। मान्छी बीस बरष नी छई गी ज्वान, ने मानषो चालीष बरष नो जल्दो।

एक दिन सूँ छायो के मान्छी मानषा बोहे लाकड़ा वाडुवा आवा तो जंगलना मा जोवे तो एक म्होटो ज्वान षाददू धूनी लगाड़ी ने बेष्षो थो। जंगलना में मानषा ए गष लाग्गी, तो केहवा लाग्गो– 'चल आपन पानी पीस।' आग्गल तो मान्छी पानी पीवानी केही री थी ने पाच्छी केहवा लाग्गी के– 'म्हूने पानी नी त्रष नथी लागी री, तू जाईन पी आ।'

मानषो हथो तो पानी पीवाने वाष्तर चाह्लो। आईं तो षाददू बेष्षो थो। षाददू नी ने मान्छी नी बे-बे नजर छई गी। षाददू म्होटो ज्वान हथो। तानू षाददू केहवा लाग्गो के– 'तू आ गल्ढ़ा काट्ठे छा रेह से सूँ करीस? तू म्हूने काट्ठे चाह्ल।' तिन्हा ऊप्पर मान्छी केहवा लाग्गी के– 'मानषो तो चेने से मैं चीम चालूँ? थारे चेने?'

षाददू केहवा लाग्गो– 'तू एक काम करजे के थारो मानषो पानी पीन आवे तानू तू केज्जे के म्हूने बी गष लागी री। मानषे तून्हे लेईन कुँआ पे जासे तानू मानषो पानी भरे तो तू पषाल से थक्को मारी देददे। तानू आपन नाष्षी चल से।' आन ते मानषो आयो तो मान्छी केहवा लाग्गी– 'मानषो म्हूने त्रष लागी री चाल म्हूने पानी पीवाने।'

मानषो षूददो-षाददो, तिन्हें सूँ मालम बातें? पानी पिड़ावाने चाह्लो। कुँआ में से पानी षेंचवा लाग्गो, पषाल ते मान्छी धक्को मारी देददो। मानषो कुँआ मा चलाई ग्यो। मान्छी जानी गी के मरी ग्यो। मान्छी षाददू ने हाथ धरीन नाष्षी गी। षाददू सूँ करूँ मान्छी ने परे ले जाईन नाचनहारी करि लेददी। षूब नचड़ावे तिन्हें ने फदीया कमाये षाददू।

हवे कुँआना में जड़ हथी तो मानषो जड़ ने धरीन लटको रेहे थो। आम से जोवे तो एक बंजाराउनी टोह्ली बाट्टेहीन जई री थी। तो उनी बंजाराउनी पानी पी गष लाग्गी। तो एक बंजारा मानषो डोल गड़ुवो लेईन कुँआ पे आयो। जो कुँआना में गड़ुवो डोल नाष्षी तो म्हें से चिह्लावा लाग्गो के– 'म्हूने निकालजो भाई।'

बंजारा जोईन केहवा लाग्गो– 'तू कुण से?' तो मानषो केहवा लाग्गो– 'पानी पीवाने आयो थो षषकी पड़ो।' एट्टी केहता षम बंजारो तिन्हें बाहर षेच्चीन केहवा लाग्गा के– 'तू चेना गामड़ानो से? तून्हे कुण धक्का मारो?'

मानषो षाच्ची वात ना बताड़ीस ने केहवा लाग्गो– 'पानी पीवाने वाष्तर आयो तो गिरि पड़ौ।' बंजारो केहवा लाग्गो– 'षाम्मे एक षहर हें मैं तहाँ जई रौ से तू काट्ठे चाह्ल तून्हें छोड़ी दीस।' आगला गामड़ा आई ग्यो तो मानषो केहवा लाग्गो– 'मैं हॉज रेहीस।' होम केहीन ते बंजारो काट्ठे से छुट्टीन गामड़ा में आवी ग्यो। गामड़ा में आइन आपनी मान्छी ने झुंडता फिन्डी रौ थो। करता-करता चेटटाक दिन छई ग्यो। गामड़ा में एक म्होटो मानषो हथो तिन्हें काट्ठे जाईन केहवा लाग्गो– 'म्हूने काईं काम आह्ल मैं काम करीस थारो।' तो म्होटो मानषो तिन्हें कामना ऊप्पर राषि लियो। कई दिन छई ग्या तिन्हा काम करता-करता।

आईं जोवे तो षाददू तो हथो तो फदीया हारो छई ग्यो। मान्छी नाचवा-गावाना में नामी छई गी। म्होटा-म्होटा मानषा उना में नाचवा-गावाने वाष्तर जावा लाग्गी। तिन्हों मानषो थोज गामड़ाना में म्होटो मानषो घरे काम करनहारा हथो। थोज गामड़ाना के राजा ने मान्छीए नाच-गाना वाष्तर बोलाई। तो राजा सूँ करू के आष्षा गामड़ा के म्होटा-म्होटा मानषाउना बोलवाई।

तिन्हा काट्ठे तिन्हा मानषो रेही रो थो तो म्होटा मानषा ने बी बोलाई। बुलाईने तहाँ नाच-गाना छायो। हवे मान्छी नाच्ची री थी तिन्हों मानषो बेष्षो थो। तो मानषाना ऊप्पर मान्छीनी नजर पड़ी गी। जोत्ती ने जोत्ती रही गी कि म्हारा मानषो आ बैठक में बैष्षो। नाच देखीन राजो बड़ो षुसी छायो। तिन्हों नाच जोईन केहवा लाग्गो– 'मान्छी, माँग तू ईनाम माँगीरा?'

तिन्हा ऊप्पर नाचनहारी मान्छीए जवाब आह्लो के– 'राजा, म्हूने धन-दौलत काईं नी होनो। आ थारी बैठकना में म्हारो एक चोर बैष्षो से तिन्हें धरीन मारी दे।'

राजो केहवा लाग्गो– 'थारो चोर चे ओस?' तिन्हें आपना मानषा भने हाथ पाड़ीन केहवा लाग्गी– 'आ से म्हारो चोर।' एट्टी केहता षम राजा ने हुकम आल्लो ने चारू षूबटाला तिन्हें जाईन धरी लेददो। धरीन बैठकना में ऊब्बो करि देददो। एट्टाज में म्होटो मानषो तिन्हें घरे मानषो काम करी रौ थो तो केहवा लाग्गो के– 'यो तो म्हारो काम करनहारो से, अच्छो मानषो से। मान्छी ए सूँ बिगाड़ो से। म्हूने ईन्हा न्याव चाएस।'

एट्टी वात षमझीन आष्षा मानषा केहवा लाग्गा– 'षाच्ची वात से, हमीं न्याव चाएस।' हवे राजा नाचनहारी ए पुच्छन लाग्गो– 'वताल थारो सूँ काम बिगाड़ो से?' मान्दी ए कोई जवाब ना आल्लो।

तिन्हा ऊप्पर मानषो केहवा लाग्गो– 'राजा, यो सूँ जवाब आल्ल से? जवाब मैं आल्लड़ू। तुम्ही म्हारी वात षमझो। म्हारो जवाब एकज छे के यो नाचनहारी थोड़ो षो पानी हाथना में लेईन म्हारा हाथ में आल्लीने केहे के 'तू ए म्हूने जो जंगल में चाल्ली थो तो मैं तून्हें पाच्छी आल्लू' बस एट्टी केहीन यो पानी म्हारा हाथ पे नाष्षी दे। बस योज म्हारो जवाब से।'

एट्टी वात षमझीन तिन्ही मान्छी केहवा लाग्गी के– 'पानी हाथ में लेईन नाष्षी दीस मैं।' पानी मंगड़ाइस मान्छी ने यो केहो– 'जो जंगल मा मैं लेददी थी थोज मैं इन्हें पाच्छी आल्लू।' होम केहीन माच्छी ने आपना मानषा ने हाथ पे पानी नाष्षी देददू। नाषता षम नाचनहारी मान्छी मरीन देर लागी गी। मानषो हथो जो गल्ढ़ो छई ग्यो थो तो पाच्छे ज्वान छई ग्यो। राजा ने आष्षा मानषा जोई रौ थो के– 'आ सूँ वात छई?'

तिन्हा ऊप्पर मानषा ए जवाब आल्लो के– 'यो नाचनहारी न थी, यो म्हारी मान्छी हथी। ईन्हें षाँप कल्ड़ी षाददू थो यो मरी गी थी। ईन्हें मैं म्हारी आल्डी उमर आल्ल दी थी। तानू ये षाददू चेने नाष्षी गी थी। तानू म्हूने चोर केहीन मरवाना करी री थी। तानू म्हूने म्हारी उमर पाच्छी लेई लेददी।'

एट्टी षमझता षम राजो षुसी छायो। षाददू ने धरीन जेल में घाल देददो ने राजा ने आपनी गोत्री सूँ मानषो ने व्याहब करो ने रेहवा लाग्गो। 'यो गुषाईंनू न्याव से'।

ईश्वर का न्याय

एक गाँव में एक पति-पत्नी रहते थे। वे दोनों प्रतिदिन जंगल जाते और लकड़ियाँ काटकर शहर में बेच देते थे। इस प्रकार उनके दिन सुख से बीत रहे थे। एक दिन दोनों लकड़ी लेने प्रतिदिन के समान ही जंगल गये तो पत्नी को साँप ने काट लिया। उसका पति बहुत दु:खी हुआ और पत्नी की चिता सजाकर उसके साथ जल मरने की तैयारी करने लगा। इतने में पृथ्वीलोक का भ्रमण करते हुए शिव-पर्वती उधर से निकले।

पार्वती ने उस रोते हुए व्यक्ति को देखा, तो उन्होंने शिव से इसका कारण पूछा। पहले तो शिवजी टालते रहे, लेकिन गौरा के रूठ जाने पर उन्हें बताना ही पड़ा कि यह व्यक्ति इसलिए रो रहा है, क्योंकि इसकी पत्नी की उम्र केवल बीस वर्ष थी। बीस वर्ष पूरे होते ही, वह सर्प द्वारा काटे जाने से मर गयी। पार्वतीजी को उस व्यक्ति पर बहुत दया आ रही थी। उन्होंने शिव से आग्रह किया कि वे उसकी पत्नी को जीवित कर दें। शिवजी ने कहा– 'ठीक है चलो।'

शिव-पार्वती ने ब्राह्मण-ब्राह्मणी का वेश धारण किया और रोते हुए व्यक्ति के पास पहुँचे और पूछने लगे कि– 'तुम्हें क्या दु:ख है? तुम क्यों रो रहे हो?' आदमी कहने लगा कि– 'हे ब्राह्मण महाराज! मेरी पत्नी मर गयी, बहुत भली थी, मेरा बड़ा ध्यान रखती थी। मैं इसके बिना जीवित नहीं रह सकता। अत: मैं भी मरना चाहता हूँ।' शिवजी कहने लगे- 'यदि तू अपनी पत्नी को जीवित देखना चाहता है तो मैं जैसा कहूँ वैसा ही कर। तू अपने हाथ में थोड़ा-सा पानी लेकर इतना कह दे कि मेरी आधी अवस्था मेरी पत्नी को

मिल जाये। इतना कहकर पानी पत्नी पर छिड़क दे, वह जीवित हो जायेगी और फिर तुम दोनों एक ही दिन मरोगे।' आदमी बहुत खुश हुआ और वह हाथ में पानी लेकर शिवजी द्वारा कही बात दुहराने के लिए तैयार हो गया। लेकिन शिवजी ने कहा- 'एक शर्त है कि तू कभी किसी के सामने व अपनी पत्नी को भी यह बात नहीं बतायेगा। यदि किसी समय तुझे जरूरत हो तो तू पत्नी से अपनी उम्र वापस ले सकता है। हाथ में जल लेकर जब तेरी पत्नी यह कह देगी कि मैं यह चीज इसे लौटा रही हूँ, जो इसने मुझे दी थी। बस इतना कहते ही तेरी स्त्री मर जायेगी।' इतना कहकर शिवजी ने उसके हाथ में जल दिया और वह कहने लगा कि मेरी आधी उम्र मेरी पत्नी को मिल जाये, इतना कहकर जैसे ही उसने जल छिड़का पत्नी उठकर बैठ गयी और अपने पति से बोली- 'अरे! मैं तो सो गयी थी, तुमने मुझे जगाया क्यों नहीं? इतनी देर में ब्राह्मण-ब्राह्मणी का वेश रखे शिव-पार्वती अन्तर्ध्यान हो गये और पति-पत्नी भी अपनी लकड़ियों के ढेर को उठाकर घर चल दिये।

अब पति की उम्र हो गयी थी चालीस वर्ष, क्योंकि उसने अपने बीस वर्ष पत्नी को दे दिये। उसकी कुल उम्र साठ वर्ष थी, जिसमें बीच के बीस वर्ष तो पत्नी के पास चले गये थे, अत: पत्नी बीस वर्ष की युवती हो गयी और पति चालीस वर्ष का बूढ़ा। इसी तरह दिन बीतते रहे। एक दिन वे जंगल में लकड़ियाँ काट रहे थे, वहीं एक साधु धूनी रमा कर तपस्या कर रहा था। आदमी को प्यास लगी तो वह पत्नी से कहने लगा- चलो पानी पीकर अभी आते हैं। पहले तो पत्नी भी पानी पीने के लिए कह रही थी, लेकिन साधु को देखकर उसकी नीयत बदल गयी और वह वहीं रुक गयी और पति अकेला ही पानी पीने चला गया। साधु के प्रति उस स्त्री का आकर्षण बढ़ गया। साधु भी उस पर मोहित हो गया। वह स्त्री से कहने लगा कि- 'तू इस बूढ़े के साथ क्यों रह रही है? तू मेरे साथ चल।' स्त्री कहने लगी- 'चाहती तो मैं भी हूँ पर तेरे साथ कैसे चलूँ? पति तो मेरे साथ है।

इससे कैसे छुटकारा पाया जाये?' साधु कहने लगा कि- 'तू एक काम करना, जब तेरा पति पानी पीकर वापस आये तो तू पानी पीने का बहाना कर उसके साथ फिर कुएँ पर जाना, जैसे ही वह पानी खींचने लगे तो तू उसे कुएँ में धक्का दे देना और फिर मेरे साथ भाग चलना।'

पति लौटकर आया तो स्त्री ने कहा- 'चलो अब मुझे भी पानी पिला लाओ।' पति बेचारा सीधा-सादा, उसे पत्नी का छल-कपट क्या मालूम! वह फिर कुँए पर पहुँचा, जैसे ही पानी भरने के लिए झुका पत्नी ने उसे पीछे से धक्का दे दिया। वह कुएँ में गिर गया। पत्नी समझी कि वह मर गया और फिर वह साधु के साथ वहाँ से भाग गयी। साधु ने उसे नर्तकी बना दिया। वह उसे जगह-जगह नचवाता और खूब पैसे कमाता।

इधर पति कुएँ में गिर तो गया, लेकिन एक पेड़ की मोटी जड़ में अटक गया। एक दिन बंजारों की एक टोली उधर से निकली। कुएँ के पास जाकर वे सब रुके और एक बंजारा युवक ने कुएँ में रस्सी बाल्टी डाली तो अन्दर से आदमी चिल्लाया- 'भाई, मुझे बचाओ। बंजारा युवक ने उसे कुएँ से बाहर निकाला और पूछा कि तुम कुएँ में कैसे गिर गये?' आदमी सच बात छिपा गया और बोला- 'पानी पीने आया था, फिसलकर गिर पड़ा।' कुएँ से निकलने के बाद वह बेचारा यहाँ-वहाँ अपनी पत्नी को ढूँढता रहा। ढूँढते-ढूँढ़ते वह दूसरे नगर पहुँचा, वहीं एक धनवान सेठ के घर उसने नौकरी कर ली। इस तरह कई दिन बीत गये। वह सेठ के घर बड़ी मेहनत और ईमानदारी से काम करता रहा। इधर साधु उसकी पत्नी को नचा-नचाकर पैसे कमाता रहा।

एक दिन उसी नगर के राजा ने अपने महल में नाच-गाने का आयोजन किया और नगर के सभी धनी सेठों को आमंत्रित किया। उस आयोजन में अपने सेठ के साथ वह आदमी भी गया, जो उस स्त्री का पति

था। अब वहाँ वह स्त्री नाच रही थी और उसका पति भी उस सभा में बैठा अपनी पत्नी को नाचते देख रहा था। नाचते-नाचते पत्नी की नजर अपने पति पर पड़ी तो वह ठगी-सी रह गयी। स्त्री सोचने लगी कि- 'अरे! यह तो मर गया था। फिर यहाँ कैसे?' नाच समाप्त हो गया। नाच देखकर राजा बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने नाचने वाली स्त्री से कहा- 'बोल, तुझे क्या इनाम चाहिए?' स्त्री कहने लगी कि- 'राजा मुझे धन-दौलत कुछ नहीं चाहिए। तेरी इस सभा में मेरा एक चोर है, उसे आप पकड़कर मरवा दो।' राजा ने पूछा कि- 'इसमें कौन तेरा चोर है? बता।' स्त्री ने अपने पति की ओर संकेत कर दिया।

राजा ने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि चार सैनिक इसे पकड़कर ले आओ। जिस सेठ के घर यह आदमी नौकरी करता था, उसे यह बहुत बुरा लगा कि इतने मेहनती आदमी को क्यों सजा दी जा रही है? उसने राजा से कहा- 'यह तो मेरा नौकर है, बड़ा अच्छा आदमी है, इसने इस स्त्री का क्या बिगाड़ा है? मुझे इसका न्याय चाहिए, बात पता चलने पर ही आप इसे सजा दीजिये।' सभी अन्य व्यक्तियों ने भी सेठ की बात का समर्थन किया। अब राजा ने नाचने वाली स्त्री से पूछा कि- 'इसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? इसे सजा दिलाने की बात क्यों कर रही हो?' स्त्री ने कोई जवाब नहीं दिया। तब उसका पति कहने लगा- 'राजा, यह क्या जवाब देगी, जवाब तो मैं दूँगा। आप मेरी बात ध्यान से सुनिये, मेरा जवाब बस इतना है कि यह स्त्री हाथ में थोड़ा-सा पानी लेकर यह कहते हुए मेरे हाथ पर डाल दे कि तूने मुझे जंगल में जो चीज दी थी, वह मैं वापस कर रही हूँ।' स्त्री ने इतनी बात सुनी और हाथ में जल लेकर यह बात कहने के लिये तैयार हो गयी। उसने हाथ में पानी लिया और कहा कि- 'जो इसने मुझे जंगल में दिया था, वह मैं इसे वापस करती हूँ।' इतना कहते ही जैसे उसने हाथ का जल छोड़ा, वह वहीं गिरी और निर्जीव हो गयी। उसका पति जो अभी तक बूढ़ा लग रहा था, वह

युवक दिखाई देने लगा। राजा और सभा के सभी लोग आश्चर्य चकित हो गये।

तब उस स्त्री का पति कहने लगा कि 'यह नाचने वाली नहीं थी, यह तो मेरी पत्नी थी। इसे साँप ने डँस लिया था तो यह मर गयी थी। मैंने एक ब्राह्मण देवता के कहने पर अपनी आधी उम्र इसे दे दी थी। इसके बाद यह साधु के साथ भाग गयी थी और अब मुझे चोर कहकर मरवाना चाहती थी। इसलिए मैंने अपनी उम्र इससे वापस ले ली। राजा सुनकर बहुत खुश हुआ। उसने साधु को कैदखाने में डलवा दिया और अपनी पुत्री का ब्याह उस आदमी से कर दिया। यह ईश्वर का न्याय है। जिसने जैसा किया उसे वैसा फल मिल गया।

षमझदार तोत्तो

एक गामड़ा मा एक अक्कलहारी मान्छी रेहती थी। तिन्हूँ नाम रेषम हथो। तिन्हें काठ्ठे एक अक्कलहारो तोत्तो हथो, तो रोज उड़ी जावे ने गुषाईना इन्दरासन की आष्षी वात्तें षमझीन मान्छी ने वताली दे तिन्ह में जीम तोत्तो केहे मान्छी तीम षमझी ने करे। करता-करता कई दिन छई ग्या। एक दिन गुषाईना घर से आँसे कोई देवता आष्षी धरती देषने जोत्ता फिंडी रा था। तिन्हें जोवा तो म्होटा मानषा तो फदीया हारो छई रया रने जावा पीवा नी आष्षी चीज्जें षात्ती लेददी, वन नान्हा मानषो भूच्छे मरी ग्या। देवता तिन्हें जोईन गुषाईने जाईन केही के- 'गुषाईं आ धरती ना पेटना में सूँ हाल छई रा सीं के कोई पेट भरीन षई रौ से ने कोई भूच्छो मरी रौ से। गुषाई ईन्नो तू फैषला कर।'

तिन्ह पे गुषाई षोच्चीने फैषलो करो के- 'आ वरषना में षेतल्डाउना में पानी ना पड़े। म्होटा-म्होटा रूषड़ाउना जंगल सी तहाँ पानी पड़ीस, जंगली जीवनी वाष्तर।' तहाँ जोवे तो रेषम नो तोत्तो गुषाईना घरे, इन्दरासन काठ्ठे रूषड़ाना ऊप्पर बैष्षो थो। तिन्हें यो वात षमझीन उड़ीन रेषम काठ्ठे आईने केही देददी।

रेषम षोच्ची, षमझीन केहवा लाग्गी के- 'आ बरषना में आपनी म्होटा जंगलना में षेतल्डा करसीं।'

एट्टाजना में वादला छावा लाग्गा। आष्षा गामड़ाना मानषा आपना षेतल्डा जोतवाना वाष्तर ढ़ंढा, हल लेईन चाल्ला। रेषम ने आपना षेतल्डा छोड़ी देददो। जहँ जंगल हथो तहाँ जाईन तीन्हीं वाड्डी करीन षेतल्डानी जगह करी लेददी।

वादला छाए तो गामड़ाना मानषा जोत्ता रैवे पन पाणी नी बूँद ना पड़ै। आष्षा पानी म्होटा जंगलूना पड़ै। रेषम ने तहाँ पेहले दर से षेतल्डा बोई देददो थो। करता-करता आष्षा देषमा काल पड़ी ग्यो, रेषम ना षेतल्डा हरियाई रौ। धरती ना पेट ना नाज आष्षा रेषम ना षेतल्डा मा छई ग्यो।

हवै गुषाईना घर से धरती जोवाने देवता आयो। जोवे तो आष्षा गामड़ाना मा काल पड़ी सै पन रेषम ना षेतल्डा अच्छो छायो। तानूँ जाईन गुषाईने केहवा लाग्गो के- 'गुषाईं धरती ना पेटना मा काल तो पड़ी ग्यो पन एक माँछी से तिन्हा षेतल्डा मा आष्षो नाज छई रयो।'

तिन्हा ऊप्पर गुषाईए जवाब आल्लो के- 'तीन्हे जेट्टे बी षेतल्डा आच्छा करसे मगर षलिहान तो एकज करसे। आष्षा षेतल्डा वाड्डीन षलिहान मा मेल से तो एक रूषड़ानामा से एक दानो छाएस।' तोत्तो षमझी रौ थो तो तीन्हें आष्षी वात उड़ीन, आईन रेषम ने केही देददी।

एट्टी वात षमझीन रेषम ने सूँ करू के एक रूषड़ा ना दो-दो रूषड़ा करि देददो ने वाड्डी-वाड्डी ने दष-दष जगह मेल्ही देददो। तिन्हा हजारों मन नाज छाएस। आष्षा देषना नाज ने गुषाईं ना नाज रेषम घरे आयी ग्या।

हवै देवता फिरि आयौ धरती ना पेटे। रेषमना षलिहान जोईन केहवा लाग्गा- 'आ मान्छी घरै तो बहोत नाज छायों हवै आपनी बी भूच्छैं मरसीं।'

फिरिये देवता गुषाईं काठ्ठे चाल्ला। गुषाई ने केहवा लाग्गो के- 'आज सूँ छायो के आष्षा देषनू नाज मान्छी घरै चलई ग्यो। जो आपनो नाज हथो तो बी चलई ग्यो। हवे मान्छी आष्षा देष मा आपनो गोड्डा छिड़ासे।' एट्टी बात षमझीन गुषाईं बिना बोल्ले, उठीन चलई गयो।

हवे अक्कलहारो तोत्तो षोच्वा लागो के यो सूँ छायो? गुषाईं ने काईं वात ना केही। आष्षा देवता भी षोच्वा लाग्गो के गुषाईंए यो सूँ करूँ?

गुषाईं षुददो आयो धरतीवा पेटना ऊप्पर। आईन एक म्होटा षाददूना भेष धरीन, रेषमना षेतल्डा पे ग्यो।

षेतल्डापे जाईन जोवे तो नाज निकली रौ थो। षाददू केहवा लाग्गो– 'म्हूने कोई भीष आल्ली दे।'

रेषम आईन केहवा लाग्गी– 'महाराज आवो, वैहना में म्हारा षलिहान काठठे आयो से नाज लेई जा।'

षाददू केहवा लाग्गो– 'होम नाज ना लूँ। म्हारे काठठे एक गड़ुवो से आ गड़ुआ भरीन नाज आल्ल दे। तू आल्ली षकीस?'

तिन्हा ऊप्पर रेषम केहवा लाग्गी– 'महाराज, मैं तूम्हें एक गड़ुवा भरीन नाज आल्ल दीस।' षाददू ने रेषम से षम केई लेददी। षम लेईन तीन्हें गड़ुवा षाम्में करि देददो। तिन्हा बादना मा अक्कलहारी रेषम एक षूपड़ा में भरीन नाज लेईन आयी ने गड़ुवा मा नाष्षो। तो गड़ुवा मा तिन्हों पतो ना लाग्गो।

तिन्हा बादना मा फिरिये भरीन लायी। करता–करता एक ढेरीनू नाज न गड़ुवा मा नाष्षी देददो, तिन्हा बाद बी गड़ुवा ना भरायौ जेहू नाज हथो आष्षा गड़ुवा मा नाष्षी देददो, थोड़ा नाज तिन्हें षावा लाग बची ग्यो।

तानू गुषाईं केहवा लाग्गो के– 'म्हारा गड़ुवा भराई ग्यो, रेहवा दो।'

तोत्तो जोवी रयो थो, षमझी ग्यो के आ गुषाईं से। तोत्तो उड़ीन षाददूना गोडडा पड़ी ग्यो। रेषम बी गोडडा पड़ी गी। तानू गुषाईने तोत्तो ने पाड़ीन हाथ फेरो। हाथ फेरता षम तोत्तो देवता छई ग्यो। तो कोई म्होटा रिषी ना षाप ना मारा हथो तोत्तो छाईन रेही रो थो।

गुषाईए अक्कलहारी मान्छी रेषम ने केहीन, तोत्ता ने जो देवता छई ग्यो, तिन्हें लेईन चलई ग्यो।

गुषाईं जो गड़ुवा मा नाज भरीन लेई ग्यो थो, थोज नाज गुषाईं थोड़ो–थोड़ो करीन धरती ना पेटना ऊप्पर, आष्षा मनषूना वाष्तर मोकलतो रेहस।

बुद्धिमान तोता

एक गाँव में एक बुद्धिमान स्त्री रहती थी। उसका नाम रेशम था। उसके पास एक समझदार तोता था। वह रोज सबेरे स्वर्ग जाता और वहाँ की सभी बातें अपनी मालकिन रेशम को बताता था। इस प्रकार रेशम को भूत–भविष्य की सभी बातें ज्ञात हो जाती थीं।

एक बार भगवान का भेजा हुआ देवता पृथ्वी की स्थिति देखने आया। उसने देखा कि पृथ्वी की हालत बहुत खराब है। बड़े–बड़े सेठ–साहूकारों ने अपने पास अनाज और अन्य खाने–पीने की वस्तुएँ भर रखी हैं, वे आराम से रह रहे हैं और गरीब लोग भूखे मर रहे हैं। देवता ने पृथ्वी की सारी स्थिति भगवान को बतायी। भगवान ने काफी सोच–विचार के बाद निर्णय दिया कि इस वर्ष हम खेतों में पानी नहीं बरसायेंगे और सारा पानी जंगल में बरसेगा, ताकि जीव–जन्तु जीवित रह सकें। इस प्रकार बड़े सेठ–साहूकारों का भ्रष्टाचार समाप्त हो जायेगा। रेशम का तोता इन्द्रासन के पास वृक्ष पर बैठा यह सब सुन रहा था, वह तत्काल वहाँ से उड़ा और आकर रेशम को सारी बातें बता दीं। रेशम कुछ देर सोचती रही, फिर बोली– 'इस बार हम अपनी खेती जंगल में करेंगे।'

थोड़े दिनों बाद बादल छाये। गाँव के सभी मनुष्य अपने–अपने खेत जोतने की तैयारी करने लगे, लेकिन रेशम ने अपने खेतों पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह अपने हल–बैल लेकर जंगल चली गयी, वहाँ उसने खेती के लिए जमीन साफ कर ली।

रोज बादल आते, गाँव वाले बड़ी आशा से आकाश को देखते, परन्तु पानी की एक बूँद भी नहीं गिरती। सारा पानी जंगल में बरसता। रेशम ने वहाँ पहले से ही खेती शुरू कर दी थी। इस तरह सारे देश में अकाल पड़ गया, किन्तु रेशम के खेतों में हरियाली थी। धरती के हिस्सों का सारा अनाज रेशम के खेतों में पैदा हुआ था।

स्वर्ग से देवता फिर पृथ्वी का भ्रमण करने आया, तो उन्होंने देखा कि सारी पृथ्वी अकाल से पीड़ित है, सूखी पड़ी है, पर रेशम के खेत लहलहा रहे हैं। देवता वापस स्वर्ग गये और भगवान को बताया कि धरती सूखी पड़ी है, जंगल में एक स्त्री के खेतों में बड़ी अच्छी फसल हुई है।

भगवान को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे काफी देर तक सोचते रहे, अतः उन्होंने अपना निर्णय दिया कि- 'कितनी भी अच्छी फसल हो, किन्तु खलिहान तो एक ही बनेगा और जब पूरा खेत काटकर खलिहान में डालेगी, तब एक पौधे से एक ही दाना निकलेगा।

रेशम का तोता तो पहले से ही भगवान के दरबार में हाजिर था, वह छुपकर सारी बातें सुन रहा था। जैसे ही उसने भगवान का निर्णय सुना, वह चुपचाप वहाँ से उड़ा और रेशम को सब बातें बतायीं। रेशम वैसे ही बहुत बुद्धिमती थी। उसने फिर नया उपाय खोज लिया। उसने फसल काटी और कई खलिहानों में रखी व एक-एक पौधे को दो-दो बार काटा एवं कई खलिहानों में रख दिया। इस तरह उसके यहाँ हजारों मन अनाज उत्पन्न हुआ। धरती के हिस्से का एवं देवताओं का भी अनाज रेशम के खलिहानों में आ गया। अब देवता फिर से धरती भ्रमण के लिए आये। रेशम के भरे हुए खलिहान देखकर वे स्तब्ध रह गये। सोचने लगे कि अब तो स्वर्ग में भी अकाल पड़ जायेगा। वे सीधे स्वर्ग पहुँचे और भगवान से कहने लगे कि- 'वह स्त्री अब सर्वाधिक शक्तिशाली हो जायेगी और सभी पृथ्वीवासी उसके गुलाम हो जायेंगे। आप कुछ न कुछ उपाय कीजिये।'

इस बार भगवान ने देवता की बात का कोई जवाब नहीं दिया। वे

चुपचाप बिना कुछ कहे उठकर चले गये। सभी देवता बहुत परेशान हुए कि भगवान ने आज कोई नया उपाय क्यों नहीं किया। वे इतने चुप क्यों रहे? रेशम का तोता भी बड़ा परेशान। आज उसके पास अपनी मालकिन को देने के लिए कोई समाचार नहीं था।

अब भगवान सीधे पृथ्वी पर गये। उन्होंने साधु का वेश धारण किया और रेशम के खलिहान पर पहुँचे। वहाँ जाकर उन्होंने रेशम से भिक्षा माँगी। रेशम सबेरे-सबेरे साधु महाराज को देखकर बहुत प्रसन्न हुई और उन्हें भिक्षा में अनाज देने लगी। साधु महाराज बोले- 'मैं ऐसे भिक्षा नहीं लूँगा। पहले तुम सौगन्ध लो कि मेरा यह कमण्डल ऊपर तक अनाज से भरोगी।'

रेशम के पास तो अनाज के कई ढेर थे। वह साधु का कमण्डल भरने के लिए सहर्ष तैयार हो गयी। वह एक सूप में अनाज भरकर साधु के कमण्डल में डालने लगी। देखते-देखते अनाज के कई ढेर समाप्त हो गये, किन्तु साधु का वह चमत्कारी कमण्डल नहीं भरा। धीरे-धीरे रेशम का सब अनाज कमण्डल में समा गया, बस उसके खाने भर का अनाज बचा तो भगवान ने रेशम को अनाज डालने से रोक दिया।

पेड़ पर बैठा हुआ तोता सब देख रहा था। वह समझ गया कि यह साधारण साधु नहीं है, भगवान है। वह आकर साधु के चरणों में गिर पड़ा। भगवान ने उसके सिर पर हाथ फेरा, हाथ फेरते ही वह देवता बन गया, जो बहुत समय से एक ऋषि के श्राप के कारण तोते का जीवन व्यतीत कर रहा था। रेशम यह चमत्कार देखती रह गयी। उसका अभिमान नष्ट हो चुका था। वह साधु महाराज के चरणों में पड़ी थी। भगवान ने उसे आशीर्वाद दिया और तोते को साथ लेकर स्वर्ग चले गये।

भगवान अपने कमण्डल में जो अनाज भरकर ले गये थे, वही फसल के रूप में धरतीवासियों को वे देते रहते हैं। ऐसा मोघियों का विश्वास है।

लाकड़ावाडनहारा और नाहर

एक जंगलना गामड़ाना में एक गरीब लाकड़ा वाडनहारो रेहतो थो। तो रोज उठीन जंगलना जातो थो, आपना लाकड़ा वाडीन वेचतो थो, वेचीन गुजारो चलातो थो। करता-करता कई दिन छई ग्या। एक दिन सूँ छायो से जंगल मा जो लाकड़ा वाडी रौ थो तो जंगलना म्हें से नाहर निकली आयो, तो लाकड़ावाडनहारा ने षाम्मे ऊब्बो छई ग्यो। तो लाकड़ावाडनहारा बीही ग्यो। कुल्हाड़ी हाथना म्हें से छुट्टी गी। हाथ गोड्डा कापवा लाग्गा। के जंगलना नाहर आवी ग्यो। तिन्हा जोईने जंगलना म्हें से नाषी ग्यो। तिहाड़े तिन्हें लाकड़ा ना वाड्डा।

बीज्जे दिन फिरि यो जंगल आयो, फिरि यो जोवे तो नाहर थांज ऊब्बो छई रयो। फिरि ये तिन्हें जोयो तो थांज ऊब्बो छई र्यो नाहर। यो धीरे-धीरे लाकड़ा वाडनहारी ने नाहर जोई रौ। तानू जल्दी लाकड़ा वाड्डी करीन आपना घरे चलाई चालो।

तीषरे दिन फिरि लाकड़ा वाडू आयो। तानू फिरि ये नाहर ने तहाँज जोयो। तानू नाहर हथो तो काठे चाल्ली ने आयो। लाकड़ा वाडनहारा जोतो, तिन्हें बी भौ कम छई ग्यो। आन से नाहर आयो आँई से लाकड़ा वाडनहारा। तिन्हीं राम रूमी छई के- 'भाई मैं तो जंगल नू राजो सूँ।'

तिन्हें केई के- 'भाई, मैं गरीब लाकड़ावाडनहारो सूँ। मैं रोज लाकड़ा वाडीन, वेचीन आपना बाल-बच्चाना पेट भरूँ सूँ।' तिहूनी बोहूनी दोस्ती छई गी। नाहर केहवा लाग्गो के- 'तू कोई वात ना भौ न करजे तू आपना लाकड़ा वाडीन वेची कर।' दिन पे दिन लाकड़ा वाडनहारा ने नाहर बोहे जना रोजण मिले।

एक दिन नी वात छाई, नाहरे जाईन आपनी नाहरनी ने केहीं के- 'म्हारी लाकड़ावाडनहारो षूँ दोस्ती छई गी।' तिन्हा उप्पर नाहरनी ने आ केही के- 'मनषाजून सीं वात नू गरोषो नथी, चानू बी थारो षूँ धोषो करी षकें सीं।' ते नाहरनी ने वात तिन्हें ना षमझी तिन्हें केही के- 'म्हारो दोस्त एहो नथीं।' करता-करता कई दिन छई ग्या।

तिन्हा बादना मा लाकड़ावाडनहारानी गोत्री स्यानी छई गी थी। तिन्हा व्याहब षाददी ने वाष्तर बातचीत चाल्ली री थी। तिन्हीं वातचीत पक्की छई गी। लाकड़ावाडनहारा ने आपना षगाओं कने षबर मोकल्ली के- 'म्हारी गोत्री नो व्याहब से।'

एक दिन लाकड़ावाडनहारा जियो जंगलनामा, तो नाहरना बी केई आयो के- 'नाहर दोस्त, तू बी जरूर आवजे म्हारी गोत्री ना व्याहब में।' तो नाहर केहवा लाग्गो- 'गोत्री नो व्याहब से मैं जरूर आइस।' आँई व्याहब नी तैयारी छई गी। तो तिन्हें आपनो घर लिप्पी-पोतीन मड़ुवा गाड्डी देददो। घर ने षजाई देद्दो। एकड़ी कर षाऊँ छई र्यो, आँई जोवे तो आषा षगा बेषाइन आँई जोवे तो नाहर हथो तो बी जंगल से चालीन आवी ग्यो।

नाहर ने जोईन आषा षगा बीव्हा लाग्गा के- 'आज हवे नाहर कोई ने मारीन षई जाईस।' एट्टाजना में लाकड़ावाडनहारो आवी ग्यो। आईन केहवा लाग्गो- 'तुम्ही कोनी वात ना भौ जा करजो यो तो म्हारा दोस्त से नाहर। मैं ईन्हें बुलायो से व्याहब में।' तानू आषा षगा आराम षूँ बेषी ग्या।

एट्टाजना में बारात आवी गी। दुल्ली-दुल्ला ने आषा नू बेषाड़ीन तियूने

नेग करीन, आषाने षावाने ऊप्पर बेषाड़ी देददो। आषाने षाउन षावानी हुकम छई ग्यो। आष्षाहूने पातलें नाषी, तिहूना में वच्चे नाहर बी बेष्षी ग्यो।

हवे तो नाहर ने एकदम बाक्को फाड़ीन बकानिया लेददा। तो तिन्हा बाक्का में से षड़ीबी गन्ध निकली। तिन्हें ऊप्पर लाकड़ावाडनहारो ने केहीन के– 'तू जंगली मनष से तो जंगलनू काम करेसे, आष्षा षगाउन वच्चे बाक्को फाड़ी देददो। षड़ी गन्ध निकाली देददी।' एट्टी केहीन लाकड़ावाडनहारो षाऊँ रंधाईरयू थो तहाँ चलाई ग्यो।

नाहर हथो तिन्हीं वातें षमझीन रीषूना में आईन उठीन बिना खाददे–पीददे अपने जंगलना में पाच्छो चलाई ग्यो। आन से लाकड़ावाडनहारो आयो, तिन्हें नाहर ना दिषायो। आष्षा षगाउना ने षाऊँ करीन, गोन्नी ने बिदा कर देददी। तिन्हा बे दिन बादना में तानू लाकड़ा वाडवा जंगल मा जियो तहाँ नाहर मिलो, तो लाकड़ावाडनहारो रीषूना में आईन जोन्नी–जोन्नी वातें केहवा लाग्गो– 'तू दोस्त छाईन तू गोन्नी ने व्याहब में षाऊ ना षाददो, छोड़ीन आयो।' नाहर तीन्हीं वातें षमझी ग्यो आष्षी।

नाहर केहे से– 'दोस्त लाकड़ावाडनहारा, तूवे तो थारी वात्तें केह लेददी अब म्हारी वात षमझ थारा हाथना मा जो कुल्हाड़ी से वा म्हारा गोडडना मा मार।'

तानू लाकड़ावाडनहारा केहवा लाग्गो के– 'मैं तुम्हें कुल्हाड़ी मारीस? तू तो म्हारा दोस्त से।' तिन्हा ऊप्पर नाहर रीषूना में आईन केहवा लाग्गो– 'तूने म्हारो केहनो माननो पड़से। ना मान्हीस तो मैं तूनें षई जाईस।' तो नाहरनी वातें षमझीन नाहर ने जोईस लाकड़ावाडनहारो ने आपनी कुल्हाड़ी पाड़ीन नाहरना गोड्डाना ऊप्पर जोन्नी षोच्चीन गारी सो गोडडाना में से लोही लुहान वेही ग्या। तानू नाहर केहवा लाग्गा– 'तू जा आपने घर ने त्रन धाड़ा बाद फिरिये आवजे।' तो लाकड़ावाडनहारा आपने घर चलई ग्यो ने नाहर हथो आपनो बड़ में मा चलई ग्यो। त्रन धाड़ा मा नाहर ने आपनी जीब्भ षूँ चाटीन गोड्डोनो घाव अच्छो कर लेददो।

त्रन धाड़ा बादना में लाकड़ावाडनहारो हवे आयो जंगलना मा। आन से नाहर बी आयो। बोहे जुड़ी ग्यो।

तानू नाहर हथो लाकड़ावाडनहारानी केहवा लाग्गो के– 'जो तून्हें घाव करो थो तो भराई ज्यो मगर जो तूए मून्हें घरे बुलाईन चार षगाउना षाम्में आषाऊना षाम्में जो तूए म्हारी हेट्टी करी छी तिन्हा घाव जिन्दगी भर ना भरे। बात नो घाव ना भरे आण ने बाद थारी म्हारी दोस्ती षतम से। तू जिंदगी ना में आ जंगलमा लाकड़ा वाडना ना आवजे। तू म्हारो दोस्त छे तिन्हें वाष्तर तून्हें छोड़ी रयो सूँ।' होम्मज केहीन– 'के कोई बी बात छाएस मनष मारीले तो अच्छो से, मगर वात ना केहनू चाहेस।' 'वातना घाव म्होटो छाएस।'

लकड़हारा और शेर

एक जंगल के पास के गाँव में एक लकड़हारा रहता था। वह रोज सबेरे जंगल जाकर लकड़ियाँ काटता और उन्हें बेचकर अपनी गुजर–बसर करता था।

रोज की तरह एक दिन वह लकड़ी काट रहा था, इतने में एक शेर निकलकर सामने आया और लकड़हारे के सामने खड़ा हो गया। उसे देखकर लकड़हारा डर गया। उसके हाथ–पैर काँपने लगे और कुल्हाड़ी हाथ से छूट गयी। वह जंगल से बिना लकड़ी काटे ही भाग गया।

दूसरे दिन लकड़हारा फिर जंगल गया। देखा, तो शेर फिर उसी पेड़ के नीचे खड़ा है, जिस पर वह लकड़ी काटता था, लकड़हारा फिर अपने घर वापस लौट गया। तीसरे दिन वह फिर लकड़ी काटने जंगल पहुँचा, उसे शेर फिर वहीं खड़ा मिल गया। लकड़हारे को देखकर शेर उसके पास चलकर आया। अब लकड़हारे का भय भी कुछ कम हो गया था। लकड़हारा और शेर ने आपस में राम–राम की और उन दोनों की दोस्ती हो गयी। शेर ने लकड़हारे से कहा– 'भाई, तू किसी बात की चिन्ता मत कर, तू आराम से लकड़ी काटकर बेच।' इस तरह दोनों दोस्त प्रतिदिन मिलने लगे।

एक दिन शेर ने अपनी पत्नी से कहा कि– 'मेरी लकड़हारे से दोस्ती हो गयी है।' इस पर शेरनी ने कहा कि– 'आदमियों की बात का कोई भरोसा नहीं होता, वह कभी भी धोखा दे सकता है।' शेर ने शेरनी की बात पर ध्यान नहीं दिया और कहा कि– 'मेरा दोस्त ऐसा नहीं हो सकता।' बहुत दिन बीत गये। लकड़हारे की एक लड़की थी, वह सयानी हो गयी। उसके ब्याह का समय आ गया।

लकड़हारे ने अपने सभी सगे–सम्बन्धियों को निमंत्रण भेजा और अपने मित्र शेर को भी निमंत्रण दे दिया। लकड़हारे ने अपना घर लीपा–पोता, सजाया और मण्डप बनाकर ब्याह की तैयारी कर ली। एक तरफ खाने–पीने का प्रबन्ध किया और दूसरी ओर मेहमानों के लिए व्यवस्था की।

सभी मेहमान आकर बैठे। जंगल का राजा शेर भी आ गया। शेर जैसे ही मण्डप में आया, उसे देखकर सभी मेहमान डरकर भागने लगे। सभी कहने लगे– 'यह आज एकाध को जरूर खा जायेगा।' इतने में लकड़हारा आ गया। उसने सभी मेहमानों को समझाकर बैठाया और कहा– 'आप सब डरो नहीं, यह शेर तो मेरा मित्र है, इसे मैंने ब्याह में बुलाया है।' लकड़हारे के समझाने पर सब मेहमान आराम से बैठ गये। इतने में बारात आ गयी। दूल्हा–दुल्हन व सभी मेहमानों को बैठाया गया। उनका स्वागत–सत्कार हुआ और खाना परोसा गया। सभी मेहमानों के बीच शेर भी खाना खाने बैठा। अपनी आदत के अनुसार शेर ने मुँह फाड़कर बड़ी–सी जमुहाई ली। उसके मुँह खोलते ही माँस की सड़ी गन्ध सब जगह फैल गयी। लकड़हारे से यह सहन नहीं हुआ। उसने शेर को डाँटा और कहा– 'तू जंगल में रहने वाला जंगली ही है। इतने मेहमानों के बीच तूने मुँह क्यों खोला, गन्ध क्यों फैलायी?'

इतना कहकर लकड़हारा भण्डार की ओर चला गया। शेर को भी लकड़हारे की बात बहुत बुरी लगी, वह बिना खाये–पिये वापस जंगल चला गया।

जब लकड़हारा लौटकर आया तो उसे शेर नहीं दिखाई दिया। उसने कामकाज में लगे होने के कारण शेर के चले जाने पर विशेष ध्यान नहीं दिया और सभी मेहमानों व लड़की को विदा करने की तैयारी में लग गया।

लड़की विदा करके दो दिन बाद वह फिर लकड़ी काटने जंगल पहुँचा। शेर को मिलते ही लकड़हारे को गुस्सा आ गया। उसने क्रोध में जोर–जोर से शेर को बहुत डाँटा।

शेर लकड़हारे की डाँट सुनकर भी चुप खड़ा रहा। जब लकड़हारा चुप हो गया तो शेर ने कहा– 'दोस्त, तूने तो तेरी बातें कह दीं अब मेरी बात सुन– 'तू अपने हाथ से मेरे पैर पर कुल्हाड़ी से घाव कर दे।' लकड़हारा बोला– 'मैं तुझे कुल्हाड़ी क्यों मारूँ? तू तो मेरा दोस्त है।' शेर को अब क्रोध आ गया था। उसने गुस्से से भरकर कहा– 'लकड़हारे, तुझे मेरा कहना मानना पड़ेगा। यदि तू मेरा कहना नहीं मानेगा तो मैं तुझे खा जाऊँगा।'

शेर की बात सुनकर लकड़हारा डर गया। उसने जोर से कुल्हाड़ी शेर के पैर पर मार दी। शेर का पैर लहूलुहान हो गया। शेर कहने लगा– 'अब तू अपने घर जा, तीन दिन बाद आना।' लकड़हारा अपने घर चला गया और शेर अपनी गुफा में आ गया। तीन दिन तक शेर गुफा में रहा और जीभ से चाटकर उसने अपना घाव ठीक कर लिया। तीन दिन बाद लकड़हारा जंगल पहुँचा। शेर भी वहीं पेड़ के नीचे पहुँच गया।

शेर ने लकड़हारे से कहा कि– 'मित्र देख, जो घाव तूने कुल्हाड़ी से किया था वह भर गया, मगर जो बात तूने सारे सगे–सम्बन्धियों के सामने कही थी, उसका घाव जिन्दगी भर नहीं भरेगा। आज से मेरी–तेरी दोस्ती खत्म हुई। अब तू इस जिन्दगी में कभी इस जंगल में मत आना। मेरा मित्र है, इसलिए आज तुझे मैं छोड़ रहा हूँ।'

इसीलिए कहते हैं– 'कोई भी बात हो, आदमी मार ले तो अच्छा, मगर चुभने वाली बात न कहे।' 'बात का घाव बड़ा गहरा होता है।'

नौहरी और तीतरो

एक घना जंगलना मा एक नौहरी और एक तीतरो बोहे रेहता था। एक घना जंगलना मा एक नौहरी और एक तीतरो बोहे रहता था। तिहूनी बोहूनी आच्छे तरीये षूँ रेहता था। करता–करता कई दिन छई ग्या। एक धाड़ नी वात छई कि तीतरो केहवा लाग्गो नौहरी ने के– 'नौहरी थारे कने चिट्टी वात्तें सीं?'

तिन्ह पे नौहरी केहवा लाग्गो– 'म्हारे कने सूँ वाँत सी? म्हारा कने तो एकज वात से के गामड़ाना जिनावर मरी जाये तिन्हें जंगलमा मनषा फेंकी जायें बस तिन्हें मैं षाईन। षावानू काम से। म्हूने एकज वात मालम से। तून्हें चिटटी वात्तें आवें सी?'

तिन्हा ऊप्पर तीतरो केहवा लाग्गो के– 'म्हूने त्रण वात्तें आवें सीं। मैं षण ते पेहले पेट भरीन षड़ई षकूँ सूँ। तिन्हा बादना मैं तून्हें हड़ाई षकूँ सूँ। तिन्हा बाद मैं तून्हें रूड़ाई बी षकूँ सूँ।'

तिन्हा ऊप्पर नौहरीए केहवा लाग्गो– 'अगर तू षाच्ची वात केही रेहो से तो आग्गल म्हूने भूष लाग्गी री से।' तिन्ह पे तीतरो केहवा लाग्गो के– 'चाल तून्हें मैं षाउ षड़ाऊँ।' एक रूषड़ा ने काठे जाईन नौहरी ने बेषाड़ी देददो।

आन से एक गामड़ाना गॉ ने एक मान्छी आपना मानषाना वाष्तर षाऊँ रांधीन लेईन जारी री थी।

तिन्हा में तीतरो सूँ करूँ के तीन्हा टोकरी मा जाई पड़ौ ने फड़फड़ाया लाग्गो। तो गामड़ाना मान्छी षोच्वा लाग्गी के टोकरा मा सू चीज आवी गी। होम षमझीन टोकरा फेकीन नाष्षी गी। तानू परे से नौहरी ने बुलाईन केहवा लाग्गो– 'नौहरी तू षाईले पेट भरीन।'

नौहरी पेट भरीन षूब षाददो। तानू नैहरी केहवा लाग्गो के– 'एक वात तो थारी षाच्ची छई गी ने बै बात थारी ना छाई षके।' हषूवाने ने रोवाने। यो तो म्हारा हाथना में से। तिन्ह पे तीतरा केहवा लाग्गो– 'बीजने वाले आज्जज करीने वतालीस।' तो नौहरी षाईन षुई ग्यो। तिन्हें ऊँघ लाग्गी गी। तीतरो हथो तो जोई रौ के बै बात्तें बीज्जी म्हारी रेही गई से। करता–करता षाँझ छावा पे आईन। एट्टाजना में नौहरी नी आँछ बुली गी। तानू गौहरी केही से– 'तीतरा तून्हें मून्हें पेट भरीन षड़ाई तो लेददू हवे तू म्हूने हड़ा।' तीतरा केहवा लाग्गा– 'हवे तून्हें मैं हड़ाईस।'

आग से जोवे तो गोन्डीना ऊप्पर षात–आठ मानषा हाथना में डांगड़ी लेईन चला आवी रया था। तिन्हा वच्चे एक मानषा ना मूड़ मा चेष ना हथा। तीतरो सूँ करो, उड़ीन वच्चे गंजाना मूड़ पे बेबी गयो। तानू पसालहारा केहवा लाग्गा– 'हालजे ना मैं तीतरा ने मारी ली।' होम केहीन पसालहारा ने षेंची लाकड़ी मारी। डांगड़ी मारता सूँ तीतरा उड़ी ग्यो गंजानू मूँड़ फूटी ग्यो। तिहूना में आपष मा जड़ाई छावा लाग्गी। तिन्हें जोईन नौहरी अच्छे करनी षूब हंषो। षूब हंसो।

षूब हंषीन केहवा लाग्गो के– 'तीतरा थारी बे बात्तें तो षाच्ची छई गी, पर म्हूने रोनाड़ाहारू कोई पैदा ना छाई। यो बात झुठ्ठी से थारी।' तिन्हा पे तीतरो केहवा लाग्गो के– 'यो बात बी थारी षाच्ची कराई देददूँ।'

गामड़ा ना काठ्ठे एक बगीचो हथो। तो बगीचो में एक काटटाहारी हींस

हथी। हींसना में एकज जनो जावा आवानी वाट हथी। चार बगल से बन्द हथो। हींसना में नौहरीए बेषाड़ी गयो तीतरो।

तिन्हा में तीतरो उड़ीन गामड़ा ना काठे। तहाँ जोवे तो षात-आठ कूतरा षेल्ली रा था। ते कूतराउना षाम्मे तीसरो जाई पड़ों ने फड़फड़ावा लाग्गो। कूतना तिन्हें जोईन षोच्चो के तीतरो आवी ग्यो, षई लीन्ह ईन्हें धरीन।

कूतना नाष्षी ने आवी ग्या। कूतना ने जोत्तोषम तीतरो उड़ीन आग्गे जाई पड़ौ। तहाँ फिर कूतरा नाष्षी ने जिया तहाँ से बी तीतरा उड़ीन आग्गे चाल्ली ग्या। करता-करता तीतरो हींसमा चलाई ग्यो। तहाँ कूतरा हींसना मा षेषी ग्यो। तीतरा हथो तो हींसना मा से उड़ीन ऊप्पर डाल पे बैषी ग्यो।

कूतरा हथो ते तीतराने जोई रो थो, तो तीतरा दीषायो को नी ने नौहरी दिषाई ग्यो। नौहरी दिषाता षम आषा कूतरा नौहरी ने चने लाग्गी, ने कोई बाक्को धरीने कल्डी षाददो, कोई पेट कल्ड़ी रो। तानू नौहरी हथो तो जोन्नी-जोन्नी रोवा लाग्गो।

तानू कहे से- 'म्हारा तीतरा तू म्हूने बचाई ले। थारी त्रणे वात्तें षाच्ची से। मैं हारी ग्यो तू जीती ग्यो।' एट्टा केहता षम नौहटी नी वात षमझीन तीतरो हींसने बाहर जाई पड़ौ तो नौहरी ने छोड़ीन कूतरा फिरिंये तीतरा ने धरूवा आयो।

होम्मज करतो-करतो तीतरो हाँ पड़े, पन्हे पड़े। अबे तीतरो कूतराना गामड़ाना छोड़ी आयो। तहाँ से गामड़ा से उड़ीन तीतरो हींसमा आवी ग्यो नौहरी कने। तीतरो केहवा लाग्गो- 'जोई ले म्हारी त्रणे वात्तें षाच्ची से।' तिन्हा ऊप्पर नौहरी केहीन के- 'म्हारा दोस्त मैं हारी ग्यो, तू जीती ग्यो। षाच्ची थारा मा अक्कल जादा से।'

तीतर और सियार

एक घने जंगल में एक सियार और एक तीतर रहते थे। उन दोनों में बड़ी अच्छी दोस्ती थी। एक दिन तीतर ने सियार से पूछा कि- 'सियार भाई,

तुम्हारे पास कौन-कौन से गुण हैं?' सियार ने कहा- 'मेरे पास तो बस एक गुण है कि जो मरे जानवर लोग जंगल में फेंक जाते हैं, मैं उन्हें खाकर अपना पेट भर लेता हूँ। बस इसके अतिरिक्त मुझे कुछ नहीं आता। तुम बताओ, तुम्हें क्या-क्या आता है?' तब तीतर कहने लगा कि- 'मुझे तीन बातें आती हैं, सबसे पहली तो यह कि मैं तुम्हें भर पेट खिला सकता हूँ, दूसरी जब चाहूँ तुम्हें हँसा सकता हूँ और तीसरी यह कि तुम्हें कभी-कभी रुला सकता हूँ।' सियार बोला- 'यदि तुम्हारी ये बातें सच हैं तो सबसे पहले तुम मुझे खाना खिलाओ, मुझे बहुत भूख लगी है।' तीतर ने कहा- 'ठीक है, चलो मैं तुम्हें खाना खिलाता हूँ।'

तीतर सियार को लेकर चला और उसे एक पेड़ के पास बैठा दिया। कुछ ही देर में एक स्त्री अपने पति के लिये भोजन लेकर निकली। तीतर उस स्त्री के पास गया और खाने की टोकरी में गिर गया। स्त्री टोकरी छोड़कर भाग गयी। अब तीतर ने सियार को बुलाया और भरपेट भोजन कराया। भोजन करने के बाद सियार ने कहा- 'भाई तीतर, तुम्हारी एक बात तो सच हो गयी। अब तुम दो बातें सच नहीं कर सकते। क्योंकि हँसना और रोना तो मेरे वश में है।' तीतर कहने लगा- 'देखते जाओ, मैं अपनी तीनों बातें आज ही पूरी करूँगा।'

सियार खाना खाकर आराम करने लगा। उसे झपकी आ गयी। तीतर सोचता रहा कि अभी मुझे अपनी दो बातें पूरी करना है। धीरे-धीरे शाम हो गयी। सियार जाग गया और तीतर से कहने लगा- 'तुम मुझे भरपेट खिला चुके, अब हँसाओ।' तीतर कहने लगा- 'ठीक है, अब मैं तुम्हें हँसाता हूँ।' इतने में तीतर ने देखा कि गाँव की पगडण्डी से सात-आठ आदमी हाथ में लाठी लिए चले आ रहे है। उनके बीच में एक गंजा आदमी चल रहा है। तीतर उड़ा और गंजे के सिर पर बैठ गया। गंजे के पीछे चल रहा आदमी गंजे से कहने लगा कि तुम हिलना मत सीधे खड़े रहना, मैं अभी तीतर को मारता हूँ। सिर पर डण्डे से मारा। तीतर तो उड़ गया और गंजे का सिर फूट गया और वो सब आपस में लड़ने लगे। उन्हें लड़ते देख सियार को खूब

मजा आया, वह खूब हँसा और कहने लगा– 'भाई तीतर, तुम्हारी दो बातें तो सच हो गयीं– पर तुम मुझे रुला नहीं सकते। मुझे रुलाने वाला तो कोई पैदा ही नहीं हुआ।' तीतर ने कहा– 'मैं अभी यह बात भी सच करके दिखाता हूँ।'

तीतर उड़ा और उड़ते-उड़ते गाँव के पास पहुँचा। वहाँ एक बगीचा था, जिसमें काँटे की बागड़ लगी थी और एक छोटा-सा रास्ता था, जिसमें से एक ही व्यक्ति आ-जा सकता था। बाकी चारों तरफ से बगीचा बन्द था। तीतर सियार को उसी रास्ते पर बैठा गया और खुद उड़कर गाँव के पास पहुँच गया। वहाँ सात-आठ कुत्ते खेलकूद रहे थे। तीतर उन कुत्तों के सामने गिर पड़ा और फड़फड़ाने लगा। कुत्तों ने तीतर को देखा तो उसे खाने के लिए लपके। जैसे ही कुत्ते आगे बढ़े तीतर और दूर उड़कर बैठ गया। इस तरह तीतर कुत्तों के सामने गिरता-पड़ता उन्हें लेकर बगीचे की बागड़ तक आ गया। कुत्ते बागड़ में घुस गये। वहाँ तीतर पहले से ही सियार को बैठा गया था। अब तीतर तो उड़ गया और कुत्तों की नजर सियार पर पड़ी। वे सब सियार पर झपट पड़े। कोई सियार का मुँह नोचने लगा, कोई पेट, कोई टाँग खींचने लगा। सियार घबरा गया और जोर-जोर से रोने लगा। चिल्लाने लगा। तीतर को आवाज लगाकर कहने लगा– 'मेरे दोस्त तीतर, मुझे बचा लो, तुम्हारी तीनों बातें सच हैं। मैं हार गया, तुम जीत गये।'

तीतर को सियार पर दया आ गयी। वह फिर कुत्तों के सामने गिर पड़ा। कुत्तों का ध्यान सियार से हटकर फिर तीतर पर पहुँच गया, वे उसके पीछे दौड़ने लगे। तीतर पहले के समान उड़ता-गिरता कुत्तों को गाँव तक छोड़ आया और वापस सियार के पास आ गया। तीतर ने सियार से कहा– 'देखा मित्र, मैंने तीनों बातें सच करके दिखा दीं।' सियार कहने लगा– 'मित्र, तुम जीत गये, मैं हार गया। वास्तव में तुम मुझसे अधिक बुद्धिमान हो।'

सिल्डी गल्ढ़ो

एक गामड़ा मा सिल्ड़ी गल्ढ़ो रेहतो थो। तिन्ही एक व्हऊ हथी। जोवाना मा आच्छी हथी। एक धाड़े सूँ वात छईं के व्हऊ पानी भरवाने वाष्तर कुँआ कने जईं। आम से जोवे तो चार मानषा वाट्टे चालनहारा आवी र्‌या था। तानू ते कुँवा ने जोईन तिउने पानी नी त्रष लागी। तानू केहवा लाग्गा– कुँवा पे चाल्ली ने पानी पी लीन।'

कुँवा पे एक मान्छी पानी भरी री थी। चारे जना एकट्ठा चाल्सी तो मान्छी बीही जासे होम षोच्ची ने केहवा लाग्गे के– 'आपन एक-एक करीन जावो पानी पीवा।' एक चाल्लो तो केहवा लाग्गो के– 'मान्छी, म्हूने पानी पिड़ाई दे।' तिन्हा ऊप्पर मान्छी ए जवाब आल्लो के– 'भाई, तू कुण से?' तिन्ह पे तिन जवाब आल्लो के– 'मैं तो वाट्टे चालनहारो सूँ।'

मान्छी केहवा लाग्गी के– 'दुनियाना मा वो जना चालनहारो से, तू तीषरो छाँ से आवी ग्यो? इन्नो जवाब आल्ल ने पानी पी ले।' मान्छी हे थी तो पानी भरवा लाग्गी तो ऊब्बो रेही ग्यो। बीज्जो मानषो केहवा लाग्गो– 'पलो पानी पी रौ से के ऊब्बो घई रौ से?' तो बी पानी पीवाने आयो केहवा लाग्गो– 'मान्छी, म्हूने पानी पिड़ाई दे।' मान्छीए जवाब आल्लो के– 'भाई, तू कुण से?'

तिन्हें जवाब आल्लो– 'मैं बहोत गरीब सूँ।' मान्छी केहवा लाग्गी– 'दुनियाना मा तो बे गरीब सी, तू तीषरो गरीब छाँ से आयो? ईन्हा भेद बताल

और पानी पीले।' तो बी ऊब्बो छई ग्यो, मान्छी फिरिये पानी भरवा लाग्गी। तीसरो जोई रौ थो तो केहवा लाग्गो– 'म्हूने बी चालवा दे पानी पीवाने।' आयो तो मान्छी ने केहवा लाग्गो के– 'मान्छी, म्हूने पानी पिड़ाई दे।' तिन्ह पे मान्छी केहवा लाग्गी– 'तू कुण से भाई?' तीषरो केहवा लाग्गो के– 'मैं मनमषत सूँ।'

मान्छीए जवाब आल्लो के– 'दुनिया मा बे मनमषत सीं, तू छाँ से आवी ग्यो तीषरो? ईन्हें भेद आल्ल और पानी पी ले।' तो बी ऊब्बो छई ग्यो।

चारूवो हथो तो बी चाल्ली ने आयो ने केहवा लाग्गो– 'मान्छी, म्हूने पानी पिड़ाई दे।' तिन्ह पे मान्छी ए जवाब आल्लो– 'भाई, तु कुण से?' चारूवा केहवा लाग्गो– 'मैं सिलड़ी सूँ।'

मान्छी केहवा लाग्गी– 'दुनियाना में तो बे सिलड़ी सीं, तू तीषरो सिल्ड़ी छाँ से आवी ग्यो? ईन्हों भेद वताल ने पानी पीले।' मान्छी कुँवा पे पानी षेच्ची री ने चारे ऊब्बो छई रया।

आँई से गामड़ा ना एक मानषो जई रौ थो, तिन्हे जाईन तो मान्छी ना षषरा ने षाम्मे जाईन केही के– 'थारी व्हऊ कुँवाना ऊप्पर चार–चार मानषाना को वतलाई रईस।'

तिन्ही वात षमझीन षषरो ने ना हेट्टी जोईन ना ऊच्ची जोईन षूद्दो षूबटालाउना नाष्षी ग्यो। नाष्षीने जाईन म्होटा षूबटालाउना बुलाईन लेईन कुँवा पे आवी ग्यो। म्होटा षूबटाला सूँ करू के वाट्टे चालनहारा चारूवा ने व्हऊ ने धरीन थाना मा लेई ग्यो ने बंद करि देद्दो।

हवे म्होटो षूबटाला पूछवा लाग्गो– 'तुम्हीं सूँ करि र्‌या था? मान्छी ने सूँ वतलाई रा था?' तिन्ह पे वाटटे चालनहारा केही के– 'म्होटा षूबटाला हमीं पानी पीवाने वाष्तर जिया था। तिन्हा ऊप्पर यो मान्छी पूछवा लाग्गी। हमी वातूना जवाब ना आल्लो तो ऊब्बो छई र्‌या था।'

एट्टी केहताषम म्होटो षूबटाला केहवा लाग्गो– 'यो वात नथी तुम्हीं ल्हीकड़ा सूँ।' हवे षूबटाला मान्छी ए बुलाई ने केहवा लाग्गो– 'सूँ वात से?'

मान्छी केही के– 'मैं चार वात्तें पुच्छी थीं ते जवाब ना आल्लो तिन्हा वाष्तर मैं पानी ना पिड़ाई।' षूबटाला केहवा लाग्गो– 'सूँ वात से चार?'

मान्छी केहवा लाग्गी– 'पेहलो आयो थो तिन्हे केही थी के मैं चलनहारो सूँ, तिन्हा ऊप्पर मैं कैही के दुनिया मा बे चलनहारो से।' हवे षूबटाला केहवा लाग्गा के– 'तू म्हूने वताल चलानहारा चे वासी? मैं बी जोऊँ।' मान्छी केहवा लाग्गी– 'बे चालनहारा एक तो चाँद से के जो राते निकले से वेहना मा डूब्बस। एक सूरज से के जो वेहना मा ऊग्गस ते षान्झे डूब्बस।' षूबटाला केहवा लाग्गो– 'यो तो षाच्ची से हवे बीज्जी वात वताल।'

हवे बीज्जो मानषो ने मान्छी षाम्मे करीन षूबटाला फिरिये पुच्छी तो मान्छी केहवा लाग्गी– 'ईनने केही थी के मैं गरीब सूँ। मैं जवाब आल्लो थो के दुनिया मा बे गरीब सी। तू तीषरो छाँ से आवी ग्यो?' षूबटाला केहवा लाग्गो– 'वताल सूँ गरीब से?'

मान्छी केहवा लाग्गी– 'एक गरीब से गऊ ने एक से कन्या। गऊने कषाईने बी आल्ली दो तो बी चेने चली जास, कन्या ने चाहे लंगड़ो–लुल्लो, अन्धो कीन्हे काठ्ठे बी माँ–बाप व्याहब करी दे तो चली जास।' षूबटाला केहवा लाग्गो– 'बे बात थारी षाच्ची।'

हवे तीषरो ने बुलायो ने तिन्हे पुच्छी तो मान्छी ए जवाब आल्लो के– 'ईनने या केही थी के मैं मनमषत सूँ, तिन्हा ऊप्पर मैं जवाब आल्लो के दुनिया मा मनमषत बै सीं तू तीषरो छाँ से आवी ग्या?' षूबटाला केहवा लाग्गा– 'म्हूने वताल चे आ मनमषत सीं?'

मान्छी जवाब आल्लो– 'एक तो रोल्टो से ने एक पानी से। यो बे चीज्जें मन मषत। यो ना रेहें तो मनषाजून भूच्छे मरी जाईस।'

चारूवा ने बुलायो ने षूबटाला पूच्छवा लाग्गो– 'थारी सूँ वात से?' मान्छी केहवा लाग्गी– 'यो केही रो के मैं सिल्ड़ी से। तिन्ह पे मैं जवाब आल्ली के सिल्डी तो बे सी तू तीषरो छाँ से आवी ग्यो?' षूबटाला केहवा लाग्गो– 'वतला बे सिल्डी कुण से?'

मान्छी केहवा लाग्गी– 'एक तो सिल्डी से म्हारा षषरा, एक म्होटा षूबटाला तू सिल्डी से। म्हारा षषरो बिना षोच्चे-षमझे न उल्टी जोई न षुददी जोई तून्हें लेईन आवी ग्यो। तू सिल्डी षूबटाला के बिना पूच्छे-ताछे चारोने चेने म्हूने बी बन्द कर देददो। ईन्हा वाष्तर तू ने म्हारा षषरा बे सिल्डी से।'

मूर्ख वृद्ध

एक गाँव में एक मूर्ख वृद्ध रहता था। उसकी एक सुन्दर सी बहू थी। बहू एक दिन कुएँ पर पानी भर रही थी। इतने में उधर से चार राहगीर निकले, वे प्यासे थे, अत: बहू को पानी भरते देख पानी पीने कुएँ पर पहुँचे और उससे पानी पिलाने के लिए कहा। पहला राहगीर जैसे ही बहू के पास पानी पीने पहुँचा तो उसने राहगीर का परिचय पूछा कि तुम कौन हो? वह बोला– मैं राहगीर हूँ। बहू उसकी बात सुनकर कहने लगी कि– 'दुनिया में केवल दो ही राहगीर हैं। तू तीसरा कहाँ से आ गया? इसका भेद बता, तभी पानी पीने के लिए मिलेगा।' पहला व्यक्ति चुप रह गया।

उसे खड़ा देखकर दूसरा व्यक्ति पानी पीने के लिए कुएँ के पास पहुँचा और बहू से पानी पिलाने के लिए कहा। बहू ने उस व्यक्ति से भी परिचय पूछा कि तुम कौन हो? दूसरा व्यक्ति कहने लगा– 'मैं बहुत गरीब हूँ।' बहू कहने लगी– 'दुनिया में तो दो ही गरीब हैं। तुम तीसरे गरीब कैसे हो? इसका रहस्य बताओ और पानी पी लो।' वह भी कोई जवाब न दे सका और चुपचाप एक ओर खड़ा हो गया। उसे बिना पानी पिये वहीं रुका देखकर तीसरा व्यक्ति भी वहीं आ गया और बहू से पानी पीने के लिए माँगा। बहू ने उससे भी वही सवाल पूछा कि तुम कौन हो? तीसरा व्यक्ति

कहने लगा कि– 'मैं तो... हूँ। बहू उसके उत्तर से भी सन्तुष्ट न हुई और बोली– 'भाई, दुनिया में तो दो ही... हैं तुम तीसरे... कहाँ से आ गये? इसका उत्तर दो और पानी पी लो।' उसे भी कोई जवाब न सूझा, तो वह भी एक ओर चुपचाप खड़ा हो गया।

चौथा व्यक्ति, जो बहुत देर से प्यास साधे खड़ा था, इन तीनों को कुएँ पर रुका देखकर पास आया और उसने भी बहू से पानी पीने के लिए माँगा। चौथी बार भी बहू ने वही प्रश्न दुहरा दिया कि तुम कौन हो? चौथा कहने लगा कि– 'मैं तो मूर्ख हूँ।' उसका उत्तर सुनकर बहू कहने लगी कि– 'भाई, दुनिया में केवल दो मूर्ख हैं। तुम तीसरे मूर्ख कैसे हो? यह रहस्य बताओ और पानी पी लो।'

अब चारों राहगीर कुएँ पर खड़े थे और बहू पानी खींच रही थी। उधर से गाँव का एक व्यक्ति निकला। उसने बहू को चार व्यक्तियों से बात करते देखा तो उसके ससुर से कहा कि तुम्हारी बहू कुएँ पर चार व्यक्तियों से बात कर रही है। इतना सुनते ही ससुर को क्रोध आ गया, उसने बिना सोचे-समझे थाने जाकर थानेदार को साथ लिया और कुएँ पर पहुँच गया। थानेदार ने चारों राहगीरों और बहू को ले जाकर थाने में बन्द कर दिया और उनसे पूछने लगा कि– 'अब बताओ, तुम चारों वहाँ क्या कर रहे थे? इस स्त्री से क्या बातें कर रहे थे?' राहगीर कहने लगे– 'हुजूर, हम लोग प्यासे थे और पानी पीने के लिए गये थे तो इस स्त्री ने हमसे कुछ प्रश्न पूछे, हमें जवाब नहीं आया, इसलिए हम वहाँ बिना पानी पिये ही चुपचाप खड़े थे।' थानेदार को उनकी बात पर विश्वास नहीं हुआ, वह कहने लगा कि– 'यह बात नहीं है तुम बदमाश हो।'

अब थानेदार ने बहू को बुलाया और पूछा कि– 'क्या बात है? ये चारों कुएँ पर क्या कर रहे थे?' बहू कहने लगी कि– 'इन्हें पानी पीना था, मैंने इनसे चार बातें पूछीं, इन चारों ने नहीं बतायीं, इसलिए मैंने पानी नहीं पिलाया।' थानेदार ने कहा– 'ऐसी कौन-सी चार बातें हैं, मुझे भी बताओ।'

बहू कहने लगी कि– 'पहला आदमी आकर कहने लगा कि मैं राहगीर हूँ। तो मैंने कहा कि दुनिया में तो सिर्फ दो राहगीर हैं।' थानेदार ने कहा कि– 'अच्छा कौन से दो राहगीर हैं। जरा मैं भी तो सुनूँ, बताओ कौन–कौन हैं?' बहू कहने लगी– 'देखो, दो राहगीर हैं सूरज और चन्द्रमा। ये दोनों चलते रहते हैं। एक रातभर चलता है और सुबह अस्त हो जाता है और दूसरा दिनभर चलता है और साँझ होते ही डूब जाता है।' थानेदार ने कहा कि यह बात तो तुम्हारी सच है।

अब दूसरी बात बताओ? बहू ने कहा कि– 'इस दूसरे आदमी ने मुझसे कहा कि मैं गरीब हूँ। इस पर मैंने जवाब दिया कि दुनिया में सिर्फ दो ही गरीब हैं। तू गरीब कैसे?' थानेदार पूछने लगा– 'बताओ, कौन दो गरीब हैं?' बहू ने कहा– 'एक गरीब तो गाय है जिसे कसाई के घर भी दे दो तो वह कटने के लिए चुपचाप चली जाती है और दूसरी गरीब कन्या है जिसे लूले, लंगड़े, अंधे किसी के साथ भी ब्याह दो तो वह विरोध नहीं करती।' थानेदार ने कहा कि तुम्हारी ये दोनों बातें तो बिल्कुल ठीक हैं।

अब तीसरी बात क्या है? वह भी बता दो। बहू कहने लगी– 'इस तीसरे आदमी ने मुझसे कहा कि मैं ... हूँ। तब मैंने कहा था कि दुनिया में दो ही... हैं। तुम तीसरे कैसे हो गये?' थानेदार ने फिर उत्सुकता से पूछा– 'मुझे बताओ दो... कौन हैं?' बहू कहने लगी– 'एक तो रोटी और दूसरा पानी। यदि ये दोनों चीजें न हों तो आदमी भूखा मर जाये।'

अब चौथे की बारी आई। उसे बहू के सामने करके थानेदार ने पूछा कि इसकी क्या बात है? बहू कहने लगी कि– 'यह कह रहा है कि मैं मूर्ख हूँ। तब मैंने कहा कि तुम मूर्ख कैसे? मूर्ख तो केवल दो ही व्यक्ति हैं।' थानेदार पूछने लगा– 'बताओ, दो मूर्ख कौन हैं?' बहू कहने लगी– 'एक मूर्ख तो है मेरा ससुर और एक बड़ा थानेदार, मतलब तुम खुद मूर्ख हो, क्योंकि बिना सोचे–समझे मेरे ससुर थाने जाकर तुम्हें बुला लाये और तुमने बिना अपराध पूछे चारों के साथ मुझे भी बन्द कर दिया। इसलिए तुम दोनों मूर्ख हो।'

नाहर और हुषियार वांदरू

एक जंगल नू एक वांदरू और एक नाहर रेहतो थो। वांदरू चालाकी से आवनी जान वचाई राखी थे। नाहर जो हथो जंगलान जीव–जन्तुन ने मारी–मारी ने खई ग्यो। वांदरान जो अड़ोषी–पड़ौषी ने जातभाई ने मारे न खाई ग्यो। एक समै नु वात छे नाहर वांदराने जोवे के वांदरू हाथ में आवे तो षई जऊँ।

वांदरू हुषियार हथू। वांदरू धरतीना पे उतरेच ना। अगर तिन्हें पानी पीनू हो तो अपना रूखडाउ ना हुते बीजा रूखड़ा पे कुचकीन–कुचकीन जाइन और हुषियारी से पानी पीन फिर कुचकीन अपना रूखड़ा पे आवी जाय। करता–करता घना समै छाई ग्यो वांदरू नाहर ना हाथ में ना आवे। तो एक दिन नाहर षोच्ची के आ तू बड़ो हुषियार छई ग्यो तो आज ईने मारीन खाईस।

तानू नाहरू न सू करूँ के आपना दिमाग से अक्कल करीन जंगलान में चाल्तो हुओ अवीरो वांदराने जोईन फुकिन–फुकिन गोड्डा मेली रो। वांदरू ऊपर ते रूखड़ा पे बेट्ठू–बेट्ठू जोएरू के आज सूँ वजै छाई के आज नाहर फुकिन–फुकिन गोड्डा मेली रो? वांदरू एक नाहर से पुच्छी के– 'आज सूँ वजै छे के तु गोड्डा फुकिन–फुकिन मेलि रो?'

तानू नाहरे जवाब आलो तिनपे के– 'भाई, मैं घना हत्या पाप करूतू तिन्हें वाष्तर मैं तीरथ करवाना वाष्तर गंगाजी जाई रो सू। के मारे गोड्डा न हेट चिट्टी न मरी जाये तिन्हा वाष्तर फुकिन–फुकिन गोड्डा मेलि रो सू।'

तानू वांदरू लागू के हवे यो गंगाजी जई रो से तो गो हत्या न करे। तो तीन्ता मन में षोच्चीन रूखड़ा ने से उतरीन नाहर ने काहे आयो के– 'भाई, तू षाची गंगाजी जई रो सू तीरथ करवा?' जो काट्टे वांदरू आवो तो नाहर फट दीन ते पंजा ना में धरी लीद्दो। धरीलीन तानू नाहर बोलो– 'तू बड़ो हुषियार छातो हथो। ले तुने मैं मारीन खाईस'

वांदरू होते तो मन्ना में पछतावा लागो के आज सूँ आफत आवी गी। के नाहर ना पंजा में आवी ग्यो। तो वांदरू अपना मन्ना में अकल करीन तो घन हंषवा लागो। नाहरे पुच्छी के– 'वांदरा तु मरवा ना बाक्का में आवी ग्यो सूँ। तू हवे सुकवा हंषी र्‌यो से?'

तिन्हा ऊपर वांदराने जवाब आलो के– 'मैं जानी पुछी ने तारे काट्टे मरवा आयू से। म्हूने मालम हथी के आजु न धाड़े में तारे कन्हें मरीस तो म्हूने गुषाईंना घरना में जगा मिल छे तिन्हा वाष्तर मैं मरवा आवी ग्यू से। तू जल्दी म्हूने मार।' नाहर षोच्चा लागे के वांदरू तो आज मारे हाथे मरवानू आयू तो तीने पंजो ढील छोड़ देददो। तो वांदरू तिनमें से छलाँग मारीन बगलना रूखड़ाना ऊपर कुद्दीन चढ़ी ग्यो। चढ़ीन आ डाल पे पली डाल पे कुद्दीन करीन रूखड़ाना चोट्टी ने ऊपर चली ग्यो। तहाँ एक डाल पे बेष्षी ने वांदरू हिचकीन भरीन रोई रू। तानू नाहर कै से के– 'वांदरा, तू हाँ मारे मौत ना बाक्का में हथो तानु तो हंषी र्‌यो थो हवे मारो बाब्बो भी नाहीं षकै तहाँ ऊपर बैष्षो तू रोई रो से। इनी वजै सू छै?'

तिन्हा ऊपर वांदरा जवाब आलो के– 'मारा षरीषा मनषू ने, जंगली जानवरू ने तू फुषलाईन–फुषलाईन मारी लेददा। तो आज अगर मारे काट्टे एती अकल ना होती तो आज म्हूने भी मारी लेतो तू। मैं इन्हा वाष्तर रोई र्‌यो सूँ के आन फुषलाईन–फुषलाईन चिट्टा कूने मारी लेददा।'

तिन्हा बादना में वांदरू तो अपना हुषियारी में रेहतो थो नाहर तिन्हें मारूवा को फिरतो रो थो। करता–करता नाहर जोता–जोता मरि ग्यो।

वांदरू फल–फूल घास पांवड़ा खाईन गुजारो करता रौ। नाहरी मरी ग्यो। वांदरू रही ग्यो।

शेर और चालाक बन्दर

एक जंगल में एक शेर और एक बन्दर रहता था। शेर बहुत क्रूर और दुष्ट था। धीरे–धीरे वह जंगल के सभी जानवरों को खा गया। बन्दर ने किसी तरह चालाकी से अपनी जान बचा रखी थी। शेर हमेशा यह सोचता रहता था कि किसी तरह बन्दर उसके हाथ आ जाये तो वह उसे भी खा जाये। बन्दर बहुत होशियार था, वह हमेशा पेड़ पर ही रहता था। किसी तरह मौका देखकर पेड़ों पर ही उछलता–कूदता पास की नदी से पानी पी आता।

इसी तरह बहुत दिन हो गये। बन्दर–शेर के हाथ नहीं आया। एक दिन बन्दर डाल पर बैठा हुआ था, उसने देखा कि शेर फूँक–फूँक कर धीरे–धीरे एक–एक पैर आगे बढ़ा रहा था। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि शेर इस प्रकार क्यों चल रहा है? बन्दर ने चीख कर शेर से इसका कारण पूछा। शेर ने बताया कि– 'उसने बहुत पाप किये हैं, इसलिए अब तीरथ करने जा रहा है और फूँक–फूँककर इसलिए कदम रख रहा है कि अब एक भी चींटी उससे न मरने पाये।'

बन्दर शेर की बातों में आ गया। उसने सोचा कि शेर अब तो धर्मात्मा हो गया है। अब किसी बात का डर नहीं है, यह सोचकर बन्दर पेड़ के नीचे धरती पर उतर आया। बन्दर को निकट पाकर शेर ने उस पर छलाँग लगा दी और उसे दबोच लिया। बेचारा बन्दर शेर के पंजों में दबा छटपटाने लगा। वह शेर की मीठी–मीठी बातों में आकर उसके जाल में फँस चुका था। अब उसकी मृत्यु निश्चित थी। बन्दर भी चालाक और बुद्धिमान था। उसने शीघ्र बचने का एक उपाय ढूँढ निकाला। वह शेर के पंजों में दबा–दबा जोर–जोर से हँसने लगा।

शेर को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने बन्दर से पूछा कि- 'तू तो मरने वाला है। इस तरह क्यों हँस रहा है?' बन्दर ने शेर को बताया कि- 'वह असली धर्मात्मा है और उसे ज्योतिष आता है। उसे पहले से ही मालूम था कि आज के दिन शेर के हाथों उसकी मौत होगी और वह सीधा स्वर्ग जायेगा।' शेर ने सोचा कि बन्दर तो स्वर्ग जाने के लालच में खुद ही पेड़ से उतरकर जमीन पर आया है। अत: भागकर कहीं नहीं जायेगा। उसने अपनी पकड़ ढीली कर दी। शेर की पकड़ ढीली होते ही बन्दर उसके पंजों से निकलकर भागा और दौड़कर पेड़ पर चढ़ गया। शेर उसे देखता ही रह गया।

अब बन्दर ने पेड़ की एक ऊँची डाल पर बैठ कर जोर-जोर से रोना आरम्भ कर दिया। शेर को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने बन्दर से पूछा कि- 'जब वह उसके पंजों में दबा मौत के मुँह में था तो हँस रहा था और जब ऊपर पेड़ पर पहुँच गया, जहाँ जान माल का कोई खतरा नहीं है, तो क्यों रो रहा है? बन्दर बोला कि- 'मैं अपनी चालाकी से बच गया वरना मारा जाता, लेकिन मैं पेड़ पर बैठा हुआ इसलिए रो रहा हूँ कि मेरे सारे सगे-सम्बन्धी तेरे द्वारा मारे गये। उन्हें मरते समय कितना दु:ख हुआ होगा।' शेर बन्दर की ताक में पेड़ के नीचे बहुत दिन बैठा रहा और एक दिन भूख-प्यास से तड़प-तड़प कर मर गया।

बिलाड़ी न गोड्डा

हमीं चार भाई छी। चारो भाइयों का व्या छाई ग्या था। हमें षाम्मे नथी रहता। हमें चारों भाइयों में षाम्में नथी चाल्ली री।

मोटटे भाई नी घरहारी कड़ी थाई जयती। जोबाब्बा मान्नी चिज्जैं षाम्में लाथनी छी। बाब्बा मान्नी बिलाड़ी थी। उसकी हमी षाम्मल में बिलाड़ी न गोडडा मोच्ची लेच्छा। चारों भाई उसका खाऊ-पीऊ आलता रहा।

वह काली में उदरावनी बोल्ली करवा जात्ती थी। बाल्वाने वाष्तर नाषवे में गोडडा टूटटी ग्यो।

विण्या मनषू तिन्हें लेईन प्लाना कन्हें आया छीं। ते केहवा लाग्गा- 'आपनी बिलाड़ी षन्टालो जो नहीं? षम्हालों, तो इन्हा भुगतान तमारे ऊपर छे।' और चारों भाई देषीन षोच्ची कुन्हा गोडडा छीं? मोटटा भाईना गोडडा तेहचा निकलतो।

अष्षा षोच्चीन कई रयो थो - जंगली जड़ी लगई दी थी तीन्हें गोडडा वान्धी देदधा। दोष छाड़ा न वाष्तर तीन्हा गोडडा अच्छू भाई ग्या। जराषूँ लांकतू रह ग्यो वह चलने लाग्गी। चारों भाई बैष्षा कइये तो हच बिलाड़ी सी। देष कये तोहच भाई अपना ढल्डान में नाष ग्या। रोल्टा खाईन-पीईन षुई जाया। तीन्हीं षुर्त भुतुँ ज्याँत्त होय तहाँ वैष्षी रही। तीन्हा गोडडा न लंगड़ा

में आज लाग्गी जेई तो बिलाड़ी में षोड़ी। वीज्याना दल्ड़ा में। तीन्हें में वीण्या दलड़ा में आज लागी जेई हवे।

वीण्या मनषूँ न दल्ड़ो वाली, ज्यो। वीण्या मनखू ने तीन्हें जोया। तीन्हें अष्षा मनषूँ जोड़ी देधा। हवे बावरी बैयरी देबी ज्या पंचायतन में हवे। तिन्हों विवेक थाओ ते वैयर बावरी काई भी पंचू का मौन थी। थाया हवे बावरी अष्षा पंचायत करया लाग्गा। तिन्हा विवेक करवा लाग्गा। गोड़ा मने पंचू ने हवे तीन्हें काछीं अपना-अपना गोडडा मेल लो। तानू अपना-अपना गोडडा मेल्हन।

मोटटा भाई-भावण कई र्‌या था- 'मारो गोडडा बीमार थाई ज्यो तो तमारा गोडडा मारे गोडडा को सुकवा लेई ज्या था? मारे मने काई बोल न थी।' हवे नान्नो भाई बोल्वा लाग्गो- 'हवे जोई लो मारा भाई मारो गोडडो आछो थो। इन गोडडों में लघड़ा में आग लाग्गी जेई ती इन्हा वाष्तर तीण्या बावरी न घर बली ग्यो। हवे हमीं सू करै?' आष्षा पंच बोल्ला- 'इन्हें बोल में धरी लन्हा। आषा बोल का भरता मोटटा कन्हें छीं पंचू ने फैषला करी दीधा।'

आष्षा बोल मोटटा भाई कन्हें छीं। तीन्हें स्वीकार करी लीधा। हमारा कन्हें अभी पंचायत थाई षैक से। पंचों ने सही फैषला करि दीधा।

बिल्ली का पैर

चार भाई थे। उनका विवाह हो गया था। चारों भाइयों में आपस में पटती नहीं थी। बड़े भाई की पत्नी बहुत झगड़ालू थी। उसी के कारण घर के सब सामान का बँटवारा हो गया था।

घर के सामान में एक बिल्ली भी थी। बँटवारे में चारों भाइयों के हिस्से में बिल्ली का एक-एक पैर आया। वे सभी उसकी देखभाल करते थे।

बिल्ली रात में चूहे ढूँढने जाती थी। एक दिन रात में चूहों का शिकार करते समय उसका एक पैर टूट गया। एक आदमी बिल्ली लेकर भाइयों के पास आया और कहने लगा कि- 'अपनी बिल्ली सम्हालो, नहीं तो इसका पाप तुम्हारे ऊपर पड़ेगा।'

भाइयों ने उसके पैर में जंगली जड़ी लगा दी और उसका पैर बाँध दिया। कुछ दिनों में उसका पैर अच्छा हो गया। थोड़ी-सी लंगड़ाहट बाकी बची थी। एक रात चारों बातचीत करते रहे और खाना खा-पीकर सो गये। बिल्ली बैठी रही, उसे वे खाना देना भूल गये।

बिल्ली दूसरे के रसोईघर में खाना खाने घुसी। वहाँ उसके लंगड़े पैर के कारण आग लग गयी। दूसरा व्यक्ति जिसके घर में आग लगी थी, वह बिल्ली को लेकर चारों भाइयों के घर पहुँचा। वहाँ बहुत-से लोग इकट्ठे हो गये।

चूँकि उस व्यक्ति का बहुत नुकसान हुआ था, अतः वह भाइयों से हर्जाना माँगने लगा। तब तीनों भाई बोले कि बिल्ली का बँटवारा हो चुका है और जिस पैर के कारण दूसरे के घर में आग लगी, वह पैर बड़े भाई के हिस्से में है, लेकिन बड़ा भाई दण्ड भुगतने के लिए तैयार नहीं था। वह और उसकी पत्नी कह रहे थे कि- 'जब हमारे हिस्से का पैर बीमार था, तो दूसरे भाइयों के हिस्से के पैर हमारे हिस्से के पैर को क्यों ले गये?' सबने मिलकर तय किया कि पंचायत बैठायी जाये। पंचायत बैठी और पंचों ने सबकी बातें सुनीं, समझीं और फैसला किया कि- 'बड़े भाई के हिस्से के पैर से आग लगी। यदि बड़ा भाई बिल्ली का इलाज ठीक से करता तो उसका पैर अच्छा हो जाता। उसी की गलती व लापरवाही से बिल्ली का पैर ठीक नहीं हुआ और दूसरे के घर में आग लगी। अतः उस व्यक्ति का सारा नुकसान बड़े भाई को पूरा करना चाहिए।'

फदीयाहारो और गरीब

काई बै भाई थो। एक भाई मोटटा गरीब, काये विण्या भाई फदीयाहारो। मोटटा भाई उसका आष्षा घरू का काम षमाली रहता। तीन्हें फि लूछड़ा आली देत्ता से। मोटटा भाई नी वैयर, धिया, छोरी आष्षी मजदूरी करता।

कये नान्ना भाई नी वैयर कहवा लागी, मोटटा भाई नी वैयर सूँ– 'तुन्हें मैं भी एक वरया आलती करूँ, मारो भी काई काम करि दिया करे।' उसको गोबर झुरो करवा लाग्गी। वरया भर नाज में गुजर करता कये? इसके बाद चौथणा उपाष करैसी ते अपने मनुष से कहवा लाग्गी के– 'तु मुन्हें उपाष का षामान लेई आओजे।' वयर केहवा लाग्गी– 'मारा कने कोई–कोई चीज्जें करवा काई नथी हैं।'

देवरानी से कहवा लाग्गी, ते बोल्ली– 'तु अष्षा काम करीन वी तान्नु तुन्हें आलसे।' तिन्हें काम आष्षा जल्दी षतम करी दीथा। तीन्हें षूँ तें बोल्ली– 'मुन्हें जल्दी आली दे।' ते देवरानी कहवा लाग्गी– 'जराबी देर में आलसू। मुन्हें काम सी।' वो आपना मोंय ना काम करवा लागी। काम करीन वी फिरय जेई तो देवरानी कहवा लाग्गी– 'हमीं मैं अभी रसोई कारी रई सूँ आल्डा घंटा में फिर आना।'

फिरी वैयर जैई वाजार में पूजनना षोददा लेने नोय में मेल्हीन फिरय

जेई, फिर कहवा लाग्गी– 'मुन्हें आलदे पाँच वाजीण्यि अवै। पीस करीन षुआली करसी।' तीन्हें कहवा लाग्गी– 'आज्जू ना वाष्तर मैना में वैहचधाड़ा में लेई लेजे।' इतनी वातें षमझीन ते कहवा लाग्गी– 'हमें चौथे उपाष खोली षकैं। ते वैयर जंगलू में चाल्लू जेई। तीन्हें काई चीज्जों की कै पाँदड़ा पोया, तीने तोड़ीन मेली लेधा।'

पाँदड़ा तोड़ीन करीन षान्झे लेहटी। तीन्हें आइन करनी कुटवा लाग्गी। कुन्ना में एकच षादू ने आवाज लागड़ी। तीन्हें वात षमझीन षादू के पास आवी जेई। षादू कहवा लाग्गो– 'तारे घरे मुन्हें रोल्टा खानू से।' ते कहवा लाग्गी– 'जो म्हारे से सेवा बनसे तो करीस।' षादू महाराज को वैषाई करीन आवी वनस्पति के पाँदड़ा फिरय कुटवा लाग्गी। फिरय रोल्टा करवा लाग्गी।

तीन्हाँ मनषू आवी ग्या। तीन्हें षादू से राम–राम करीन वी घरू में चाली ग्या। वैयर कहवा लाग्गी– 'अपना पूजन करीन वी फिर षादू को बोल्डाइन रोल्टा खिड़ाआ।'

'षादू तहाँ ते उड़ीन तहाँ आवी ग्या' तो षादू कहवा लाग्गो– 'तीन्हें षू आमो रोल्टा हमूने काई नथी खाद्दो।' कहवा लाग्गो– 'मैना थात्थे उड़ीन चाली जाव सू। वैयर बावरी अपना घरू की मारीन भी षुई ज्या। उनका वैयर बावरी छिया छोरी आष्षाना सिगारी षोना में आवी ज्या। तीन्हें घर में धन–दौलत आवी जई। मैं न थारो कोई अड़ी नहीं रहा।' नान्ना भाई कहवा लाग्गो वैयर से– 'तीन्हें षू काई कह तो नथी?' ते कहवा लाग्गी– 'मैंने तीन्हें आाल कोई नी इन्हें नथी आवी रई।' ते तीन्हें बुलावा लाग्गी। तीन्हें छिया को मोकला तो जोयो तो तहाँ षुई रहा था। छिया जोईन करनी लोटटी ज्या। अपनी माँ से कहवा लाग्गो– 'ते षुई रहा।'

माँ और छिया दोनों चाल्ला, तीन्हें चिल्वा लाग्गा। तीन्हें वाते षमझीन कहवा लाग्गी– 'हमीं तुम्हारा मजे नथी जाई षके। तु मारा कन्हें और आवी जा। हमूने षादू को रोल्टा खिड़ाया। तानू केई ज्या तुम्हीं धनवान थाई जावसो।'

नान्ना भाई नी वैयर कहवा लाग्गी– 'आमो षादू ने मारा कने मोकल देवजे। मैं बी फदियारी घई जाऊँ। नान्हा भाई के पास दोषछाड़ा ना वाष्तर आवी ज्या।' तीन्हें मोट्टी भावज को वोल्डाई ते कहवा लाग्गो– 'षादू एहोच से या नथी? षादू को बताइन थी आपना घर पाछे आवी जैई तीन्हा तहाँ मोकली। आमी नान्ना भाई नी वैयर ने षूटमाला सदकार करासी।'

षादू कहवा लाग्गो– 'हमीं मे ना थात्ते चाली सू अपना घड़ा भारीन षुई जाओ।' षादू षोच्ची इन्हें तो भोजसी काई कमी कोई नी। ते वीजी ओर भाईरा कैये ने नरक भोगवानी कही ज्या। 'जो मनषू मस्तातो है तानू बाद में पछतातो भी है।'

अमीर और गरीब

दो भाई थे। बड़ा गरीब था, छोटा धनवान। बड़ा भाई छोटे के घर का सारा काम करता, बदले में उसे वह रोटी, कपड़ा दे देता था। बड़े भाई की पत्नी और बच्चे भी सारा दिन मजदूरी करके अपना पेट भरते थे।

एक दिन बड़े की पत्नी से उसकी देवरानी कहने लगी कि– 'तुम भी मेरा काम कर दिया करो। बदले में तुम्हें कुछ अनाज दे दिया करूँगी।' जेठानी उसके घर का गोबर कचरा साफ करने लगी।

कुछ दिन बाद चौथ का व्रत आया। जेठानी ने अपने पति से कहा कि मुझे व्रत-पूजा का सामान लाकर दे दो। उसने ध्यान नहीं दिया। फिर देवरानी से कहा, तो वह बोली– 'पहले तुम सब काम कर लो, फिर ले आऊँगी।'

जेठानी काम करती रही। सारा काम निपटाने के बाद वह फिर देवरानी से बोली कि– 'मुझे सामान ला दो।' देवरानी ने इस बार फिर टाल दिया और स्वयं अपना सामान ले आयी तथा पूजा की तैयारी करने लगी। जेठानी ने फिर अपनी देवरानी को सामान लाने की याद दिलायी, तो वह बोली– 'अभी नहीं, फिर किसी दिन ला दूँगी।'

जेठानी समझ गयी कि देवरानी सामान लाना नहीं चाहती, अतः वह जंगल चली गयी और पेड़-पौधों की पत्तियाँ तोड़ लायी।

वह घर लौटी तो शाम हो चुकी थी। उसने पत्ते कूटे और रोटियाँ बनाने लगी। इतने में एक साधु महाराज उसके घर आये और बोले कि– 'आज मैं तुम्हारे घर भोजन करूँगा।' उसने बड़े आदर-सत्कार के साथ साधु महाराज को बैठाया और भोजन की व्यवस्था करने लगी।

रात हो गयी थी। साधु ने भोजन किया और बड़े भाई की पत्नी से बोला कि– 'अब तुम सब सो जाओ। ईश्वर ने चाहा तो तुम लोग सुबह तक धनवान हो जाओगे।'

छोटे भाई की पत्नी उसी समय बड़े भाई की पत्नी को काम करने के लिए बुलाने आयी थी। उसने साधु की बातें सुन लीं। वह अपनी जेठानी से बोली कि– 'सुबह साधु महाराज को हमारे घर भी भेज देना। हम लोग भी उनकी सेवा करेंगे और तुम्हारे समान धनवान बन जायेंगे।'

बड़े भाई की पत्नी बहुत सीधी थी। उसने अपनी देवरानी की बात साधु महाराज को बतायी और उन्हें अपनी देवरानी के घर भी जाने के लिए कहा।

साधु महाराज ने बड़े भाई की पत्नी से कहा– 'तुम लोग मेहनती, ईमानदार और धर्मात्मा हो। गरीब होते हुए भी तुम लोगों में मानवता है, अतः ईश्वर ने तुम्हारी मदद के लिए मुझे भेजा है। धनवान छोटे भाई व उसकी पत्नी के पास सब कुछ है, लेकिन उनके दुर्गुणों के कारण कल प्रातः सूर्य निकलते ही वे निर्धन एवं दरिद्र हो जायेंगे।' इतना कहकर साधु महाराज अन्तर्ध्यान हो गये।

'जो मस्ताता है, वह पछताता है।'

षदभाव मानुष और ढंढा

एक गामड़ा से षषरो अपनी बहू ने बिदा कराइन चालो अपने घरे। तो चलाचल चालता-चालता ने बच्छे कई गामड़ा पड़ा। एक गामड़ा ने ना काठे से एक मानषो ज्वान अंधानु वात करी औ केहवा लाग्गो के- 'गाड्डीहारा ठेरी जा।' तो गाड्डीहारा ने बेट्ठो षषरो बोलो- 'के भाई तू कुण छे?'

तिन पे ज्वान मनषे जवाब देद्दो कि- 'मैं अंधो सू म्हूने आगड़े गामड़े तक जाणो छे। म्हूने गाड्डी में बेषाल लो से तो बड़ी मेहरबानी छा से।' तिन्हा ऊपर जवाब आली बहू है, षषरा ने जवाब आलो के- 'षषरा म्हारी वात षमझ वाटे चाल्वा हवा ने आपणी गाड्डी में न बेषाड़ी।'

तिन्हा ऊपर षषरा ने जवाब आलो के- 'भाई बहू थोडू बहुत धरम-करम करू के मील बे मील जाइन उतरी जासू तो अपनो सू लै जा से।' तिन्हे षमझी ने बहू चप छई गई। तिन अंधा ने जू हतो तिन्ना गाड्डी में बेषाल लीतो। चलाचल-चलाचल षषरा गाड्डी हकालतो जाइरयो थो तो बेतरन गामड़ा रई ग्या पसाल। तीने बादना में अंधो जो मानषो तो हतो बदमाष। तो बहू बैठ्ठी थी गाड्डी में तीना काठे-काठे अंधों षरकें, तानू बहू अपना षषरा कने षरके। ताने करता-करता, करता-करता षषरा ने काठे पौची गयी बहू। तन षषरा गाड्डी हकालते-हकालते बहू ने पसाल फिरी ने जोवा लागो के- 'बहू, तू चीम काठे आवीजी?'

तिन्हा ऊपर बहू जवाब आलो के- 'षषरा, अंधो जो मानषो छे यो म्हारे काठे-काठे आवे से।' तो षषरे पाड़िन अंधा ने केही के- 'भाई, तू बहू के काठे-काठे षरके से भाई तू म्हारी गाड्डी ने हेट उतरी जा।' तिना ऊपर बहू ने जवाब आलो के- 'षषरा मैं तूने पहले केही थी कि वाहे चालता मनष ने गाड्डी पर नथी बेषाणना।'

बहू की औ षषरा नी वात षमझीन अंधो बोलो के- 'तू म्हूने गाड्डी से हेट उतारनहारो तू कुण से? गाड्डी तो म्हारी छे, बहू म्हारी छे। म्हूने जरा पेटनामें तकलीफ छाई गै थी, बाहर बैषवाने चलो ग्यो थो तीना तू कै रो से गाड्डी म्हारी से, बहू म्हारी से।' तीने गलधा ने धक्को मारी ने गाड्डी से हेट नाखी दियो औ गाड्डी ने औ बहू ने लेई त चालो अगल। तीना बाद ना में गलधो उठीन चिल्लावा लागो के- 'म्हारी बहू ने म्हारी गाड्डी ने लेइन अंधो बदमाष न्हाटी जइरयो से।' तो गामड़ा ने काठे निकलो त बेचार पंच इकट्ठा छाया केवा लागा के- 'भाई गलधा, सू वात छे?' तीना गलधा ने जवाब देद्दो के- 'भाई, आजकाल ने जमानो से अच्छो करे तो बरुओ छाएस। के भाई मैं एक अंधा ने गाड्डी में बेषाड़ी लेद्दो थो तो आज तो अंधो म्हारी बहू ने म्हारी गाड्डीने लई न्हाटे जाइर्यो से।'

तिन्हा ऊपर पंचों ने दया आई ते चार पंचों ने गाड़ीहारा नू रोको या धरो ने ऊपर तिन्हा कहीन के- 'भाई, तू कुण छे? औ अ गाड्डी में बेट्ठी बहू छे या कुण छे थारी?' तिन्हा पर जवाब आलो- 'गाड्डी म्हारी छे, बहू म्हारी छे।' इते पंचू ने अंधानी वातेचीते छाई एट्टाना में षषरो व बीजा भी पंच गाड्डी कने एकट्ठा छाइ ग्या। तिन्हा पर अंधा से गलधा ने पूछा- 'के बहू म्हारी छे, गाड्डी म्हारी छे।'

तिन्हा ऊपर पंच षमझता-षमझता पंचों ने षमझ में कईं भी न आई त पंचों ने जवाब दीतो के- 'भाई, तुमी पंचायत जोड़ी के, पंचायत कराइ लो तिन में तमारो पंच फैषला छई जासे।'

ऐट्टी वात केता ने अंधो भी मंजूर छई ग्यो ने गलधा भी मंजूर छई

ग्यो। सो पंचायत जुड़ी ग्यी। पंचायत बैषी गई। तो पंचायतन में पंचू ने तरनू का बयान लेद्दा। ब्यान लेआना बादना पंचू जो हता तो ब्यानू ना छाटता-छाटता बहना में से खान छई गयी, मगर झगड़ो टूटवाना नाम न आवे।

तिन्हा बादना में एक गलधो पंच हतो सरपंच। तो गलधे पंच एक वात कई के- 'भाई, तुमी आखा पंच म्हूने हुकुम आलो तो मैं एक वात पूछूँ?' तिन में आखा पंच कई दुयो के- 'पूछी लै।' तिन्हा बादना में गालधा पंच उठी ने आगे चाल्लो अंधा कने तो अंधा नू कई के- 'भाई, बहू थारी से? औ गाड्डी थारी से? औ ढंढ़ा थारा से?' तिन्हा ऊपर अंधो जवाब आल्लो के- 'गाड्डी भी म्हारी छे, ढंढ़ो भी म्हारो से ने बहू भी म्हारी से।'

त्रन बखत पूछी ली, अंधे तरने बखत जवाब आलो गलधा पंच ने के- 'भाई, बहू भी म्हारी से, ढंढ़ा भी म्हारो से ने गाड्डी भी म्हारी से।' तिन्हा बादना में षषरा कने चालो गलधा पंच। तिन्हें पूछी के- 'अ बहू औ ढंढ़ा ने गाड्डी थारी से?' त्रन बखत पूछी तिन्हा ऊपर त्रन बखत जवाब आलो के- 'बहू, गाड्डी, ढंढ़ा म्हारो से।'

आखा पंच बैठा-बैठा जोई रया था। तिन्हा बादना में गलधो पंच जो पूछवा जियो थो तो पंच लौटी ने सगल पंचों में आवी ग्यो त सगल पंचो न में वात केही के- 'एक तो से झूठो ने एक तो से षाचो। इन्हों फैसलो ढ़ंढाना ऊपर छोड़ दो। अगर ये ऊना अंधाना ढंढ़ा इन्ना छीं तो इन्ना ढंढ़ाना मारुवाणो औ अगर ढंढ़ा इन्ना न थी तो इन्ना लाल ना सींगड़ो मार से तो झूठो से औ न मार से तो षाचो छे। योहज वात षषरा सी औ जो षषरान ना हंथी तो षषरा ना मारसीं।' तो यो फैसलो सगल पंचोना में बंधई गई।

तिन्हा बादना में गलधो पंच अंधाने औ षषरा ने लेइन ढंढ़ाहू कने लेइन चालो कि- 'भाई, जिन्हा ढंढ़ा होई तो इन्हा सींगना, पेटना, गर्दना ऊपर हाथ फेरो।' तो अंधो जियो ढंढ़ा ने सींगड़ा पे जो हाथ फेरवाने जियो तो ढंढ़ा ने जोइये एक सींगड़ों मारो तो अंधानु पेट फाटी ग्यो औ एक लात देद्दी तो कई जादू पड़ो हेई।

तिन्हा बादना में षषरो आयो, तिन्हा सींगड़ा ऊपर हाथ फेरो, तिन्हीं गर्दन पर भी हाथ फेरो, तीना पेट पर भी हाथ फेरो। ढंढ़ानू बहोत प्यार करो। ढंढ़ाने तिना जोइने खुसी छायो कि म्हारो धनी म्हारे कने आवी ग्यो। तिने जोई रयो थो बैठा-बैठा सगल पंच। फैषलो छई गयो। ढंढ़ा ने जो फैषलो कर दियो थो। आखा पंच ने षषरा ने बहू राम-राम करी के- 'भाई, तुम्हारा गामड़ा ने हमेशा याद राखसी के यहाँ दूधनू दूध और पानी न पानी छाएसे।'

बदमाश आदमी और बैल

एक गाँव से एक बूढ़ा ससुर अपनी बहू को विदा करके बैलगाड़ी से अपने घर जा रहा था। रास्ते में उसे एक अंधा युवक मिला, जिसने उससे आगे के एक गाँव तक बैलगाड़ी में बैठने के लिए विनती की। बूढ़े ससुर को दया आ गयी, किन्तु बहू को अंधा युवक दुष्ट मालूम पड़ा। अतः उसने अपने ससुर से अंधे युवक को न बैठाने के लिए कहा। बूढ़ा ससुर धार्मिक प्रवृत्ति का था। अतः उसने बहू की बात पर विशेष ध्यान न देकर अंधे युवक को बैलगाड़ी पर बैठा लिया।

कुछ देर बाद अंधे युवक ने बहू के पास खिसकना आरम्भ कर दिया। शीघ्र ही उसका शरीर बहू से टकराने लगा। बैलगाड़ी के हिचकोलों के साथ ही अंधा युवक बहू के और निकट आ जाता। बहू उससे बचने के लिए हर बार आगे बैठे बैलगाड़ी चलाते हुए अपने ससुर के निकट खिसक जाती। खिसकते-खिसकते बहू अपने ससुर के इतना निकट पहुँच गयी कि उसका शरीर अपने ससुर के शरीर से टकराने लगा।

बूढ़े ससुर ने पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि अंधा उसकी बहू से सटा हुआ बैठा था। उसे अंधे पर बहुत क्रोध आया। उसने अंधे युवक को गाड़ी से उतरने के लिए कहा। अंधा युवक, जो कि वास्तव में अंधा नहीं था, खड़ा हो गया और उसने यह कहते हुए बूढ़े ससुर को बैलगाड़ी के नीचे ढकेल दिया कि बैलगाड़ी और वह स्त्री सब उसके हैं। बेचारा बूढ़ा ससुर गिरते ही रोने लगा और मदद के लिए चिल्लाने लगा।

बूढ़े ससुर की चीख-पुकार सुनकर आसपास के लोग इकट्ठे हो गये और उन्होंने बैलगाड़ी को घेर लिया। बूढ़ा कह रहा था कि बैलगाड़ी और बहू उसकी है तथा उसने युवक को अंधा समझकर बैलगाड़ी पर बैठा लिया था। युवक कह रहा था कि बैलगाड़ी तथा बहू उसकी है और उसने अपने पेट में दर्द होने के कारण राह चलते बूढ़े को गाड़ी चलाने के लिए बैठा लिया था। बहू चुप थी और रो रही थी।

पास खड़े लोगों ने दोनों की बात सुनी और कहा कि तुम दोनों पंचायत कर लो। पंच फैसले में तुम्हें न्याय मिल जायेगा। बूढ़ा ससुर तथा युवक दोनों इसके लिए तैयार हो गये और पंचायत बैठ गयी। पंचायत में दोनों लोग अपने-अपने पक्ष में तर्क दे रहे थे और अपनी-अपनी बात मनवाने पर अड़े थे। धीरे-धीरे शाम हो गयी और पंचायत अपना निर्णय न कर सकी। तभी एक बूढ़ा पंच सब पंचों से आज्ञा लेकर आगे आया और उसने बूढ़े ससुर और अंधे बने युवक दोनों का हाथ पकड़ा और बैलों के निकट पहुँचा। बूढ़े पंच ने दोनों से बैलों के गले, पेट व पीठ पर हाथ फेरने को कहा। जैसे ही युवक ने एक बैल के गले पर हाथ रखा उसने इतने कसकर सींग मारा कि उसका पेट फट गया। दूसरे बैल ने भी एक लात मारी और युवक दूर जा गिरा। इसी बीच सब पंचों ने देखा कि बूढ़ा ससुर बैलों के पेट, पीठ, गले सबको बड़ी आत्मीयता से प्यार कर रहा था तथा बैल भी उसे इस प्रकार चाट-चाट कर प्यार कर रहे थे, जैसे वे अपने मालिक को केवल पहचान ही न रहे हों, बल्कि कह रहे हों कि हमने बदला ले लिया। हमने फैसला कर दिया।

इस प्रकार पंच फैसला हो गया। बूढ़े ससुर ने सब पंचों को धन्यवाद दिया तथा अपनी बहू और बैलगाड़ी को लेकर अपने गाँव की ओर चल पड़ा।

षमन्दर और हंस

एक षमन्दर ने काठे एक हंस और एक हंसनी थी। एक समै की वात छै, हंसना में ने षमन्दर में लड़ाई छै गई। षमन्दर कै मैं म्होटो सू ने हंस कै हमी म्होटा से। लड़ाई छाई ने अलग-अलग बिस्टी ग्या। हंस उड़ी ने चलाई ग्या जंगलू ने काठे एक नान्ही नद्दी हथी।

एक समै नी वात छै चार पंच मुसाफिर वाट धरी ने आयी र्‌या था तो इनी में से एक पंच बोलो के षमन्दर से? के नद्दी से? के नालो से? सू चीज छै? वीजे पंच ने जवाब दे दूँ के अगर षमन्दर होतो तो हंस जरूर होतो। यो तो नद्दी से या नालो से, तिन्हें षमन्दर समझीं र्‌यूँ। तो षमन्दर ने कई जरा ऊबो तो रौ पंच म्हारी वात समझी जाओ, बोले म्हूने नद्दी-नाला सूकवा कया मैं तो षमन्दर सूँ। ते ना पर पंच जवाब देतो, के अगर तू षमन्दर होतो तो थारा कने हंस जरूर रैतो। षमन्दर ने जवाब दीतो के म्हारी ने हंस नी लड़ाई छै गई। तुमी ने पंच देवता सो तुमी हंस ने म्हूने एक बनाई द्‌यो।

सो पंच षमजड़ाइन आगल चाला तो चलासे-चलासे जंगलना में हंस ने हंसनी दाना दुनका, भाटा कांकरा खाना फिरता। तिनमें एक पंच बोला अ हंस सी? के बुगला सी? तो एक पंच बोला न थी भाई हंस होतो तो षमन्दर होतो, 'ई हंस नथी ये बुगला सी केहीन अगल चाला लागा तो' हंस समझीन

बोला के पंच ऊबा तो रौ हमून हंस ने तमी बुगलासी बताल रौ से। तीना ऊपर पंच ने जवाब दीतो, के अगर तुमी हंस होता तो षमन्दर जरूर होतो तो हंस ने छी के म्हारी ने षमन्दर नी लड़ाई छई गई से। तिना ऊपर पंच से कै षमन्दर ने और हंस तमारी एको कराई दई त मानसो हमारी वात? तिनपे हंसनी ने जवाब आलो के अपनी पंचो नी वात मानी लो नई तो बुगला छाई जाय अपनी।

पंच षमजड़ाइन हंसनू लेईन षमन्दर ने काठे चाला तो पंचों ने षमन्दर ने भी षमजड़ायो, ने हंस ने भी षमजड़ायो, के भाई जो समझो के षमन्दर में हंस रै खू षमन्दर अच्छो लागे से और षमन्दर को हंस अच्छो रै से।' ऐट्टी वात षमजड़ाइन पंच अपनी जगह चलाई ग्यो। 'जो फुट्टा अवानू जोड़े तो पंच नू नाम छाएस।'

सागर और हंस

एक सागर के किनारे हंस का जोड़ा रहता था। सागर और हंस अच्छे मित्र थे। एक बार सागर और हंस में जरा-सी बात पर लड़ाई हो गयी। सागर कह रहा था कि मैं बड़ा हूँ और हंस कह रहे थे कि हम बड़े हैं। दोनों में झगड़ा बढ़ गया, अतः हंस पास के एक जंगल में चले गये। वहाँ एक नदी बहती थी, उसी के किनारे वे रहने लगे।

एक समय की बात है, उधर से चार पंच निकले। एक पंच ने कहा- 'देखो, यह सागर है।' दूसरे पंच ने उत्तर दिया- 'नहीं, यह सागर नहीं है, यह कोई नदी या नाला है। अगर यह सागर होता तो इसके किनारे हंस अवश्य होते।'

सागर पंचों की बात सुनकर बहुत दुःखी हुआ और बोला- 'हे पंचों, मैं सागर ही हूँ। मेरे किनारे पर हंस भी रहते थे, लेकिन हंसों से जरा-सी बात पर मेरी लड़ाई हो गयी और वे यहाँ से चले गये। आप पंच तो देवता होते हैं,

हम दोनों का मेल करा दीजिये।' पंचों ने सागर को सान्त्वना दी और आगे बढ़ गये।

चलते-चलते पंच जंगल में उसी नदी के निकट पहुँचे, जहाँ हंस और हंसिनी रहते थे। उन्हें देखकर एक पंच बोला- 'देखो, ये शायद हंस हैं।' तो दूसरा पंच बोला- 'नहीं, ये हंस नहीं हैं। शायद बगुले हैं। अगर ये हंस होते तो सागर के किनारे रहते।'

हंस उनकी बात सुनकर बहुत दुःखी हुए। वे पंचों के पास पहुँचे और बोले- 'पंचों, हम हंस हैं, हम पहले सागर के किनारे ही रहते थे, किन्तु जरा-सी बात पर हमारी और सागर की लड़ाई हो गयी और हम यहाँ चले आये। आप हो सके तो हमारा मेल करा दो।'

पंचों ने हंस के जोड़े को सान्त्वना दी और उन्हें लेकर सागर के पास पहुँचे। उन्होंने दोनों को समझाया कि- 'भाई, सागर की शोभा हंसों से होती है और हंस सागर के किनारे ही अच्छे लगते हैं।' इतनी बात समझाकर पंच आगे बढ़ गये।

जो बिछुड़ों को मिलाये, वही सच्चे पंच होते हैं।